

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.



प्रातिहार्ययुक्त जिनप्रतिमा

लखनादोन, जिला मिर्जापुर, मध्यप्रदेश

भगवान् महावीर के
२५०० वें निर्वाण महोत्सव
के उपलक्ष्य में प्रस्तुत

जैन प्रतिमा विज्ञान

(प्रतिमालक्षण सहित)

बालचन्द्र जैन, एम० ए०, साहित्यशास्त्री
उपसंचालक, पुरातत्त्व एवं संग्रहालय
मध्यप्रदेश

जबलपुर

बीर निर्वाण संवत् २५००

ईस्वी १९७४

(चार)

प्रकाशक

मदनमहल जनरल स्टोर्स

राइट टाउन

जबलपुर ४८२००२

पंद्रह रुपये

मुद्रक

सिधई प्रिंटिंग प्रेस

महाताल, जबलपुर

निवेदन

लगभग दस वर्ष पूर्व, मैंने इस पुस्तक के हेतु मूल सामग्री का संग्रह करना प्रारम्भ किया था। पर, दुर्भाग्यवश ऐसी कुछ अननुकूल परिस्थितियाँ आयी कि कार्य बीच में रुक गया।

गत वर्ष १९७३ में, मेरे अनेक मित्रों और स्नेहीजनों ने मुझे पुनः प्रेरित किया और भगवान् महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में पुस्तक प्रकाशित किये जाने का आग्रह भी किया। उन्हीं हितैषीजनों के सतत प्रदत्त उत्साह और प्रेरणा के फलस्वरूप जैन प्रतिमा विज्ञान विषयक पुस्तक इस रूप में प्रस्तुत है। इस में दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं के ग्रन्थों के आधार पर देवाधिदेव जिन और विभिन्न प्रकार के देवों की प्रतिमाओं के संबंध में विचार किया गया है।

पुस्तक के प्रथम अध्याय में जैन प्रतिमा विज्ञान के आधारभूत ग्रन्थों का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में प्रतिमा घटन द्रव्य तथा पूज्य, अपूज्य और भग्न प्रतिमाओं के संबंध में परम्परागत विचार प्रकाशित किये गये हैं। तृतीय अध्याय में तानमान की चर्चा है। चौथे अध्याय में त्रेमठ शलाका पुरुषों का विवरण देते हुए चतुर्विंशति तीर्थकरों से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गयी है। तन्पश्चात् भवनवामी, व्यन्नर, ज्योतिष्क और वैमानिक देवों और विशेष कर उन के इन्द्रों के स्वरूप का वर्णन है।

सोलह विद्या देवियों और शासन देवताओं को जैन देववाद में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनके लक्षण छठे और सातवें अध्यायों में वर्णित हैं। आठवें, नौवें, दसवें और ग्यारहवें अध्यायों में क्रमशः जैन मान्यतानुमार क्षेत्रपाल, अष्ट मातृकाओं, दस दिक्पालों और नव ग्रहों की चर्चा है। यद्यपि कुछेक जैन ग्रन्थों में चौसठ यौगिनियाँ, चौगसी सिद्धों और बावन वीरों के नामोल्लेख

(छद्)

उपलब्ध हैं, पर उन्हें इस पुस्तक में सम्मिलित नहीं किया जा सका । प्रतीक पूजा के उपकरण, विभिन्न यन्त्रों और मांडनों तथा भौगोलिक नकशों आदि को इस दृष्टि में छोड़ दिया गया है क्योंकि जैनों की प्रतीक पूजा एक स्वतंत्र ग्रन्थ का विषय बनने योग्य है ।

प्रतिमा विज्ञान केवल कठिन ही नहीं अपितु अग्राध विषय है । मैं अपनी अक्षमता को समझता हूँ । पुस्तक में त्रुटियाँ सर्वथा संभाव्य हैं । विशेषज्ञ जन उन के लिये मुझे क्षमा करेंगे ।

बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः महमा प्रहीतुम् ।

महावीर जयन्ती, १९७४

बालचन्द्र जैन

विषय सूची

- प्रथम अध्याय १—१०
मंगल और लोकोत्तम, पूज्य, पूजा के प्रकार, स्थापना पूजा,
जैन विम्ब निर्माण की प्राचीनता, जैन प्रतिमा विज्ञान के आधार ग्रन्थ ।
- द्वितीय अध्याय ११—१८
जैन मंदिर और प्रतिमाएं, मंदिर निर्माण के योग्य स्थान,
प्रतिमा घटन द्रव्य, गृह पूज्य प्रतिमाएं, अपूज्य प्रतिमाएं, भग्न
प्रतिमाएं, जिन प्रतिमा लक्षण, अहंत्, सिद्ध, आचार्य और माधुओ
की प्रतिमाएं ।
- तृतीय अध्याय १९—२७
तालमान, विभिन्न शकाडया, दशताल प्रतिमाएं, कार्यात्सर्ग
प्रतिमाएं, पद्मामन प्रतिमाएं, मिहासन का मान, परिकर का मान,
प्रातिहार्य योजना ।
- चतुर्थ अध्याय २८—४८
काल रचना, चोदह कुलकर, त्रिपष्टि शलाका पुरुष, चतुर्विंशति
तीर्थकर, पञ्चकन्याणक, तीर्थकरो के लाह्यन, दीक्षावृक्ष, समवशरण,
प्रनीहार, निर्वाणभूमि, नवदेवता, अष्ट प्रातिहार्य, अष्ट मंगल द्रव्य ।
- पचम अध्याय ४५—५२
चतुर्निकाय देव, भवनवामी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक ।
- षष्ठ अध्याय ५३—६५
श्रुतदेवता, मरम्बती, पोडश विद्यादेवियां ।
- सप्तम अध्याय ६६—११२
शामन देवता, चतुर्विंशति यक्ष, चतुर्विंशति यक्षी, शामन
देवताओ की उत्पत्ति, हिन्दू और बौद्ध प्रभाव, विंशष्टि यक्ष, अनावृत
यक्ष, सर्वाल्लि यक्ष, ब्रह्मशान्ति यक्ष, तुम्बरु यक्ष, शान्तिदेवी, कुबेरा
यक्षी, पष्ठी, कामचण्डाली ।

(आठ)

अष्टम अध्याय	११३—११४
क्षेत्रपाल, विभिन्न रूप, गणपति ।	
नवम अध्याय	११५—११७
अष्ट मातृकाएं ।	
दशम अध्याय	११८—१२१
दम दिक्पाल, वाहन, आयुध, दिक्पालों की पत्नियां, दिक्कुमारिकाएं ।	
एकादश अध्याय	१२२—१२४
नव ग्रह ।	
परिशिष्ट एक	१२५—१३६
तालिकाएं ।	
परिशिष्ट दो	१३७—२००
जैन प्रतिमालक्षण	
देशना	२०१—२११
ग्रन्थ निर्देश	२१२—२१५
शुद्धि पत्र	२१६
रेखाचित्र फलक	अन्त में

प्रथम अध्याय

जैन प्रतिमाविज्ञान के आधारग्रन्थ

अर्हत्, सिद्ध, साधु और केवली-प्रज्ञान धर्म, इन चार को जैन परम्परा में मंगल और लोकोत्तम माना गया है। साधु तीन प्रकार के होते हैं, १. आचार्य, २. उपाध्याय और ३. सर्व (साधारण) साधु। उसी प्रकार केवली भगवान् के उपदेश को जिनवाणी या श्रुत भी कहा जाता है। उपर्युक्त पञ्च परमेष्ठियों और श्रुतदेवता की पूजा करने का विधान प्राचीन जैन ग्रन्थों में मिलता है।^१ किन्हीं आचार्यों ने पूजा को वैयावृत्य का अंग माना है, जैसे समन्तभद्र ने रत्नकरंड श्रावकाचार म, और किन्हीं ने इस सामयिक शिक्षाव्रत में सम्मिलित किया है, जैसे सोमदेवसूरि ने यशस्तिलक चम्पू में। जिनसेन आचार्य के आदिपुराण में पूजा, श्रावक के निरपेक्ष कर्म के रूप में अनुशंसित है।

पूजा के छह प्रकार बनाये गये हैं, १. नाम पूजा, २. स्थापना पूजा, ३. द्रव्यपूजा, ४. क्षेत्रपूजा, ५. काल पूजा और ६. भाव-पूजा।^२ इनमें से स्थापना के दो हैं, सद्भाव स्थापना और असद्भाव स्थापना। प्रतिष्ठेय की तदाकार सागोपाग प्रतिमा बनाकर उसकी प्रतिष्ठा करना सद्भाव स्थापना है और शिला, पूर्णकुंभ, अक्षत, रत्न, पुष्प, आसन आदि प्रतिष्ठेय से भिन्न आकार की वस्तुओं में प्रतिष्ठेय का न्यास करना असद्भाव स्थापना है।^३ असद्भाव स्थापना पूजा का जैन ग्रन्थकारों ने अक्षर निषेध किया है क्योंकि वर्तमान काल में लोग कुलिग मति में मोहित होते हैं, और वे असद्भाव स्थापना से अन्यथा कल्पना भी कर सकते हैं।^४ वसुनन्दि ने कृत्रिम और अकृत्रिम प्रतिमाओं की पूजा का ही स्थापना पूजा कहा है।^५

१. जिणमिद्धसूरिपाठय साहण ज मुयम्म विहवण ।

कीरइ विविहा पूजा वियाण त पूजणविहाण ॥

वसुनन्दिश्रावकाचार, ३८० ।

२. वहीं, ३८१ । ३. भट्टाकलककृत प्रतिष्ठाकल्प ।

४. वसुनन्दि श्रावकाचार, ३८५; आशाधर कृत प्रतिष्ठासारोद्धार, ६।६३.

५. एवं चिरतमाणं कट्टिमाकट्टिमाणं पडिमाणं ।

जं कीरइ बहुमाणं ठवणापुज्जं हि तं जाण ॥

वसुनन्दि श्रावकाचार, ४४६ ।

प्राणियों के आत्म्यंतर मल को गलाकर दूर करने वाला और आनंददाता होने के कारण मंगल पूजनीय है। पूजा के समान मंगल के भी छह प्रकार जैन ग्रन्थकारों ने बताये हैं। वे ये हैं, १. नाम मंगल, २. स्थापना मंगल, ३. द्रव्यमंगल, ४. क्षेत्र मंगल, ५. काल मंगल और ६. भाव मंगल।^१ कृत्रिम और अकृत्रिम जिन बिम्बों को स्थापना मंगल माना गया है।^२ प्रवचन सारोद्धार और पद्मानंद महाकाव्य में जिनेन्द्र की प्रतिमाओं को स्थापना जिन या स्थापना ग्रहंत् की संज्ञा दी गयी है।^३ जयसेन के अनुसार, जिन बिम्ब का निर्माण कराना मंगल है।^४ भाग्यवान् गृहस्थों के लिए अपने (न्यायोपान) धन को सार्थक बनाने हेतु चैत्य और चैत्यालय निर्माण के बिना कोई अन्य उपाय नहीं है।^५

जिन प्रतिमा के दर्शन कर चिदानंद जिन का स्मरण होता है। अतएव जिन बिम्ब का निर्माण कराया जाता है। बिम्ब में जिन भगवान् और उनके गुणों की प्रतिष्ठा कर उनकी पूजा की जाती है। जैन मान्यता है कि प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभनाथ के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने कैलास पर्वत पर बहत्तर जिन मंदिरों का निर्माण करवाकर उनमें जिन प्रतिमाओं की स्थापना कराई थी और तब से जैन प्रतिमाओं की स्थापनाविधि की परम्परा चली।^६

स्थापनाविधि या प्रतिष्ठाविधि का विस्तार से अथवा संक्षिप्त वर्णन करने वाले पचासों ग्रन्थ जैन साहित्य में उपलब्ध हैं। यद्यपि वे सभी मध्यकाल की रचनाएँ हैं, पर ऐसा नहीं है कि उन ग्रन्थों की रचना से पूर्व जैन प्रतिमाओं का निर्माण नहीं होता था। अतिप्राचीनकाल से जैन प्रतिमाओं का निर्माण और उनकी स्थापना होती रही है, इस तथ्य की पुष्टि निःशंक रूपेण पुरातत्त्ववीय प्रमाणों और प्राचीन जैन साहित्य के उल्लेखों से होती है। आवश्यक चूर्ण आदि ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर के जीवनकाल में, उनके दीक्षा लेने से पूर्व, उनकी चन्दनकाष्ठ की

१. अलायपण्णत्ता, १/१८.

२. वही, १/२०.

३. प्रवचनसारोद्धार, द्वार ४२; पद्मानन्द महाकाव्य, १/३.

४. जयसेन कृत प्रतिष्ठापाठ, ७१५.

५. वही, २२.

६. वही, ६२-६३.

प्रतिमा निर्मित की गई थी ।^१ हाथी गुंफा प्रशस्ति में नन्दराज द्वारा कलिंग की जिन प्रतिमा मगध ले जाये जाने का उल्लेख है । कुछ विद्वान हहम्पा की कबन्ध प्रतिमा को जैन प्रतिमाओं का आद्यरूप स्वीकार करते हैं । लोहिनीपुर से प्राप्त और वर्तमान में पटना संग्रहालय में प्रदर्शित जिन प्रतिमाएँ तथा खंडगिरि (उड़ीसा) और मथुरा में उपलब्ध विपुल शिल्प, प्रतिमाएँ और आयागपट्ट आदि, जैन प्रतिमा निर्माण के प्राचीनतर नमूने हैं । कंकाली टीले से प्राप्त कलाकृतियों में विभिन्न जिन प्रतिमाओं के अतिरिक्त स्तूप, चैत्यवृक्ष, ध्वजस्तंभ, धर्मचक्र, और अष्टमंगलद्रव्य आदि का भी रूपांकन मिला है । देवी सरस्वती और नैगमेष की प्राचीन प्रतिमाएँ भी मथुरा में प्राप्त हुई है । प्रिन्स आफ वेल्स संग्रहालय की पार्श्वनाथ प्रतिमा लगभग इक्कीस सौ वर्ष प्राचीन आंकी गई है ।

उपलब्ध जैन आगमों के पूर्ववर्ती विद्यानुवाद नामक दसवें और त्रिया-विशाल नामक तेरहवें पूर्व में शिल्प और प्रतिष्ठा संबंधी विवेचन का होना बताया जाता है पर वे ग्रन्थ विच्छिन्न हो गये हैं । सूत्रकृतांग, समवायांग कल्पसूत्र आदि में जैन प्रतिमाओं के संबंध में कुछ आद्य-सूचनाएँ मिलती हैं । समवायांग में ५४ महापुरुषों के विवरण हैं । पिछली परम्परा में इन महापुरुषों या शलाकापुरुषों की संख्या ६३ मानी गयी है किंतु समवायांग की सूची में ६ प्रतिनारायणों की गणना नहीं किये जाने के कारण उनकी संख्या ५८ ही है । शलाकापुरुषों में सर्वाधिक श्रेष्ठ और पूजनीय २४ तीर्थकरों को माना गया है । तीर्थकर जैन प्रतिमा विधान के मुख्य विषय हैं । मध्यकालीन जैन साहित्य में तीर्थकरों के चरितग्रंथों में उनके शासन से संबंधित देवताओं के रूपों का भी वर्णन मिलता है ।

हेमचंद्र का त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, शीलाकाचार्य का प्राकृत भाषा में रचित चउपन्नमहापुरिसचरित, पुष्पदन्त का अपभ्रंश भाषा का तिसट्टिमहापुरिसावन्कार, आशाधर का संस्कृत भाषा में त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र और चामुण्ड-राय का कन्नड भाषा का त्रिषष्टिलक्षण महापुराण, ये सभी मुप्रसिद्ध चरितग्रंथ हैं । वर्द्धमानसूरि के आदिणाहचरित, विमलसूरि के पउमचरित, रविषणाचार्य के पद्मचरित, जिनमेनाचार्य के हरिवंशपुराण और महापुराण, अमरचन्द्र सूरि कृत पद्मानंद महाकाव्य या चतुर्विंशति जिनेन्द्रचरित, गुणविजय सूरि कृत नेमिनाथ चरित्र, भवदेवसूरि कृत पार्श्वनाथ चरित्र तथा अन्य पुराणों और चरित्रकाव्यों में विभिन्न तीर्थकरों और उनके समकालीन महापुरुषों का

विवरण दिया गया है और उसके साथ प्रतिमा पूजा संबंधी जानकारी भी दी गयी है ।

प्रथमानुयोग के पुराण और चरितग्रन्थों के अलावा करणानुयोग साहित्य के ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न द्वीप, क्षेत्र, पर्वत आदि स्थानों में स्थित जिनालयों और जिनबिम्बों का वर्णन है । उन्हीं स्थानों में निवास करने वाले चतुर्निकाय देवों के संबंध में भी करणानुयोग साहित्य में विस्तार से जानकारी मिलती है । उमाम्वाति के तत्त्वाथंमूत्र को दिग्म्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में मान्यता प्राप्त है । इस सूत्रग्रंथ के तृतीय और चतुर्थ अध्याय में अधोलोक, मध्यलोक और ऊर्ध्वलोक का वर्णन है । पद्मनन्दि के जंबूदीपपण्ण-त्तिसंगहो, यतिवृषभ के तिलोयपण्णत्ति, नेमिचन्द्र के त्रिलोकसार तथा जंबू द्वीपप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपसमास, क्षेत्रममास, संग्रहणी आदि की विषयभूत सामग्री से भी जैन प्रतिमा-विज्ञान के विभिन्न अंगों का प्रामाणिक ज्ञान होता है ।

तीर्थकरों और सरस्वती, चक्रेश्वरी, अम्बिका, पद्मावती आदि देवियों की स्तुतिपरक स्तोत्र, आचार्यों और पंडितों द्वारा रचे गये थे । यह स्तोत्र-साहित्य जैन प्रतिमाशास्त्र के अध्ययन के लिये भी मूल्यवान् है । आचार्य समन्त-भद्रका स्वयंभूस्तोत्र इस विषयक प्राचीनतर कृति है । पाँचवीं-छठी शताब्दी में मानतुंग ने भक्तामर स्तोत्र और कुमुदचंद्र ने कल्याणमंदिर स्तोत्र की रचना की । इनमें क्रमशः आदिनाथ और पार्श्वनाथ की स्तुति है । दोनों स्तोत्रों का जैन समाज के दिग्म्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदायों में प्रचार है । धनंजय कवि ने सातवीं शताब्दी में विषापहार स्तोत्र की, और वादिराज ने ग्यारहवीं शताब्दी में एकीभाव स्तोत्र की रचना की थी । जिनसहस्रनाम स्तोत्रों में भगवान् जिनेन्द्र देव को ब्रह्मा, विष्णु आदि नामों से भी स्मरण किया गया है । सिद्धसेन दिवाकर के जिनसहस्रनाम स्तोत्र का उल्लेख मिलता है । नौवीं शताब्दी ईस्वी में आचार्य जिनसेन ने, तेरहवीं शताब्दी में आशाधर पंडित ने, सोलहवीं शताब्दी में देवविजयगणि ने और सत्रहवीं शताब्दी में विनयविजय उपाध्याय ने जिनसहस्रनाम स्तोत्रों की रचना की थी । बप्पभट्टि, शोभनमुनि और मेरु-विजय की स्तुतिचतुर्विंशतिकाएं प्रसिद्ध हैं । इन स्तोत्रों और स्तुतियों में जिन भगवान् के बिम्ब का शाब्दिक प्रतिबिम्ब परिलक्षित होता है ।

अनेक आचार्यों और पंडितों ने सरस्वती, चक्रेश्वरी अम्बिका जैसी देवियों के स्तुतिपरक स्तोत्रों की भी रचना की थी । उदाहरण के लिये, आशा-

धर पंडित रचित सरस्वती स्तुति, जिनप्रभसूरि कृत शारदास्तवन, साध्वी शिवार्या द्वारा रचित पठिनसिद्धसारस्वतस्तवन, जिनदनसूरि कृत अम्बिका स्तुति, और महामात्य वास्तुपाल विरचित अम्बिकास्तवन आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। इन स्तुतियों में उन उन देवियों के वाहन, आयुध, रूप आदि का वर्णन किया गया है।

तांत्रिक प्रभाव के कारण जैनो ने भी तरह तरह के यंत्र, मंत्र, तंत्र, चक्र आदि की कल्पना की। सिद्धान्त रूप से तन्त्रोपेक्षी होने के बावजूद भी समय की माँग का आदर करने के लिये जैन आचार्यों को भी तांत्रिक ग्रन्थों और कल्पों की रचना करनी पड़ी थी। यह स्थिति मुख्यतः नौवीं-दसवीं शताब्दी के साथ आयी। उस प्रवाह में हेलाचार्य, इन्द्रनन्दि और मल्लिपेण जैसे दिग्गजों ने तांत्रिक देवियों की साधना की और लौकिक कार्यसिद्धि प्राप्त की। हेलाचार्य ने ज्वालनी कल्प की रचना की थी। उल्लेख मिलता है कि उन्होंने स्वयं ज्वालनी देवी के आदेश से वह रचना सम्पन्न की थी। हेलाचार्य द्रविड संघ के गणाधीश थे। दक्षिण देश के हेम नामक ग्राम में किमी ब्रह्मराक्षस ने उनकी कमलश्री नामक शिष्या को ग्रसित कर लिया था। उस ब्रह्मराक्षस से शिष्या की मुक्ति के लिये हेलाचार्य ने ग्राम के निकटवर्ती नीलगिरि शिखर पर बह्नि देवी का सिद्ध किया और ज्वालनी मंत्र उपलब्ध किया। परम्परागत रूप से वही मंत्र गुणनन्दि के शिष्य इन्द्रनन्दि को मिला किन्तु उन्होंने उस कठिन मंत्र को आर्या-गीता छंदों में रचकर सरलीकृत किया। इन्द्रनन्दि के ज्वालनी कल्प की प्रतिया उत्तर और दक्षिण भारत के शास्त्र-भण्डारा में उपलब्ध हैं। उनमें दिय गये विवरण में विदित होता है कि ५०० श्लोक मर्यादा वाले डम कल्प की रचना कृष्णराज के राज्यकाल में मान्यवंत कटक में शक संवत् ८६१ की अक्षय तृतीया को सम्पूर्ण हुयी थी। इन्द्रनन्दि द्वारा रचित पद्मावती पूजा की प्रतियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। उनके शिष्य वासवन्दि की कृतियों का भी उल्लेख मिला है।

मल्लिपेण शीषेण के पुत्र और आचार्य जिनसेन के अग्र शिष्य थे। उनके सुप्रसिद्ध मंत्रशास्त्रीय ग्रन्थ भैरवपद्मावतीकल्प का दिग्गजर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में प्रचार रहा है। उस ग्रन्थ में ५०० श्लोक हैं। ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी के इस मंत्रिक विद्वान् की उपाधि उभयभाषाकविशेखर थी। उनके द्वारा रचित विद्यानुवाद, कामचाण्डालिनीकल्प, यक्षिणीकल्प और ज्वालनी कल्प की प्रतियाँ विभिन्न शास्त्र भण्डारों में सुरक्षित हैं। सागरचन्द्र गूरि

के मंत्राधिराजकल्प में यक्ष-यक्षियों तथा अन्य देवताओं की आराधना की गई है। बप्पभट्टि, विजयकीर्ति और उनके शिष्य मलयकीर्ति के सरस्वतीकल्प, भट्टारक अरिष्टनेमि का श्रीदेवीकल्प, भट्टारक शुभचन्द्र का अम्बिकाकल्प, यशोभद्र उपाध्याय के शिष्य श्रीचन्द्रसूरि का अद्भुतपद्मावतीकल्प, ये सभी तांत्रिक प्रभावयुक्त हैं। इनमें देवियों के वर्ण, वाहन, आयुध आदि का विवरण उपलब्ध होने से वे जैन प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन के लिये उपयोगी हैं। लोकानुसरण करने हुये जैन आचार्यों ने ६४ योगिनियों और ९६ क्षेत्रपालों की स्तुतियाँ और उनकी पूजाविधि संबंधी कृतियों की भी रचनाएँ की थी।

श्रावकाचार युग में श्रावकाचार ग्रन्थों, संहिताओं और प्रतिष्ठापाठों की रचनाएँ हुयीं। इन्द्रनन्दि और एकसंधि भट्टारक की जिनसंहिताओं की प्रतियाँ उत्तर भारत में आरा, दक्षिण में मूडविद्री और पश्चिम में राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध हुई हैं। उपासकाध्ययन नामक श्रावकाचार ग्रन्थ का उल्लेख अनेक कृतिकारों ने यथास्थान किया है। पूज्यपाद द्वारा रचित उपासकाध्ययन का भी उल्लेख मिलता है। मोमदेवसूरि के यशस्तिलक चम्पू के एक भाग का तो नाम ही उपासकाध्ययन है। वसुनन्दि ने उपासकाध्ययन का उल्लेख किया है पर उनका तात्पर्य किस विशिष्ट कृति से है यह ज्ञात नहीं हो सका है। स्वयं वसुनन्दि ने भी श्रावकाचार विषयक स्वतंत्र ग्रन्थ की रचना की थी। चामुण्डराय ने अपने चारित्रसार में 'उक्तं च उपासकाध्ययने' लिखकर एक श्लोक उद्धृत किया है किन्तु वह श्लोक किसी उपलब्ध ग्रन्थ में मूलतः नहीं मिला है।

प्रतिष्ठाग्रन्थों में से जयसेन या वसुविन्दु कृत प्रतिष्ठापाठ में शासन देवताओं और यक्षों की पूजा का विधान नहीं मिलता। इस प्रतिष्ठापाठ की प्रकाशित प्रति में जयसेन कुंदकुंद आचार्य के अग्र शिष्य बताये गये हैं। ग्रन्थनिर्माण का उद्देश्य बताते हुये सूचित किया गया है कि कोंकण देश में रत्नगिरि शिखर पर लालाट्ट राजा ने दीर्घ चैत्य का निर्माण कराया था। उस कार्य के निमित्त गुरु की आज्ञा प्राप्तकर, जयसेन ने दो दिनों में ही प्रतिष्ठापाठ की रचना की।^१ विक्रम संवत् १०५५ में रचित धर्मरत्नाकर के कर्ता का नाम भी जयसेन था। किन्तु यह कहना कठिन है कि धर्मरत्नाकर के रचयिता जयसेन और वसुविन्दु अपर नाम वाले जयसेन अभिन्न हैं अथवा नहीं।

प्रतिष्ठासारसंग्रह के रचयिता वसुनन्दि के श्रावकाचार का उल्लेख उपर किया जा चुका है। वे आशाधर पंडित और अग्र्यपार्य से पूर्ववर्ती थे क्योंकि इन दोनों ने ही अपने अपने ग्रन्थों में वसुनन्दि के मत का उल्लेख किया है। प्रतिष्ठासारसंग्रह की रचना के लिये वसुनन्दि ने चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति के साथ महापुराण से भी सार ग्रहण किया था। आशाधर पंडित के प्रतिष्ठासारोद्धार की रचना विक्रम संवत् १२८५ में आश्विन पूर्णिमा को परमार नरेश देवपाल के राज्यकाल में नलकच्छपुर के नेमिनाथ चैत्यालय में सम्पूर्ण हुयी थी। ग्रन्थ की प्रशस्ति में^१ उल्लेख किया गया है कि प्राचीन जिनप्रतिष्ठाग्रन्थों का भलीभाँति अध्ययन कर और ऐन्द्र (संभवतः इन्द्रनन्दि के) व्यवहार का अवलोकन कर आम्नाय-विच्छेदरूपी तम का छेदने के लिये युगानुरूप ग्रन्थ की रचना की गयी। आशाधर जी ने वसुनन्दि के पक्षधर विद्वानों के विपरीत मत का भी उल्लेख किया है।^२ आशाधर के प्रतिष्ठासारोद्धार का प्रचार केलहण नामक प्रतिष्ठाचार्य ने अनेक प्रतिष्ठाओं में पढ़कर किया था।

नेमिचन्द्र का प्रतिष्ठातिलक भी बहुप्रचारित ग्रन्थ है। उसमें इन्द्रनन्दि की रचना का उल्लेख है। नेमिचन्द्र जन्मना ब्राह्मण थे। प्रतिष्ठातिलक की पुष्पिका में उन्होंने लिखा है कि भरत चक्रवर्ती द्वारा निर्मित ब्राह्मण वंश में से कुछ विवेकियो ने जैन धर्म को नहीं छोड़ा। उस वंश में भट्टारक अकलंक, इन्द्रनन्दि मुनि, अनंतवीर्य, वीरसेन, जिनसेन, वादीभसिह, वादिराज, हस्तिमल्ल (गृहाश्रमी), परवादिमल्ल मुनि हुये। उन्हीं के अन्वय में लाकपाल नामक विद्वान द्विज हुआ जो गृहस्थाचार्य था। चाल राजा उसकी पूजा करते थे। लाकपाल राजा के साथ कर्णाटक में प्रतिदेश पहुंचा। वहा उसकी वंश परम्परा में समयनाथ, कवि राजमल्ल, चिंतामणि, अनंतवीर्य, संगीतज्ञ पायनाथ, आयु-वैदज्ञ पार्श्वनाथ और षट्कर्मज्ञाना ब्रह्मदेव हुये। ब्रह्मदेव का पुत्र देवेन्द्र संहिता शास्त्र का ज्ञाना था। उसके आदिनाथ, नेमिचन्द्र और विजयप ये पुत्र थे। इन्हीं नेमिचन्द्र के द्वारा प्रतिष्ठातिलक की रचना की गयी।

नेमिचन्द्र की माता का नाम आदिदेविका बताया गया है। नाना विजयपार्य थे और नानी का नाम श्रीमती था। नेमिचन्द्र के तीन मामा थे, चंदपार्य,

१. श्लोक १८-२१

२. प्रतिष्ठासारोद्धार, १, १७५

ब्रह्ममूरि और पार्श्वनाथ । उनके ज्येष्ठ भ्राता आदिनाथ के त्रैलोक्यनाथ, जिनचंद्र आदि, स्वयं नेमिचन्द्र के कल्याणनाथ और घमंशेखर तथा कनिष्ठ भ्राता विजय के समन्तभद्र नामक पुत्र हुये ।

प्रतिष्ठातिलक की प्रशस्ति में नेमिचन्द्र ने विजयकीर्ति नामक आचार्य का स्मरण किया है, पर किम प्रसंग में, यह वहां स्पष्ट नहीं है । अभयचन्द्र नामक महोपाध्याय से नेमिचन्द्र ने तर्क, व्याकरण और आगम आदि की शिक्षा प्राप्त की थी एवं सत्ययामनपरीक्षाप्रकरण तथा अन्य ग्रन्थों की रचना की थी । प्रतिष्ठातिलक की प्रशस्ति में बताया गया है कि नेमिचन्द्र को राजा से पालकी, छत्र आदि वैभव प्राप्त हुए थे । उसी प्रशस्ति में ज्ञात होता है कि उनका परिवार समृद्ध था । नेमिचन्द्र ने जैन मंदिर, मंडप, वीथिका आदि का निर्माण कराया था एवं पार्श्वनाथ मंदिर में गांठ, वाद्य, नृत्य आदि का प्रबंध किया था । नेमिचन्द्र स्थिरकदम्ब नगर में निवास करते थे । पुत्रों और बंधुओं की प्रार्थना पर उन्होंने प्रतिष्ठातिलक की रचना की थी ।

हस्तिमल्ल के प्रतिष्ठापाठ का उल्लेख अय्यपार्य ने किया है । किन्तु उस ग्रन्थ की प्रमाणित प्रति अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी है । आरा के जैन सिद्धान्त भवन में सुरक्षित प्रतिष्ठापाठ नामक हस्तलिखित ग्रन्थ के कर्ता संभवतः हस्तिमल्ल हो सकते हैं ? अय्यपार्य का प्रतिष्ठाग्रन्थ जिनेन्द्रकल्याणाम्युदय के नाम से ज्ञात है । वे हस्तिमल्ल के अन्वय में हुये थे और उनका गोत्र काश्यप था । अय्यप के पिता का नाम करुणाकर और माता का नाम अर्क-माप्वा था । करुणाकर गुणवीरमूरि के शिष्य पुष्पसेन के शिष्य थे । अय्यप के गुरु धरसेन आचार्य थे । अय्यप के जिनेन्द्रकल्याणाम्युदय में ३५६० श्लोक हैं । वह रुद्रकुमार के राज्य में एकशिलानगरी में शक संवत् १२४१ में माघ सुदि १० रविवार को सम्पूर्ण हुआ था ।^१ अय्यपार्य ने स्वयं सूचित किया है कि उन्होंने वीराचार्य, पूज्यपाद, जिनसेन, गुणभद्र, वसुनन्दि, इन्द्रनन्दि, आशा-धर और हस्तिमल्ल के ग्रन्थों से सार लेकर पुष्पसेन गुरु के उपदेश से ग्रन्थ की रचना की है ।

वादि कुमुदचन्द्र के प्रतिष्ठाकल्पटिप्पण या जिनसंहिता की प्रतियां कई स्थानों में उपलब्ध हैं । मद्रास ओरियण्टल लाइब्रेरी में सुरक्षित प्रति

१. जैनग्रन्थप्रशस्तिसंग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ ११२, दीर्घलि शास्त्री श्रवणबेलगुल की प्रति से उद्धृत अंश ।

की उत्थानिका और पुष्पिका से ज्ञात होता है कि कुमुदचन्द्र माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य थे जिनका स्वयं एक प्रतिष्ठाकल्प उपलब्ध है। भट्टाकलंक के प्रतिष्ठाकल्प, ब्रह्मसूरि के प्रतिष्ठातिलक, भट्टारक राजकीर्ति के प्रतिष्ठादर्श, पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन के प्रतिष्ठादीपक, पंडित परमानन्द की सिंहासनप्रतिष्ठा आदि आदि रचनाओं की हस्तलिखित प्रतिया आरा, जयपुर तथा अन्य स्थानों के शास्त्रभण्डारों में अद्यावधि सुरक्षित हैं। ये सभी दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थ हैं।

श्वेताम्बर परम्परा के सकलचन्द्र उपाध्याय का प्रतिष्ठापाठ गुजराती अनुवाद सहित प्रकाशित हुआ है। उसमें हरिभद्र सूरि, हेमचन्द्र, श्यामाचार्य गुणरत्नाकरसूरि और जगच्चंद्र सूरीश्वर के प्रतिष्ठाकल्पों का उल्लेख किया गया है। श्वेताम्बर परम्परा के ही आचारदिनकर में प्रतिष्ठाविधि का बड़े विस्तार से वर्णन है। ग्रंथकर्ता वर्धमान सूरि ने दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों शाखाओं के शाखाचार का विचार कर आवश्यक में उक्त आचार का व्यापन किया है। उन्होंने चन्द्रसूरि का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उनकी लघुतर प्रतिष्ठाविधि को आचार दिनकर में विस्तार से कहा गया है। वर्धमानसूरि ने आर्यनन्दि, धापक चंदननन्दि, इन्द्र नन्दि और वज्रस्वामी के प्रतिष्ठाकल्पों का अध्ययन किया था। आचार दिनकर की रचना विक्रम संवत् १४६८ में, कार्तिकी पूर्णिमा को अनंतपाल के राज्य में जालंधरभूषण नन्दवन नामक पुर में पूर्ण हुई थी।^१

श्वेताम्बर शाखा का निर्वाणकलिका नामक ग्रन्थ जैन प्रतिमा विज्ञान के अध्ययन के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है। इसका प्रतिमावलक्षण स्पष्ट और सुबोध है। ग्रन्थ पादलिप्तसूरिकृत कहा जाता है किन्तु वे पश्चात्कालीन आचार्य थे। निर्वाणकलिका के अतिरिक्त नेमिचन्द्र के प्रवचनमारो-द्धार और जिनदत्त सूरि के विवेकविलास में भी जैन प्रतिमाशास्त्रीय विवरण मिलते हैं।

दिगम्बर शाखा के बोधपाहुड, भावसंग्रह (देवमेन) यशस्तिलकचम्पू, प्रवचनसार, धर्मरत्नाकर, आदि ग्रन्थों में जिन पूजा का निर्देश मिलता है। सातवीं शताब्दी ईस्वी में जटासिहनन्दी द्वारा रचित पौराणिक काव्य वरांगचरित के २२-२३ वें सर्ग में जिनपूजा और अभिषेक का वर्णन है

किन्तु उसमें दिक्पालादिक के आवाहन का नामोल्लेख भी नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि जैन पूजा-विधान में दिक्पालादिक को पश्चात्काल में—१० वीं-११ वीं शताब्दी के लगभग—महत्त्व दिया गया। सोमदेवसूरि और आशाधर के ग्रन्थों में दिक्पालादिक को बलि प्रदान करने का विधान है। जान पड़ता है कि सोमदेव के समय में दक्षिण भारतीय जैनों में शासन देवताओं की बड़ी प्रतिष्ठा थी। इसी कारण, सोमदेव को अपने उपासकाध्ययन के ध्यान प्रकरण में स्पष्ट उल्लेख करना पड़ा कि तीनों लोकों के दृष्टा जिनेन्द्रदेव और व्यन्तरादिक देवताओं को जो पूजाविधानों में समान रूप से देखता है, वह नरक में जाता है।^१ सोमदेवसूरि ने स्वीकार किया है कि परमागम में शासन की रक्षा के लिये शासन देवताओं की कल्पना की गयी है। अतः सम्यग्दृष्टि उन्हें पूजा का अंश देकर उनका केवल सम्मान करते हैं।

जैन प्रतिमाशास्त्र के अध्ययन के लिये हरिभद्रसूरि कृत पञ्चवास्तु-प्रकरण और ठक्कर फेरु रचित वास्तुसारप्रकरण विशेष उपयोगी ग्रन्थ हैं। जिनप्रमसूरि के विविधतीर्थकल्प से भी जिनमंदिरों और जिनबिम्बों के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

अनेक जैनेतर ग्रन्थों में जैन प्रतिमाशास्त्रीय ज्ञान सन्निहित है। गुप्त कालीन मानसार के ५५ वें अध्याय में जैन लक्षण विधान है। बराह मिहिर की बृहत्संहिता में जैन प्रतिमाओं के लक्षण बताये गये हैं। अभिलषितार्थ चिन्तामणि, अपराजितपृच्छा, राजवल्लभ, दीपार्णव, देवतामूर्ति प्रकरण और रूपमंडन में भी तीर्थंकरों और शासन देवताओं की प्रतिमाओं के लक्षण बताये गये हैं।

आधुनिक काल में जेम्स बर्जोस, देवदत्त भण्डारकर, बी० भट्टाचार्य, टी० एन० रामचन्द्रन, डाक्टर सांकलिया, डाक्टर उमाकांत परमानन्द शाह, बाबू छोटेलाल जैन प्रभृति विद्वानों ने जैन प्रतिमा शास्त्र विषयक अनुसंधानात्मक प्रबंध प्रकाशित किये हैं। डाक्टर द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, आर० एस० गुप्ते तथा अन्य विद्वानों ने भी अपने प्रतिमा शास्त्रीय ग्रंथों में जैन प्रतिमा शास्त्र विषयक जानकारी सम्मिलित की है। ये सभी जैन प्रतिमा विज्ञान के आधारभूत हैं।

द्वितीय अध्याय जैन मंदिर और प्रतिमाएं

मंदिर निर्माण के योग्य स्थान

मंदिर कैसे स्थान पर निर्मित किये जाना चाहिये ? इस जिज्ञासा का समाधान प्रायः सभी ग्रंथकारों ने एक समान उत्तर देकर किया है । जयसेन ने नगर के शुद्ध प्रदेश में, अटवी में, नदी के समीप में और पवित्र तीर्थभूमि में विराजित जैनमंदिर को प्रशस्त कहा है ।^१ वसुनन्दि के अनुसार, तीर्थकरों के जन्म, निष्क्रमण, ज्ञान और निर्वाण भूमि में तथा अन्य पुण्य प्रदेश, नदीतट, पर्वत, ग्राममन्निवेम, ममुद्रपुलिन आदि मनोज्ञ स्थानों पर जिनमंदिरों का निर्माण किया जाना चाहिये ।^२ अपराजितपृच्छा में जिनमंदिरों को शान्तिदायक स्वीकार किया गया है और उन्हें नगर के मध्य में बनाने का विधान किया गया है ।^३

जिनमंदिर के लिये भूमि का चयन करत समय अनेक उपयोगी बातों पर विचार करना होता है, भूमि शुद्ध हो, रम्य हो, स्निग्ध हो, सुगंधवाली हो, दूर्बा से आच्छादित हो, पाली न हो, बड़ा कीड़े-मकोड़ों का निवास न हो और श्मशान भूमि भी न हो ।^४ भूमि का चयन मंदिर निर्माण विधि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है । योग्य भूमि पर निर्मित प्रासाद ही दीर्घकाल तक स्थित रह सकता है ।

विभिन्न ग्रंथकारों ने भूमिपरीक्षा के दो उपाय बताये हैं । जिस भूमि पर मंदिर निर्मित करने का विचार किया गया हो, उसमें एक हाथ गहरा गड्ढा खोदा जावे और फिर उस गड्ढे को उसी में से निकली मिट्टी से पूरा जावे । ऐसा करने पर यदि मिट्टी गड्ढे से अधिक पड़े तो वह भूमि श्रेष्ठ मानी गई है । यदि मिट्टी गड्ढे के बराबर हो तो भूमि मध्यम कांठि की होती है और यदि उतनी मिट्टी से गड्ढा पुनः पूरा न भरे तो वह भूमि अधम जाति की

१. प्रतिष्ठापाठ, १२५ ।

२. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ३/३, ४ ।

३. अपरा० १७६/१४ ।

४. आशा० १/१८; वसुविन्दु, २८ ।

होती है। वहां मंदिर का निर्माण नहीं करना चाहिये।^१ ठक्कर फेर ने यह उपाय भी बताया है कि उत्खात गड्ढे को जल से परिपूर्ण कर सौ कदम दूर जाइये। लौट कर आने पर यदि गड्ढे का जल एक अंगुल कम मिले तो भूमि को उत्तम, दो अंगुल कम मिलने पर मध्यम और तीन अंगुल कम होने पर अघम समझना चाहिये।^२ निर्वाणकलिकाकार ने गड्ढे के सम्पूर्ण भरे रहने पर भूमि को श्रेष्ठ, एक अंगुल खाली होने पर मध्यम और उससे अधिक खाली हो जाने पर निकृष्ट कहा है।^३

प्रतिष्ठाग्रंथों तथा वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों में मंदिरों के प्रकार आदि का विवरण मिलता है किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ का विवेच्य विषय नहीं होने के कारण तद्विषयक विवेचन यहां नहीं किया जा रहा है।

प्रतिमा घटन द्रव्य

प्राचीन काल में मंदिरों में प्रतिष्ठा करने के लिये प्रतिमाओं का निर्माण किया जाता था। वे दो प्रकार की होती थी, प्रथम चल प्रतिमा और द्वितीय अचल प्रतिमा। अचल प्रतिमा अपनी वेदिका पर स्थिर रहती है किन्तु चल प्रतिमा विशिष्ट विशिष्ट अवसरों पर मूल वेदी से उठाकर अस्थायी वेदी पर लायी जाती है और उत्सव के अन्त में यथास्थान वापस पहुंचायी जाती है। अचल प्रतिमा को ध्रुववर और चल प्रतिमा को उत्सववर कहा जाता है। इन्हें क्रमशः स्थावर और जंगम प्रतिमा भी कहते हैं।

वसुनन्दि के श्रावकाचार में मणि, रत्न, स्वर्ण, रजत, पीतल, मुक्ताफल और पापाण की प्रतिमाएं निर्मित किये जाने का विधान है।^४ जयसेन ने स्फटिक की प्रतिमाएं भी प्रशस्त बतायी है।^५ काष्ठ, दन्त और लोहे की प्रतिमाओं के विषय में विभिन्न आचार्यों में मतभेद है। कुछ आचार्यों ने काष्ठ, दन्त और लोहे की प्रतिमाओं के निर्माण का किसी भी प्रकार से उल्लेख नहीं किया है। कुछ ने इन द्रव्यों से जिनबिम्ब निर्माण किये जानेका स्पष्ट निषेध किया है

१. आशा० १।१६ ; वसुवन्दु २६ ; वास्तुसारप्रकरण १।३, निर्वाण कलिका, पन्ना १०।

२. वास्तुसारप्रकरण १।४.

३. निर्वाणकलिका, पन्ना १०।

४. श्रावकाचार, ३६०।

५. प्रतिष्ठापाठ, ६६।

जबकि कुछ ने ऐसे बिम्बों की प्रतिष्ठाविधि का वर्णन किया है। भट्टकालंक ने मिट्टी, काष्ठ और लौह से निर्मित प्रतिमाओं को प्रतिष्ठेय बताया है।^१ वर्धमानसूरि ने काष्ठमय, दन्तमय और लेप्यमय प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाविधि का वर्णन किया है^२ किन्तु काम, शीसे और कलई की प्रतिमाओं के निर्माण का निषेध किया है। जयसेन आदि आचार्यों ने मिट्टी, काष्ठ और लेप से बनी प्रतिमाओं को पूज्य नहीं बताया है।^३ यद्यपि जीवन्तस्वामी की चन्दनकाष्ठ की प्रतिमा निर्मित किये जाने का प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है^४ पर ऐसा प्रतीत होता है कि काष्ठ जैसे भंगुर द्रव्यों से जिनप्रतिमाएं निर्मित किये जाने की विचारधारा को जैन परम्परा में कभी स्थायी मान्यता प्राप्त नहीं हो सकी। पाषाण की प्रतिमाएं निर्मित किया जाना सर्वाधिक मान्यताप्राप्त एवं व्यावहारिक रहा।

प्रतिमा निर्माण के लिये शिला के अन्वेषण और उसके गुण दोषों के विचार के विषय में भी प्राचीन ग्रन्थों में विवेचन मिलता है। आशाधर ने लिखा है कि जब जिनमंदिर के निर्माण का कार्य पूरा हो जावे अथवा पूरा होने को हो तो प्रतिमा के लिये शिला का अन्वेषण करने शुभ लग्न और शकुन में इष्ट शिल्पी के साथ जाना चाहिये।^५ वमुनन्दि ने श्वेत, रक्त, श्याम, मिश्र, पारावत, मुद्ग, कपोत, पद्म, मांजिष्ठ, और हरित वर्ण की शिला को प्रतिमा निर्माण के लिये उत्तम बताया है।^६ वह शिला कठिन, शीतल, स्निग्ध, सुग्वाद सुस्वर, दृढ़, सुगन्धयुक्त, तेजस्विनी और मनांज होना चाहिये।^७ विन्दु और रेखाओं वाली शिला प्रतिमा निर्माण कार्य के लिये वर्ज्य कही गयी है। उसी प्रकार, मृदु, विवर्ण, दुर्गन्धयुक्त, लघु, रूक्ष, घूमल और निःशब्द शिलाएं भी अयोग्य ठहरायी गयी हैं।^८

१. तद्याग्रैः मगुगंद्रव्यैर्निर्दीर्षैः प्रोद्धशिल्पिना ।

रत्नपाषाणमृद्दारुलोहाद्यैः साधुनिर्मितम् ॥

२. आचार दिनकर, उदय ३३ ।

३. प्रतिष्ठापाठ, १८३ ।

४. उमाकान्त परमानन्द शाह : स्टडीज इन जैन आर्ट, पृष्ठ ४ ।

५. प्रतिष्ठासारोद्धार, १।६६ ।

६. प्रतिष्ठासारसं ह, ३।७७ ।

७. वही, ३।७८ । प्रतिष्ठामारोद्धार, १।५०, ५१ ।

८. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ३।७६ ।

गृह पूज्य प्रतिमाएं

निवास गृह में पूज्य प्रतिमाओं की अधिकतम ऊँचाई के विषयमें जैन ग्रन्थकारों में किञ्चित् मतभेद दिखायी पड़ता है। दिगम्बर शाखा के वसुनन्दि ने द्वादश अंगुल तक ऊँची प्रतिमा को घर में पूजनीय बताया है।^१ किन्तु ठक्कर फेरु ग्यारह अंगुल तक ऊँची प्रतिमा को ही गृह पूज्य कहते हैं।^२ इस का मुख्य कारण यह है कि ठक्कर फेरु ने सम अंगुल प्रमाण प्रतिमाओं को अशुभ माना है। आचारदिनकरकार भी विषम अंगुल प्रमाण की ही प्रतिमाएँ निमित्त किये जाने का विधान और सम अंगुल प्रमाण की प्रतिमाएँ निमित्त करनेका निषेध करते हैं।^३

ठक्कर फेरु ने सिद्धों की केवल धातुनिमित्त प्रतिमाओं को ही गृह पूज्य बताया है। सकलचन्द्र उपाध्याय जैसे ग्रन्थकारों ने बालब्रह्मचारी तीर्थंकरों की प्रतिमाओं को भी गृहपूज्य नहीं कहा है क्योंकि उन प्रतिमाओं के हर क्षण दर्शन करते रहनेसे परिवार के सभी लोगों को वैराग्य हो जाने की आशंका हो सकती है। मलिन, खण्डित, अधिक या हीन प्रमाण वाली प्रतिमाएँ भी गृह में पूज्य नहीं है।

अपूज्य प्रतिमाएँ

रूपमण्डनकार ने हीनांग और अधिकांग प्रतिमाओं के निर्माण का सर्वथा निषेध किया है।^४ शुक्रनीति में हीनांग प्रतिमा को, निर्माण कराने वाले की और अधिकांग प्रतिमा को शिल्पी की मृत्यु का कारण बताया है।^५ जैन परम्परा के ग्रन्थों में भी वक्रांग, हीनांग और अधिकांग प्रतिमा निर्माण को भारी दोष माना गया है। वास्तुसार प्रकरण में सदोष प्रतिमा के कुफल का विस्तार से वर्णन है। टेढ़ी नाकवाली प्रतिमा बहुत दुखदायी होती है। प्रतिमा के अंग छोटे हों तो वह क्षयकारी होती है। कुनयन प्रतिमा में नेत्रनाश और अल्पमुखवाली प्रतिमा के निर्माण से भांगहानि होती है। यदि प्रतिमा की कटि

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/७७
२. वास्तुसारप्रकरण, २/४३
३. आचार दिनकर, उदय ३३।
४. रूपमण्डन १/१४.
५. शुक्रनीति, ४/५०६

हीनप्रमाण हो तो आचार्य का नाश होता है। हीनजंघा प्रतिमा से पुत्र और बंधु की मृत्यु हो जाती है। प्रतिमा का आसन हीनप्रमाण होने से ऋद्धियाँ नष्ट होती हैं। हाथ-पैर हीन होने से धन का क्षय होता है। प्रतिमा की गर्दन उठी हुयी हो तो धन का विनाश, वक्रग्रीवा में देश का विनाश और अघोमुखसे चिन्ताओं की वृद्धि होती है। ऊँच-नीच मुखवाली प्रतिमासे विदेशगमन का कष्ट होता है। अन्यायोपात्त धन से निर्मित कर्गयी गयी प्रतिमा दुर्भिक्ष फैलाती है। रौद्र प्रतिमामे निर्माण करानेवाले की और अधिकाग प्रतिमा में शिल्पी की मृत्यु होती है। दुर्बल भ्रंगवाली प्रतिमासे द्रव्य का नाश होता है। तिरछी दृष्टि वाली प्रतिमा अपूज्य है। अति गाढ दृष्टि युक्त प्रतिमा अशुभ एवं अघोदृष्टि प्रतिमा विघ्नकारक होती है।^१ वसुनन्दि न जिनप्रतिमामे नामाग्रनिहित, शान्त, प्रसन्न एवं मध्यस्थ दृष्टि को उत्तम बताया है। बीतराग की दृष्टि न तो अन्यन्त उन्मीलित हो और न विस्फुग्नि हो। दृष्टि तिरछी, ऊँची या नीची न हो इसका विशेष ध्यान रखे जाने का विधान है।^२ वास्तुसारप्रकरण के ममान वसुनन्दि ने भी अपने प्रतिष्ठासारसंग्रह में सदोष प्रतिमा के निर्माण से होने वाली हानियों का विवरण दिया है।^३ आशाघर एडित और वर्धमानसूरि ने भी अनिष्टकारी, विकृतांग और जर्जर प्रतिमाओं की पूजा का निषेध किया है।^४ यद्यपि महाभारत के भीष्म पर्व, बृहत्संहिता, रूपमण्डन आदि ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि प्रतिमा के निर्माण, प्रतिष्ठा और पूजन में यथेष्ट विधि के अपालन के कारण प्रतिमा में विभिन्न विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। किन्तु बीतराग भगवान् की प्रतिमामें विकृति उत्पन्न होने का कोई उल्लेख किसी भी जैन ग्रन्थमें नहीं मिलता।

भग्न प्रतिमाएँ

भग्न प्रतिमाओं की पूजा नहीं की जाती। उन्हें सम्मान के साथ विमजित कर दिया जाता है। मूलनायक प्रतिमा के मुख, नाक, नेत्र, नाभि और कटि के भग्न हो जाने पर वह त्याज्य होती है।^५ जिनप्रतिमा के विभिन्न अंग-

१. वास्तुसार प्रकरण, २/४६-५१
२. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ४/७३-७४.
३. वही, ४/७५-८०
४. प्रतिष्ठासारोद्धार, १/८३; आचार दिनकर, उदम ३३
५. वास्तुसारप्रकरण, २/४०

प्रत्यंगो के भंग होने का फल बताते हुये ठक्कुर फेरु ने कहा है कि नखभंग होने से शत्रुभय, ग्रंगुली-भंग मे देशभंग, बाहु भंग होने से बंधन, नासिका भंग होने से कुलनाय और चरण भंग होने से द्रव्यक्षय होता है ।^१ किन्तु इन्ही ग्रन्थकार का यह भी मत है कि जो प्रतिमाएँ सो वर्ष से अधिक प्राचीन हो और महा-पुरुषों द्वारा स्थापित की गयी हो, वे यदि विकलांग भी हो जावें तब भी पूजनीय है ।^२ आचार दिनकरकार ने भी यह मत स्वीकार किया है, किन्तु उन्होने उन प्रतिमाओं को केवल चैत्य मे रखने योग्य कहा है, गृह में पूज्य नहीं ।^३

भग्न प्रतिमाओं के जीर्णोद्धार के संबंध मे भी विभिन्न ग्रन्थों में उल्लेख मिलते है । रूपमण्डन^४ मे धातु, रत्न और विलेप की प्रतिमाओं के अंगभंग होने पर उन्हे संस्कार योग्य बताया है किन्तु काष्ठ और पाषाण की प्रतिमाओं के जीर्णोद्धार का निषेध किया गया है । ठक्कुर फेरु केवल धातु और लेप की प्रतिमाओं के जीर्णोद्धार के पक्ष में है, वे रत्न, काष्ठ और पाषाण की प्रतिमाओं को जीर्णोद्धार के अयोग्य मानते है ।^५ आचारदिनकरकार भी इसी मत के समर्थक है ।^६ निर्वाणकविका मे शैलमय विम्ब के विसर्जन की विधि बतायी है किन्तु स्वर्णविम्ब को पूर्ववत् निर्मित कर पुनः प्रतिष्ठेय कहा गया है ।^७

जिन प्रतिमा के लक्षण

जैन प्रतिष्ठाग्रन्थो और बृहत्संहिता, मानसार, समरागणसूत्रधार, अपराजितपृच्छा, देवतामूर्तिप्रकरण, रूपमण्डन आदि ग्रन्थों मे जिन प्रतिमा के लक्षण बताये गये है । जिन प्रतिमाएँ केवल दो आसनों मे बनायी जाती हैं, एक तो कायोत्सर्ग आसन जिसे खड्गासन भी कहते है और द्वितीय पद्मासन । इसे कही कही पर्यक आसन भी कहा गया है । इन दो आसनों को छोडकर किसी अन्य आसन मे जिनप्रतिमा निर्मित किये जान का निषेध किया गया है ।

१. वास्तुसागरप्रकरण, २/४४
२. वही २/३६
३. आचारदिनकर, उदय ३३
४. १/१२
५. वास्तुमारप्रकरण, २/४१
६. उदय ३३
७. पत्र ३१

जयमेन ने जिन त्रिमूर्ति को शान, नामाप्रदृष्टि, प्रशस्तमानोन्मानयुक्त, ध्यानारूढ एवं त्रिचिह्न नम्रप्रोव बनाया है। कायोन्मर्ग आसन में हाथ लम्बा-यमान रहने है एवं पदमासन प्रतिमा में वामहस्त की हथेली दक्षिण हस्त की हथेली पर रखी हुयी होती है।^१ जिन प्रतिमा दिग्म्बर, श्रीवृक्षयुक्त नखकेश-विहीन, परम शान्त, वृद्धत्व तथा बाल्य रजित, तरुण एवं वैराग्य गुण में भूषित होती है। वमुनन्दि^२ और आशाधर पंडित^३ ने भी जिन प्रतिमा के उपयुक्त लक्षणों का निरूपण किया है। विवेक-विलास में कायाःसर्ग और पद्यासन प्रतिमाओं के सामान्य लक्षण बताये गये हैं।^४

सिद्धपरमेष्ठी की प्रतिमाओं में प्रातिहार्य नहीं बनाये जाते।^५ अर्हत्प्रतिमाओं में उनका होना आवश्यक है। अर्हत् और सिद्ध, दोनों की मूल प्रतिमाएँ बनायी तो समान जाती हैं पर अष्ट प्रातिहार्यों के ज्ञान अथवा न होने की अवस्था में उनकी पहचान होती है। अर्हत् अवस्था की प्रतिमा में अष्ट प्रातिहार्यों के साथ दाहिने ओर यज्ञ, बाएँ ओर यक्षी और पादपाठ के नीचे जिनका लालन भी दिखाया जाता है।^६ तिलोयपण्णत्ती में भी गितासन तथा यक्षयुगल में युक्त जिन प्रतिमाओं का वर्णन है। ठाकर फेर ने तीर्थकर प्रतिमा के आसन और परिकर का विस्तार में वर्णन किया है।^७ मानमार में भी जिन प्रतिमाओं के परिकर आदि का वर्णन प्राप्त है। अपराजितपृच्छा में यक्ष-यक्षी, लालन और प्रातिहार्यों की याजना का विधान है।^८ मूलधार मंडन के दोनो ग्रन्थों में जिन प्रतिमा की छत्रत्रय, अगोकद्रुम, देवदुन्दुभि, निहामन, धर्मचक्र आदि में युक्त बताया गया है।

१. प्रतिष्ठापाठ, ७०
२. प्रतिष्ठासार संग्रह ४/१, २, ४
३. प्रतिष्ठामारोद्धार, १/६३
४. विवेक विलास १/१२८--१३०
५. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ४।७०
६. प्रतिष्ठामारोद्धार, १/७६--७७
७. वास्तुसारप्रकरण, २/२६--३८
८. अपराजितपृच्छा, १३३/२६--२८

प्रत्येक तीर्थंकर प्रतिमा अपने लांछन से पहचानी जाती है। वह लांछन प्रतिमा के पादपीठ पर अंकित किया होता है।^१ किन्तु, कुछ तीर्थंकरों की प्रतिमाओं में उनके विशिष्ट लक्षण भी दिखाये जाते हैं, जैसे आदि जिनेन्द्र की प्रतिमा जटाशेखर युक्त होती है,^२ सुपार्श्वनाथ के मस्तक पर सर्प के पांच फणों का छत्र^३ और पार्श्वनाथ के मस्तक पर सातफणों वाले नाग का छत्र होता है।^४ बलराम और वामुदेव सहित नेमिनाथ की प्रतिमा मथुरा में प्राप्त हुयी है।

आचार्यों और साधुओं की प्रतिमाएं पिच्छिका, कमण्डलु या पुस्तक के सद्भाव के कारण पहचान ली जाती हैं।

१. अति प्राचीन प्रतिमाओं में लांछन नहीं होते थे। मथुरा की कुषाण कालीन जिन प्रतिमाओं में लांछन नहीं हैं।
२. तिलोयपण्णत्ती, ४/२३०
३. पद्मानंदमहाकाव्य, १/१०
४. वही, १/२६

तृतीय अध्याय तालमान

जैन और जैनेतर शिल्पग्रन्थों में जिन प्रतिमा के मानादिक का विवरण मिलता है। रूपमण्डन जैसे कुछ ग्रन्थों में जिन प्रतिमा का ऊर्ध्वमान दशताल कहा गया है किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नवताल जिनप्रतिमा के निर्माण विधान की मान्यता प्रायः प्रचलित रही है और शिल्पकारों ने अधिकतर उसी का अनुसरण किया है।

परमाणु तालमान की सबसे छोटी इकाई है। वह अत्यन्त सूक्ष्म स्वरूपी है। तिलोयपण्णत्ती में^१ बताया गया है कि परमाणुओं के अनंतानंत बहुविध द्रव्य से एक उपसन्नासन्न स्कंध बनता है और आठ उपसन्नासन्न स्कंधों के बराबर एक सन्नासन्न स्कंध होता है।

सन्नासन्न स्कंध से ऊंची इकाईयों को तिलोयपण्णत्तीकार इस प्रकार बताते हैं ।^२--

- ८ सन्नासन्न स्कंध = १ त्रुटिरेणु
- ८ त्रुटिरेणु = १ त्रसरेणु
- ८ त्रसरेणु = १ रथरेणु
- ८ रथरेणु = १ उत्तम भोगभूमि का बालाग्र
- ८ उत्तम भोगभूमि बालाग्र = १ मध्यम भोगभूमि का बालाग्र
- ८ मध्यम भोगभूमि बालाग्र = १ जघन्य भोगभूमिका बालाग्र
- ८ जघन्य भोगभूमि बालाग्र = १ कर्मभूमि का बालाग्र
- ८ कर्मभूमि बालाग्र = १ लिक्षा
- ८ लिक्षा = १ जूं
- ८ जूं = १ यव
- ८ यव = १ अंगुल

१. १/१०२-१०३

२. १/१०४-१०६

कौटिल्य के अर्थशास्त्र (२,२०, २-३) में ८ परमाणु=१ रथरेणु और ८ रथरेणु=१ लिखा का मान बताया गया है। बृहत्संहिता में रेणु और लिखा के बीच वालाग्र का भी विचार किया गया है। तदनुसार ८ परमाणु=१ रजांश, ८ रजांश=१ वालाग्र और ८ बालाग्र=१ लिखा का क्रम होता है।

आठ यवमध्यों का अंगुल कहते हुये भी अर्थशास्त्रकार ने बताया है कि सामान्यतया मध्यम कद के पुरुष की मध्य अंगुली के मध्य भाग की मोटाई एक अंगुल का मान है।^१

तिलोयपण्णत्तीकार ने तीन प्रकार के अंगुल बताये हैं, उत्संधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल।^२ उन्होंने बताया है कि जो अंगुल उपयुक्त परिभाषा से सिद्ध किया गया है वह उत्संधसूच्यंगुल है। प्रमाणांगुल पाँच सौ उत्संधांगुल के बराबर होता है तथा भरत और ऐरावत क्षेत्र में उत्पन्न मनुष्यों के अपने अपने काल के अंगुल का नाम आत्मांगुल है।

उपयुक्त तीन प्रकार के अंगुलों में से पाँच सौ उत्संधसूच्यंगुल के बराबर वाले अंगुल के मान से प्रतिमात्रों का निर्माण किया जा सकता वर्तमान काल के लिये असंभव तो है ही, पर आठ यवमध्य वाले अंगुल और स्वकीय अंगुल के मानवाली प्रतिमात्रों का निर्माण भी शास्त्रीय मानयोजना के अनुसार अद्यावहारिक था। स्वकीयांगुल मान से यह स्पष्ट नहीं होता कि वह मूर्ति निर्माण करानेवाले का अंगुल होना चाहिये अथवा शिल्पी का अंगुल। दोनों के अंगुल की मोटाई में आधिक्य और न्यूनता की संभावना हो सकती है। ऐसी स्थिति में, यह प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में प्रतिमा निर्माण कार्य के लिये न तो आठ यव वाले अंगुल के मान को और न शिल्पकार अथवा निर्माता के अंगुल वाले मान को ही सुनिश्चित मान माना जा सका था। एक ही समय में और संभवतः एक ही शिल्पी द्वारा निर्मित भिन्न-भिन्न प्रतिमाएं छाटी और बड़ी मिलती है। यदि उपयुक्त मानयोजना के अनुसार वे निर्मित की गयी होती तो उनका मान एक सा होना चाहिये था। इसलिये यह मानना पड़ेगा कि उपयुक्त मानों के अतिरिक्त एक और मान को वास्तविक मान्यता प्राप्त थी

१. अर्थशास्त्र, २,२०,७

२. तिलोयपण्णत्ती, १।१०७

जिसका उपयोग प्राचीन प्रतिमा निर्माण में किया जाता था। वह मान है प्रतिमा का मुख।

वसुनन्दि ने ताल, मुख, वितस्ति और द्वादशांगुल को समानार्थी बताया है और उस मान से बिम्ब निर्माण का विधान किया है।^१ प्रतिमा के मुख को एक भाग मानकर सम्पूर्ण प्रतिमा के नौ भाग किये जाने चाहिये। तदनुसार वह प्रतिमा नौ ताल या १०८ अंगुल की होगी। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि नवताल प्रतिमा का नवा भाग एकताल और उसका १०८ वां भाग एक अंगुल कहलावेगा।

वसुनन्दि ने नवताल में बनी ऊर्ध्व (कायोत्सर्ग आसन) जिन प्रतिमा का मान इस प्रकार बताया है :-

मुख	१ ताल (१२ अंगुल)
श्रीवाध.भाग	४ अंगुल
कण्ठ से हृदय तक	१२ अंगुल
हृदय से नाभि तक	१ ताल (१२ अंगुल)
नाभि से मेढू तक	१ मुख (१२ अंगुल)
मेढू से जानु तक	१ हस्त (२४ अंगुल)
जानु	४ अंगुल
जानु से गुल्फ तक	१ हस्त (२४ अंगुल)
गुल्फ से पादतल तक	४ अंगुल

योग १०८ अंगुल — ९ ताल^१

प्रतिष्ठासामग्रह (वसुनन्दि) ने प्रतिमा के अंग-उपांगों के मान का विस्तार से विवरण दिया है।^१ द्वादशांगुल विम्बीर्ण और आयत केशान्त मुख के तीन भाग करने पर ललाट, नामिका और मुख (वचन) प्रत्येक भाग ४-४ अंगुल का होता है। नामिकारंध्र ८^१ यव और नासिकापाली ४ यव होना चाहिये। ललाट का नियंक् आयाम आठ अंगुल बताया गया है। उसका आकार अर्धचंद्र के समान होता है। पांच अंगुल आयत केशस्थान में उष्णीष दो अंगुल

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ४-५

२. रूपमण्डन की नवताल प्रतिमा का भी यही मान है।

३. परिच्छेद ४

उन्नत होता है। जयसेन (वसुविन्दु) के प्रतिष्ठापाठ में भी जिनप्रतिमा के तालमान संबंधी विवरण उपलब्ध हैं। वे प्रायः वसुनन्दि के समान ही हैं। जयसेन ने भ्रू-ललाटा को ४ अंगुल आयत, मध्य में स्थूल, छोर में कृश अर्थात् धनुषाकार कहा है। नेत्रों की पलकों ऊपर-नीचे नदी के तटों के समान होती हैं। श्रोणिका का विस्तार ४ अंगुल, जिसका मध्यभाग १ अंगुल उच्छ्रित होता है। चिबुक ३½ अंगुल, उसके मूल से लेकर हनु तक का अन्तर ४ अंगुल। कर्ण और नेत्र का अन्तर भी ४ अंगुल। आदि आदि

पद्मासन जिनप्रतिमा का उत्सेध कायोत्सर्ग प्रतिमा से आधा अर्थात् ५४ अंगुल बताया गया है। उसका तिर्यक् आयाम एक समान होता है। एक घुटने से दूसरे घुटने तक, दायें घुटने से बायें कंधे तक, बायें घुटने से दायें कंधे तक और पादपीठ से केशांत तक चारों सूत्रों का मान एक बराबर बताया गया है। वसुनन्दि के अनुसार, पद्मासन प्रतिमा के बाहुयुग्म के अंतरित प्रदेश में चार अंगुल का ह्रास तथा प्रकोष्ठ से कूर्पर पर्यन्त दो अंगुल की वृद्धि होती है।^१

वास्तुसारप्रकरण के द्वितीय प्रकरण में पद्मासन और कायोत्सर्ग जिन प्रतिमाओं के मान संबंधी विवरण श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार दिये गये हैं। वास्तुसारप्रकरण के रचयिता ठक्कर फेरु पद्मासन प्रतिमा को समचतुरस्र संस्थान युक्त कहते हैं। तदनुसार उसके चारों सूत्र बराबर होते हैं किन्तु उनके अनुसार पद्मासन प्रतिमा ५६ अंगुल मान की होती है जो इस प्रकार है :-

भाल	४ अंगुल
नासा	५ अंगुल
वचन	४ अंगुल
श्रीवा	३ अंगुल
हृदय	१२ अंगुल
नाभि	१२ अंगुल
गुह्य	१२ अंगुल
जानु	४ अंगुल

योग ५६ अंगुल^२

१ प्रतिष्ठासारसंग्रह, ४/६८

२. वास्तुसारप्रकरण, २/८

ठक्कर फेर ने कायोत्सर्ग प्रतिमा को नवताल अर्थात् १०८ अंगुल की बताया है।^१ उन्होंने ऊर्ध्व (कायोत्सर्ग) प्रतिमा के अंगविभाग के ग्यारह स्थान बतलाये हैं जो निम्न प्रकार हैं:-

ललाट	४ अंगुल
नासिका	५ अंगुल
वचन (मुख)	४ अंगुल
ग्रीवा	३ अंगुल
हृदय	१२ अंगुल
नाभि	१२ अंगुल
गुह्य	१२ अंगुल
जंघा	२४ अंगुल
जानु	४ अंगुल
पिण्डी	२४ अंगुल
चरण	४ अंगुल

योग १०८ अंगुल = ९ ताल^२

ठक्कर फेर द्वारा दिये गये अन्य विवरण ये हैं :-^३

कानों के अंतराल में मुख का विस्तार	१४ अंगुल
गले का विस्तार	१० अंगुल
छाती प्रदेश	३६ अंगुल
कटि प्रदेश का विस्तार	१६ अंगुल
शरीर की मोटाई	१६ अंगुल
कान का उदय	१० भाग

१. वास्तुसारप्रकरण, २।५

२. वही, २।६-७। पाठान्तरमें ललाट, नासिका, वचन, स्तनसूत्र, नाभि, गुह्य, उरु, जानु, जंघा और चरण, ये दस स्थान क्रमशः ४, ५, ४, १३, १४, १२, २४, ४, २४, ४ अंगुल प्रमाण बताये गये हैं।

३. वास्तुसारप्रकरण, २।६-२५

कान का विस्तार	३ भाग
कान की लौंडी	२ ३/४ भाग
कान का आधार	१ भाग
आँख की लम्बाई	४ भाग
आँख की चौड़ाई	१ ३/४ भाग
आँख की काली पुतली	१ भाग
भ्रुकुटि	० भाग
कपोल	६ अंगुल
नागिका का विस्तार	३ भाग
नासिका का उदय	२ भाग
नासिकाग्र की मोटाई	१ भाग
नासिका शिखा	३/४ भाग
अधर की दीर्घता	५ भाग
अधर का विस्तार	१ अंगुल
श्रीवत्स का उदय	५ भाग
श्रीवत्स का विस्तार	४ भाग
स्तनवटिका का विस्तार	१ ३/४ अंगुल
नाभि का विस्तार	१ भाग
श्रीवत्स और स्तन का अन्तर	६ भाग
स्तनवटिका और कक्ष का अन्तर	५ भाग
स्कंध	८ भाग
कुहनी	७ अंगुल
मणिबंध	४ अंगुल
जंघा	१२ भाग
जानु	८ भाग
एड़ी	४ भाग
स्तनसूत्र से नीचे भुजा	१२ भाग
स्तनसूत्र से ऊपर स्कंध	६ भाग
हाथ और पेट का अन्तर	१ अंगुल
उत्संग का विस्तार	४ अंगुल
उत्संग की लम्बाई	६ अंगुल

एड़ी से मध्य अंगुली तक	१५ अंगुल
एड़ी से अंगूठे तक	१६ अंगुल
एड़ी से कनिष्ठिका तक	१४ अंगुल
चरण की दीर्घता	१६ अंगुल
चरण का विस्तार	८ अंगुल
चरण का उदय	४ अंगुल

जिनप्रतिमा के सिंहासन और परिकर के मान का भी ठक्कर फेर ने विवरण दिया है। प्रतिमा की अपेक्षा सिंहासन दीर्घता में डेढ़ा, विस्तार में आधा और मोटाई में चतुर्थांश होना चाहिये। उस पर गज, सिंह आदि नौ या सात रूपक होते हैं। सिंहासन के दोनों ओर यक्ष-यक्षिणी, एक-एक सिंह, एक-एक गज, एक-एक चामरधारी और उनके बीच में चक्रधारिणी चक्रेश्वरी देवी बनाने का विधान है। इनका मान इस प्रकार है :—

दायें ओर यक्ष	१४ भाग
बायें ओर यक्षी	१४ भाग
सिंह	१२-१२ भाग
गज	१०-१० भाग
चामरधारी	३-३ भाग
चक्रेश्वरी	६ भाग

तदनुसार सिंहासन की कुल लम्बाई ८८ भाग।^१ चक्रेश्वरी देवी के नीचे धर्मचक्र, और उसके दोनों ओर एक-एक हरिण तथा मध्यभागमें तीर्थंकर का चिह्न बनाया जाता है।^२

परिकर के पखवाड़े का उदय कुल ५१ भाग होता है।^३ उममें आठ भाग चामरधारी का पादपीठ, ३१ भाग चामरधारी और तदुपरि १२ भाग तोरण के शिर तक। चामरधारी देवेंद्रों की दृष्टि मूलनायक प्रतिमा के स्तनमूत्र के बराबर होती है। परिकर के छत्रवटा में, १० भाग अर्धछत्र, १ भाग कमल-नाल, १३ भाग मालाधारी, २ भाग स्तंभिका, ८ भाग द्द्विभवाटक, (तिलक

१. वास्तुसारप्रकरण, २/२७

२. वही, २/२८

३. वही, २/३०

के मध्य में घण्टा), २ भाग स्तंभिका, ६ भाग मकरमुख, इस प्रकार एक ओर ४२ भाग होने से दोनों तरफ का छत्रवटा ८४ भाग होता है।^१

छत्र २४ भाग होता है। तदुपरि छत्रत्रय का उदय १२ भाग, तदुपरि शंखधारी ८ भाग, तदुपरि वंशपत्रादि ६ भाग। इस प्रकार छत्रवटा का उदय ५० भाग का होता है।^२ छत्रत्रय का विस्तार २० अंगुल, निर्गम दस भाग, भामण्डल का विस्तार २२ भाग और प्रसार ८ भाग।^३ दोनों ओर के मालाधारी १६-१६ भाग के, तदुपरि हाथी १८-१८ भाग के।

हाथी पर हरिनैगमेष, उनके सम्मुख दुन्दुभिवादक और मध्य में छत्रोपरि शंख फूकने वाला होता है।^४

परिकर के पखवाड़े में दोनों चामरधारियों और वंशी-वीणाधारियों के स्थान पर कायोत्सर्ग जिन प्रतिमाएं स्थितकर परिकर में पंचतीर्थों की योजना की जा सकती है।^५

आचार दिनकर में सिंहासन और परिकर का स्वरूप इस प्रकार बताया गया है। जिन विम्ब के सिंहासन पर गज, सिंह, कीचक का अंकन, दोनों पार्श्व में चामरधारी और उनके बाह्य की ओर अञ्जलिधारी। मस्तक के ऊपर छत्रत्रय, छत्रत्रय के दोनों ओर मूंड में स्वर्णकलश लिये श्वेतगज, तदुपरि भांभ बजाते पुरुष, तदुपरि मालाधारी, शिखर पर शंख फूकने वाला और तदुपरि कलश।^६ आचार दिनकर कार ने सिंहासन के मध्य भाग में दो हरिणों के बीच धर्मचक्र और धर्मचक्र के दोनों ओर ग्रहों की प्रतिमाएं बनाने का भी मत प्रकट किया है।^७

नेमिचन्द्र, वमुनन्दि तथा अन्य दिग्मन्त्र लेखकों ने भी जिनप्रतिमा के साथ सिंहासन, दिव्यध्वनि, चामरेन्द्र, भामण्डल, अशोकवृक्ष, छत्रत्रय, दुन्दुभि

१. वास्तुसार प्रकरण, २/३२--३३

२. वही, ३/३४

३. वही, २/३५

४. वही, २।३६

५. वही, २।३८

६. आचार दिनकर, उदय ३३

७. वही, उदय ३३

८. प्रतिष्ठामारसंग्रह, ५।७४-७५; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ५७६-५८१

और पुष्पवृष्टि इन आठ प्रातिहार्यों की योजना किये जाने का उल्लेख किया है। प्रातिहार्य योजना का निर्देश अपराजितपृच्छा^१ और रूपमण्डन^२ में भी मिलता है। रूपमण्डन के अनुसार जिन की प्रतिमाएं छत्रत्रय और त्रिरथिका से युक्त होती हैं। वे अशोक द्रुमपत्र दुन्दुभिवादक देवों, सिंहासन, असुरादि, गज, सिंह से विभूषित होती हैं। मध्य में कर्मचक्र (धर्मचक्र) होता है और दोनों पाश्वर्कों में यक्ष-यक्षिणी। परिकर का बाह्य विस्तार दो ताल और दीर्घता मूल प्रतिमा के बराबर बनाना चाहिये। इनके ऊपर तोरण होना चाहिये। बाह्य पक्षमें गौसिंहादि से अलंकृत बाहिकाएं और द्वारशाखा से युक्त प्रतिमा बनानी चाहिये तथा उसमें विभिन्न देवताओं की मूर्तियां बनी होना चाहिये। रथिकाओं के नाम रूपमण्डनकार ने ललित, चेतिकाकार, त्रिरथ, बलितोदर, श्रीपुञ्ज, पञ्चरथिक और आनन्दवर्धन ये सात दिये हैं। रूपमण्डन के अनुसार रथिका में ब्रह्मा, विष्णु, ईश, चण्डिका, जिन, गौरी, गणेश, अपने-अपने स्थान पर होते हैं।^३

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणेषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।

माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव ॥

१. २२१/५७

२. ६/२७

३. रूपमण्डन, ६/३३-३६

चतुर्थ अध्याय चतुर्विंशति तीर्थकर

आचार्य हेमचन्द्र ने अभिधान चिन्तामणि के प्रथम काण्ड को देवाधि-देवकाण्ड नाम दिया है और उसमें वर्तमान अवसर्पिणी कालके चतुर्विंशति तीर्थकरों के नाम, उनके कुल, माता-पिता, लाछन, वर्ण आदि का विवरण दिया है।

जैन सिद्धान्त की मान्यता है कि सेंसारी जीव अपने कर्मबंधनके कारण देव, मनुष्य, तिर्यच और नरक इन चार गणियों में भ्रमण करता रहता है। कर्मबंधन से सर्वथा मुक्त होने पर जीवात्मा सिद्ध अवस्था प्राप्त करती है और लोक के अग्रतम भाग में जाकर स्थिर हो जाती है। तब उसे संसार में पुनः नहीं आना पड़ता। इन सिद्ध आत्माओं की संख्या अनन्तानन्त है। सभी सिद्ध आत्माएँ मनुष्य योनि में ही सिद्ध अवस्था का प्राप्त करती हैं। तीर्थकर भी उसी प्रकार सिद्ध अवस्था प्राप्त करते हैं। वे देवजातिके नहीं होते पर क्योंकि मानव शरीर धारण करते हुये भी वे देवताओं द्वारा पूजित होते हैं, इसलिये उन्हें देवाधिदेव कहा गया है।

कालरचना

जैन मान्यता के अनुसार संसार अनादि और अनन्त है। अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी रूप से कालका चक्र घूमता रहता है और तदनुसार ल्हास एवं वृद्धि होती है। यह क्रम बेबल भरण और परावत क्षय में चलता है अन्य एक सा युग रहता है।

अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में प्रत्येक के छह-छह आरे हुआ करते हैं। अवसर्पिणीके आरों के नाम हैं, सुषमासुषमा, सुषमा, सुषमादुषमा, दुषमासुषमा, दुषमा और दुषमादुषमा। उत्सर्पिणीके आरे विपरीत क्रम में होते हैं—अर्थात् दुषमादुषमा, दुषमा, दुषमासुषमा, सुषमादुषमा, सुषमा और सुषमासुषमा। इस समय अवसर्पिणी कालका पंचम आरा दुषमा चल रहा है।

अवसर्पिणी के प्रथम तीन आरों में उत्तम, मध्यम और जघन्य भोग-भूमि की रचना होती है। भोगभूमि में मनुष्य अपनी अन्नवस्त्र आदिकी आवश्यकताएं कल्पवृक्षों से पूरी करते हैं। वे कृषि, उद्योग, व्यवसाय आदि से अन्नभिन्न होते हैं। कल्पवृक्ष न तो वनस्पति होते हैं और न कोई देव। वे पृथिवीरूप होते हुए भी जीवों को उनके पुण्य का फल देते हैं।^१ कल्पवृक्ष दस प्रकार के होते हैं, तेजांग, तूर्यांग, भूषणांग, वस्त्रांग, भोजनांग, आलयांग, दीपांग, भाजनांग, मालांग और तेजांग।^२

सुपमादुषमा नामक तीसरे आरे के अंतिम भाग में भोगभूमि की व्यवस्था समाप्त होकर कर्मभूमि की रचना होने लगती है। उस गमय क्रमशः चौदह कुलकर होते हैं जो मनुष्यों को कर्मभूमि संबंधी बातें समझाते हैं।

चौदह कुलकर

वर्तमान काल के चौदह कुलकरों के नाम ये बताये गये हैं—प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, श्रेयंकर, मीमंकर, सीमंकर, विमलवाहन, चक्षुमान, यगस्वी, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, मरुदेव, प्रमनजित्, और नाभि। प्रथम कुलकर के समय में तेजाग नामक कल्पवृक्षों की किरणें मन्द पड़ा और इस कारण चन्द्र-सूर्य के दर्शन होने लगे। द्वितीय कुलकर के समय में तेजाग कल्पवृक्ष सर्वथा नाट हुये और उसस ग्रह, नक्षत्र, तारागण भी दिखाई पड़ने लगे। तृतीय कुलकर क्षेमंकर के समय में व्याघ्रादिक पशुओं में क्रूर भाव उत्पन्न होने लगे। चौथे कुलकर के समय तक वे मनुष्य तथा अन्य प्राणियों का भक्षण करने लगे थे। पाचवे कुलकर के समय में कल्पवृक्षों से सम्पूर्ण आवश्यकताएं पूरी नहीं होती थी। वे सीमित मात्रा में ही आवश्यकताएं पूरी कर पाते थे। इसलिये मनुष्यों में लोभ उत्पन्न हुआ, वे भगडन लगे। तब मीमंकर नामक पंचम कुलकर न वस्तुएं प्राप्त करने की सीमा बांधी। सीमा का उल्लंघन करने वाला के लिये 'हा' दण्ड की व्यवस्था की गयी। छठे कुलकर के समय में कल्पवृक्ष विरल होते गये। फल भी अल्प प्राप्त होता था, इसलिये भिन्न-भिन्न जातों के लिये भिन्न-भिन्न वृक्षसमूहादि निश्चित कर उन्हें ही चिह्न मान कर सीमा नियत की गई। सप्तम कुलकर के समय में जातों ने गमनागमन के लिये गज आदि का प्रयोग करना सीखा। आठवे और नौवे कुलकरों के समय में पुत्रजन्म, नामकरण,

१. तिलोपपण्णत्ता, ८।३५८

२. ही, ४।३४२

बालकों के रुदन का कारण और रोकने का उपाय आदि सीखा गया। दसवें कुलकर के समय तक 'हा' के अलावा 'मा' दण्ड भी चल चुका था।

ग्यारहवें कुलकर के समय में शीत तुषार वायु चलने लगी थी। बारहवें कुलकर के समय तक बिजली चमकने लगी, मेघ गरजने लगे। उस समय मनुष्य ने नौका और छत्र का उपयोग सीखा। तेरहवें कुलकर के समय में बालक वर्तिपटल (जरायु) से वेष्टित जन्मने लगे। चौदहवें कुलकर नाभि थे। उनके समय में बालकों का नाभिनाल लम्बा होने लगा था। उन्होंने उसे काटने का उपदेश दिया। नाभि अन्तिम कुलकर थे।^१ उन्होंने ही लोगों को धान्य खाने और आजीविका के तरीके सिखाये। नाभि की पत्नी का नाम मरुदेवी था। प्रथम तीर्थकर ऋषभनाथ इन्हीं के पुत्र थे।

त्रिपष्टि शलाका पुरुष

चौबीस तीर्थकर, द्वादश चक्रवर्ती, नव बलराम, नव नारायण, और नव प्रतिनारायण, इन त्रैसठ विशिष्ट पुरुषों की गणना शलाका पुरुषों में की जाती है। इन शलाकापुरुषों ने अपने विशिष्ट कार्यों द्वारा महत्त्व का स्थान प्राप्त किया था।

तीर्थकरों के संबंध में हम आगे विवरण देंगे। वर्तमान अवसर्पिणी के चतुर्थकाल में हुये बारह चक्रवर्ती ये हैं—भरत, सगर, मघवा, सनत्कुमार, शान्ति, कुन्धु, अर, सुभोम, पद्म, हरिषेण, जयसेन और ब्रह्मदत्त।^२ चक्रवर्ती षट्खण्ड भरतक्षेत्र के अधिपति होते हैं। उन्हें चौदह रत्न और नवनिधि का लाभ होता है। सेनापति, गृहपति, पुराहित, गज, तुरग, वर्धकि, स्त्री, चक्र, छत्र, चर्म, मणि, काकिनी, खड्ग और दण्ड ये चतुर्दश रत्न बताये गये हैं। काल, महाकाल पाण्डु, माणवक, शंख, पद्म, नैसर्प, पिंगल और नानारत्न ये नव निधि हैं।^३ प्रथम चक्रवर्ती भरत आदि तीर्थकर ऋषभदेव के पुत्र थे। उनका अपने भ्राता बाहुवली से युद्ध हुआ था जिसमें बाहुवली विजयी हुये पर इस घटना से उन्हें

१. आगे आने वाले उत्सर्पिणी काल में जो कुलकर होंगे उनके नाम

तिलोयपण्णत्ती ४/१५७०-७१ में दिये गये हैं।

२. तिलोयपण्णत्ती, ४।५।५-१६

३. वही ४।७३६

संसार के प्रति वैराग्य हो गया और वे साधु हो गये ।' शान्ति कुन्धु और भर ये तीन चक्रवर्तों तीर्थंकर भी हुये हैं ।

बलराम नारायण के ज्येष्ठ भ्राता होते हैं । वर्तमान अवसर्पिणी में विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नन्दमित्र, राम, और पद्म ये नौ बलराम या बलदेव हुये ।^१ इनमें से अन्तिम दो सुप्रसिद्ध हैं ।

नारायण को विष्णु भी कहा गया है । वर्तमानकाल के नौ नारायण ये हैं, त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषपुण्डरीक, पुरुषदत्त, नारायण और कृष्ण^१। इनमें से अष्टम नारायण को लक्ष्मण भी कहा जाता है ।

प्रतिनारायण नारायण के विरोधी हुआ करते हैं । उनकी सूची इस प्रकार है, अश्वघ्रीव, तारक, मेरक, मधुकैटभ, निशुम्भ, बलि, प्रहरण या प्रह्लाद, रावण और जरासंध ।^१ किन्हीं-किन्हीं ग्रन्थों में प्रतिनारायणों की गणना शलाकापुरुषों की सूची में नहीं की गयी है ।

उपर्युक्त महापुरुषों के अतिरिक्त एकादश रुद्रों और नव नारदों का भी विवरण जैन ग्रन्थों में मिलता है । भीमावलि, जितसत्रु, रुद्र, विश्वानल, सुप्रतिष्ठ, अचल, पुण्डरीक, अजितंधर, अजितनाभि, पीठ और सात्यकीपुत्र ये एकादश रुद्र तथा भीम, महाभीम, रुद्र, महारुद्र, काल, महाकाल, दुर्मुख, नरकमुख और अधोमुख, ये नव नारद हैं ।^१

तीर्थंकर

तीर्थंकरों समेत सभी शलाकापुरुष चतुर्थ काल में हुआ करते हैं, यह ऊपर बताया गया है किन्तु वर्तमान अवसर्पिणी हुएडा अवसर्पिणी होने के कारण

१. बाहुबली की प्रतिमाएं बनायी जाती हैं । कर्नाटक की सुप्रसिद्ध गोम्मटेश्वर प्रतिमा बाहुबली की है ।

२. तिलोयपण्णत्ती, ४/५१७ । एक अन्य सूची में अचल, विचल, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, पद्म और राम ये नाम मिलते हैं ।

३. वही, ४/५१८

४. तिलोयपण्णत्ती, ४/५१९

५. वही, ४/५२०-२१

६. वही, ४/१४६६

इसमें कुछ अपवाद भी हुये । इसके तृतीय काल (मुषमादुषमा) के चौरामी लाव पूर्व, तीन वर्ष, आठ मास और एक पक्षके शेष रहने पर प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव का जन्म हुआ । ऋषभनाथ के निर्वाणके पश्चात् तीन वर्ष और साढ़े तीन मास का समय व्यतीत होने पर चतुर्थ काल दुषमामुषमा प्रविष्ट हुआ ।^१ अन्य तेईम तीर्थंकर चतुर्थकाल में ही हुये । अंतिम तीर्थंकर महावीर-स्वामी के निर्वाण के पश्चात् तीन वर्ष और साढ़े आठ मास का समय और बीत जाने पर पंचमकाल (दुषमा) प्रारंभ हुआ^२ जो अभी चल रहा है । पंचम और षष्ठ काल में भी तीर्थंकर नहीं होते ।

अतीत उत्सर्पिणी और अनागत उत्सर्पिणी में हुये और हाने वाले २४-२४ तीर्थंकरों की सूची जैन ग्रन्थों में मिलती है ।^३ वर्तमान अवसर्पिणी के २४ तीर्थंकरों को जोड़कर ७२ तीर्थंकर होते हैं । जैन ग्रन्थों में अक्सर ७२ जिनालयों या जिनविम्बों का उल्लेख मिलता है । इन बहत्तर तीर्थंकरों की जैन मंदिरों में नित्य पूजा-अर्चा की जाती है । जैसा कि उपर बताया जा चुका है, ये भरतक्षेत्र के तीर्थंकर हैं । भरत, गैरावत और विदेह क्षेत्र में कर्मभूमिया होती हैं । अन्य क्षेत्रों में कुरु भूमि-देवकुरु और उत्तरकुरु-होने ने वहाँ तीर्थंकर नहीं होते । विदेह क्षेत्र में सदैव कर्मभूमिकी रचना रहने के कारण वहाँ तीर्थंकर सदैव विद्यमान रहते हैं । विदेह क्षेत्रके विद्यमान २० तीर्थंकरों की पूजा भी जैनमंदिरों में नित्य की जाती है ।

पंच कल्याणक

तीर्थंकरों के जीवन की पांच मुख्य घटनाओं को पंचकल्याणक कहा जाता है । वे हैं, तीर्थंकर के जीव का माता के गर्भ में आना, तीर्थंकर का जन्म होना, तीर्थंकर द्वारा गृह त्यागकर तपग्रहण करता, चार घातिया कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त करना और अन्तमें शेष चार अघातिया कर्मों का भी सम्पूर्ण रूपसे क्षय करके निर्वाण प्राप्त करना । इस प्रकार गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, तपकल्याणक, ज्ञान-कल्याणक और निर्वाणकल्याणक ये पंच-कल्याणक होते हैं । इन कल्याणकों के प्रवसर पर देवताओं द्वारा उत्सव मनाये

१. तिलोयपण्णत्ती ४/१२७६

२. वही, ४/१४७४

३. तिलोयपण्णत्ती महाधिकार ४; प्रवचनसारोद्धार द्वार ७, गाथा २६०-६२, २६५-६७ तथा अन्य अनेक ग्रन्थ ।

जाते हैं। भगवान् की गर्भविस्था में रुचक वासिनी छप्पन देवियां तीर्थंकर-जननी की सेवा किया करती हैं। जन्मकल्याणक के अवसर पर इन्द्रों द्वारा भगवान् का जन्माभिषेक किया जाता है। तपकल्याणक के समय स्वयंबुद्ध प्रभु की स्तुति लौकान्तिक देव करते हैं। ज्ञानकल्याणक के समय धनपति द्वारा समवशरणकी रचना की जाती है। निर्वाणकल्याणक का समारोह भी सभी प्रकार के देवों द्वारा आयोजित किया जाता है।

वर्तमान अवसर्पिणी के तीर्थंकर

वर्तमान अवसर्पिणी में जो चौबीस तीर्थंकर हुये हैं उनके नाम ये हैं :-

१. ऋषभ	२. अजित	३. संभव
४. अभिनंदन	५. सुमति	६. पद्मप्रभ
७. सुपाश्व	८. चन्द्रप्रभ	९. पुष्पदन्त
१०. शीतल	११. श्रेयास	१२. वासुपूज्य
१३. विमल	१४. अनंत	१५. धर्म
१६. शान्ति	१७. कुन्धु	१८. अर
१९. मल्लि	२०. मुनिसुव्रत	२१. नमि
२२. नेमि	२३. पाश्व	२४. महावीर

इन नामों के साथ अक्सर 'नाथ' पद लगाया जाता है। ऋषभनाथ को वृषभनाथ और आदिनाथ भी कहा जाता है। अनंतनाथ को अनंतजित्, पुष्पदन्त को सुविधिनाथ, मुनिसुव्रत को सुव्रत, नेमिनाथ को अरिष्टनेमि और महावीर को वर्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति, चरमतीर्थंकर, जातूनन्दन, नाथपुत्त, देवार्य आदि कई नामों से स्मरण करते हैं।^१

तीर्थंकरों के कुल

अभिधानचिन्तामणि के अनुसार मुनिसुव्रत और नेमिनाथ हरिवंश में उत्पन्न हुये थे, शेष तीर्थंकर इक्ष्वाकु कुलमें।^२ नेमिचन्द्र ने मुनिसुव्रत और नेमिनाथ को गौतम गोत्र का तथा अन्य को काश्यपगोत्रीय बताया है।^३

१. अभिधानचिन्तामणि, १/२९-३०

२. वही, १/३५

३. प्रतिष्ठानिलक, पृष्ठ ३८६।

तिलोयपण्णत्ती ने शान्ति, बुन्धु और अर का वंश कुरु, मुनिसुव्रत और नेमि का वंश यादव या हरि, पार्श्वनाथ का उग्र, महावीर का नाथ (ज्ञातृ) और शेष तीर्थकरो का वंश इक्ष्वाकु बताया है।

तीर्थकरो के वर्ण

अभिधानचिन्तामणि^१ के अनुसार, पद्मप्रभ और वासुपूज्य रक्तवर्ण, चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त शुक्लवर्ण, मुनिसुव्रत और नेमि कृष्णवर्ण, मल्लि और पार्श्वनाथ नीलवर्ण तथा शेष तीर्थकर स्वर्ण के समान पाँते वर्ण के थे। तिलोयपण्णत्ती में, पद्मप्रभ और वासुपूज्य को मूगे के समान रक्तवर्ण सुपाश्व और पार्श्व को हरित् वर्ण, चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त को श्वेतवर्ण, मुनिसुव्रत और नेमि को नीलवर्ण तथा अन्य सभी को स्वर्ण वर्ण बताया गया है। आशाधर^२ के अनुसार मुनिसुव्रत और नेमि श्यामल एवं सुपाश्व और पार्श्व मरकतमणि के समान प्रभावाल है। वसुनन्दि^३ ने पद्मप्रभ को पद्म के समान, वासुपूज्य को विद्रुम के समान, सुपाश्व और पार्श्व को हरित्प्रभ तथा मुनिसुव्रत और नेमि को मरकतमदृश कहा है। अपराजितपृच्छा^४ में पद्मप्रभ और धर्मनाथ लाल कमल के समान, सुपाश्व और पार्श्व हरित्, नेमि श्याम और मल्लि नील वर्ण है। वर्णों की योजना अक्सर चित्रकर्म में की जाती है। चन्देरी के जैनमंदिर की चौबीसी प्रतिमाएं तीर्थकरो के वर्णों के अनुसार निर्मात करवाकर प्रतिष्ठित की गयी है।

तीर्थकरो के माता-पिता

चतुर्विंशति तीर्थकरो के माता-पिता के नाम जैन ग्रन्थों में निम्न प्रकार मिलते हैं।^५

	तीर्थकर	माता	पिता
१	ऋषभनाथ	मरुदेवी	नाभि
२	अजितनाथ	विजया	जितशत्रु

१. १/४६

२. प्रतिष्ठासारोद्धार, १/८०-८१.

३. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/६६-७०

४. २२१/५-६

५. अभिधानचिन्तामणि, १/३६-४१ तथा तिलोयपण्णत्ती, निर्वाणकलिका, प्रतिष्ठासारोद्धार, प्रतिष्ठितलक आदि के आधार पर।

	तीर्थकर	माता	पिता
३	संभवनाथ	सुषेणा या सेना	जितारि
४	अभिनन्दननाथ	सिद्धार्था	संवर
५	सुमतिनाथ	मंगला या सुमंगला	मेघ या मेघप्रभ
६	पद्मप्रभ	सुसीमा	धरण
७	सुपाश्वनाथ	वसुंधरा या पृथिवी	सुप्रतिष्ठ
८	चन्द्रप्रभ	लक्ष्मणा	महासैन
९	पुष्पदन्त	रामा	सुग्रीव
१०	शीतलनाथ	सुनन्दा या नन्दा	द्वंद्वरथ
११	श्रेयांसनाथ	विष्णुश्री या वेणुदेवी	विष्णु
१२	वासुपूज्य	विजया या जया	वसुपूज्य
१३	विमलनाथ	सुमर्मलक्ष्मी या श्यामा	कृतवर्मा
१४	अनन्तनाथ	सुयशा या सर्वयशा	सिंहगन
१५	धर्मनाथ	सुव्रता या सुप्रभा	भानु
१६	शान्तिनाथ	ऐरा या अचिरा	विश्वसेन
१७	कुन्थुनाथ	श्रीमनीदेवी	सूर या सूर्यसेन
१८	अरनाथ	मित्रा या देवी	मुदर्शन
१९	मल्लिनाथ	प्रभावती	कुम्भ
२०	मुनिसुव्रतनाथ	पद्मा या प्रभावती	सुमित्र
२१	नमिनाथ	वप्रा	त्रिजय
२२	नेमिनाथ	शिवा	मगुद्रविजय
२३	पाश्वनाथ	वामा या ब्रह्मिणी	अश्वसेन
२४	महावीर	त्रिशला या प्रियकारिणी	सिद्धार्थ

जैनग्रन्थों में, तीर्थकरो के माता के गर्भ में आने की तिथि, नक्षत्र, जिस स्वर्ग विमान से च्युत होकर आये उसका नाम, जन्म का तिथि, जन्मनक्षत्र जन्मराशि आदि के विवरण भी उपलब्ध है। किन्तु उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया जा रहा है।

जिनमाता के स्वप्न

तीर्थकर के माताके गर्भ में आनेके समय जिनेंद्रजननी कुछ स्वप्न देखती हैं। दिगम्बर परम्पराके अनुसार वे सोलह हैं और श्वेताम्बर परम्पराके

अनुसार चौदह । इन स्वप्नों का अंकन शिल्पकृतियों में भी मिलता है । खजुराहो के जैन मंदिरों में गर्भगृह के प्रवेशद्वार पर ही ऊपर माता के स्वप्नों का शिल्पांकन है । स्वप्न ये हैं :—

१. ऐरावत हस्ती	२. वृषभ	३. सिंह
४. गजलक्ष्मी	५. मालायुग्म	६. चन्द्र
७. सूर्य	८. मीनयुग्म	९. पूणकुम्भयुग्म
१०. कमल	११. सागर	१२. सिंहासन
१३. देवविमान	१४. नागविमान	१५. रत्नराशि
१६. निर्धूम अग्नि । ^१		

श्वेताम्बर परम्परा में मीनयुग्मके स्थान पर महाध्वज तथा सिंहासन और नागविमान ये दो स्वप्न कम होते हैं ।^१ पद्मानन्द महाकाव्य के सप्तम सर्ग में वृषभ, गज, सिंह, गजलक्ष्मी, माला, चन्द्र, ध्वज, कुम्भ, सरोवर, सागर, देवविमान, रत्नपुञ्ज और अग्नि, इस प्रकार क्रम बताया गया है । यही क्रम त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में भी मिलता है । स्वप्नदर्शन के पश्चात् तीर्थंकर का जीव माता के वदनमें प्रवेश करता है ।

तीर्थंकरों के जन्मस्थान

तिलोयपण्णत्ती में तीर्थंकरों के जन्मस्थानों की सूची निम्न प्रकार दी गयी है ।—

१. ऋषभनाथ	अयोध्या
२. अजितनाथ	अयोध्या
३. संभवनाथ	श्रावस्ती
४. अभिनन्दननाथ	अयोध्या
५. सुमतिनाथ	अयोध्या

१. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३६३-४०३ ।

२. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, पर्व १०, सर्ग ११, १६-२१; उत्तरपुराण, पर्व ४८; सकलचन्द्र कृत प्रतिष्ठाकल्प, पन्ना २४ आदि ।

६.	पद्मप्रभ	कौशाम्बी
७.	सुपार्श्वनाथ	वाराणसी
८.	चन्द्रप्रभ	चन्द्रपुरी
९.	पुष्पदन्त	काकन्दी
१०.	शीतलनाथ	भदलपुर
११.	श्रेयांसनाथ	सिंहपुरी
१२.	वासुपूज्य	चम्पापुरी
१३.	विमलनाथ	कंपिल्लपुर
१४.	घनंतनाथ	अयोध्या
१५.	धर्मनाथ	रत्नपुर
१६.	शान्तिनाथ	हस्तिनागपुर
१७.	कुन्धुनाथ	हस्तिनागपुर
१८.	अरनाथ	हस्तिनागपुर
१९.	मल्लिनाथ	मिथिला
२०.	मुनिमुव्रतनाथ	राजगृह कुशाग्रपुर
२१.	नमिनाथ	मिथिला
२२.	नेमिनाथ	शीरीपुर
२३.	पार्श्वनाथ	वाराणसी
२४.	महावीर	कुण्डलपुर

तीर्थकरों के लांछन

प्रारम्भ में तीर्थकरों की प्रतिमाओं पर उनके अलग अलग लांछन या चिह्न नहीं बनाये जाते थे। उन प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण किये लेखों से ही तीर्थकरों की पहचान होती थी। मथुरा की कुषाण कालीन प्रतिमाओं पर तीर्थकरों के चिह्न नहीं मिलते हैं। इतना अवश्य है कि कुछेक तीर्थकर प्रतिमाएँ अपने विशेष स्वरूप के कारण भी पहचानी जाती थी। ऋषभनाथ की प्रतिमाएँ जटामुकुटरूपशेखर से या कन्धों पर लहराते केशगुच्छसे^१, सुपार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ पञ्चफण सर्प से और पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ सप्तफण सर्पके छत्रसे पहचान ली जाती थी।

१. रविपेण कृत पद्मपुराण : वाताद्घूता जटास्तस्य रंजुराकुलमूतयः ।

धूमालय इव ध्यानबह्निसक्तकर्मणः ॥

राजगृह के वैभार पर्वत की एक नेमिनाथ प्रतिमा^१ (जो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय की है) ऐसी सर्वप्राचीन प्रतिमा जान पड़ती है जिसपर कि तीर्थंकर का चिह्न भी प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व की अभी तक प्राप्त प्रतिमाओं पर चिह्न पग्लिखित नहीं किये जा सके हैं।

वसुविन्दु (जयमेन) ने उल्लेख किया है कि चिह्न तीर्थंकरों के सुख-पूर्वक पहचान लिये जाने और अचेतनमें संव्यवहार सिद्धि के लिये स्थापित किये जाते हैं।^२ 'निनीयपण्णती'^३ की सूची के अनुसार चतुर्विंशति तीर्थंकरों के चिह्न निम्न प्रकार है :—

१.	ऋषभनाथ	वृष
२.	अजितनाथ	गज
३.	संभवनाथ	अश्व
४.	अभिनन्दननाथ	वानर
५.	सुर्मानाथ	कोक
६.	पद्मप्रभ	पद्म
७.	सुपाश्र्वनाथ	नंद्यावतं
८.	चन्द्रप्रभ	अर्धचन्द्र
९.	पुष्पदन्त	मकर
१०.	शीतलनाथ	स्वस्तिक
११.	श्रेयांसनाथ	गण्ड
१२.	वासुपूज्य	महिष
१३.	विमलनाथ	वराह
१४.	अनंतनाथ	सेही
१५.	धर्मनाथ	वज्र
१६.	शान्तिनाथ	हरिण
१७.	कुन्थुनाथ	छाग
१८.	अरनाथ	तगरकुसुम (मत्स्य ?)

१. आकं० सब आफ हाण्डिया, वार्षिक प्रतिवेदन, १९२५-२६, पृष्ठ १२५ इत्यादि।

२. प्रतिष्ठापाठ, ३४७

३. ४/६०४-६०५

१६.	मल्लिनाथ	कलश
२०.	मुनिसुव्रतनाथ	कूर्म
२१.	नमिनाथ	उत्पल
२२.	नेमिनाथ	शंख
२३.	पाश्र्वनाथ	अहि
२४.	वर्धमान	सिंह

तिलोयपण्णत्ती ने उपर्युक्त प्रकार सातवें तीर्थकर का चिह्न नन्द्यावर्त और दसवें तीर्थकर का चिह्न स्वस्तिक बताया है जबकि दिगम्बर परम्परा के पश्चात्कालीन ग्रन्थों में^१ सातवें तीर्थकर का चिह्न स्वस्तिक और दसवें तीर्थकर का चिह्न श्रीवृक्ष मिलता है। तिलोयपण्णत्ती में अठारहवें तीर्थकर का चिह्न तगरकुमुम कहा है जिसका अर्थ हिन्दी टीकाकार ने मीन लिया है। नेमिचन्द्र ने अठारहवें तीर्थकर का चिह्न तगर, वसुनन्दि न पाठोण और जयमेन ने कुमुम बताया है।

अभिधानचिन्तामणि^२ में सातवें तीर्थकर का चिह्न दिगम्बरों के समान स्वस्तिक, दसवें तीर्थकर का चिह्न श्रीवत्स, ग्यारहवें का खड्गो (रूपमण्डन में खड्गीश, अन्यत्र गण्डक), चौदहवें तीर्थकर का श्येन और अठारहवें तीर्थकर का चिह्न नन्द्यावर्त कहा गया है।

दीक्षा और दीक्षावृक्ष

दिगम्बर परम्परा के अनुसार वामुपूज्य, मल्लि, नेमि, पाश्र्व और महावीर इन पाँच तीर्थकरों ने कुमार अवस्थामें ही तप ग्रहण कर लिया था।^३ श्वेताम्बर सम्प्रदाय की मान्यता है कि महावीर ने विवाह किया था।^४ नेमिनाथ ने द्वारावनी (द्वारिका) में जिनदीक्षा ग्रहण की पर अन्य सभी तीर्थकरों ने अपने अपने जन्मस्थान में ही तप ग्रहण किया था।^५ चौबीस

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/७२-७४; प्रतिष्ठापाठ, ३४६-४७; प्रतिष्ठा-मारोद्धार. १/७८-७९; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ५८१-८२ तथा अन्य।

२. १/४७-४८

३. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ५०३; तिलोय० ४/६७०.

४. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितमें उन्हें कृतोद्वाह किन्तु अकृतगराज कहा है।

५. तिलोयपण्णत्ती, ८/६४३

तीर्थंकरों में से शान्ति, कुन्थु और अर ये तीन चक्रवर्ती सम्राट् थे ' वासुपुज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व और महावीर इन्होंने राज्य नहीं किया, ग्रन्थों ने किया था ।

जिन वृक्षों के नीचे तीर्थंकरों ने दीक्षा ग्रहण की थी अथवा जिन वृक्षों के नीचे तपस्या करते हुए उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ, वे दीक्षावृक्ष और केवल-वृक्ष कहे जाते हैं । इन वृक्षों को जैन प्रतिमाशास्त्र में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । तिलोयपण्णत्तीकार ने बताया है कि ऋषभादि तीर्थंकरों को जिन वृक्षों के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था वे ही अशोकवृक्ष हैं ।^१ इसलिए तीर्थंकर प्रतिमाओं के साथ अशाकवृक्ष बनाने की परम्परा है, भले ही तीर्थंकर ने किसी भी जाति के वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया हो ।

वृक्षों की सूची निम्नप्रकार है^१ :—

१. न्यग्रोध	२. सप्तपर्ण	३. शाल
४. सरल	५. प्रियंगु	६. प्रियंगु
७. शिरीष	८. नाग	९. अक्ष (बहेडा)
१०. धूली (मालि)	११. पलाश	१२. तेंदू
१३. पाटल	१४. पिप्पल	१५. दधिपर्ण
१६. नन्दी	१७. तिलक	१८. आम्र
१९. कंकलि (अशक)	२०. चम्पा	२१. बकुल
२२. मेषशृंग	२३. धव	२४. साल

जयसेन^२ और नेमिचन्द्र^३ द्वारा दी गयी सूचिया भी प्रायः उपर्युक्त प्रकार की है ।

समवशरण

तीर्थंकर नामक कर्म प्रकृति के उदय से अर्हत् अवस्था में भगवान् जीवमात्र के कल्याण हेतु उपदेश दिया करते हैं । उपदेश सभा या समवशरण

१. तिलायपण्णत्ता, ४/६०६

२. ४/९१५

३. तिलोयपण्णत्ती, ४/९१६-९१८

४. प्रतिष्ठापाठ, ८३५ ।

५. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ५१२

की व्यवस्था देवों द्वारा की जाती है। सौधर्मन्द्र के आदेश से धनपति अपनी विक्रिया के द्वारा समवशरण की रचना करता है।^१ समवशरण सभा के १२ कोष्ठों में सभी प्रकार के प्राणियों के बँठने की व्यवस्था होती है। मध्य में गंधकुटी होती है। गंधकुटी में स्थित सिंहासन पर तीर्थकर अंतरीक्ष विराजमान होते हैं। उनके मस्तक पर त्रिछत्र होता है। ग्रहंतु अवस्था में तीर्थकर के चौदह अतिशय होते हैं।^२ अशोकतरु, चामरधारी, देवदुंदुभि,, देवताओं द्वारा पुष्पवृष्टि, प्रभामण्डल, आदि का अंकन तीर्थकर प्रतिमा में पाया जाता है।

समवशरण के प्रतीहार

जिनेन्द्र पूजा विधान के अवसर पर मण्डप के रक्षक प्रतीहारों की स्थापना की जाती है। जिनपूजामण्डप वस्तुतः समवशरण की प्रतिकृति होता है जिसकी रक्षा व्यन्तर जाति के देव किया करते हैं।

प्रतीहार देवताओं में से जया, विजया, अजिता और अपराजिता ये चार देवियां क्रमशः पूर्वादि द्वारों की प्रतीहारिणी होती हैं। इन देवियों के चार-चार हाथ बताये गये हैं। उन हाथों के आयुध, पाश, अंकुश, अभय और मुद्गर हैं। जंभा, मोहा, स्तंभा और स्तंभिनी, ये देवियां विदिशाओं में स्थित होती है।^३ इसी प्रकार प्रभा, पद्मा, मेघमालिनी, मनोहरा, चंद्रभाला, सुप्रभा जया, विजया और व्यक्तांतरा ये देवियां अपने अपने वर्ण की अर्थात् अरुण, कृष्ण, श्वेत आदिक ध्वजाएं ग्रहण करती हैं।^४

मंडप के द्वारपालों का कार्य कुमुद, अंजन, वामन और पुष्पदन्त, ये चार प्रतीहार करते हैं। कुमुद पूर्व द्वार पर स्थित होता है, अंजन दक्षिण द्वार पर, वामन पश्चिम द्वार पर और पुष्पदन्त उत्तर द्वार पर स्थित होता है।^५ कुमुद पंचमुख होता है, उसका आसन स्वस्तिक है। कुमुद हाथ में हेमदण्ड धारण करता है।^६

१. तिलोयपण्णत्ती, ४/७१०.

२. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ५७८-५७९ तथा अन्य

३. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/२१६-२२५

४. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/२०८-२०९; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २०९-११

५. प्रतिष्ठासारोद्धार, २/१३९-१४२

६. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ६५८

उपर्युक्त प्रकार विजय, वैजयंत, जयंत और अपराजित ये चार देव भी क्रमशः प्राची, अपाची, प्रतीची और उदीची दिशाओं में स्थित होते हैं।^१ ये देव व्यन्तर निकाय के हैं। वे जम्बूद्वीप की चार दिशाओं में स्थित इन्हीं नाम के द्वारों के रक्षक हैं। द्वारों के नाम पर ही इनके नाम पड़े हैं।^२ अनावृत और तुम्बरु नामक यक्षों के संबंध में आगे विवरण दिया जावेगा।

जया, विजया, जयन्ती और अपराजिता का विवरण विष्णुधर्मोत्तर^३ में भी मिलता है। वहां ये देवियां चतुर्वक्त्रा और द्विभुजा बनायी गयी है। प्रत्येक के दायें हाथ में कपाल किन्तु जया के दायें हाथ में दण्ड, विजया के दायें हाथ में खड्ग, जयन्ती के दायें हाथ में अक्षमाला और अपराजिता के दायें हाथ में भिन्दिपाल बताया गया है। जया का वाहन नर, विजया का कौशिक, जयन्ती का तुरग और अपराजिता का मेघ। जया का वर्ण श्वेत, विजया का रक्त, जयन्ती का पीत और अपराजिता का कृष्ण है। इन्हें मातृ कहा गया है। इनके बीच में महादेव तुम्बरु (श्वेतवर्ण) स्थित होते हैं जो चतुर्मुख और वृषारूढ़ है। जया और विजया की स्थिति तुम्बरु के दक्षिण ओर तथा जयन्ती और अपराजिता की उनके वाम ओर कही गई है। हेमचन्द्र आचार्य ने तुम्बरु को समवशरण के अन्त्य वज्र के प्रतिद्वार में स्थित बताया है। वह जटामुकुटयुक्त, खट्वागी और नरमुण्डमालाधारी होता है।^४

रूपमण्डन^५ में इन्द्र, इन्द्रजय, माहेन्द्र, विजय, धरणेन्द्र, पद्मक, सुनाभ और सुरदुन्दुभि ये आठ वीतराग जिनेन्द्रदेव के प्रतीहार कहे गये हैं। इन्द्र और इन्द्रजय के आयुध फल वज्र अंकुश और दण्ड, माहेन्द्र और विजय के दो हाथों में वज्र, और दो में फल और दण्ड, सुनाभ और दुन्दुभि निधिहरत तथा धरणेन्द्र और पद्मक त्रिफण या पंचफण संपल्लवर्धनी हैं।

तीर्थकरों की निर्वाणभूमिया

आयु कर्म के उदय की अवधि समाप्त होने पर तीर्थकर सभी प्रकार के अध्यात्मिक कर्मों में भी मुक्त होकर सिद्ध अवस्था प्राप्त करते हैं। ऋषभनाथ,

१. प्रतिष्ठामारोद्धार, २/१६५-१६६

२. जंबूद्वीपवर्णनसंग्रहो, १/३८-३९, ४२; तिलोयप० ४/११-१२, ७५

३. तृतीय खण्ड, अध्याय ६६, ५-११.

४. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, पर्व १ सर्ग १

५. ६/२८-३२

नेमिनाथ और महावीर पद्मासन मुद्रा में स्थित अवस्था से मुक्त हुये, शेष सभी तीर्थकरों ने कायोःसर्ग आसन से निर्वाण प्राप्त किया ।^१ तीर्थकरों के निर्वाण स्थलों की वंदना-पूजा जैन लोग किया करते हैं । वे निर्वाण भूमियां निम्न प्रकार हैं :—

ऋषभनाथ	कैलाश या अष्टापद
वासुपूज्य	चम्पापुरी
नेमिनाथ	ऊर्जयन्तगिरि
महावीर	पावापुरी
अन्य तीर्थकर	सम्मेद शिखर

नव देवताराधन

नेमिचन्द्र^२ आदि ग्रंथकारों ने नवदेवताराधन का एकत्र उल्लेख किया है । तदनुसार अष्टदलकमल की आकृति का निर्माण कर उसके मध्य की कणिका पर अर्हत् परमेष्ठी की स्थापना की जाती है और चारों दिशाओं में स्थित पत्रों पर सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन चार परमेष्ठियों की तथा कोणस्थ दलों पर जिनधर्म, जिनागम, जिनाविम्बों और जिनमंदिगों की स्थापना करके पूजा की जाती है । वस्तुतः जैन लोग इन्हीं नौ की अष्टद्रव्यों में सम्पूर्ण पूजा किया करते हैं । यक्षादि की अष्टद्रव्य पूजा नहीं की जाती । उन्हें पूजा का अंश भेंट किया जाता है । जिनमंदिगों और जिनविम्बों की पूजा में कृत्रिम और अकृत्रिम जिनालयों, नंदीश्वरद्वीप के ५२ जिनालयों, ज्यातिष्क, व्यन्तर और भवनवासी देवों के प्रासादों में प्रतिष्ठित जिनालयों, पंचमेरु स्थित, कुलपर्वतों पर स्थित, जंबूवृक्ष, शालमलिवृक्ष और चैत्यवृक्षों पर स्थित, वक्षारगुफ्यादि में, इष्वाकार गिरि में और कुण्डलद्वीप आदि में स्थित जिनालयों और जिनविम्बों की पूजा जैनमंदिरों में हुआ करती है ।

विशिष्ट शिल्पांकन

वाईसवें तीर्थकर नेमिनाथ और तेईसवें तीर्थकर पार्श्वनाथ के जीवन-काल से संबंधित दो घटनाओं का अंकन भी शिल्प में किया जाता

१. निलोयपण्णत्ती में ऋषभ, वासुपूज्य, और महावीर का पत्यंकबद्ध आसन (पद्मासन) से मुक्त होना बताया गया है ।

२. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ७३

हैं। अरिष्टनेमि के विवाह की पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। वे बारात लेकर पहुंच भी गये थे कि पशुओं के बंधन देखकर उन्हें संसार से बैराग्य हो गया। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की तप अवस्था में पूर्ण बैर वश कमठ नामक देव ने उन पर भीषण उपसर्ग किया था।

ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली की प्रतिमाएं भी निर्मित की जाती है। उनमें उन्हें कठोर तपस्या में रत दिखाया जाता है। बाहुबली की प्रतिमाएं केवल कायात्सर्ग आसन की होती हैं।

अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां
वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम् ।
इह मनुजकृतानां देवराजाजितानां
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥

अष्ट प्रातिहार्य

सिंहासन, दिव्यध्वनि, चामरेन्द्र, भामण्डल, अशोकवृक्ष, छत्रत्रय, हुंदुभि और पुष्पवृष्टि ये अष्ट प्रातिहार्य हैं।

अष्ट मंगलद्रव्य

श्वेतछत्र, दर्पण, ध्वज, चामर, तोरणमाला, तालवृन्त (बीजना), नन्द्यावर्त और प्रदीप ये अष्ट मंगलद्रव्य हैं।^१ इनकी स्थापना जिनपूजा विधान में की जाती है। मथुरा के आयागपट्टों पर इनकी प्रतिकृतियां उपलब्ध हुयी हैं। तिलोत्पण्णती में^२ भृंगार, कलश, दर्पण, ध्वज, चामर, छत्र, बीजन और सुप्रतिष्ठ ये आठ मंगलद्रव्य गिनाये गये हैं।

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ६/३५-३६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३६६

२. ३/५६

पंचम अध्याय

चतुर्निकाय देव

जैन परम्परा में लोक के तीन भाग बताये गये हैं, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक। मध्यलोक में हम निवास करते हैं। यह पृथ्वी गोलाकार है और असंख्य द्वीप समूहों से वेष्टित है। बीच में जम्बू नामक द्वीप है। उसे बलयाकृति लवणसमुद्र वेष्टित किये हुये है।

जम्बूद्वीप में छह कुलपर्वत होने से उसके सात क्षेत्र बन गये हैं। दक्षिण से क्रमशः हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी ये छह कुलाचल हैं। क्षेत्रों के नाम हैं भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत। विदेह क्षेत्र के मध्य में मेरुपर्वत स्थित है।

भरतक्षेत्र के बहुमध्य भाग में विजयार्ध पर्वत है। हिमवान् पर्वत से निकलनेवाली पूर्वगामिनी गंगा और पश्चिमगामिनी सिन्धु नदियों तथा विजयार्ध के कारण भरतक्षेत्र के छह खण्ड हो गये हैं। विजयार्ध पर्वत के कूटों पर व्यन्तर जाति के देवों के प्रासाद हैं। उनके नाम भरत, नृत्यमाल, माणिभद्र, वैताढ्य, पूर्णभद्र, कृतमाल, भरत और वंश्रवण हैं। गंगानदी के मणिभद्रकूट के दिव्य भवन में बला नामक व्यन्तर देवी का और सिन्धु के बीच श्रवणा या लवणा व्यन्तर देवी का निवास है। उत्तर भरत के मध्यखण्ड के वृषभ गिरि पर वृषभ नामक व्यन्तर रहता है

जम्बूद्वीप के चारों और चार गोपुर द्वार हैं। उनके नाम विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित है। ये नाम क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में स्थित द्वारों के हैं।^१ इन द्वारों के अधिपति व्यन्तर देव हैं। द्वारों के जो नाम हैं, वे ही नाम उन देवों के हैं।^२

मध्यलोक से सात राजु ऊपर का क्षेत्र ऊर्ध्वलोक है। मध्यलोक से नीचे अधोलोक है। ऊर्ध्वलोक में सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, नारों की स्थिति है। उनके ऊपर स्वर्ग, ग्रंथेयक और अनुत्तर विमान हैं जिनमें देवों का निवास है। अधोलोक में भी देवों का निवास है।

१. जंबूदीवपण्णत्तिसंगहो, १/३८-३९; तिलोयपण्णत्ती, ४/४१-४२

२. वही, १/४२; वही ४/७५

देव चार प्रकार के माने गये हैं। भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और कल्पभव। ये चतुर्निकाय देव कहे जाते हैं। इन देवों में इन्द्र, सामानिक त्रायस्त्रिंशत्, पारिषद्, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, अभियोग्य और किल्विषिक ये उत्तरोत्तर हीन पद होते हैं। (व्यंतर देवों में त्रायस्त्रिंशत् और लोकपाल नहीं होते) भवनवामी और व्यन्तर देवों में दो-दो इन्द्र होते हैं।

भवनवासी देव

मध्यलोक में नीचे अधोलोक में रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के खर और पंकबहुलभाग में भवनवासी देवों के प्रासाद हैं।^१ भवनवासी देवों के दस दस विकल्प हैं। वे भवनों में रहते हैं अतएव भवनवासी कहलाते हैं। उनकी जातियों के नाम असुर, नाग विद्युत्, सुवर्ण, अग्नि, वात, स्तनित, उदधि, द्वीप और दिक् हैं। इनमें से प्रत्येक के साथ कुमार पद लगा रहता है यथा दिक्कुमार। भवनवासी देवों के वर्ण और मुकुट चिह्न निम्न प्रकार बताये गये हैं :^२—

नाम	वर्ण	मुकुटों में चिह्न
असुरकुमार	कृष्ण	बृडामणि
नागकुमार	कालश्यामल	सर्प
विद्युत्कुमार	विद्युत्	वज्र
सुवर्णकुमार	श्यामल	गरुड
अग्निकुमार	अग्निज्वाल	कलश
वातकुमार	नीलकमल	तुरग
स्तनितकुमार	कालश्यामल	बर्धमान (स्वम्तिक)
उदधिकुमार	कालश्यामल	मकर
द्वीपकुमार	श्यामल	हस्ती
दिक्कुमार	श्यामल	सिंह

भवनवासी देवों के इन्द्र अग्निमादिक ऋद्धियों से युक्त एवं मणिमय कुण्डलों से अलंकृत होते हैं। इन्द्रों का किरिटमकट और प्रतीन्द्रों का साधारण

१. पंकबहुल भाग में राक्षसों और असुरकुमारों के। खरभाग में शेष व्यन्तरो और भवनवासी देवों के।

२. तिलोयपण्णत्ती, ३/५-६; ३/११६-१२१

मुकुट होता है ।^१ प्रत्येक इन्द्र के पूर्वादिक् दिशाओं के रक्षक सोम, यम, वरुण और धनद, ये चार-चार लोकपाल होते हैं ।^२ भवनवासी देवों के इन्द्रों के नाम तिलोयपण्णत्ती^३ में ये बताये गये हैं :—

	दक्षिण इन्द्र	उत्तर इन्द्र
असुर कुमार	चमर	वैरोचन
नागकुमार	भूतानंद	धरणानंद
सुपर्णकुमार	वेणु	वेणुधारक
द्वीपकुमार	पूर्ण	वशिष्ट
उदधिकुमार	जलप्रभ	जलकान्त
स्तनितकुमार	घोष	महाघोष
त्रिशुत्कुमार	हरिषेण	हरिकान्त
दिवकुमार	अमितगति	अमितवाहन
अग्निकुमार	अग्निशिखी	अग्निवाहन
वायुकुमार	बेलम्ब	प्रभंजन

अश्वत्थ, सप्तपर्ण, शाल्मलि, जामुन, बेत, कदंब, प्रियंगु, शिरीष, पलाश और राजद्रुम, ये दम चैत्यवृक्ष क्रमशः इन भवनवासी देवों के कुलचिह्न होते हैं ।^४ असुरकुमार देवा के सिकतानन आदि अनेक भेद होते हैं । वे अधोलाक में तीसरी पृथ्वी (बायुकाप्रभा) तक जाकर नारकी जाँवों को लड़ाते रहते हैं और उसमें मन में संतुष्ट होते हैं ।^५

आशाधर^६ और नेमिचन्द्र^७ ने भवनवासी देवों के इन्द्रों के वाहन, मुकुट

२. वही, ३।७१.
३. वही, ३।१३--१६
४. वही, ३।१३६
५. वही, २।३५०
६. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३।८६--८७
७. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३०१--०४

चिह्न अस्त्र और सेना आदि के संबंध में निम्नप्रकार विवरण दिया है:—

इन्द्र	वाहन	मुकुट चिह्न	अस्त्र	सेना
असुरेन्द्र	लुलाय	चूडामणि	मुद्गर	महिषादि सप्तानीक
नागकुमारेन्द्र	कमठ	नागफण	नागपाश	नागादि सप्तानीक
सुपर्णकुमारेन्द्र	द्विरद	सुपर्ण	दण्ड	सुपर्णादि सप्तानीक
द्वीपकुमारेन्द्र	तुरंग	द्विप		द्विपादि
उदधिकुमारेन्द्र	बारीभ	मकर	बडिदण्ड	मकरादि
स्तनितकुमारेन्द्र	मृगेन्द्र	वज्र	खड्ग	खड्गादि
विद्युत्कुमारेन्द्र	बराह	स्वस्तिक	तडित्	करभादि
दिवकमारेन्द्र	दिवकुंजर	सिंह	परिधा	सिंहादि
अग्निकुमारेन्द्र	महास्तंभ	कुंभ	उल्का	शिबिकादि
वातकुमारेन्द्र	तुरंग	तुरंग	वृक्ष	तुरंगादि

भैरवपद्मावतीकल्प में आठ प्रकार के नाग बताये गये हैं; अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोट, पदम, महासरोज, शंखपाल और कुलिक। वासुकि और शंख को क्षत्रियकल का तथा रक्तवर्ण एवं धराविष कहा गया है। कर्कोटक और पद्म शूद्रकुल के, वृष्णवर्ण एवं अग्निविष हैं। अनन्त और कुलिक का कुल विभ्र और वर्ण चन्द्रकान्त के समान है, वे अग्निविष हैं। तक्षक और महासरोज वैश्य हैं, पीतवर्ण एवं मरुद् विष हैं। धराविष से गुरुता और जड़ता घाती है, देह में सन्निपात होता है। अग्निविष से लालाकण्ठ निरोध होता है, दंशस्थान गलता है। बल्लिविष के दोष से गंडोद्गम और दृष्टि अपटु होती है। मरुद् विष के दोष से आस्यशोषण बताया गया है। पद्मावती कर्कोट नाग पर आसीन होती है।

व्यन्तर देव

व्यन्तर देवों के आठ विकल्प बताये गये हैं।^१ उनके भी क्रमशः दस, दस, दस, दस, बारह, सात, सात और चौदह भेद होते हैं।^२ जैसाकि ऊपर कहा जा चुका है, व्यन्तर देव मध्य लोक में भी रहते हैं और अधोलोक की प्रथम पृथ्वी के भाग में भी। जम्बूद्वीप के चार गोपुरद्वारों के रक्षक विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित व्यन्तरों के संबंध में ऊपर कहा जा चुका है।

१. तिलोयपण्णत्ती, ६।२५

२. वही ६/३३-५०

व्यंतर देवों के किन्नर, किपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच ये आठ विकल्प हैं। इनके इन्द्रों के वाहन और आयुधों का विवरण नेमिचन्द्र ने प्रतिष्ठातिलक में दिया है।^१ जैसे किन्नरेन्द्र का वाहन अष्टापद और आयुध नागपाश; राक्षसेन्द्र का वाहन सिंह और आयुध भाला।

स्वर्गीय डाक्टर हीरालाल जी जैन ने इन जातियों के संबंध में लिखा है—

“राक्षस, भूत, पिशाच आदि चाहे मनुष्य रहे हों अथवा और किसी प्रकार के प्राणी, किन्तु देश के किन्हीं वर्गों में इनकी कुछ न कुछ मान्यता थी जिसका आदर करते हुए जैनियों ने इन्हें एक जाति के देव स्वीकार किया है।”^२

यहां यक्षों के द्वादश भेद बता देना आवश्यक है, वे हैं माणिभद्र, पूर्णभद्र, शैलभद्र, मनोभद्र, भद्रक, सुभद्र, सर्वभद्र, मानुष, धनपाल, स्वरूपयक्ष, यक्षोत्तम और मनोहरण। इनके माणिभद्र और पूर्णभद्र नामक दो-दो इन्द्र और उन इन्द्रों के कुन्दा, बहुपुत्रा, तारा और उत्तमा नामक देवियां होती हैं।^३ उल्लेखनीय है कि पूर्णभद्र, मणिभद्र, शालिभद्र, सुमनभद्र, लक्षरक्ष, पूर्णरक्ष, सर्वण, आदि यक्षों का उल्लेख भगवतीसूत्र (३-७) में भी मिलता है।

ज्योतिष्क देव

इन्हें पटलिक भी कहते हैं। इनके पांच समूह हैं, चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारे।^४ चन्द्र इन्द्र है और सूर्य प्रतीन्द्र। प्रत्येक चन्द्र के अठारसी ग्रह हैं, उनमें से प्रथम पांच बुध, शुक्र, बृहस्पति, मंगल और शनि है।^५ प्रत्येक चन्द्र के अठ्ठाईस नक्षत्र हैं^६ जिनकी सूची वही है जो सामान्यतया ग्रन्थ ग्रन्थों में मिलती है। नक्षत्रों का आकार निम्न प्रकार बताया गया है।

बीजना, गाड़ी की उद्धिका, हिरण का मस्तक, दीप, तोरण, छत्र, बल्मीक, गोमूत्र, शरयुग, हस्त, उत्पल, दीप, अघिकरण, हार, बीणा, मींग, बिच्छू, दुष्कृतवापी, सिंह का मस्तक, हाथी का मस्तक, मुरज, गिरता पक्षी, सेना, हाथी का पूर्व शरीर, हाथी का ऊपरी शरीर, नौका, घोड़े का मिर, चूल्हा।^७

१. पृष्ठ ३०६ स ३०८।

२. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, पृष्ठ ५।

३. तिलोपपणत्ती, ६/४२-४३

४. वही, ७/७

५. वही, ७/१४-२२

६. वही, ७/२५-२८

७. वही, ७/४६५-६७

प्रत्येक चन्द्र की चन्द्रला, सुसीमा, प्रभंकरा और अर्चिमालिनी ये चार^१ और प्रत्येक सूर्य की द्युतिरुचि, प्रभंकरा, सूर्यप्रभा और अर्चिमालिनी ये चार अग्रमहिषी^२ हुआ करती हैं ।

वैमानिक देव

इनके मुख्य भेद दो हैं, कल्पोपपन्न और कल्पातीत । तिलोयपण्णत्ती (८/१२-१७) में कुल त्रैसठ इन्द्रक विमान बतलाये गये हैं । उनमें से बावन कल्प और ग्यारह कल्पातीत । कल्पवासी देवों में इन्द्र, सामानिक आदि दस उत्तरोत्तर हीन पद रूप कल्प होते हैं । तिलोयपण्णत्ती (८/११५) में कहा गया है कि कोई बारह कल्प और कोई सोलह कल्प (स्वर्ग) मानते हैं । इसी भेद के कारण श्वेताम्बरों ने कुल इन्द्रों की संख्या ६४ और दिगम्बरों ने १०० बताया है ।

दिगम्बरों में सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत, ये सोलह स्वर्ग माने गये हैं । उनमें से ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, महाशुक्र, और शतार कम कर देने से वह संख्या द्वादश हो जाती है । इन स्वर्गों तक कल्प हैं । इनके ऊपर कल्पातीत पटल हैं; नौ ग्रंथेयक, नौ अनुदिश और पांच प्रकार के अनुत्तर विमान ।

जैन प्रतिमाशास्त्र में मुख्यतः सौधर्म और ईशान स्वर्ग के इन्द्रों का प्रसंग आता है । लौकान्तिक देव केवल तीर्थंकर के वंराग्य (तपकल्याणक) के समय पृथ्वी पर आते हैं । उनके नाम सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्यावाध और अरिष्ट हैं । तीर्थंकर के जन्मकल्याणक के समय सौधर्मेंद्र भगवान को गोद में लेता है, ईशानेन्द्र छत्र धारण करता है, सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्ग के इन्द्र चंवर ढीरते हैं । शेष इन्द्र जय जय शब्द का उच्चारण करते हैं । सौधर्मेंद्र और ईशानेन्द्र ही भगवान् का अभिषेक करते हैं तथा धनपति को सेवार्थ नियुक्त करते हैं ।

१. तिलोयपण्णत्ती, ७/५८

२. वही, ७/७७

आचारदिनकर (उदय ३३, पन्ना १५५) में सौधर्मन्द्र और ईशानेन्द्र का स्वरूप निम्न प्रकार बताया गया है—

	सौधर्मन्द्र	ईशानेन्द्र
वर्ण	काञ्चनवर्ण	श्वेतवर्ण
भुजाएं	चतुर्भुज	चतुर्भुज
वाहन	गजवाहन	वृषभवाहन
वस्त्र	पंचवर्णवस्त्राभरण	नीललोहितवस्त्र, जटाधारी
आयुध	दो हाथ अंजलिबद्ध एक हाथ अभयमुद्रा में एक हाथ में वज्र	दा हाथ अंजलिबद्ध एक हाथ में शूल एक हाथ में चाप

पद्मा, शिवा, सुलसा, शची, अंजु, कालिंदी, श्यामा और भानु, ये आठ सौधर्मन्द्र की अप्रदेवियां^१ और श्रीमती, सुसीमा, वसुमित्रा, वसुन्धरा, ध्रुवसेना, जयसेना, सुषेणा और प्रभावती ये आठ ईशानेन्द्र की अप्रदेवियां^२ बतायी गयी हैं ।

तिलोपपण्णत्ती,^३ जंबूरीपपण्णत्तिसंगहो^४ और त्रिलोकसार^५ के अनुसार सोलह स्वर्गों के इन्द्रों के वाहन, आयुध और मौलिचिह्न का विवरण नीचे दिया जा रहा है—

	वाहन		आयुध		मौलिचिह्न
	जंबू०	तिलोय०	त्रिलो०		
१. सौधर्मन्द्र	गज	गज	गज	वज्र	शूकर
२. ईशानेन्द्र	वृषभ	गज	अश्व	त्रिशूल	मृग
३. सनत्कुमारेन्द्र	सिंह	सिंह	सिंह	तलवार	महिष
४. माहेन्द्रेन्द्र	अश्व	अश्व	वृषभ	परशु	मत्स्य

१. जंबूदोपपण्णत्तासगहा, ११/२५७

२. वही, ११/३१३

३. ५/८५-८७

४. ५/९३ आदि

५. गाथा ४८६, ४८७, ९७४, ९७५

५. ब्रह्मेन्द्र	हंस	हंस	सारस	मणिदण्ड	कूर्म
६. ब्रह्मोत्तरेन्द्र	वानर	क्रीच	सारस	पाश	दर्दुर
७. लान्तवेन्द्र	सारस	सारस	पिक	धनुर्दण्ड	तुरग
८. कापिष्ठेन्द्र	मकर	मकर	पिक	कमल	कुञ्जर
९. शुक्रेन्द्र	चक्रवाक	चक्रवाक	हंस	पूगफलगुच्छ	चन्द्र
१०. महाशुक्रेन्द्र	पुष्पक	तोता	हंस	गदा	सर्प
११. शतारेन्द्र	कोयल	कोयल	कोक	तोमर	—
१२. सहस्रारेन्द्र	गरुड	गरुड	कोक	हलभूसल	गेंडा
१३. आनतेन्द्र	—	गरुड	गरुड	श्वेतपुष्पो की माला	छगल
१४. प्राणतेन्द्र	कमल	कमल	मकर	कमलमाला	बृषभ
१५. आरणेन्द्र	नलिन	कुमुद	मयूर	चम्पकमाला	कल्पतरु
१६. अच्युतेन्द्र	कुमुद	मयूर	पुष्पक	मुवतामाला	कल्पतरु

षष्ठ अध्याय

विद्यादेवियां

श्रुतदेवता सरस्वती

तिलोपपण्णत्ती में अनेक स्थलों पर श्रुतदेवी (सरस्वती) के रूप (प्रतिमाओं) का उल्लेख मिलता है।^१ मथुरा के जैन शिल्प में प्राचीनतम सरस्वती प्रतिमा प्राप्त हुई है जो लेखयुक्त है। बीकानेर तथा अन्य कई स्थानों की जन सरस्वती प्रतिमाएँ सुप्रसिद्ध हैं।

श्रुतदेवता या सरस्वती की प्रतिमाओं के निर्माण और उनकी पूजा की परम्परा जैनों में अति प्राचीन कालसे चली आ रही है। सरस्वती द्वादशांग श्रुतदेव की अधिदेवता है। भगवान् जिनेन्द्र के वस्तुतत्त्वरूपण को उनके गणधरों ने बारह अंगों में संग्रहीत किया था जिसे द्वादशांग आगम या श्रुत कहा जाता है। जिनेन्द्र की वाणी होने के कारण श्रुत जिनेन्द्र के समकक्ष प्रामाणिक और पूज्य माना जाता है। इसलिये श्रुत को भी देव की संज्ञा प्राप्त हो गयी। कालान्तर में श्रुत की अधिदेवता के रूपमें श्रुतदेवता या सरस्वती के मूर्त रूप की कल्पना हुयी। सरस्वती को भारती, वाणी आदि अनेक नामों से स्मरण किया जाता है।

जैनों की सरस्वती प्रतिमा जैनतंत्रों की सरस्वती प्रतिमा से विशेष भिन्न प्रकार की नहीं होती। प्राचीन कालमें भारत के सभी धर्मावलम्बियों में सरस्वती की एक समान प्रतिष्ठा थी। मल्लिषेण ने अपने 'भारतीकल्प' में सरस्वतीवन्दना करते हुये लिखा है कि हे देवि, साङ्ख्य, चार्वाक, मीमांसक, सौगत तथा अन्य मत-मतान्तरों को मानने वाले भी ज्ञानप्राप्ति के हेतु तेरा ध्यान करते हैं। मल्लिषेण ने वाणी (सरस्वती) को त्रिनेत्रा और जटाभालेन्दु-मण्डिता कहा है। वर्ण श्वेत होता है और वह सरोजविष्टर पर आसीन होती है। सरस्वती के चार हाथों में से एक हाथ अभय मुद्रा में होता है और दूसरा हाथ ज्ञानमुद्रामें। शेष दो हाथों के आयुध क्रमशः अक्षमाला और पुस्तक हैं।^१

१. ४/१८८१ तथा अन्यत्र।

२. जैन सिद्धान्त भवन आरा का हस्तलिखित ग्रन्थ क्रमांक ३/८०

३. वही

सरस्वती की स्तुतिमें अनेक जैन आचार्यों और पंडितों ने कल्प, स्तोत्र और स्तवन रचे हैं। मल्लिषेण की रचना का उल्लेख ऊपर किया गया है। बप्पभट्टि का सरस्वतीकल्प, साध्वी शिवाय्या का पठितसिद्धसारस्वतस्तव, जिन-प्रभसूरि का शारदास्तवन और विजयकीर्ति के शिष्य मलयकीर्ति का सरस्वती-कल्प कुछेक प्रसिद्ध रचनाओं में से हैं। मलयकीर्ति ने सरस्वती को कलापिगमना और पुण्डरीकासना बताया है।^१ उन्होंने भी सरस्वती को त्रिनयना और चतुर्भुजा कहा है। आचारदिनकर में^२ श्रुतदेवता को श्वेतवर्णा, श्वेतवस्त्रधारिणी, हंसवाहना, श्वेतसिंहासनासीना, भामण्डलालंकृता और चतुर्भुजा बताया गया है। देवी के बायें हाथों में श्वेतकमल और वीणा तथा दायें हाथों में पुस्तक और मुक्ताक्षमाला का विधान किया गया है किन्तु आचारदिनकर के ही सरस्वती स्तोत्रमें देवी के बायें हाथों के आयुध वीणा और पुस्तक तथा दायें हाथों के आयुध माला और कमल कहे गये हैं। निर्वाणकलिका में भी सरस्वती के रूप का वर्णन मिलता है। इस ग्रन्थ के बिम्बप्रतिष्ठाविधि स्थलमें सरस्वती को द्वादशांग श्रुतदेव की अधिदेवता कहा गया है।^३ निर्वाणकलिका के अनुसार श्रुतदेवता के दायें हाथों में से एक हाथ वरद मुद्रा में होता है और दूसरे हाथ में कमल होता है। बायें हाथों के आयुध पुस्तक और अक्षमाला बताये गये हैं।^४

विद्या देवियां

अभिधानचिन्तामणिमें^५ विद्यादेवियों के नामों का उल्लेख करते हुये उन्हें वाक्, ब्राह्मी, भारती, गौ, गी, वाणी, भाषा, सरस्वती, श्रुतदेवी, वचन, व्याहार, भाषित और वचस् भी कहा गया है। इससे प्रतीत होता है कि जैनों की विद्यादेवियां वस्तुतः अपने नामके अनुसार वाणी की विभिन्न प्रकृतियों के कल्पित मूर्त रूप हैं। विद्यादेवियों का स्वरूप बताते समय प्रायः सभी ग्रन्थोंमें उन्हें ज्ञान से संयुक्त कहा गया है।

१. सरस्वतीकल्प, जैनसिद्धान्त भवन आरा का हस्तलिखित ग्रन्थ क्रमांक ख/२३६।
२. उदय ३३, पन्ना १५५।
३. निर्वाणकलिका. पन्ना १७
४. वही, पन्ना ३७
५. देवकाण्ड (द्वितीय)

विद्यादेवियां सोलह मानी गयी हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं, १. रोहिणी, २. प्रज्ञप्ति, ३. वज्रशृंखला, ४ वज्रांकुशा, ५. जाम्बूनदा, ६. पुरुषदत्ता, ७. काली, ८. महाकाली, ९. गौरी, १० गांधारी, ११. ज्वालामालिनी, १२. मानवी, १३. वैरोटी, १४. अच्युता, १५ मानसी और १६. महामानसी। यह सूची दिगम्बर परम्परा के अनुसार है। श्वेताम्बर परम्परा में पांचवीं विद्यादेवी अप्रतिचक्रा या चक्रेश्वरी कही गयी है। अभिधानचिन्तामणि में^१ चक्रेश्वरी नामसे और पद्मानन्द महाकाव्य^२ में अप्रतिचक्रा नामसे उसका उल्लेख मिलता है। आठवीं विद्यादेवी का नाम हेमचन्द्र ने महापरा बताया है^३ किन्तु श्वेताम्बर परम्परा के अन्य ग्रन्थ उसे महाकाली ही कहते हैं।^४ ज्वालामालिनी का उल्लेख श्वेताम्बर ग्रन्थों में ज्वाला नाम से मिलता है।^५ उन्ही ग्रन्थों में वैरोटी को वैरोट्या और अच्युता को अच्छृप्ता कहा गया है।

विद्यादेवियों की सूची का शासन देवताओं की सूची से मिलान करने पर विदित होगा कि इन देवियों में से प्रायः सभी को शासन यक्षियों की सूची में स्थान प्राप्त है यद्यपि शासन यक्षी के रूप में इनके आयुध, वाहन आदि भिन्न प्रकार के होते हैं। गौरी, वज्राकुशी, वज्रशृंखला, वज्रगांधारी, प्रज्ञा-पारमिता, विद्युज्ज्वालाकराली जैसी देवियों की मान्यता बौद्ध परम्परा में भी रही है। वस्तुतः वज्रशृंखला और वज्राकुशा जैसे नाम बौद्धों की तार्त्रिक परम्परा से अधिक प्रभावित जान पड़ने है।

रोहिणी

षोडश विद्यादेवियों में रोहिणी प्रथम है। यद्यपि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में इसकी इसी नाम से मान्यता है, पर दोनों परम्पराओं

१. देवकाण्ड (द्वितीय)।

२. १/८३-८४।

३. अभिधानचिन्तामणि, देवकाण्ड / आचार/दनकर (उदय ३३) में भी महापरा नाम मिलता है।

४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७।

५. दिगम्बर परम्परा के विद्वानों द्वारा भी ज्वालनीकल्प नाम से रचनाएं की गयी हैं।

में देवी के वर्ण, वाहन और आयुषों के संबंध में मतवैषम्य है। दिगम्बरों के अनुसार रोहिणी स्वर्ण के समान पीत वर्ण की है^१ जबकि श्वेताम्बर ग्रन्थों में उसे धवल वर्ण कहा गया है।^२ दिगम्बरों के अनुसार यह विद्यादेवी कमलासना है^३ पर श्वेताम्बर परम्परा गोवाहना कहती है।^४ रोहिणी चतुर्भुजा है। दिगम्बर ग्रन्थों में उसके हाथों के आयुष कलश, शंख, कमल और बीजपूर बताये गये हैं।^५ इसके विपरीत श्वेताम्बर परम्परा की रोहिणी दायें हाथों में अक्षसूत्र और बाण तथा बांये हाथों में शंख और धनुष धारण किये रहती है।^६ आचारदिनकर ने इस देवी को 'गीतवरप्रभावा' कहा है। दिगम्बर परम्परा में द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ की शासन यक्षी का नाम भी रोहिणी है पर वह लोहासना होती है और उसके आयुष शंख, चक्र, अभय और वरद होते हैं।

प्रज्ञप्ति

द्वितीय विद्या देवी का नाम प्रज्ञप्ति है। इसे दिगम्बर ग्रन्थ श्याम वर्ण की^७ और श्वेताम्बर ग्रन्थ कमलपत्र के समान अथवा धवल वर्ण की बताते हैं।^८ दिगम्बरों के अनुसार इसका वाहन अश्व^९ पर श्वेताम्बरों के अनुसार मयूर है।^{१०} दिगम्बर परम्पराके ग्रन्थों में प्रज्ञप्ति के चार हाथ बताये गये हैं जबकि श्वेताम्बर परम्परा के आचारदिनकर के अनुसार, वह द्विभुजा और निर्वाणकलिका के अनुसार चतुर्भुजा है। आचार दिनकर ने शक्ति और कमल ये दो आयुष कहे हैं^{११} किन्तु निर्वाणकलिका के वर्णन के अनुसार प्रज्ञप्ति के दायें हाथों में से एक तो वरद मुद्रा में होता है और दूसरे हाथ में शक्ति होती है तथा बायें हाथों में वह मातुलिंग और पुतः शक्ति धारण करती है।^{१२} दिगम्बर परम्परा में प्रज्ञप्ति के चक्र,

१ ३.५ आशाधर, ३/३७; नामचन्द्र, पृष्ठ २८४.

२.४.६. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२; निर्वाणकलिका, पन्ना ३७।

७. वसुनन्दि/६

८. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२; निर्वाणकलिका, पन्ना ३७।

९. आशाधर

१०. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२; निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

११. उदय ३३, पन्ना १६२

१२. पन्ना ३७

सङ्ग, कमल और फल, ये चार आयुध बताये गये हैं ।^१ दिगम्बरों ने तीसरे तीर्थंकर की यक्षी का नाम भी प्रज्ञप्ति कहा है किन्तु वह यक्षी पक्षीवाहना और षड्भुजा होती है ।

वज्रशृङ्खला

तृतीय विद्यादेवी वज्रशृङ्खला का वर्ण सोने के समान पीत है । दिगम्बर ग्रन्थों में उसका वाहन हाथी कहा गया है पर श्वेताम्बरों के अनुसार वह पद्मवाहना है । आचार दिनकर में वज्रशृङ्खला के केवल दो आयुधों का नामोल्लेख किया गया है, वे हैं शृङ्खला और गदा^२ किन्तु निर्वाणकलिका^३ के अनुसार देवी के चार हाथों में से उपरले दोनों हाथों में शृङ्खला होती है और निचला दाया हाथ वरद मुद्रा में तथा निचला बायां हाथ पद्म धारण किये होता है । दिगम्बर परम्परा के प्रतिष्ठातिलक के वर्णनके अनुसार, वज्रशृङ्खला, शंख, कमल और बीजपूर ये चार वज्रशृङ्खला विद्यादेवीके आयुध हैं ।^४ आशाधर ने वज्र और शृङ्खला इन दोनों को भिन्न भिन्न आयुध बताया है । वसुनन्दि ने शृङ्खला का तो नामोल्लेख किया है पर अन्य आयुधों का विवरण नहीं दिया । केवल यह सूचित किया है कि देवी चतुर्भुजा होती है । दिगम्बर परम्परा में चतुर्थ तीर्थंकर की यक्षी का नाम भी वज्रशृङ्खला है किन्तु उस यक्षी का स्वरूप भिन्न है ।

वज्राकुशा

चतुर्थ विद्यादेवी का यह नाम भी बौद्धों से प्रभावित प्रतीत होता है । वसुनन्दि ने वज्राकुशा का वर्ण अंजन के समान काला बताया है पर अन्यत्र उसे सोने के सगान पीतवर्णवाली कहा गया है ।^५ दिगम्बर परम्परा के अनुसार इस देवी का वाहन पुष्पयान है किन्तु श्वेताम्बर परम्परा में वह गज माना गया है ।^६ वज्राकुशा के चार हाथ होते हैं । दिगम्बर ग्रन्थकारों में से न तो वसुनन्दि ने, न आशाधर ने और न ही नेमिचन्द्र ने सभी आयुधों के नाम लिये हैं ।

१. नेमिचन्द्र, पृष्ठ ३८४

२. उदय ३३, पन्ना १६२

३. पन्ना ३७

४. नेमिचन्द्र, पृष्ठ २८५

५. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

६. वही

वसुनन्दि ने देवी को अंतुजाहस्ता कहा है। आशाघर ने एक हाथ का आयुध वीणा बताया है, शेष आयुध नहीं बताये। नेमिचन्द्र ने अंकुश, कमल और बीजपूर इन तीन आयुधों का नामोल्लेख किया है।^१ चौथे आयुध का उल्लेख नहीं किया। यदि नेमिचन्द्र द्वारा गिनाये गये तीन आयुधों में आशाघर द्वारा बताया गया चतुर्थ आयुध वीणा जोड़ दिया जावे तो दिगम्बर परम्परा के अनुसार वज्रांकुशा के चारों हाथों में क्रमशः वीणा, अंकुश, कमल और बीजपूर ये चार आयुध होना चाहिये। निर्वाणकलिकाकार ने दायें हाथों के आयुध वरद और वज्र तथा बायें हाथों के आयुध मातुलिग और अंकुश कहे हैं।^२ आचार दिनकर में^३ खड्ग, वज्र, फलक (ढाल) और कुन्त (भाला) ये चार आयुध बताये गये हैं।

जाम्बूनदा /अप्रतिचक्रा

पंचम विद्यादेवी का नाम दिगम्बर परम्परा में जाम्बूनदा और श्वेताम्बर परम्परा में अप्रतिचक्रा या चक्रेश्वरी मिलता है। अप्रतिचक्रा को प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ की शासनदेवता भी माना गया है। पद्मानन्द महाकाव्य (१/८३-८४) में कहा है कि चक्रेश्वरी सभी देवताओं में अधिदेवता है और वही देवी विद्यादेवियों में अप्रतिचक्रा के नाम से प्रसिद्ध है।

जाम्बूनदा और अप्रतिचक्रा दोनों का ही वर्ण स्वर्ण के समान पीत बताया गया है। जाम्बूनदा का वाहन मयूर है और अप्रतिचक्रा का गरुड। अप्रतिचक्रा के चारों हाथों में चक्र होते हैं।^४ जाम्बूनदा के आयुध खड्ग, कुन्त, कमल और बीजपूर हैं।^५

पुरुषदत्ता

छठी विद्यादेवी पुरुषदत्ता को दिगम्बर ग्रन्थ श्वेतवर्ण की और श्वेताम्बर ग्रन्थ पीतवर्ण वाली कहते हैं। दिगम्बरों के अनुसार उसका वाहन कोक है^६ और श्वेताम्बरों के अनुसार महिषी (भैंस)।^७ दिगम्बर परम्परा के अनु-

१. प्रातष्ठागतक, पृष्ठ २८५।
२. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७।
३. उदय ३३, पन्ना १६२।
४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७।
५. नेमिचन्द्र, पृष्ठ २८५।
६. आशाघर/३-४२
७. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

सार यह विद्यादेवी चतुर्भुजा है किन्तु श्वेताम्बर परम्परा के आचारदिनकर और निर्वाणकलिका में देवी की भुजाओं की संख्या के विषय में भिन्न मत प्रकट किये गये हैं । आचारदिनकर के कथनानुसार पुरुषदत्ता द्विभुजा है^१ किन्तु निर्वाणकलिकाकार उसे दिगम्बरों के समान चतुर्भुजा ही कहते हैं । आचारदिनकर में खड्ग और ढाल इन दो आयुधों का उल्लेख है जबकि निर्वाणकलिका के अनुसार इस देवी के दायें हाथों में से एक बरदमुद्रा में होता है और दूसरे हाथ में तलवार तथा बायें हाथों में मातुलिंग और खेटक होते हैं ।^२ दिगम्बर परम्परा में वज्र, कमल, शंख और फल ये चार आयुध बताये गये हैं ।^३ दिगम्बर परम्परा में ही पुरुषदत्ता पंचम तीर्थंकर की यक्षी का भी नाम बताया गया है किन्तु उसका स्वरूप भिन्न प्रकार का है ।

काली

सप्तम विद्यादेवी काली का वर्ण श्वेताम्बरों के अनुसार कृष्ण और दिगम्बरों के अनुसार पीत है । दिगम्बरों के अनुसार इसका वाहन हरिण है पर श्वेताम्बर कमल पर आसीन कहते हैं । देवी चतुर्भुजा होती है । आचार दिनकर ने गदा और वज्र ये दो ही आयुध बताये हैं^४ पर निर्वाणकलिका में दायें हाथों में अक्षसूत्र और गदा का तथा बायें हाथों में वज्र और अभय का विधान है ।^५ नेमिचन्द्र ने मुशल, तलवार, कमल और फल, ये चार आयुध कहे हैं ।^६ श्वेताम्बरों की सूची में चतुर्थ तीर्थंकर की और दिगम्बरों की सूची में सप्तम तीर्थंकर की यक्षी का नाम भी काली है किन्तु उनके लक्षण इस विद्यादेवी से भिन्न प्रकार के हैं ।

महाकाली

अष्टम विद्यादेवी महाकाली को अभिधानचिन्तामणि में महापरा तथा आचारदिनकर में महापरा और कालिका दोनों कहा गया है । यह संभवतः

-
१. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२
 २. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७ ।
 ३. नेमिचन्द्र, पृष्ठ २८६ ।
 ४. उदय ३३, पन्ना १६२ ।
 ५. पन्ना ३७ ।
 ६. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८७ ।

सप्तम विद्यादेवी काली के साथ 'महा' पद जोड़े जाने का निर्देश है। दिगम्बर आम्नाय में महाकाली का वर्ण श्याम या नील माना जाता है जबकि आचार दिनकरकार ने उसे चन्द्रकान्त मणि के समान उज्ज्वल वर्ण की और निर्वाणकलिकाकार ने तमाल वर्ण की बताया है। दिगम्बर परम्परा के अनुसार महाकाली की सवारी शरभ है पर श्वेताम्बर परम्परा में इस विद्यादेवी को नरवाहना माना गया है। देवी की चार भुजाएं हैं। आशाघर और नेमिचन्द्र ने घनुष, खड्ग, फल और वाण ये चार आयुध बताये हैं।^१ वसुनन्दि ने देवी को वज्रहस्ता और चतुर्भुजा कहा है^२ पर अन्य आयुधों का नामोल्लेख नहीं किया। निर्वाणकलिका में^३ देवी के दायें हाथों में अक्षसूत्र और वज्र का तथा बायें हाथों में से एक में घण्टा और दूसरा अभय मुद्रा में होने का विधान है। आचार दिनकर^४ के अनुसार तीन हाथों में अक्षसूत्र, घण्टिका और वज्र तो होते हैं किन्तु चौथा हाथ अभयमुद्रा में न होकर फल धारण किये होता है। शोभन मुनि की चतुर्विंशतिका में भी इस देवी के वज्र, फल, अक्षमाला और घण्टा यही चार आयुध बताये गये हैं। महाकाली नाम तीर्थकरों की यक्षियों की सूची में भी मिलता है। श्वेताम्बरों की सूची में वह पंचम तीर्थकर की और दिगम्बरों की सूची में नवम तीर्थकर की यक्षी है किन्तु वहां यक्षा के आयुध, वाहन आदि भिन्न प्रकार के बताये गये हैं।

गौरी

नीवीं विद्यादेवी गौरी को श्वेताम्बरों ने गौर वर्ण और दिगम्बरों ने पीत वर्ण बताया है। निर्वाणकलिकाकार ने इस कनकगौरी कहा है। गौरी का वाहन गंधा है। चार भुजाओं वाली इस विद्यादेवी का मुख्य आयुध कमल है। वसुनन्दि ने इसे चतुर्भुजा और पद्महस्ता कहा है। उनका वर्णन अपूर्ण है। आचार दिनकर में भी सहस्रपत्र (कमल) मात्र का नामोल्लेख है, अन्य आयुधों का नहीं। पर निर्वाणकलिका में चारों हाथों के आयुध कहे हैं। तदनुसार गौरी के दायें हाथों में से एक वरदमुद्रा में, दूसरे में मूसल तथा बायें हाथों में अक्ष-

१. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८६
२. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ६
३. पन्ना ३७
४. उदय ३३, पन्ना १६२

माला और कुवलय (कमल) होते हैं।^१ गौरी का नाम शासन देवताओं की सूची में भी है। दिगम्बरों के अनुसार ग्यारहवें तीर्थंकर की यक्षी का नाम गौरी या गोमेधकी है किन्तु वह मृगवाहना होती है।

गांधारी

दसवीं विद्यादेवी गांधारी है जिसे दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही आम्नाय भ्रमर और अंजन के समान कृष्ण वर्ण की मानते हैं। दिगम्बर आम्नाय में गांधारी को कच्छपासीन किन्तु श्वेताम्बर आम्नाय में उसे कमलासीन माना गया है। यद्यपि आचार दिनकर में इस देवी के केवल दो आयुधों—मूसल और वज्र—का नामोल्लेख है किन्तु निर्वाण कलिका में चारों हाथों के आयुध गिनाये गये हैं।^२ वे डम प्रकार हैं, दायें ओर का एक हाथ वरदमुद्रा में, दूसरे हाथ में मूसल, बायें ओर का एक हाथ अभयमुद्रा में और दूसरे हाथ में वज्र। दिगम्बर परम्परा में भी गांधारी को चतुर्भुजा कहा गया है। वसुनन्दि ने केवल एक आयुध, चक्र, का उल्लेख किया है पर चतुर्भुजा कहा है। आशाधर और नेमिचन्द्र^३ ने चक्र और खड्ग, इन दो आयुधों के नाम बताये हैं, शेष दो के नहीं।

गांधारी का नाम भी शासन देवियों की सूची में मिलता है। दिगम्बर परम्परा में बारहवें तीर्थंकर की यक्षी का नाम गांधारी है। कुछ ग्रन्थों के अनुसार वह सत्रहवें तीर्थंकर की यक्षी है। श्वेताम्बर परम्परा में इक्कीसवें तीर्थंकर की यक्षी का नाम गांधारी बताया गया है किन्तु वह यक्षी हंसवाहना होती है।

ज्वालामालिनी / ज्वाला

दिगम्बरों में ज्वालामालिनी के नाम से और श्वेताम्बरों में ज्वाला के नाम से मान्य ग्यारहवीं विद्यादेवी का श्वेतवर्ण का माना गया है। इसका वाहन क संबध में मतवैषम्य है। शोभन मुनि कृत चतुर्विंशतिका में वरालक, आचारदिनकर में मार्जार, निर्वाणकलिका में वराह, प्रतिष्ठासारोद्धार में महिष और नेमिचन्द्र क प्रतिष्ठातिलक में लुलाय वाहन का उल्लेख है। दिगम्बर ग्रन्थ इस देवी की अष्टभुजा बताते हैं। निर्वाणकलिका न असंख्यभुजा कहा है पर आयुधों के नाम नहीं गिनाये। आचारदिनकर के अनुसार

१. पृष्ठा ३७।

२. पृष्ठा ३७-३८

३. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८७।

यह देवी दो हाथों में ज्वाला धारण करती है ।^१ वसुनन्दि इसके अष्टभुजा होने का उल्लेख तो करते हैं पर केवल चार आयुध, धनुष, खड्ग, बाण और खेट गिनाकर छोड़ देते हैं ।^२ नेमिचन्द्र ने धनुष और बाण इन दो आयुधों का उल्लेख किया है, शेष छह का नहीं ।^३ आशाधर ने भी धनुष, खेट, खड्ग और चक्र इन चार का उल्लेख कर आदि आदि कहा है । वसुनन्दि की सूची में बाण है जो नेमिचन्द्र की सूची में नहीं है । वह मिला देने से पांच आयुधों की निश्चित जानकारी संभव है । इनके अलावा एक-एक हाथ अभय और वरदमुद्रा में भी हो सकते हैं । ज्वालामालिनी को दिगम्बर परम्परा में अष्टम तीर्थंकर की यक्षी भी माना गया है । वह्निदेवी के नाम से ज्ञात इस विद्यादेवी को यक्षी के रूप में भी श्वेतवर्णवाली, महिषवाहना और अष्टभुजा कहा गया है । ज्वालामालिनी यक्षी के जो आयुध आशाधर और नेमिचन्द्र ने बताये हैं, वे इस प्रकार हैं, दायें हाथों में त्रिशूल, बाण, मत्स्य और खड्ग; बायें हाथों में चक्र, धनुष, पाश और ढाल । वसुनन्दि ने दो आयुध तो नहीं बताये पर शेष छह आयुधों का उल्लेख किया है जिनमें से एक वज्र भी है । बाकी पांच बाण, त्रिशूल, पाश, धनुष और मत्स्य ये हैं । ज्वालामालिनी कल्प में खड्ग और ढाल के बदले फल और वरद का विधान है ।

मानवी

बारहवीं विद्यादेवी का वर्ण नील माना गया है । केवल निर्वाणकलिका कार ने उसे श्याम वर्ण कहा है जो नीले के लिये भी प्रयुक्त होता है । दिगम्बरों के अनुसार मानवी शूकरवाहना है, किन्तु श्वेताम्बर ग्रन्थों में उसे नील सरोज (कही साधारण सरोज) पर आसीन बताया गया है । दोनों परम्पराओं में मानवी को चतुर्भुजा माना गया है पर वसुनन्दि ने केवल एक आयुध-त्रिशूल का, आशाधर ने त्रिशूल और मत्स्य का, नेमिचन्द्र ने मत्स्य, त्रिशूल, और खड्ग इन आयुधों का नाम बताया है । चौथे आयुध का उल्लेख नेमिचन्द्र ने भी नहीं किया ।^४ आचारदिनकर ने देवी के हाथ में वृक्ष बताया है । चारों हाथों के आयुधों का विवरण निर्वाणकलिका में उपलब्ध है । उसके अनुसार बायें हाथ में अक्षसूत्र और वृक्ष तथा दायें हाथों में से एक हाथ में पाश और दूसरा हाथ

१. उदय ३३, पन्ना १६२ ।
२. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ६ ।
३. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८७ ।
४. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८८ ।

वरद मुद्रा में ।^१ यक्षियों की सूचियों में मानवी का नाम दिगम्बर परम्परा में सातवें और दसवें दोनों तीर्थकरों के साथ मिलता है किन्तु कहीं कहीं उन तीर्थकरों की यक्षियां क्रमशः काली और चामुण्डा भी कही गयी हैं । श्वेताम्बर परम्परा में ग्यारहवें तीर्थकर की यक्षी का नाम मानवी बताया गया है ।

वैरोटी / वैरोट्या

तेरहवीं विद्यादेवी का नाम दिगम्बरों में वैरोटी और श्वेताम्बरों में वैरोट्या प्रचलित है । उसका वर्ण नेमिचन्द्र ने स्वर्ण के समान बताया है किन्तु अन्य दिगम्बर ग्रन्थकार नील वर्ण बताते हैं । श्वेताम्बर परम्परा के ग्रन्थों में से निर्वाणकलिका में इस विद्यादेवी का वर्ण श्याम किन्तु आचार दिनकर में गौर कहा गया है । दिगम्बरों के अनुसार वैरोटी का वाहन सिंह है । आचार दिनकर कार भी वैरोट्या का वाहन सिंह बताते है किन्तु निर्वाणकलिका के अनुसार वह अजगरवाहना है ।^१ वैरोटी और वैरोट्या दोनों ही रूप में यह विद्या देवी चतुर्भुजा है । वसुनन्दि ने इसे सर्पहस्ता कहा है, अन्य प्रायुधों का उल्लेख नहीं किया । नेमिचन्द्र ने भी सर्प का ही उल्लेख किया है ।^२ निर्वाण कलिका के अनुसार दायें हाथों में खड्ग और सर्प तथा बायें हाथों में खेटक और सर्प होते है ।^३ आचार दिनकर के विवरण से प्रतीत होता है कि देवी के उपरले दोनों हाथों में खड्ग और ढाल तथा निचले हाथों में से एक हाथ में सर्प और दूसरा हाथ वरद मुद्रा में होता है ।^४ वैरोटी यक्षी का नाम दिगम्बर परम्परा में तेरहवें तीर्थकर के साथ और वैरोट्या का नाम श्वेताम्बर परम्परा में उन्नीसवें तीर्थकर के साथ मिलता है । उन शासन यक्षियों के लक्षण इन विद्यादेवियों से भिन्न प्रकार के बताये गये हैं ।

अच्युता / अच्छुप्ता

चौदहवीं विद्यादेवी का नाम दिगम्बर परम्परामें अच्युता और श्वेताम्बर परम्परामें अच्छुप्ता मिलता है । वर्ण दोनों का ही स्वर्ण या विद्युत् के समान बताया गया है । दोनों विग्रहों में यह विद्यादेवी अश्ववाहना और चतुर्भुजा है । खड्ग इस देवी की खास पहचान है ।

१. निर्वाणकालिका, पन्ना ३८ ।
२. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना २८८ ।
३. पन्ना ३८ ।
४. उदय ३३, पन्ना १६३

वसुनन्दि ने अच्युता को वज्रहस्ता कहा है। आशाधर ने उसके दो हाथों का नमस्कार मुद्रा में बताया है। नेमिचन्द्र ने एक आयुध खड्ग कहा है।^१ इस प्रकार दो हाथ नमस्कार मुद्रामें, एक हाथमें खड्ग और चौथे हाथ में वज्र, यह अच्युता देवी का रूप प्रतीत होता है। निर्वाणकलिका में देवीके चार आयुध इस प्रकार बताये गये हैं, दायें हाथों में खड्ग और बाण तथा बायें हाथों में खेटक और सर्प।^२ आचारदिनकर के अनुसार दायें हाथों में बाण और खड्ग तथा बायें हाथों में धनुष और दाल इस प्रकार चार आयुध हांते हैं।

श्वेताम्बर परम्परामें छठे तीर्थंकर की यक्षी का भी नाम अच्युता है। प्रवचनसारोंद्वार में वही नाम सत्रहवें तीर्थंकर की यक्षी का बताया गया है।

मानसी

पद्महर्षी विद्यादेवी मानसी है। उसका वर्ण आशाधर और नेमिचन्द्र ने लाल, वसुनन्दि ने रत्नप्रभ, आचारदिनकर ने जाम्बूनदप्रभ और निर्वाणकलिका ने धवल बताया है। दिगम्बरों के अनुसार मानसीका वाहन सर्प है किन्तु आचारदिनकर में वह हंसवाहना बतायी गयी है।^३ निर्वाणकलिका के विवरण के अनुसार मानसी का दायें और का एक हाथ वरद मुद्रा में और उसके दूसरे हाथ में वज्र होता है। देवीके बायें हाथों में अक्षवलय और अशनि होने का उल्लेख मिलता है। दिगम्बर परम्परा के वसुनन्दि और नेमिचन्द्र ने इस विद्यादेवी को नमस्कार मुद्रा युक्त तो बताया है^४ किन्तु अन्य दो हाथों के आयुधों की सूचना नहीं दी है। दिगम्बर परम्परामें पद्महर्षे तीर्थंकर की यक्षी का नाम भी मानसी है।

महामानसी

सालहवा विद्यादेवी महामानसी को दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थ रक्तवर्ण और श्वेताम्बर परम्पराके ग्रन्थ धवलवर्ण बताते हैं। दिगम्बरों के अनुसार महामानसी हंसवाहना है। श्वेताम्बर परम्पराके आचारदिनकर में इसे मकरवाहना^५ और निर्वाणकलिका में सिंहवाहना कहा गया है।^६ यह विद्यादेवी चतुर्भुजा

१. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८८ ।

२. निर्वाणकलिका, पन्ना ३८ ।

३. उदय ३३, पन्ना १६३ ।

४. पन्ना ३८ ।

५. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८६ ।

६. उदय ३३, पन्ना १६३

७. पन्ना ३८

है। दिगम्बर परम्परा के वसुनन्दि ने इसे प्रणाममुद्रायुक्त कहा है किंतु प्राणाघर और नेमिचन्द्र^१ ने अक्षमाला, वरद, माला और अंकुश ये चार आयुध बताये हैं। आचारदिनकरकार ने खड्ग और वरद इन दो आयुधों का उल्लेख किया है। निर्वाणकलिका ने दायें हाथों में से एक को वरद मुद्रामें स्थित और दूसरे में तलवार तथा बायें हाथों में कमण्डलु और ढाल, इस प्रकार चार आयुध बताये हैं।^२ दिगम्बर परम्परा में सोलहवें तीर्थंकर की यक्षी का नाम भी महामानसी है।

१. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ २८६।

२. निर्वाणकलिका, पन्ना ३८।

सप्तम अध्याय

शासनदेवता

चीबीम यक्षों और उननी ही यक्षियों की गणना शासन देवताओं के समूह में की गयी है। ये यक्ष-यक्षी तीर्थकरों के रक्षक कहे गये हैं। प्रत्येक तीर्थकर से एक यक्ष और एक यक्षी संबद्ध है। तीर्थकर प्रतिमा के दायें और यक्ष की और बायें और यक्षी की प्रतिमा बनाये जाने का विधान है।^१ पश्चात् काल में स्वतंत्र रूप से भी यक्ष-यक्षियों की प्रतिमाएं बनाई जाने लगी थी। यद्यपि तांत्रिक युग के प्रभाव से विवश होकर जैनों को इन देवों की कल्पना करनी पड़ी थी किन्तु इन्हें जैन परंपरा में सेवक या रक्षक का ही दरजा मिला, न कि उपास्य देव का। आशाधर पंडित ने सागारधर्माभूत में लिखा है कि आपदाओं से प्राकुलित होकर भी दार्शनिक श्रावक उनकी निवृत्ति के लिये शासन देवताओं को नहीं भजता, पाक्षिक श्रावक ऐसा किया करते हैं। सोमदेव सूरि ने स्पष्ट किया है कि तीनों लोकों के दृष्टा जिनेन्द्रदेव और व्यन्तरादिक देवताओं को जो पूजाविधान में समान रूप से देखता है, वह नरक में जाता है।^२ उन्होंने स्वीकार किया है कि परमागम में, शासन की रक्षा के लिये शासन देवताओं की कल्पना की गयी है।

यक्ष यक्षियों की प्रतिमाएं सर्वांगसुन्दर, सभी प्रकार के अलंकारों से भूषित और अपने अपने वाहनों तथा आयुधों से युक्त बनाने का विधान है।^३ वे करण्ड मुकुट और पत्रकुण्डल धारण किये प्रायः ललितासन में बनायी जाती हैं।

चतुर्विंशति यक्ष

शासन-यक्षों का सूचियां तिलोयपण्णत्ती, प्रवचनसारोद्धार, अभिधान-चिन्तामणि, प्रतिष्ठासारसंग्रह, प्रतिष्ठासारोद्धार, प्रतिष्ठातिलक, निर्वाणकलिका, आचारदिनकर आदि आदि जैन ग्रन्थों में तथा अपराजितपृच्छा और रूपमण्डन जैसे अन्य वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों में मिलती हैं। तिलोयपण्णत्ती, प्रतिष्ठासारसंग्रह, अभिधान चिन्तामणि और अपराजितपृच्छा में वर्णित सूचियां यहां दी जा रही हैं।

१. वसुनान्द, ५/१२

२. उपासकाध्ययन, ध्यान प्रकरण, श्लोक ६६७-६६९।

३. वसुनान्दि, ४/७१

मांक	तिलोप०	प्रतिष्ठासारसं०	अभि०चि०	अप०पृ०	तीर्थंकर
१	गोवदन	गोमुख	गोमुख	गोमुख	ऋषभ
२	महायक्ष	महायक्ष	महायक्ष	महायक्ष	अजित
३	त्रिमुख	त्रिमुख	त्रिमुख	त्रिमुख	संभव
४	यक्षेश्वर	यक्षेश्वर	यक्षनायक ^१	चतुरानन	अभिनंदन
५	तुंबर	तुंबर ^२	तुम्बरु	तुम्बरु	सुमति
६	मातंग	पुष्प	सुमुख ^३	कुसुम	पद्मप्रभ
७	विजय	मातंग	मातंग	मातंग	सुपाश्वं
८	अजित	श्याम	विजय	विजय	चन्द्रप्रभ
९	ब्रह्म	अजित	अजित	जय	पुष्पदन्त
१०	ब्रह्मेश्वर	ब्रह्म ^४	ब्रह्म	ब्रह्मा	शीतल
११	कुमार	ईश्वर	यक्षेश्वर ^५	किनरेश	श्रेयांस
१२	षण्मुख	कुमार	कुमार	कुमार	वासुपूज्य
१३	पाताल	चतुर्मुख ^६	षण्मुख	षण्मुख	विमल
१४	किनर	पाताल	पाताल	पाताल	अनंत
१५	किपुरुष	किनर	किनर	किनर	धर्म
१६	गरुड	गरुड	गरुड	गरुड	शान्ति
१७	गंधर्व	गंधर्व ^७	गंधर्व ^८	गंधर्व	कन्थ

- १ त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र और अमरकाव्य में यक्षेश्वर तथा प्रवचनसारोद्धार और निर्वाणकलिका में ईश्वर नाम कहा है ।
२. नेमिचन्द्र ने तुम्बरु लिखा है ।
- ३ हेमचन्द्र के ही त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र में तथा अन्य सभी श्वेताम्बर ग्रन्थों में कुसुम नाम मिलता है ।
- ४ आशाधर ने ब्रह्मा कहा है । आचार दिनकर में भी ब्रह्मा नाम है ।
५. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र में ईश्वर और आचार दिनकर में यक्षराज नाम मिलता है ।
६. नेमिचन्द्र ने प्रतिष्ठितिलक में षण्मुख नाम बताया है ।
७. नेमिचन्द्र ने गंधर्वयक्षेश्वर कहा है ।
८. आचारदिनकर में गंधर्वराज और निर्वाणकलिका में गंधर्वयक्ष ।

१८	कुबेर	खेन्द्र	यक्षेन्द्र	यक्षेश	अर
१९	वरुण	कुबेर	कुबेर	कुबेर	मल्लि
२०	भृकुटि	वरुण	वरुण	वरुण	मुनिमुव्रत
२१	गोमध	भृकुटि	भृकुटि	भृकुटि	नमि
२२	पाश्वं	गोमध ^१	गोमध	गोमध	नेमि
२३	मातंग	धरण	पाश्वं ^२	पाश्वं	पाश्वं
२४	गुह्यक	मातंग	मातंग	मातंग	महावीर

तिलोयपण्णती और प्रतिष्ठासारमंग्रह की सूचिया दिगम्बरों द्वारा मान्य हैं। अभिधानचिन्तामणि की सूची श्वेताम्बर परम्परा की सूची है। अपराजित-पृच्छा ने चतुरानन और जय जैम नये नाम जोड़ दिये हैं। तिलोयपण्णती की सूची में क्रमांक ५ के पश्चात् एक नाम छूट जाने से क्रमभेद हो गया है और उसके कारण मातंग यक्ष चौबीसवें के बजाय तेईसवें स्थान पर आ गया है। चौबीस की सूची पूरी करने के लिये तिलोयपण्णती में गुह्यक को अंतिम यक्ष कल्पित किया गया। गुह्यक के नाम के पश्चात् इदि एदे जक्खा चउबीस उमभपहुदाण का उल्लेख होने से गुह्यक एक नाम ही प्रतीत होता है न कि यक्ष का पर्यायवाची। दिगम्बरों और श्वेताम्बरों की मान्यता नयनों के नामों के संबंध में जो भेद है, वह संक्षेप में निम्न प्रकार है :-

चौथे तीर्थंकर के यक्ष का नाम तिलोयपण्णती में यक्षेश्वर किन्तु प्रवचन-सारोद्धार में ईश्वर बताया गया है। अपराजितपृच्छा में दिये गये चतुरानन नामका आधार अज्ञात है। छठे यक्ष का नाम दिगम्बर परम्परा में पुष्प और श्वेताम्बर परम्परा में कुसुम प्रसिद्ध है। अभिधानचिन्तामणि में सुमुख नाम होने पर भी उसके रचयिता आचार्य हमचन्द्र ने त्रिपिष्टिजलाकापुरुषचरित्र में कुसुम नाम बताया है। आठवें यक्ष का नाम दिगम्बरों में श्याम और श्वेताम्बरों में विजय प्रचलित है। ग्यारहवें यक्ष का दिगम्बर लोग ईश्वर किन्तु श्वेताम्बर यक्षेश्वर कहते हैं। अठारहवें यक्ष का नाम दिगम्बर ग्रन्थों में खेन्द्र पर श्वेताम्बर ग्रन्थों में यक्षेन्द्र मिलता है। गोमध नाम दिगम्बरों में अधिक प्रचलित है

१. नामचन्द्र ने गोमध नाम अदया है। प्रतिष्ठासारमंग्रह में चूक न नाम रह गया है किन्तु आशाधर के प्रतिष्ठासारोद्धार में गोमध नाम का उल्लेख है।

२. प्रवचनसारोद्धार में वामन नाम मिलता है।

किन्तु श्वेताम्बर ग्रन्थो मे सर्वत्र गोमेध नाम ही मिलता है। तेईसवे तीर्थकर पाश्र्वनाथ के यक्ष का नाम दिगम्बर परम्परा मे धरण या धरणेन्द्र है किन्तु श्वेताम्बर परम्परा मे पाश्र्व। श्वेताम्बर परम्परा के प्रवचनमारोद्धार मे उमे वामन कहा गया है। उपर्युक्त चतविंशति यक्षो के ग्रामन, वाहन, आयुध आदि का प्रतिमाशास्त्रीय विवरण दोनो परम्पराओ के ग्रन्थो के अनुसार नीचे दिया जा रहा है।

गोमुख

प्रथम तीर्थकर ऋषभनाथ के शासन यक्ष गोमुख का वर्ण स्वर्ण जैसा पीत है^१। दिगम्बर परम्परा मे इस यक्ष को वृषवाहन और श्वेताम्बर परम्परा मे गजवाहन माना गया है। आचारदिनकर मे इमे वृषवाहन के साथ द्विरदगोयुक्त और अपराजितपृच्छा मे वृषवाहन कहा गया है। दिगम्बर परम्परा मे गोमुख को यथानाम तथास्वरूप अर्थात् वृषमुख या गोवक्त्रक बताया जाता है। दिगम्बर परम्परा के अनुसार इसके मस्तक पर धर्मचक्र होता है।^२ रूपमण्डन मे यह यक्ष गजानन है^३ पर अपराजितपृच्छाकार वृषमुख बताते है।^४

यक्ष गोमुख चतुर्भुज है। श्वेताम्बरो के अनुसार उमके दाय हाथा मे से एक वरद मुद्रा मे होता है और दूसरा अक्षमालायुक्त। बाये हाथो के आयुध मातुनिग और पाश होते है।^५ अपराजितपृच्छा और रूपमण्डन मे भी यही आयुध बताये गये है किन्तु वहा दाये और बाये हाथा का अलग अलग उल्लेख नहीं किया गया है। वमुनन्दि न अलग अलग हाथो के आयुधो का उल्लेख न करने हुये परशु, बीजपूर, अक्षसूत्र और परद, य चार आयुध बताय है।^६ आशाधर^७ और नेमिचन्द्र^८ ने उपरले बाये हाथ मे परशु, उपरले दाये हाथ मे अक्षसूत्र,

१. अपराजितपृच्छा मे श्वेतवर्ण बताया है, वह भूल है।

२. आशाधर ने वृषचक्रशीर्षम् और नेमिचन्द्र ने मूर्ध्नाधनधमंचक्रम् कहा है। जान पडता है कि गोमुख को धर्म (वृष) का रूप दिया गया है जो वृषमुख हुआ करता है।

३. ६/१७

४. २२१/४३.

५. आचारदिनकर, निर्वाणत्रलिका, त्रिषष्टिजालाकाप्रपचारित्र आदि मे।

६. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/१३-१४.

७. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१२६

८. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३१।

निचले बायें हाथमें बीजपूर फल और निचले दायें हाथको वरदमुद्रा में स्थित बताया है ।

महायक्ष

द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ के महायक्ष नामक यक्ष का वर्ण दिगम्बर परम्परा में मोने जैसा पीत पर श्वेताम्बर परम्परा में श्याम बताया गया है । दोनों परम्पराएं इस यक्ष को चतुर्मुख, अष्टभुज और गजवाहन मानती हैं, केवल आयुधों के विषय में मतभेद है । वसुनन्दि ने आयुधों का नामोल्लेख नहीं किया है । नमिचन्द्र ने चक्र, त्रिशूल, कमल, अंकुश, खड्ग, दण्ड, परशु और प्रदान (वरद) ये आयुध बताये हैं ।^१ आशाधर ने चक्र, त्रिशूल, कमल और अंकुश को बायें हाथों के आयुध तथा खड्ग, दण्ड, परशु और वरद इन्हें दायें हाथों का आयुध कहा है ।^२ श्वेताम्बर परम्परा के आचार दिनकर, निर्वाणकलिका आदि ने बायें हाथों में अभय, मातुलिग, अंकुश और शक्ति तथा दायें हाथों में मुद्गर, वरद, पाश और अक्षसूत्र इन आयुधों का होना बतलाया है ।^३ अपराजितपृच्छा में श्वेताम्बर परम्परा का अनुसरण किया है और तदनुसार आठों आयुध गिनाये हैं किन्तु दायें-बायें हाथों के आयुध अलग अलग नहीं कहे ।^४

त्रिमुख

तृतीय तीर्थंकर संभवनाथ का त्रिमुख नामक यक्ष यथानाम तथारूप अर्थात् तीन मुख वाला है । उसके प्रत्येक मुख में तीन आंखें होने के कारण आचार दिनकर में उसे नवाक्ष भी कहा गया है । त्रिमुख का वर्ण श्याम, वाहन मयूर और भुजाएं छह हैं । दिगम्बर परम्परा में, इस यक्ष के बायें हाथों में चक्र, तलवार और अंकुश तथा दायें हाथों में दण्ड, त्रिशूल और सितकतिका ये आयुध बताये गये हैं ।^५ श्वेताम्बर परम्परा में, बायें हाथों के आयुध मातुलिग, नाग और अक्षसूत्र तथा दायें हाथों के आयुध नकुल, गदा और अभय हैं ।^६ त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र में बायें हाथों के आयुधों में नाग के स्थान पर दाम (माला) का

१. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३१३ ।

२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३ ।

३. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४; निर्वाणकलिका, पन्ना ३४ ।

४. अपराजितपृच्छा, २२१/४४ ।

५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३१; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३२

६. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४; निर्वाणकलिका, पन्ना ३४ ।

उल्लेख मिलता है। अपराजितपृच्छा (२२१/४५) में परशु, अक्ष, गदा, चक्र, शंख और बरद, इन आयुधों का विधान है किन्तु अपराजितपृच्छा का आधार कौन सी परम्परा है, यह समझ में नहीं आता।

यक्षेश्वर

चतुर्थ तीर्थंकर अभिनन्दननाथ के यक्षका नाम यक्षेश्वर है। प्रवचन-सारोद्धार और निर्वाणकलिकामे उसे मात्र ईश्वर कहा गया है। अपराजितपृच्छा में चतुरानन नाम बनाया गया है पर उसकी किसी अन्य ग्रन्थ से पुष्टि नहीं होती। यक्षेश्वर का वर्ण श्याम, वाहन गज^१ और भुजाएँ चार हैं। दिगम्बर परम्परा में इस यक्षके दाये हाथों में बाण और तलवार तथा बाये हाथों में धनुष और ढाल, ये आयुध कहे गये हैं।^२ श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार वह दाये हाथों में मातुलिग और अक्षसूत्र तथा बाये हाथों में अंकुश और नकुल धारण करता है।^३ अपराजितपृच्छा द्वारा नाग, पाश, वज्र और अकुश इन चार आयुधों का विधान किया गया है किन्तु वह न तो श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार है और न दिगम्बर मान्यता में।

तुम्बरु

पंचम तीर्थंकर सुमतिनाथ का यक्ष तुम्बरु है। कहीं कहीं इसे तम्बर भी कहा गया है। तिलोयपण्णती ने तम्बरुव नाम से इसका उल्लेख किया है। तुम्बरु का वर्ण दिगम्बरों के अनुसार श्याम और श्वेताम्बरों के अनुसार श्वेत है। इसका वाहन गरुड बताया गया है और भुजाएँ चार। दिगम्बर परंपरा के ग्रन्थों में तुम्बरु यक्ष को सर्पयज्ञापवीतधारी कहा है। आयुधविचार में, दिगम्बर परम्परा इस यक्ष के दोनों उपरले हाथों में गर्प, नीचे के एक हाथ का बरदमुद्रायुक्त और दूसरे हाथ में फल (बीजपूर) मानती है^४ जबकि श्वेताम्बर परम्पराके अनुसार इसके दाये हाथों में आयुध बरद और शक्ति तथा बाये

१ अपराजितपृच्छा में तमवाहन।

२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३२; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३२।

३. आचारदिनकर, उदय २३, पन्ना १७४; निर्वाणकलिका पन्ना ३४।

४. प्रतिष्ठामारमग्रह, ५/२३-२४; प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३३; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३२।

हाथों के आयुध गदा और पाश हैं ।^१ प्रवचनसारोद्धार और आचारदिनकर में^२ पाश के स्थान पर नागपाश का, एवं निर्वाणकलिकामे^३ बायें हाथों के आयुधों में नाग और पाश का अलग अलग उल्लेख किया गया है । अपराजितपृच्छाने आयुधविचार में दिगम्बर परम्परा का अनुसरण किया है ।

पुष्प । कुमुम

छठे तीर्थंकर पद्मप्रभ के यक्ष का नाम दिगम्बर लोग पुष्प बताते हैं और श्वेताम्बर लोग कुमुम । अभिधानचिन्तामणि में इसे सुमुख कहा है परन्तु त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितमें कुमुम नाम से ही वर्णन है । वहाँ विचार में दिगम्बर ग्रन्थों में श्याम और श्वेताम्बर ग्रन्थोंमें नीलवर्ण होने का उल्लेख है । इस यक्षका वाहन मृग है ।^४ वसुनन्दि और अपराजितपृच्छाकार ने इसे द्विभुज कहा है किन्तु दिगम्बर परम्पराके ही आशाधर और नेमिचन्द्र ने श्वेताम्बरों के समान इस यक्ष को चतुर्भुज माना है । वसुनन्दि ने आयुधों का उल्लेख नहीं किया । अपराजितपृच्छा में गदा और अक्षसूत्र ये दो आयुध कहे गये हैं । आशाधर और नेमिचन्द्र ने दायें हाथों के आयुध कुन्त और वरद तथा बायें हाथों के आयुध श्वेत और अभय बताये हैं ।^५ श्वेताम्बर परम्परामें फल और अभय दायें हाथों के तथा नकुल और अक्षसूत्र बायें हाथों के आयुध हैं ।^६

मातंग

सप्तम तीर्थंकर सुपाश्वनाथ के यक्ष मातंग को दिगम्बर कृष्ण वर्ण का और श्वेताम्बर नील वर्ण का बताते हैं । वसुनन्दि ने इसे वक्रतुण्ड तथा आशाधर और नेमिचन्द्र ने कुटिलानन या कुटिलाननाग्र कहा है । अर्थात् इस यक्ष का मुख बराह जैसा होता है । दिगम्बर इस यक्षको सिंहवाहन और श्वेताम्बर गजवाहन कहते हैं । अपराजितपृच्छामें भेषवाहन बताया गया है । दिगम्बरों

१. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित के अनुसार ।
२. उदय ३३, पन्ना १७४ ।
३. पन्ना ३५ ।
४. आचारदिनकर की मुद्रित प्रति में तुरंग है किन्तु वह संभवतः कुरंग (मृग) के स्थान पर मुद्रण की भूल है ।
५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३४; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३३ ।
६. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४; निर्वाणकलिका, पन्ना ३५ ।

के अनुसार मातंग यक्ष द्विभुज है। अपराजितपृच्छा ने भी इसे द्विभुज कहा है पर श्वेताम्बर चतुर्भुज कहते हैं। दिगम्बरो के अनुसार मातंगके दाये हाथ में शूल और बाये हाथमे दण्ड होता है।^१ श्वेताम्बर ग्रन्थो मे चार आयुध गिनाये गये है। त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित और प्रवचनसारोद्धार मे दाये हाथों के आयुध बिल्व और पाश तथा बायें हाथो के आयुध नकुल और अंकुश कहे गये है। निर्वाणकलिका मे भी इन्ही का उल्लेख है^२ किन्तु आचारदिनकर मे पाश के स्थान पर नागपाश का और नकुल के स्थान पर वज्र का विधान है^३ जो विशिष्ट बात है।

श्याम । विजय

अष्टम तीर्थकर चन्द्रप्रभ के यक्ष का नाम दिगम्बरो मे श्याम और श्वेताम्बरो में विजय प्रचलित है। विजय नामक यक्ष का नाम तिलोपण्णत्ती मे भी मिलता है। यद्यपि वह यक्ष सप्तम क्रमाक पर है तो भी इतना तो ज्ञात होता ही है कि पूर्व मे विजय यक्ष का नाम दिगम्बरो की सूची मे भी था। श्वेताम्बर विजय यक्ष का वर्ण श्याम या हरित बताते है। दिगम्बरो का यक्ष भी श्यामवर्ण है। संभव है कि श्यामवर्ण होने के कारण यक्ष का नाम ही वैसा प्रचलित हो गया हो। श्याम यक्ष कपातवाहन होता है पर विजय का वाहन हंस है। श्याम चतुर्भुज है पर विजय द्विभुज।^४ दाना ही अतिरिक्त है।

वमुनिन्द ने श्याम के आयुध फल, अक्षसूत्र, परशु और वरद कह है।^५ आशाधर और नमिचन्द्र ने दाये और बाये हाथो के अलग-अलग आयुध बताये है। दाये हाथो मे अक्षमाला और वरद तथा बायेहाथो मे परशु और फल।^६ अपराजितपृच्छा मे परशु, पाश, अभय और वरद, ये आयुध कहे गये है।

१ प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३५; प्रतिष्ठातिलक पृष्ठ ३३३।

२. पन्ना ३५।

३ उदय ३३, पन्ना १७४।

४. प्रवचनसारोद्धार मे चतुर्भुज।

५. प्रतिष्ठासामग्रं, ५/३०

६. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३३

प्रवचनसारोद्धार में दो चक्र और दो मुद्गर। किन्तु अन्य श्वेताम्बर ग्रंथों में दाये हाथ में चक्र और बाये हाथ में मुद्गर होने का उल्लेख मिलता है।^१ पद्मानन्द महाकाव्य में दाये हाथ का आयुध खड्ग बताया गया है।^२

अजित

नीचे तीर्थंकर पुष्पदन्त या सुविधिनाथ के यक्ष या नाम अजित है। अपराजितपृच्छा में उमका वर्णन जय नाम से किया गया है। अजित का वर्ण श्वेत, वाहन कर्म और भुजाएं चार है। दिगम्बरों के अनुसार अजित यक्ष के दाये हाथ अक्षमाला और वरदमुद्रा में युक्त होने है तथा बाये हाथों में शक्ति और फल होते है।^३ श्वेताम्बरों के अनुसार अजित के दाये हाथों में मानुलिंग और अक्षसूत्र तथा बायें हाथों में नकुल और कुन्त (भाला) होते है। आचार दिनकर ने अक्षसूत्र के स्थान पर परिमलयुक्त मुक्तामाला का उल्लेख किया है।^४ अपराजितपृच्छा के आयुध विचार में दिगम्बर ग्रंथों का अनुसरण किया गया है पर दाये और बाये हाथों के आयुध अलग नहीं कहे गये है।

ब्रह्म

दसवे तीर्थंकर शीतलनाथ का यक्ष ब्रह्म श्वेतवर्ण, कमलासन^५ अष्टबाहु और चतुर्मुख है। श्वेताम्बर ग्रंथों में उसके द्वादशाक्ष होने का उल्लेख है। आशाधर^६ और नेमिचन्द्र^७ ने उमके दाये हाथों के आयुध शर, परशु, खड्ग और वरद तथा बाये हाथों के आयुध धनुष, दण्ड, खेट, और वज्र बताये है। श्वेताम्बर ग्रंथों में मानुलिंग, अभय, पाश और मुद्गर ये दाये हाथों के तथा गदा, अकण, नकल और अक्षसूत्र ये बाये हाथों के आयुध कहे गये है।^८

१. निर्वोणकालिका, पन्ना ३५; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४ ;
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र ।
२. अपरमजिनचरित्र, १७ ।
३. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३७; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३३ ।
४. उदय ३३, पन्ना १७४ ।
५. अपराजितपृच्छा में हंसवाहन ।
६. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१३८
७. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३४ ।
८. निर्वोणकालिका, पन्ना ३५; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४ ;
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित इत्यादि ।

ईश्वर

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का यक्ष ईश्वर या यक्षेश्वर है। हेमचन्द्र आचार्य ने अभिधानचिन्तामणि में यक्षेश्वर नाम से और त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित में ईश्वर नाम से इस यक्ष का उल्लेख किया है। आचार दिनकर ने यक्षराज और अपराजितपृच्छा ने किनरेश नाम बताया है।

ईश्वर या यक्षेश्वर का वर्ण श्वेत और वाहन वृष है। वह त्रिनेत्र एवं चतुर्भुज है। दिगम्बर परम्परा का यक्ष दायें हाथों में अक्षसूत्र और फल तथा बायें हाथों में त्रिशूल और दण्ड धारण करता है।^१ श्वेताम्बर परम्परा में यक्ष के दायें हाथों में मातुलिग और गदा तथा बायें हाथों में नकुल और अक्षसूत्र होते हैं।^२ अपराजितपृच्छा में त्रिशूल, अक्षसूत्र, फल और वरद, ये आयुध बताये गये हैं।

कुमार

बारहवें तीर्थंकर वामुपूज्य का यक्ष कुमार श्वेत वर्ण का है।^३ उसका वाहन हंस है।^४ दिगम्बरों के अनुसार इस यक्ष के तीन मुख और छह भुजाएं होती हैं किन्तु श्वेताम्बरों ने इसे चतुर्भुज ही कहा है। अपराजितपृच्छा में भी कुमार यक्ष को चतुर्भुज बताया गया है। षड्भुज की योजना में इसके दायें हाथों के आयुध बाण, गदा और वरद तथा बायें हाथों के आयुध धनुष, नकुल और फल होते हैं।^५ अपराजितपृच्छा में धनुष, बाण, फल और वरद का विधान है पर श्वेताम्बर ग्रंथों में दायें हाथों के आयुध मातुलिग और बाण तथा बायें हाथों के आयुध नकुल और धनुष बताये गये हैं।^६

पण्मुख / चतुर्मुख

तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ के यक्ष का नाम तिलोपपण्णत्ता में पण्मुख बताया गया है। श्वेताम्बर परम्परा में भी उसका नाम षण्मुख मिलना है। दिगम्बर परम्परा के नेमिचन्द्र ने षण्मुख नाम से तथा वसुनन्दि और आशाधर

१. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३-१३६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३४
२. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५; निर्वाणकलिका ३५
३. अमरचन्द्र के काव्य में श्यामवर्ण बताया गया है।
४. अपराजितपृच्छा में लिखिबाहन।
५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१४०; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३४।
६. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५; निर्वाणकलिका पन्ना ३५

ने चतुर्मुख नाम से इसका वर्णन किया है। श्वेताम्बरों ने पण्मुख का वर्णन श्वेत बनाया है किन्तु आशाधर चतुर्मुख को हरित वर्ण कहने है। यक्ष का वाहन मयूर है और भुजाएँ द्वादश।^१ मुखों की योजना में वसुनन्दि और आशाधर ने चतुर्मुख पर नेमिचन्द्र ने पण्मुख बनाया है अर्थात् जिम ग्रन्थकार ने यक्ष का जो नाम बनाया तदनुसार मुख्यों का भी बताया। आचारदिनकर ने द्वादशाक्ष होने के उल्लेख से वह पण्मुख जाना होता है। वसुनन्दि ने आयुधों का विवरण नहीं दिया। आशाधर और नेमिचन्द्र उपरले आठ हाथों में परशु बताते हैं और शेष चार हाथों में क्रमशः तलवार, अक्षमाला, खेटक और दण्ड।^२ श्वेताम्बर परम्परा में दायें हाथों के आयुध फल, चक्र, बाण, खड्ग, पाश और अक्षसूत्र तथा बायें हाथों के आयुध नकुल, चक्र, धनुष, डाल, अंकुश और अभय बताये गये हैं।^३ अपराजितपृच्छा में वज्र, धनुष, बाण, फल और वरद इन पाँच आयुधों का अमोल्लेख किया गया है।

पाताल

चाँदहवे तीर्थंकर अनन्तनाथ के यक्ष पाताल का वर्णन लाल है।^४ वाहन मकर है और तीन मुख होते हैं। दिगम्बर आम्नाय में इसके मस्तक पर त्रिफण नाग का घेना बनाया गया है किन्तु आचारदिनकर ने गट्वागयुक्त कहा है। पाताल की छह भजाएँ हैं। दिगम्बर परम्परा के अनुसार दायें ओर का तीन भुजाओं में अंकुश, शूल, और कमल तथा बायें ओर का भुजाओं में चाबुक, हल, और फल ये आयुध होते हैं।^५ अपराजितपृच्छा में वज्र, अंकुश, धनुष, बाण, फल और वरद इस प्रकार छह आयुध बताये हैं। श्वेताम्बर परम्परा के ग्रंथों में दायें हाथों के आयुध कमल, खड्ग और पाश तथा बायें हाथों के आयुध नकुल, डाल और अक्षसूत्र कहे गये हैं।^६

१. अपराजितपृच्छा षड्भुज कहती है। आशाधर आठपाणि बताते हैं पर वसुनन्दि ने द्वादशभुज लिखा है।
२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१४१; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३५
३. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र। निर्वाणकलिका। आचारदिनकर आदि।
४. अमरचन्द्र के महाकाव्य में नागवर्ण बनाया है।
५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१४२; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३५।
६. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५; निर्वाणकलिका, पन्ना ३६; त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र आदि।

किन्नर

पद्महवे तीर्थकर धर्मनाथ का यक्ष किन्नर है। उसके शरीर का वर्ण लाल है जिसे वसुनन्दि ने पद्मरागमणि के समान और आशाधर ने प्रवाल जैसा बताया है। श्वेताम्बर ग्रन्थों में भी अरुण वर्ण का उल्लेख है। दिगम्बर परंपरा के अनुसार किन्नर का वाहन मीन है किन्तु श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार वह कूर्म है। किन्नर के मुख तीन^१ और भुजाएं छह हैं। दिगम्बरों के अनुसार उसके दायें हाथों के आयुध मुद्गर, अक्षमाला और वरद तथा बायें हाथों के आयुध चक्र, वज्र और अंकुश है।^२ श्वेताम्बरों ने दायें हाथों में अभय, बीजपूर और गदा तथा बायें हाथों में कमल, यक्षमाला और नकुल ये आयुध बताये हैं।^३ अपराजितपृच्छा के अनुसार यह यक्ष पाश, अंकुश, धनुष, बाण, फल और वरद इस प्रकार छह आयुध धारण करता है।

गरुड

मोलहवे तीर्थकर शान्तिनाथ का यक्ष गरुड का वर्ण श्याम है। उसका मुख वराह जैसा है। उसका वाहन भी वराह माना गया है किन्तु हेमचन्द्र के अनुसार वह गजवाहन और अपराजितपृच्छाकार के अनुसार शुकवाहन है। दोनों परम्पराओं के अनुसार गरुड यक्ष चतुर्भुज है किन्तु दिगम्बर लोग उसके दायें हाथों में वज्र और चक्र तथा बायें हाथों में कमल और फल ये आयुध बताते हैं जबकि श्वेताम्बरों के अनुसार गरुड यक्ष के दायें हाथों में बीजपूर और कमल तथा बायें हाथों में नकुल और अक्षमाला ये चार आयुध होते हैं।^४ अपराजितपृच्छा में पाश, अंकुश, फल और वरद इस प्रकार आयुध कहे गये हैं।

गंधर्व

मत्रहवे तीर्थकर कुन्थुनाथ का यक्ष गंधर्व है। उमें गंधर्वयक्षेश्वर, गंधर्वराज आदि भी कहा जाता है। गंधर्व का वर्ण श्याम है। वसुनन्दि और आशा-

१. आचारदिनकरकार षण्णयन का भी ग्रन्थ में उल्लेख करन है।
२. प्रतिष्ठासाराद्वार, ३/१४३; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३५।
३. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, निर्वाणकलिका, आचारदिनकर आदि आदि।
४. प्रतिष्ठासाराद्वार, ३/१४४; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३६
५. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५; निर्वाणकलिका, पन्ना ३६; त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र आदि आदि।

घर के अनुमात्र गंधर्व यक्ष पक्षियानसमारूढ है किन्तु श्वेताम्बर ग्रन्थों में उसका वाहन हंस बनाया गया है। अपराजितपृच्छाकार के अनुसार गंधर्व का वाहन शुक है।

यह यक्ष चतुर्भुज है। अपराजितपृच्छा ने इसके आयुध कमल, अंकुश, फल और वरद ये चार कहे हैं। दिगम्बर परंपरा के ग्रन्थों में उपरने दोनो हाथों में नागपाश और नीचे के दोनो हाथों में धनुष और बाण होने का उल्लेख है।^१ श्वेताम्बरों के अनुसार गंधर्व यक्ष के दायें हाथों में एक हाथ वरद मुद्रा में होता है, दूसरे में पाश होता है तथा बायें ओर के हाथों में मानुलिंग और अंकुश ये दो आयुध हस्ता करते हैं।^२

खेन्द्र / यक्षेन्द्र

अठारहवे तीर्थंकर अग्नाथ के यक्ष को दिगम्बर परम्परा वाले खेन्द्र कहते हैं और श्वेताम्बर परम्परा वाले यक्षेन्द्र। उसका वर्ण श्याम और वाहन शंख है। अपराजितपृच्छाकार ने इस यक्ष को खरवाहन बताया है जो वेनुका जान पड़ता है। इस यक्ष के छह मुख, अठारह आँखें और बारह भुजाएँ हैं। अपराजितपृच्छा में केवल पड्भुज कहा गया है। दिगम्बर ग्रन्थों में इस यक्ष के दायें हाथों के आयुध बाण, कमल, फल, माला, अक्षमूत्र और अभय तथा बायें हाथों के आयुध धनुष, वज्र, पाश, मुद्गर, अंकुश और वरद कहे गये हैं।^३ श्वेताम्बर ग्रन्थों में दायें हाथों के आयुध मानुलिंग, बाण, खड्ग, मुद्गर, पाश और अभय बताये गये हैं। बायें हाथों के आयुधों के सबध में उनमें किञ्चित् मतबैषम्य लक्षित होता है। आचारदिनकर और निर्वाणकलिका के अनुसार वे आयुध नकुल, धनुष, ढाल, शूल, अंकुश और प्रक्षमूत्र हैं।^४ त्रिषष्टि शलाकापुरुषचरित्र में भी वही आयुध बताये गये हैं किन्तु अमरचंद्र के महाकाव्य में नकुल नहीं, चक्र कहा गया है।^५

१. प्रतिष्ठासाराद्वार, ३/१४५; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३६

२. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र आदि।

३. प्रतिष्ठासाराद्वार, ३/१४६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३६।

४. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५; निर्वाणकलिका, पन्ना ३६।

५. अपराजितचरित्र, १७-१८।

कुबेर

उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ का यक्ष कुबेर है। प्रवचनसारोद्धार में इसे कूबर कहा गया है। दिगम्बरो के अनुसार कुबेर इन्द्रधनुष के समान चित्रवर्ण का है। हेमचन्द्र ने भी इसका वर्ण इन्द्रधनुष सा ही कहा है किन्तु आचारदिनकर ने इस यक्ष का वर्ण नील बनाया है। कुबेर का वाहन गज है।^१ इसकी भुजाएँ आठ और मुख चार हैं। निर्वाणकलिका ने इसके मुखों का आकार भी गरुड जैसा बताया है। आशाधार और नेमिचन्द्रके अनुसार इस यक्षके दाये हाथों में खड्ग, बाण, पाश और वरद ये आयुध तथा बाये हाथों में ढाल, धनुष, दण्ड और कमल होते हैं।^२ श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार दाये हाथों में वरद, परशु, शूल और अभय तथा बाये हाथों में मुद्गर, अक्षसूत्र, बीजपूर और शक्ति है।^३ निर्वाणकलिका में दाये आयुधों में परशु के स्थान पर पाश कहा गया है।^४

वरुण

बीसवें तीर्थंकर मुनिमुव्रतनाथ का यक्ष वरुण श्वेतवर्ण एवं वृषभवाहन है। आशाधार ने उम यक्षको महाकाय कहा है। निर्वाणकलिका, प्रतिष्ठासाराद्धार और प्रतिष्ठातिलक के अनुसार वरुण जटाजूटधारी है। श्वेताम्बरों के अनुसार वरुण के चार मुख और दिगम्बरों के अनुसार आठ मुख होते हैं। तथाकि इस यक्ष को त्रिनेत्र बनाया गया है इसलिए आचारदिनकर ने और स्पष्ट करने के लिए द्वादशलोकन भी कहा है। दिगम्बर परम्परा में वरुण के चार हाथ माने गये हैं पर श्वेताम्बरों के अनुसार यह यक्ष अष्टभुज है। आशाधार और नेमिचन्द्र ने इसका दायाँ भुजाओं में आयुध खेप और खड्ग कहे हैं।^५ आचारदिनकर^६ और निर्वाणकलिका^७ के अनुसार दाये हाथों में गदा, बाण, शक्ति और बीजपूर तथा बाये हाथों में धनुष, कमल, परशु और नकुल होते हैं। तिपष्टिशलाकापुरुषचरित्र और अमरकव्य में पद्म के स्थान पर अक्षमाला का होना बताया

१. अपराजितपृच्छा में सिंह ।
२. प्रतिष्ठासरोद्धार, २-१४७, प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३७ ।
३. आचारदिनकर, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र आदि ।
४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६ ।
५. प्रतिष्ठासरोद्धार, ३।१४८, प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३७ ।
६. उदय ३३, पन्ना १७५ ।
७. पन्ना ३६ ।

गया है। अपराजिनपृच्छा में पाश, अंकुश, धनु, बाण, सर्प और वज्र केवल ये ही आयुध गिनाये गये हैं, जिनमें प्रतीत होता है कि उस ग्रन्थ के अनुसार यक्ष षडभुज है।

भृकुटि

इक्कीसवे तीर्थंकर नेमिनाथ का यक्ष भृकुटि है जो कहीं भृकुटिराज, कहीं भृकुट और कहीं भृकुटी भी कहा गया है। इसका वर्ण सोने के समान है। यक्ष का वाहन वृषभ है और मुख चार। श्वेताम्बरो द्वारा इस त्रिनयन माने जाने के कारण आचार दिनकर ने द्वादशाक्ष कहा है। दिगम्बर परम्परा के आशाधर और नेमिचन्द्र तथा श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार भृकुटि की आठ भुजाएं होती हैं किन्तु वसुनन्दि उमें चतुर्भुज कहते हैं। वसुनन्दि ने केवल तीन ही आयुधों का उल्लेख किया है, खेट, खड्ग और फल^१ किन्तु आशाधर और नेमिचन्द्र ने अंकुश, कमल, चक्र, वरद, खेट, असि, धनुष और बाण ये आठ आयुध गिनाये हैं।^२ अपराजिनपृच्छा में शूल, शक्ति, वज्र, खेट और डमरू इनका विधान है। श्वेताम्बरो के अनुसार इस यक्ष के दाये हाथों में मातृलिंग, शक्ति, मुद्गर और अभय तथा बाये हाथों में नकुल, परशु, वज्र और अक्षसूत्र हैं।^३ अमरकाव्य में परशु के स्थान पर पाश बताया गया है।

गोमेध

बाईसवे तीर्थंकर नेमिनाथ के यक्ष का नाम गोमेध है जिसे कहीं कहीं गोमेद भी कहा गया है। गोमेध का वर्ण श्याम है। श्वेताम्बरो ने इसे नृवाहन माना है पर दिगम्बर, नृवाहन के साथ पुष्पयान भी बनाते हैं। नेमिचन्द्र ने केवल पुष्पवाहन, आशाधर ने नृवाहन और पुष्पयान तथा वसुनन्दि ने पुष्पयान के साथ मकरवाहन भी कहा है। गोमेध त्रिमुख है। उसकी छह भुजाएं हैं। वसुनन्दि इसके षडभुज होने का उल्लेख करते हैं किन्तु उन्होंने अक्षसूत्र और यष्टि केवल इन दो आयुधों का ही नामोल्लेख किया है। आशाधर और नेमिचन्द्र ने दाये हाथों में फल, वज्र और वरद तथा बाये हाथों में दूधण (मुद्गर), कुठार और दण्ड बताये हैं।^४

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/५६
२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१४६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३७,
३. आचारदिनकर और निर्वाणकलिका
४. प्रातष्ठासारोद्धार, ३/१५० और प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३७

श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार यक्ष के दाय हाथों में मातुलिग, परशु और चक्र तथा बायें हाथों में नकुल, शूल और शक्ति ये आयुध हैं।^१ जैन ग्रन्थों में सर्वाल्लि या सर्वानुभूति नामक एक यक्ष का उल्लेख बहुत मिलता है। वह गोमेध से अभिन्न हो सकता है। इस संबंध में आगे विचार किया जावेगा।

धरण/पार्श्व

तेईमवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के यक्ष को दिगम्बर परम्परा वाले धरण या धरणेन्द्र और श्वेताम्बर परम्परा वाले पार्श्व यक्ष कहते हैं। प्रवचन-सारोद्धार में इस यक्ष का नाम वामन बताया गया है। भैरवपद्मावतीकल्प (जो दिगम्बरों में भी मान्य है) में पार्श्वनाथ के यक्ष को पार्श्व यक्ष कहा गया है।^२ उम ग्रन्थ में इस यक्ष को न्यग्रोधमूलवामी, श्यामांग और त्रिनयन बताया गया है। तिलोयपण्णती में भी पार्श्व नामक यक्ष का उल्लेख है।^३

धरण और पार्श्व दोनों ही रूपमें इस यक्ष का वर्ण श्याम, वाहन कूर्म और भुजाएं चार हैं।^४ श्वेताम्बर परम्परा में पार्श्वयक्ष का गजमुख माना गया है। रूपमण्डन में भी उमा प्रकार उल्लेख है। अपराजित पृच्छा में वह सर्परूप है जो दिगम्बरों के अनुकूल है। दिगम्बरों के अनुसार धरण के मौलि में वामुकि (मर्प) का चिह्न होता है। आचारदिनकर तथा अन्य श्वेताम्बर ग्रन्थों में भी पार्श्वयक्ष र मस्तक पर मर्पण का छत्र बताया है। अपराजितपृच्छा में पार्श्व यक्ष के आयुध धनुष, बाण, भृण्ड, मुद्गर, फल और वरद कहे गये हैं दिगम्बरों के अनुसार धरण के उपरने दावों हाथों में वामुकि (मर्प), निचला दाया हाथ वरदमुद्रा में और निचले बायें हाथ में नागपाश होता है।^५ श्वेताम्बरों के अनुसार पार्श्व यक्ष के बायें हाथों में नकुल और मर्प होने हैं किन्तु दायें हाथों के आयुधों के संबंध में उनमें निश्चित मतभेद है। हेमचन्द्र और निर्वाणकलिकाकार दायें हाथों के

१. निर्वाणकलिका आदि।
२. भैरवपद्मावतीकल्प, ३/३८
३. तिलोयपण्णती, ४, ६३५
४. अपराजितपृच्छा में छह किन्तु रूपमण्डन में चार।
५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ६/१५१, प्रतिष्ठानिलक, पृष्ठ, ३३८।

आयुध बीजपूर और सर्प बताते हैं^१ जबकि आचारदिनकर और अमरकाव्य में सर्प के स्थान पर गदा का उल्लेख है।^२

मातंग

अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी का यक्ष मातंग है। दिगम्बर उसे मुद्ग (मृग) वर्ण और श्वेताम्बर श्याम वर्ण कहते हैं। उसका वाहन गज और भुजाएँ दो हैं। मुख एक है पर दिगम्बरों के अनुसार यह यक्ष अपने मस्तक पर धर्म चक्र धारण किये होता है। आयुधविचार में, वसुनन्दि ने वरद और मातुलिग ये दो आयुध बताये हैं।^३ आशाधर और नेमिचन्द्र ने उनमें से दायें हाथ का आयुध वरद और बायें का फल (मातुलिग) कहा है।^४ अपराजितपृच्छा ने भी यही विधान किया है। श्वेताम्बर परम्परा में दायें हाथ में नकुल और बायें हाथ में बीजपूर माना गया है^५ जिसका अनुमरण रूपमण्डन ने किया है।

चतुर्विंशति यक्षियां

चौत्रिस शासनदेवियों या यक्षियों की सूचिया तिलोयपण्णत्ती, प्रवचन-साराङ्गार, अभिधानचिन्तामणि, प्रतिष्ठासारसंग्रह, प्रतिष्ठासारोद्धार, प्रतिष्ठा-तिलक, निर्वाणकलिका, आदि आदि जैन ग्रन्थों तथा अन्य वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थों में मिलती हैं। यहां पूर्व की भांति तिलोयपण्णत्ती, प्रतिष्ठासारसंग्रह, अभिधान चिन्तामणि और अपराजितपृच्छा में वर्णित सूचिया उद्धृत की जा रही है:-

अमाक	तिलोयप०	प्रतिष्ठासारसंग्रह	अभि० चि०	अप० पृ०	तीर्थंकर
१.	चक्रेश्वरी	चक्रेश्वरी ^६	चक्रेश्वरी ^७	चक्रेश्वरी	ऋषभ
२.	रोहिणी	रोहिणी	अजितवल्गा ^८	रोहिणी	अजित

१. त्रिपाष्टशलाकापुरुषचर १। निवाणकालका, पन्ना ३७।
२. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६। अमरकाव्य, ६२-६३
३. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५, ६५-६६
४. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३, १५२; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३३८।
५. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६; निर्वाणकलिका, पन्ना ३७; अमरकाव्य, २४७
६. अपर नाम चक्रा भी बताया है।
७. प्रवचनसारोद्धार में चक्रेश्वरी किन्तु त्रिपाष्टशलाकापुरुषचरित्र, निर्वाणकलिका आदि में अप्रतिचक्रा नाम मिलता है।
८. प्रवचनसारोद्धार और निर्वाणकलिका में अजिता। वसुनन्दि ने भी अपर नाम अजिता बताया है।

क०	तिलोय०	प्रतिष्ठासार०	अभि०चि०	अपराजित०	तीर्थकर
३.	प्रज्ञप्ति	प्रज्ञप्ति ^१	दुरितारि	प्रज्ञा	संभव
४.	वज्रशृङ्खला	वज्रशृङ्खला ^२	कालिका ^३	वज्रशृङ्खला	अभिनन्दन
५.	वज्राकुशा	पुरुषदत्ता ^४	महाकाली	नरदत्ता	गुमति
६.	अप्रतिचक्रेश्वरी	मनोवेगा	श्यामा ^५	मनोवेगा	पद्मप्रभ
७.	पुरुषदत्ता	काली ^६	शान्ता ^७	कालिका	मुपार्श्व
८.	मनवेगा	ज्वालनी ^८	भृकुटि	ज्वालामालिका	चन्द्रप्रभ
९.	काली	महाकाली	मुनारका ^९	महाकाली	पुष्पदन्त
१०.	ज्वालामालिनी	मानवी	अशोका	मानवी	गोतल
११.	महाकाली	गौरी ^{१०}	मानवी ^{११}	गौरी	श्रेयांस
१२.	गारी	गाधारी	चण्डा ^{१२}	गांधारिका	वागुपुञ्ज
१३.	गाधारी	वैरोटी ^{१३}	विदिता ^{१४}	विराटा	विमल
१४.	वैरोटी	अनंतमनी	अंकुशा	तारिका	अनन्त
१५.	अनंतमनी	मानमी	कन्दर्पा	अनंतागति	धर्म

१. अपर नाम नम्रा धताया है ।
२. नेमिचन्द्र ने पविशृङ्खला । वसुनन्दि ने अपर नाम दुरितारि कहा है ।
३. आचारदिनकर में काली नाम मिलता है ।
४. अपर नाम मंनारी कहा गया है ।
५. त्रिपिटिशलाकापुरुषचरित, निर्वाणकनिका, आचारदिनकर, प्रवचन-सारोद्धार आदि ग्रन्थों में अच्युता नाम है ।
६. अपर नाम मानवी ।
७. निर्वाणकनिका, त्रिपिटिशलाकापुरुषचरित्र आदि में शान्ति नाम का उल्लेख है ।
८. ज्वालामालिनी नाम भी है ।
९. अन्य ग्रन्थों में मुनारा नाम भी मिलता है ।
१०. अपर नाम गोमेधकी ।
११. प्रवचनसारोद्धार में श्रीवत्सा ।
१२. प्रवचनसारोद्धार में प्रवरा, त्रिपिटिशलाकापुरुषचरित्र में चन्द्रा, आचारदिनकर और निर्वाणकनिका में प्रचण्डा ।
१३. नेमिचन्द्र ने प्रतिष्ठातिलक में वैरोटिका नाम कहा है ।
१४. प्रवचनसारोद्धार में विजया नाम है ।

क्र०	तिलोय०	प्रतिष्ठामार०	अभि०चि०	अपराजित०	तीर्थकर
१६.	मानमी	महामानमी	निर्वाणी ^१	मानसी	शान्ति
१७.	महामानमी	जयदेवी ^२	बला	महामानमी	कुन्धु
१८.	जया	तारावती	धारिणी	जया	अर
१९.	विजया	अपराजिता	धरणीप्रिया ^३	विजया	मल्लि
२०.	अपराजिता	बहुरूपिणी	नन्दता ^४	अपराजिता	मुनिमुन्न
२१.	बहुरूपिणी	चामुण्डा ^५	गंधारी	बहुरूपा	नमि
२२.	कूष्मांडी	आम्ना ^६	अम्बिका ^७	अम्बिका	नेमि
२३.	पद्मा	पद्मावती	पद्मावती	पद्मावती	पाशवं
२४.	सिद्धायिणी	सिद्धायिका ^८	सिद्धायिका ^९	सिद्धायिका	महावीर

उपर्युक्त सूची में प्रतीत होता है कि तिलोयपण्णत्ती की सूची में कोई एक नाम छूट जाने से पश्चात्काल में उसमें नया नाम जोड़ा गया है जिसमें सूची में विसंगतता हो गयी। मूल ग्रन्थ में सोलसा अगंतमदी उल्लेख होने पर भी अनंतमती का क्रमांक पन्द्रहवां ही आता है, सोलहवां नहीं। इससे स्पष्ट है कि सूची में भूल है। प्रतिष्ठासाग्रसंग्रह में वसुनन्दि ने इन शामनदेवताओं में से प्रत्येक के अपर नामों से भी मंत्रपद कहे हैं।

१. आचारदिनकर में निर्वाणा कहा गया है।
२. आशाधर और नेमिचन्द्र ने जया कहा है।
३. प्रवचनसारोद्धार में वैरोटी, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, निर्वाण कलिका आदि में वैरोट्या।
४. आचारदिनकर में अच्छुप्तिका—नन्दता।
५. अपर नाम कुमुममालिनी।
६. अपर नाम कूष्माण्डी बताया गया है।
७. प्रवचनसारोद्धार में अम्बा, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में कूष्माण्डी और निर्वाणकलिका में कूष्माण्डी। शुभचन्द्र ने अम्बा के आम्ना—ष्माण्डी, अंबिला, तारा, गौरी और वज्रा नाम भी बताये हैं।
८. अपर नाम सिद्धायिनी मिलता है।
९. प्रवचनसारोद्धार में सिद्धा नाम है।

यक्षियों की सूची के विकास के संबंध में हम आगे चर्चा करेंगे। पर यहाँ इतना उल्लेख कर देना उचित होगा कि संभवतः विद्यादेवियों के नामों को लेकर ही यक्षिया का कल्पना विकसित हुई। दिग्म्बरों की सूची तो स्पष्ट रूपेण विद्यादेवियों में प्रभावित है। उस समय तक चक्रेश्वरी की मान्यता बढ चुकी थी। इसलिए उसे यक्षिया में प्रथम स्थान प्राप्त हो गया और तत्पश्चात् विद्यादेवियों के नाम वाली अन्य यक्षियों को स्थान दिया गया। किस प्रकार विद्यादेवियों को यक्षियों में स्थान मिला, इसका अनुमान नीचे दी गयी तालिका से हो सकता है :-

क्र०	विद्यादेवी का नाम	दिग्म्बर आम्नाय में उसी नाम की यक्षा	श्वेताम्बर आम्नाय में उसी नाम की यक्षी
१	राहिणी	द्वितीय तीर्थकर की यक्षी	—
२	प्रज्ञप्ति	तृतीय तीर्थकर की यक्षी	—
३	वज्रशृंगला	चतुर्थ तीर्थकर की यक्षी	—
४	वज्राङ्गुला	—	चौदहवे तीर्थकर की यक्षी अकुशा
५	अप्रतिचक्रा या चक्रेश्वरी (श्वेताम्बर)	प्रथम तीर्थकर की यक्षी	प्रथम तीर्थकर का यक्षी
६	पुरुषदत्ता	पचम तीर्थकर की यक्षी	बाँसवे तीर्थकर का यक्षी
७	काली	सप्तम तीर्थकर की यक्षा	चतुर्थ तीर्थकर की यक्षी
८	महाकाली (महापरा)	नीवे तीर्थकर की यक्षी	पाचवे तीर्थकर की यक्षी
९	गौरी	ग्यारहवे तीर्थकर की यक्षी	—
१०	गाधारी	बारहवे तीर्थकर की यक्षी	—
११	ज्वालामालिनी (ज्वाला)	आठवे तीर्थकर की यक्षा	—
१२	मानवी	—	ग्यारहवे तीर्थकर की यक्षी
१३	बैरोटी, बैरोट्या	तेरहवे तीर्थकर की यक्षी	उन्नीसवे तीर्थकर की यक्षी
१४	अच्युता	—	छठे तीर्थकर की यक्षी
१५	मानसी	पंद्रहवे तीर्थकर की यक्षी	—
१६	महामानसी	मोलहवे तीर्थकर की यक्षी	—

हम ऊपर देख आये हैं कि यक्षों के नामों के संबंध में दिग्म्बर और श्वेताम्बर मान्यताओं में अपेक्षाकृत कम मतभेद है, पर यक्षियों की सूची में

मनभेद अधिक विस्तृत हो गया है। दोनों परम्पराओं की यक्षियों के वर्ण, आसन, वाहन, आयुध आदि के संबंध में अलग अलग विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

चक्रेश्वरी

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभनाथ की शासनदेवता चक्रेश्वरी को अप्रतिचक्रा भी कहा जाता है। पद्मानंद महाकाव्य (१/८३-८४) में उल्लेख है कि चक्रेश्वरी सभी देवताओं में अधिदेवता है और वही देवी विद्यादेवियों में अप्रतिचक्रा के नाम से प्रसिद्ध है। चक्रेश्वरी को कहीं कहीं चक्रादेवी भी कहा गया है। चक्रेश्वरी देवी की स्तुति में स्वतंत्र रूप से अनेक स्तोत्रों की रचना हुयी है। श्री जिनदत्तमूरि महाराज ने भी चक्रेश्वरी स्तोत्र की रचना की है।

देवी चक्रेश्वरी का वर्ण स्वर्ण के समान पीत है। उसे श्वेताम्बर ग्रन्थों में गरुडवाहना कहा है किन्तु दिगम्बर ग्रन्थों में वह गरुडवाहना होने के साथ पद्मस्था भी है। अपराजितपृच्छा और रूपमण्डन में भी चक्रेश्वरी को गरुड और पद्म पर स्थित बताया गया है।

चक्रेश्वरी चतुर्भुजा, अष्टभुजा और द्वादशभुजा है। दिगम्बर परम्परा के अनुसार जब वह कमलासना होती है तब द्वादशभुजा तथा गरुडामन स्थिति में चतुर्भुजा होती है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में प्रायः अष्टभुजा चक्रेश्वरी का वर्णन मिलता है। अपराजितपृच्छा में द्वादशभुजा का विधान है पर रूपमण्डन ने गरुडासीना देवी को तो अष्टभुजा किन्तु कमल अथवा गरुड पर आसीन अवस्थामें उसे द्वादशभुजावाली बताया है। अपराजितपृच्छा चक्रेश्वरी को षट्पाद कहती है।^१ किन्तु, इसकी पुष्टि किसी अन्य ग्रन्थ से नहीं होती। आचारदिनकर के अनुसार यह देवी सौम्य आशय वाली है; सच्चक्रा होने पर भी परचक्र का भंजन करती है। रूपमण्डनकार ने अष्टभुजा देवी के वर, बाण, चक्र और शूल ये आयुध बताये हैं किन्तु उनके अनुसार द्वादशभुजा अवस्था में वह दो वज्र, आठ चक्र, मातुलिग और अभयमुद्रा धारण करती है। रूपमण्डन ने द्वादशभुजा देवी के आयुध अपराजितपृच्छा का अनुसरण करके बताये है। श्वेताम्बर परम्परा में चक्रेश्वरी के दायें हाथों में चक्र, पाश, बाण और वरद तथा बायें हाथों में चक्र, अंकुश, धनुष और वज्र, ये आयुध बताये

१. अपराजितपृच्छा, २२१/१५-१६

गये हैं।^१ आचारदिनकर मे बाये हाथों के आयुधोंमे चक्रके स्थान पर चाप कहा गया है^२ किन्तु वह भूल प्रतीत होती है क्योंकि बाये हाथों का एक आयुध धनुष वहीं अलग से गिनाया गया है। दिगम्बर परम्परा की कमलासना देवी दो हाथों मे वज्र, आठ हाथा मे चत्र और शेष दो हाथों में से एक हाथ मे (दायें) वरद तथा दूसरे (बायें) मे फल धारण करती है। गहडासना देवी के दो हाथों मे वज्र, होते है और शेष दो हाथों मे से दाया हाथ वरदमुद्रामे तथा बाया हाथ फल धारण किये होता है।^३

चक्रेश्वरी की स्वतंत्र प्रतिमाएं अनेक स्थानों पर प्राप्त हुयी हैं। इससे उसकी मान्यता और प्रतिष्ठा का अनुमान होता है।

रोहिणी / अजिता / अजितबला

द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ की यक्षी का नाम दिगम्बर परम्परा के अनुसार रोहिणी है जो विद्यादेवियों की सूची मे भी उपलब्ध है। श्वताम्बर लोग उसे अजितबला या अजिता कहते है। ध्यान देने की बात है कि दिगम्बर परम्परा के वसुनन्दि ने रोहिणी का पर्याय नाम अजिता बताकर उस नाम से मन्त्रपद कहा है। रोहिणी का वर्ण स्वर्ण सा पीत है पर अजितबला श्वेत वर्ण की बतायी गयी है। अपराजितपूच्छाकार ने रोहिणी को श्वेतवर्ण कहा है। दिगम्बर ग्रन्थों मे रोहिणी को लोहामन पर स्थित बताया गया है। अपराजित-पूच्छा उसे लाहामन पर रथारूढ कहती है। श्वताम्बर परम्परा के निर्वाणकलिका तथा अन्य ग्रन्थ भी अजितबला को लोहामना बताते हैं पर आचारदिनकर के अनुसार वह यक्षी गामामिनो है। रोहिणी और अजितबला दोनों चतुर्भुजा है। अपराजितपूच्छा मे अमय, वरद, शंख और चत्र आयुधों का विधान है जिन्हें देवी क्रमशः निचल और उपरले हाथा मे धारण करती है। वसुनन्दि, आशाधर और नमिचन्द्र ने भी चारों आयुधों की स्थिति उपर्युक्त प्रकार बतायी है।^४

१. निर्वाणकलिका, पन्ना ३४ तथा अन्य ग्रन्थ।
२. आचारदिनकर, उदय ३६, पन्ना १७५।
३. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/१५-१६; प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१५६ और नमिचन्द्र, पृष्ठ ३४०।
४. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/१८; प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१५७, प्रतिष्ठा-निलक, पृष्ठ ३४१।

श्वेताम्बरो की अजिनबला के दाये हाथों में वरद और पाश तथा बाये हाथों में बीजपूर और अंकुश होने हैं ।^१

प्रज्जप्ति /दुर्गितागि

तृतीय तीर्थंकर संभवनाथ जी की यक्षी का नाम दिगम्बरों के अनुसार प्रज्जप्ति और श्वेताम्बरो के अनुसार दुर्गितागि है । अपराजितपृच्छा में इसे प्रजा कहा गया है जबकि वसुनन्दि ने इस यक्षी का पर्याय नाम नम्रा भी बताया है । प्रज्जप्ति विद्यादेवियों में भी द्वितीय स्थान पर है । वसुनन्दि के मिवाय अन्य सभी ग्रन्थकार इस यक्षी को गौर वर्ण कहते हैं । वसुनन्दि के अनुसार वह स्वर्ण वर्ण की है । दिगम्बरों ने प्रज्जप्ति को पक्षिवाहना किन्तु श्वेताम्बरो ने दुर्गितागि को मेघवाहनगामिनी माना है, केवल आचारदिनकर में उसे छागवाहना बताया गया है । प्रज्जप्ति षड्भुजा है किन्तु दुर्गितागि चतुर्भुजा । अपराजितपृच्छा में षड्भुजा का उल्लेख है । वसुनन्दि, आशाधर और नेमिचन्द्र ने देवी की छह भुजाओं में क्रमशः अर्धचन्द्र, परशु, फल, तलवार, कमण्डलु और वरद ये आयुध बताये हैं ।^२ अपराजितपृच्छाकार की सूची भिन्न प्रकार की है । तदनुसार, अभय, वरद, फल, चन्द्र, परशु, और कमल, इन आयुधों का विधान है । श्वेताम्बर ग्रन्थों में से निर्वाणकलिका और आचारदिनकर में दाये हाथों में वरद और अक्षसूत्र तथा बाये हाथों में अभय और फल का विधान है^३ किन्तु त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र और अमरकाव्य में फल के स्थान पर सप का उल्लेख किया गया है ।

वज्रशृंखला /कालिका

चतुर्थ तीर्थंकर अभिनन्दननाथ की यक्षी का नाम अपराजितपृच्छा में वज्रशृंखला है । वही नाम दिगम्बर परम्परा में भी मिलता है किन्तु श्वेताम्बरो में काली या कालिका नाम की देवी तृतीय तीर्थंकर की शासन देवता है । वसुनन्दि ने वज्रशृंखला का पर्याय नाम दुर्गितागि बताया है जो संभवतः भूल है । वज्रशृंखला का वर्ण साने जैसा है किन्तु कालिका काले वर्ण की है । दोनों के

१. निर्वाणकलिका, पन्ना ३४; आचारदिनकर, उदय ३३ पन्ना १७६ ।

२. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/२०; प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१५८ और नेमिचन्द्र पृष्ठ ३४१ ।

३. निर्वाणकलिका, पन्ना ३४; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६ । निर्वाणकलिका में अक्षसूत्र के स्थान पर मुक्तामाला बतायी गयी है ।

वाहन भी भिन्न भिन्न हैं। वज्रशृंखला हंसवाहना है पर काली पद्मासना। भुजाएँ दोनों की चार ही हैं। अपराजितपृच्छा में उनके आयुध नागपाश अक्षसूत्र, फलक (ढाल) और वरद बनाये गये हैं जबकि दिगम्बर ग्रन्थ फलक के स्थान पर फल कहते हैं^१ जो ठीक जान पड़ता है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार कालिका के दायें हाथों में वरद और पाश तथा बायें हाथों में नाग और अंकुश हुआ करते हैं।^२

पुरुषदत्ता / महाकाली

पंचम तीर्थंकर सुमतिनाथ की शासनदेवी का नाम दिगम्बर पुरुषदत्ता और श्वेताम्बर महाकाली बताते हैं। वसुनन्दि ने पुरुषदत्ता का अपर नाम संसारी देवी कहा है। आशाधर ने खड्गवरा और मोहनी नामों का प्रयोग किया है। अपराजितपृच्छा में नरदत्ता नाम है। तिलोयपण्णत्ती में पंचम स्थान वज्राकुंशा का है और पुरुषदत्ता सप्तम स्थान पर है।

पुरुषदत्ता और महाकाली, दोनों का वर्ण स्वर्ण के समान पीत है। पुरुषदत्ता गजवाहना है और महाकाली पद्मासना। दोनों ही रूप में यक्षी चतुर्भुजा है। पुरुषदत्ता के दायें हाथों में चक्र और वरद तथा बायें हाथों में वज्र और फल होते हैं।^३ महाकाली के दायें हाथों में वरद और पाश तथा बायें हाथों में मातुलिग और अंकुश बताये गये हैं।^४

मनोवेगा / अच्युता

छठे तीर्थंकर पद्मप्रम की यक्षी का नाम अमिधान—चिन्तामणि में श्यामा कहा गया है किन्तु हेमचन्द्र के ही त्रिपष्टिशलाकापुरुषचरित्र में वह अच्युता है। सामान्यतया दिगम्बरों के अनुसार मनोवेगा और श्वेताम्बरों के अनुसार अच्युता छठे तीर्थंकर की यक्षी है। वसुनन्दि ने मनोवेगा का अपर नाम मोहिनी भी बताया है।

१. वसुनन्दि, आशाधर और नेमिचन्द्र आदि।
२. निर्वाणकलिका, आचारदिनकर, अमरकाव्य और त्रिपष्टिशलाकापुरुषचरित्र।
३. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४२; प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६०; प्रतिष्ठासार-संग्रह, ५/२४-२५
४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३५; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७; अमरकाव्य, सुमतिचरित्र, १६-२० आदि।

मनोवेगा का वर्ण स्वर्ण के समान है पर अच्युता श्याम है । मनोवेगा का वाहन अश्व है । अच्युता नरवाहना है । दोनों देवियां चतुर्भुजा हैं । अपराजितपृच्छा में वज्र, चक्र, फल और वरद, ये मनोवेगा के आयुध बताये गये हैं । नेमिचन्द्र ने ढाल, फल, तलवार और वरद ये चार आयुध कहे हैं ।^१ निर्वाणकलिका में दायें हाथों में वरद और बाण तथा बायें हाथों में धनुष और अभय का क्रम है^२ किन्तु आचारदिनकर तथा अन्य ग्रन्थों में बाण के स्थान पर पाश का उल्लेख है ।^३

काली/शान्ता

मातर्वे तीर्थंकर मुपाश्वर्नाथकी यक्षी दिगम्बरों के अनुमार काली और श्वेताम्बरों के अनुसार शान्ता है । वसुनन्दि ने काली का अपर नाम मानवी भी कहा है । त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र और निर्वाण कलिका में शान्ता को शान्तिदेवी कहा है । अपराजितपृच्छा के अनुमार कालिका कृष्ण वर्ण की है पर दिगम्बर ग्रन्थ उसे श्वेत कहते हैं । शान्ता देवी का वर्ण पीत है । दिगम्बरों ने काली को वृषवाहना किन्तु अपराजितपृच्छा ने उसे महिषवाहना कहा है जबकि शान्ता या शान्ति का वाहन गज है । अपराजितपृच्छा के अनुसार कालिकादेवी अष्टभुजा है और त्रिशूल, पाश, अंकुश, धनुष, बाण, चक्र, अभय और वरद इस प्रकार आयुध धारण करती है । नेमिचन्द्र के अनुसार उक्त आयुध बायें उपरले हाथ से प्रारंभकर क्रमशः घण्टा, फल, शूल, और वरद ये चार हैं ।^४ गद्दी आयुध वसुनन्दि और आशाधर ने भी कहे हैं ।^५ श्वेताम्बर परम्परा में दायें हाथों में वरद और अक्षमूत्र तथा बायें हाथों में शूल और अभय आयुध माने गये हैं ।^६

ज्वालामालिनी/भृकुटि

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की यक्षी ज्वालामालिनी को तंत्र में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त रही । उसके ज्वालिनी, ज्वाला, ज्वालामालिका आदि अन्य नाम मिलते हैं । इन्द्रनन्दि के ज्वालिनीक-प^७ में उम वल्लिदेवी या गिल्लिमद्देवी भी

१. नेमिचन्द्र कृत प्रतिष्ठातलक, पृष्ठ ३४२ ।

२. निर्वाणकलिका, पन्ना ३५ ।

३. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७ ।

४. नेमिचन्द्र, पृष्ठ ३४२ ।

५. वसुनन्दि, ५/२६; आशाधर, ३/६६१ ।

६. निर्वाणकलिका, पन्ना ३५; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७ ।

आचारदिनकर ने अक्षमूत्र के स्थान पर मुक्तामाला कहा है ।

७, जैन सिद्धान्त भवन हस्तलिखित ग्रन्थ क्रमांक ८१/भ

कहा गया है। हेलाचार्य, मल्लिषण और अपराजितपृच्छाकार ने ज्वालामालिका नामका प्रयोग किया है। श्वेताम्बर परम्परा के प्रवचनसारोद्धार में भी ज्वाला नाम मिलता है पर अन्य श्वेताम्बर ग्रन्थों में अष्टम तीर्थकर की यक्षी का नाम भृकुटि ही बताया जाता है।

दिगम्बर ग्रन्थों में ज्वालादेवी को श्वेतवर्ण बताया गया है^१ जबकि अपराजितपृच्छा के अनुसार वह कृष्ण वर्ण है। भृकुटि का वर्ण पीत है। दिगम्बर लोग ज्वालायक्षी को महिषवाहना मानते हैं।^२ अपराजितपृच्छा ने उसे पद्मासना और वृषारूढा कहा है। भृकुटि के वाहन के विषय में श्वेताम्बर ग्रन्थों में किञ्चित् मतवैषम्य है। त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र और अमरचन्द्र के महाकाव्य में उसे हंसवाहना, आचारदिनकर में विडालवाहना और निर्वाणकलिका में वराहवाहना कहा गया है।^३

अपराजितपृच्छा में घंटा, त्रिशूल, फल और वरद ये आयुध बताये गये हैं। वसुनन्दि ने पूरे आयुध नहीं गिनाये, केवल बाण, वज्र, त्रिशूल, पाश, दो पाश, धनुष और मत्स्य का नामोल्लेख किया है।^४ इन्द्रनन्दि ने ज्वालानीकल्प में त्रिशूल, पाश, मत्स्य, धनुष, बाण, फल, वरद और चक्र ये आयुध बताये हैं।^५ आशाधर और नेमिचन्द्र ने दायें हाथों में त्रिशूल या शूल, बाण, मत्स्य और तलवार तथा बायें हाथों में चक्र, धनुष, पाश और ढाल इस प्रकार कुल आठ आयुध कहे हैं।^६ श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार भृकुटि के दायें हाथों में तलवार और मुदगर तथा बायें हाथों में ढाल और फरसा होते हैं।^७

महाकाली / सुतारा

नीत्रे तीर्थकर पुष्पदन्त या सुविधिनाथ की यक्षी दिगम्बरों के अनुसार महाकाली और श्वेताम्बरों के अनुसार सुतारा है। वसुनन्दि ने इसे भृकुटि भी कहा है पर वह भूल है। अभिधान चिन्तामणि में सुतारका और अपराजितपृच्छा में महाकाली नाम है। महाकाली कूर्म पर मवारी करती है पर सुतारा

१-२. ज्वालानीकल्प, श्लोक २ तथा अन्य ग्रन्थ।

३. विडाल के स्थान पर वराह भूल प्रतीत होती है।

४. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/३१

५. श्लोक ३

६. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६२; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ, ३४३।

७. आचारदिनकर, उदय, ३३, पन्ना १७७; निर्वाणकलिका, पन्ना ३५ तथा अन्य।

वृषभ पर । दोनों चतुर्भुजा हैं । अपराजितपृच्छा ने चारों हाथों के आयुध वज्र, गदा, वरद और अभय बनाये हैं । वसुनन्दि ने वज्र, गदा, मुद्गर, और कृष्ण फल इन तीन का ही उल्लेख किया है, वे चौथे वरद को छोड़ गये हैं ।^१ आशाधर और नेमिचन्द्र के अनुसार महाकाली के दाये हाथों में मुद्गर और वरद तथा बायें हाथों में वज्र और मातुलिग होते हैं ।^२ श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार सुतारा दाये हाथों में वरद और अक्षसूत्र तथा बाये हाथों में कलश और अंकुश धारण करती है ।^३

मानवी / अशोका

दमर्वे तीर्थंकर जीतलनाथ की यक्षी का नाम दिगम्बर मानवी और श्वेताम्बर अशोका कहने हैं । वसुनन्दि ने मानवी का पर्याय नाम चामुण्डा भी कहा है ।

अपराजितपृच्छा में मानवी को श्यामवर्णा किन्तु दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थों में उसे हरितवर्ण कहा गया है । श्वेताम्बर परम्परा के आचारदिनकर में अशोका को नीलवर्ण माना है पर त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, निर्वाणकलिका आदि में मुद्ग (मूंग) वर्ण कहा गया है । मानवी कृष्णशूकरवाहना है और अशोका पद्मवाहना । दोनों की ही चार-चार भुजाएँ हैं । अपराजितपृच्छा के अनुसार आयुध, पाश, अंकुश, फल और वरद हैं । वसुनन्दि ने केवल तीन आयुधों का नामोल्लेख किया है, मत्स्य, फल और वरद, चौथे आयुध का नाम नहीं लिखा ।^४ आशाधर ने दाये हाथों के आयुध माला और वरद तथा बायें हाथों के आयुध मत्स्य और फल बताये हैं ।^५ नेमिचन्द्र ने बायें उपरले हाथमें मत्स्य, बायें निचले हाथ में फल, दायें उपरले हाथ में माला और दायें निचले हाथमें वरदमुद्रा होना कहा है ।^६ श्वेताम्बर परम्परामें अशोकाके दायें हाथों में वरद और पाश तथा बायें हाथों में फल और अंकुश होते हैं ।^७

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/३३.

२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६३; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४३

३. निर्वाणकलिका पन्ना ३५; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १०७ तथा ग्रन्थ । आचारदिनकर में अक्षसूत्र को रसजमाला कहा गया है ।

४. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५-३५ ।

५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६४

६. नेमिचन्द्र, पृष्ठ ३४३ ।

७. निर्वाणकलिका, पन्ना ३५ ।

गौरी / मानवी

ग्यारहवें तीर्थकर श्रेयांसनाथ की यक्षी दिगम्बरो के अनुसार गौरी और श्वेताम्बरो के अनुसार मानवी नामवाली है। वसुनन्दि ने गौरी का पर्याय नाम गोमेधकी कहा है पर वह किसी अन्य उल्लेखसे पुष्ट नहीं होता। प्रवचन-सारोद्धार में मानवी के स्थानपर श्रीवत्सा ? नाम मिलता है। आचारदिनकर-कार ने भी मानवी का अपर नाम श्रीवत्सा बनाया है। गौरी का वर्ण सोने जैसा पीत और मानवी का वर्ण गौरा^१। गौरी की सवारी मृग^२ है पर मानवी का वाहन सिंह है। दोनों की भुजाएँ चार-चार हैं। अपराजितपृच्छा में गौरी के आयुध पाश, अंकुश, कमल और वरद बनाये गये हैं। वसुनन्दि ने केवल दो-कमल और वरद-आयुधों का उल्लेख किया है।^३ आशाधर और नेमिचन्द्र ने मुद्गर, कमल, अंकुश और वरद ये चार आयुध बताये हैं।^४ आचार-दिनकर और निर्वाणकलिका के अनुसार मानवी दायें हाथों में वरद और मुद्गर तथा बायें हाथों में कलश और अंकुश धारण किया करती है।^५

गांधारी / चण्डा

बारहवें तीर्थकर वामुपूज्यकी यक्षी दिगम्बरो के अनुसार गांधारी और श्वेताम्बरो के अनुसार चण्डा है। वसुनन्दि ने गांधारी का पर्याय नाम विद्युन्मालिनी बताया है। गांधारी को प्रवचनसारोद्धार में प्रवरा, आचारदिनकर में प्रवरा और चण्डा दोनों, निर्वाणकलिका में प्रचण्डा और त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरितमें चन्द्रा कहा गया है। गांधारी का वर्ण हरित है पर अपराजितपृच्छा उसे श्यामवर्ण बताती है। चण्डा श्यामवर्ण की है। गांधारी का वाहन मकर और चण्डा का वाहन अश्व है। अपराजितपृच्छा में गांधारीको द्विभुजा किन्तु दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों में गांधारी और चण्डा दोनोंको चतुर्भुजा बताया गया है। अपराजितपृच्छा के अनुसार गांधारी के दायें हाथ में कमल और बायें हाथ में फल होता है। वसुनन्दिने केवल तीन हाथों के आयुध बताये हैं अर्थात् मुशल और दो कमल,^६ चौथे आयुधका उल्लेख नहीं किया। आशाधर

१. अपराजितपृच्छा में कृष्ण मृग
२. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/३७
३. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६५ और प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४८
४. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७; निर्वाणकलिका, पन्ना ३५।
५. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/३६

श्रीर नेमिचन्द्र के वर्णन को एक साथ पढ़न पर गाधारीके दाये उपरले हाथ मे कमल, दाया निचला हाथ वरदमुद्रामे, बायें उपरले हाथमे कमल और बायें निचले हाथ मे मुशल का होना जान होना है ।^१ चण्डा के दाये हाथा मे वरद और शक्ति तथा बाये हाथो म पुष्प और गदा होती है ।^१

वैरोटी / विदिता

तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ की यक्षी का दिगम्बर वैरोटी और श्वेताम्बर विदिता कहते है । अपराजितपृच्छा मे उमका नाम विगटा और नेमिचन्द्र के प्रतिष्ठातिलक मे बगोटिका मिलता है । वमुनन्दि ने वैरोटी का पर्याय नाम विद्या भी बताया है । विदिता के स्थान पर प्रवचनसारोद्धारमे विजया नाम मिलता है । वैरोटी हरित् वर्ण है पर अपराजितपृच्छामे उमे श्यामवर्ण कहा गया है । विदिता के वर्ण के विषय मे भी मतवैषम्य है । त्रिपष्टिशलाकापुष्पचरित्र और निर्वाणकलिकामे वह हरितालद्युति है पर आचारदिनकर और अमरचन्द्र के महाकाव्य म स्वर्ण वर्ण । दिगम्बरो के अनुसार वैरोटी अजगर पर सवारी करती है । विदिता पद्म पर आसीन है । वैरोटी और विदिता दोनो चतुर्भुजा है । पर अपराजितपृच्छा ने वैरोटी को षडभुजा कहा है । उसके अनुसार यक्षीके दो हाथ वरदमुद्रामे रहने है और शेष चार हाथों मे वह खड्ग, खेटक, धनुष और वाण धारण करती है । वमुनन्दि ने आयुधो मे मे केवल दो सर्पों का ही उक्तेख किया है । आशाधरके अनुसार दाये और बाये और के एक एक हाथ मे सर्प तथा दाये और के दूसरे हाथ मे वाण और बाये और के दूसरे हाथ मे धनुष होता है ।^१ नेमिचन्द्र ने दाये और के दोनो हाथों मे सर्प बताया है और बाये और के हाथो मे वाण और धनुष ।^४ विदिता देवी के दाये हाथो मे वाण और पाश तथा बाये हाथो मे धनुष और नाग होते है ।^१

-
१. प्रतिष्ठासारोद्धार ३/१६६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४४
 २. निर्वाणकलिका, पन्ना ३५; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७ तथा अन्य ग्रन्थ ।
 ३. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६७
 ४. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४४
 ५. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७ तथा अन्य ग्रन्थ

अनन्तमती / अंकुशा

चौदहवें तीर्थंकर अनन्तनाथ की यक्षी दिगम्बरों के अनुसार अनन्तमती और श्वेताम्बरों के अनुसार अंकुशा है। वसुनन्दि ने अनन्तमती का अपर नाम विजृम्भिणी भी कहा है। अपराजितपृच्छामे चौदहवी यक्षी का नाम तारिका बताया गया है। अनन्तमती/तारिका हंसवाहना है पर अंकुशा पद्म पर स्थित होती है। अनन्तमती और अंकुशा दोनों का वर्णन चतुर्भुजा यक्षी के रूप में मिलता है। अमरकाव्य के अनन्तजिनचरित्र (श्लोक १६-२०) में अंकुशा के दो ही आयुध बताये गये हैं, जिससे प्रतीत होता है कि अमरचन्द्र उसे द्विभुजा मानते हैं। उन्होंने दायें हाथमें फलक और बायें हाथ में अंकुश बताये हैं। अपराजितपृच्छा ने तारिका के आयुध धनुष, बाण, फल और वरद कहे हैं। ठीक यही आयुध वसुनन्दि, आशाधर और नेमिचन्द्र के ग्रन्थों में पाये जाते हैं^१ श्वेताम्बर परम्परा में सामान्यतया अंकुशा के दायें हाथों में पाश और तलवार तथा बायें हाथों में अंकुश और ढाल इस प्रकार आयुध होते हैं।^२

मानसी / कन्दर्पा

दिगम्बरों के अनुसार पंद्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथ की यक्षी मानसी है पर श्वेताम्बरों के अनुसार कन्दर्पा। वसुनन्दि ने मानसी का पर्याय नाम परभृता भी कहा है। अपराजितपृच्छा ने इस यक्षी का नाम अनन्तागति बताया है जिसका तिनोयपण्णत्ती की अनन्तागति में साम्य प्रतीत होता है। प्रवचनसारोद्धार में पन्नगति या पन्नगा नाम है। आचारदिनकर ने भी कन्दर्पा का अपर नाम पन्नगा कहा है। अपराजितपृच्छा ने अनन्तागति को रत्नवर्णा, दिगम्बरों ने मानसीको प्रवालवर्णा और श्वेताम्बरों ने कन्दर्पा को गौरवर्णा माना है। मानसी का वाहन शार्दूल या व्याघ्र है और कन्दर्पा का मीन। मानसी और अपराजितपृच्छा की अनन्तागति षड्भुजा हैं। कन्दर्पा की भुजाएं चार कही गई हैं। अपराजितपृच्छा ने अनन्तागति के त्रिशूल, पाश, चक्र, डमरू, फल और वरद, ये छह आयुध बताये हैं। आशाधर और नेमिचन्द्र के अनुसार मानसी कमल, धनुष, वरद, अंकुश, बाण और कमल इस प्रकार आयुध धारण करती

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/४३; प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६८; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४५।

२. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६; आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७ तथा अन्य ग्रन्थ।

है।^१ कन्दर्पा दायें हाथों में कमल और अंकुश तथा बायें हाथों में से एक में पुनः कमल धारण करती है और उसका दूसरा बायां हाथ अभयमुद्रा में होता है।^२

महामानसी / निर्वाणी

सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ की यक्षी दिगम्बरों के अनुसार महामानसी और श्वेताम्बरों के अनुसार निर्वाणी है। वसुनन्दि ने महामानसी का पर्याय नाम कंदर्पा बताया है। अपराजितपृच्छा में तिलीयपण्णत्ती का अनुसरण करके मानसी नामही बताया है। आचारदिनकर में निर्वाणी के स्थानपर निर्वाणा नाम आना है। महामानसी का वर्ण सोने के समान पीत है। निर्वाणी को गौर वर्ण कहा गया है, पर आचारदिनकर ने उसे भी सुवर्ण के समान वर्ण वाली बताया है।

अपराजितपृच्छा की मानसी पक्षराज पर सवारी करती है पर महामानसी का वाहन मयूर है। निर्वाणी पद्मपर स्थित होती है।

दोनों प्रकार से सोलहवें तीर्थंकर की यक्षी चतुर्भुजा है। अपराजित-पृच्छा ने उसके हाथों में वाण, धनुष, वज्र और चक्र ये आयुध बताये हैं। वसुनन्दि के अनुसार, फल, ईडि (तलवार), चक्र और वरद ये चार आयुध है।^३ आशाधर और नेमिचन्द्र ने दायें तथा बायें हाथों के आयुध अलग अलग गिना दिये हैं। तदनुसार महामानसी के दायें हाथों में ईडि और वरद तथा बायें हाथों में चक्र और फल होते हैं।^४ निर्वाणी के दायें हाथों में पुस्तक और उत्पल (कमल) तथा बायें हाथों में कमण्डलु और कमल होते हैं।^५ आचारदिनकर ने पुस्तक के लिये कल्हार और कमण्डलु के लिये कारक पद का प्रयोग किया है।^६ जया / बला

सत्रहवें तीर्थंकर कुन्धुनाथकी यक्षी का नाम दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्पराओं में क्रमशः जया और बला है। वसुनन्दि ने जया देवी को गांधारी भी कहा है। तिलीयपण्णत्ती और अपराजितपृच्छा में उसका महामानसी नाम मिलता है जबकि प्रवचनसारोद्धार में अच्युता नाम से उल्लेख है।

१. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१६६; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४५
२. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६; आचारदिनकर, उदय ३२, पन्ना १७७।
३. प्रतिष्ठासारसंग्रह ५/४७
४. प्रतिष्ठासारोद्धार ३/१७०; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४५।
५. निर्वाणकलिका, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, अमरचंद्र आदि।
६. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७

जया सुवर्ण के समान पीत वर्ण है। बला गौर है, पर आचारदिनकर ने उसे अतिपीत वर्ण कहा है। जया का वाहन कृष्ण सूकर और बला का वाहन मयूर है। दोनों चतुर्भुजा हैं किन्तु अपराजितपृच्छा की यक्षी षड्भुजा है। अपराजितपृच्छा ने यक्षी के आयुध वज्र, चक्र, पाश, अंकुश, फल और वरद बताये हैं। वमुनन्दि के अनुसार जया के आयुध शंख, तलवार, चक्र और वरद ये चार हैं।^१ आशाधर और नेमिचन्द्र ने दायें हाथों में तलवार और वरद तथा बायें हाथों में चक्र और शंख आयुध बताये हैं।^२ बला के आयुधों के बारे में मनवैपम्य है। त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, अमरमहाकाव्य और निर्वाणकलिका में उसके दायें हाथों में बीजपूर और शूल तथा बायें हाथों में मुपण्डा और कमल बताये गये हैं।^३ किन्तु आचारदिनकर में शूल के स्थान पर त्रिशूल और दोनों बायें हाथों में भृशुंडि का उल्लेख है जो संभवतः मुषण्डी होना चाहिये।^४

तारावती / धारिणी

अठारहवें तीर्थकर अरनाथ की यक्षी दिग्म्बरों के अनुसार तारावती और श्वेताम्बरों के अनुसार धारिणी है। वमुनन्दि ने तारावती का पर्याय नाम काली भी कहा है। तिलोयपण्णती का अनुसरण करते हुये अपराजितपृच्छा में उसका नाम जया बताया गया है। प्रवचनमारोद्धार में धारिणी के स्थान पर धरणी नाम मिलता है। यक्षी तारावती माने के समान पीतवर्ण की है। किन्तु धारिणी को आचारदिनकर, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र आदि में नीलवर्ण बताया गया है जबकि निर्वाणकलिका के अनुसार उसका वर्ण श्याम है। तारावती का वाहन हंस है। अपराजितपृच्छाके अनुसार उसके आयुध वज्र, चक्र, फल और सर्प हैं। वमुनन्दि ने सर्प, वज्र, मृग और वरद ये चार आयुध बताये हैं।^५ उनमें से वज्र और वरद को आशाधर और नेमिचन्द्र ने दायें हाथों के, तथा सर्प और मृग को बायें हाथों के आयुध बताया है।^६ धारिणी के

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/४६
२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१७१; प्रतिष्ठानिबन्ध ३४५-४६।
३. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६।
४. आचारदिनकर, उदय, ३३, पन्ना १७७।
५. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/५१
६. प्रतिष्ठामारोद्धार ३/१७२

दायें हाथों के आयुध मातुलिग और कमन है। वह बायें और के एक हाथ में अक्षमूत्र धारण करती है पर उसके दूसरे बायें हाथ में निर्वाणकलिका के अनुसार पाश, तथा अन्य ग्रन्थों की अपेक्षा पद्म हुआ करना है।^१

अपराजिता / वैरोट्या

उन्नीसवें तीर्थंकर मन्दिनाथ की यक्षी दिगम्बरों के अनुसार अपराजिता नाम की है और श्वेताम्बरों के अनुसार वैरोट्यानाम की। उसे तिलोत्पण्णती और अपराजितपृच्छा में विजया कहा गया है। वसुनन्दि ने अपराजिता को भी अन्यत्र अनजान देवी के नाम में स्मरण किया है। उसी प्रकार वैरोट्या को प्रवचनसारोद्धार में वैराटी, अभिधानचिन्तामणि में धरणप्रिया और आचार-दिनकर में नागाधिप की प्रियतमा कहा गया है। अपराजिता हरित् वर्ण और वैरोट्या कृष्ण वर्ण है। अपराजितपृच्छा की विजया का वर्ण श्याम है। अपराजिता यक्षी का वाहन अष्टापद किन्तु वैराटी पद्म पर आसीन है। दोनों देवियों की भुजाएं चार हैं। अपराजितपृच्छा ने विजया के आयुध खड्ग, खेट, फल और वरद कहे हैं। वसुनन्दि ने अपराजिता के पूरे आयुध नहीं बताये किन्तु आशा-धर और नेमिचन्द्र के अनुसार वह यक्षी दायें उपरले हाथ में तलवार, बायें उपरले में खेट तथा बायें निचले हाथ में फल धारण करती है और उसका दायां निचला हाथ वरद मुद्रा में होता है।^२ वैरोट्या यक्षी के दायें हाथों में अक्षमूत्र और वन्द तथा बायें हाथों में शक्ति और बीजपूर हुआ करने हैं।^३

बहुरूपिणी / नरदत्ता

बीसवें तीर्थंकर मुनिमुव्रतनाथ की यक्षी दिगम्बरों के अनुसार बहुरूपिणी और श्वेताम्बरों के अनुसार नरदत्ता है। वसुनन्दि ने बहुरूपिणी को सुगंधिनी भी कहा है। प्रवचनसारोद्धार में बीसवें तीर्थंकर की यक्षी का नाम अच्छुप्ता बताया गया है। आचारदिनकर ने अच्छुप्तिका और नृदत्ता दोनों ही नामों का उल्लेख किया है। तिलोत्पण्णती और अपराजितपृच्छा के अनुसार अपराजिता बीसवें तीर्थंकर की यक्षी है। दिगम्बरों की यक्षी बहुरूपिणी शीतवर्ण की है। नरदत्ता को आचारदिनकरकार स्वर्ण के वर्ण की बताते हैं किन्तु अन्य ग्रन्थों के अनुसार वह

१. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८; निर्वाणकलिका, पन्ना ३६
२. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१७३; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४७।
३. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६ तथा अन्य ग्रन्थ।

गौर वर्ण है। बहुरूपिणी का वाहन कृष्ण नाग है। नरदत्ता भद्रासना है। बहुरूपिणी और नरदत्ता दोनों चतुर्भुजा है पर अपराजितपृच्छा की देवी द्विभुजा है जो खड्ग-खेटक धारण करती है। वसुनन्दि ने बहुरूपिणी को ग्रष्टानना, महाकाया और जटामुटभूषिता कहा है। बहुरूपिणी के दायें हाथों में खड्ग और वरद तथा बायें हाथों में खेट और फल होने का विधान है।^१ नरदत्ता के आयुधों के संबंध में किञ्चित् मतवैषम्य है। आचारदिनकर और त्रिषष्टि-शलाकापुरुषचरित उसके दायें हाथों में वरद और अक्षमूत्र तथा बायें हाथों में मातुलिग और शूल बताते हैं^२ किन्तु निर्वाणकलिका में शूल के स्थान पर कुम्भ कहा गया है।^३

चामुण्डा / गांधारी

इक्कीसवें तीर्थकर नेमिनाथ की यक्षी को दिगम्बर लोगों ने चामुण्डा और श्वेताम्बर लोगों ने गांधारी नाम दिया है। नेमिचन्द्र ने उसे चामुण्डिका और वसुनन्दि ने कुसुममालिनी भी कहा है। तिलोयपण्णत्ती के अनुसार बहुरूपिणी बाईसवें तीर्थकर की यक्षी है। चामुण्डा का वर्ण हरित् कहा गया है और गांधारी का श्वेत। वसुनन्दि ने चामुण्डा को नंदिवाहना बताया है किन्तु आशाघर और नेमिचन्द्र उमें मकरवाहना कहते हैं। अपराजितपृच्छा की देवी मर्कट पर सवारी करती है। गांधारी हंसवाहना है। वसुनन्दि के अनुसार चामुण्डा अष्टभुजा और चतुर्भुजा दोनों विग्रह वाली है पर आशाघर और नेमिचन्द्र उसे चतुर्भुजा ही मानते हैं। अपराजितपृच्छा की देवी अष्टभुजा है। श्वेताम्बरों की गांधारी के भी चार हाथ हैं। चामुण्डा को वसुनन्दि ने चतुर्वक्त्रा (चारमुखवाली) और रक्ताक्षा भी कहा है^४ पर अन्य ग्रन्थों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। अपराजितपृच्छा में बहुरूपिणी नाम की देवी के आठ आयुध शूल, खड्ग, मुद्गर, पाश, वज्र, चक्र, डमरू और अक्षमूत्र बताये गये हैं। दिगम्बर ग्रन्थ चामुण्डा के चार आयुध बताते हैं। तदनुसार उसके दायें हाथों में अक्षमूत्र और तलवार तथा बायें हाथों में यष्टि और खेट हुआ करते हैं।^५

१. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१७४; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४७
२. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८।
३. निर्वाणकलिका, पन्ना ३६
४. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/५७
५. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१७५; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४७।

गांधारी के आयुधो के वारे मे मनवैपम्य देखा जाता है । त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित्र और अमरकाव्य के अनुसार गांधारी के दाये हाथों मे बरद और खड्ग तथा दांती बाये हाथों मे वीजपूर है । आचारदिनकरकार बाये हाथों मे शकुन्त (पक्षी) और वीजपूर कहत है ' जबकि निर्वाणकलिका कुम्भ और वीजपूर का उल्लेख करती है ।^१

आम्ना / अम्बिका

वाईमवे तीर्थकर नेमिनाथ की यक्षी आम्ना या अम्बिका है । इम देवी के अनेक नाम है । श्वेताम्बर शुभचन्द्र आचार्य ने इमके अम्बा, आम्नकू-ष्माण्डी, अम्बिला, तारा, गौरी, वज्रा आदि नाम कहे है ।^१ तिलोयदण्णती मे कूष्माण्डी तथा प्रवचनमारोद्धार मे अम्बा नाम मिलते है । अपराजितपुच्छा बाईमवे तीर्थकर की यक्षी के चामुण्डा और अम्बिका दोना नाम कहती है । अभिधानचिन्तामणि मे अम्बा नाम है पर त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमे कूष्माण्डी । वमुनन्दि, आशाधर और नमिचन्द्र न आम्ना नाम से इस यक्षीका वर्णन किया है पर वमुनन्दि ने अपर नाम कूष्माण्डी भी बताया है । अम्बिका देवी का एक अन्य नाम धर्मा देवी भा है । इम यक्षी को आचारदिनकर मे अम्बा, निर्वाणकलिका मे कूष्माण्डी और अमरकाव्य मे अम्बिका कहा गया है । जैन परम्परा मे अम्बिका देवी की बडी मान्यता रही है । महामात्य वास्तुपाल विरचित अम्बिका स्तवन और जिनश्वरदत्तमूरि कृत अम्बिकादेवीस्तुति जैमी अनेक रचनाएँ अम्बिका की स्तुति मे रची गयी थी ।

दिगम्बरो के अनुसार आम्नादेवी हरित वर्ण है । अपराजितपुच्छा मे भी उमे हरित् कहा गया है । श्वेताम्बरो ने अम्बिका की सुवर्ण के समान पात वर्ण की माना है । रूपमण्डन ने भी पात ही कहा है ।

इस यक्षी का वाहन सिंह है । आशाधर ने भर्तृचरं विशेषण दिया है जिसका सवेत पूर्व जन्म की कथा के प्रति है । दिगम्बरलाग अम्बिका की द्विभुजा

१. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७ । यदि शकुन्त को मकुन्त (यद्यपि वह असुद्ध होगा) मानें तो एक आयुध कुन्त होगा ।
२. निर्वाणकलिका पन्ना ३६ । कुम्भ के स्थान पर कुन्त भी हो सकता है ?
३. अम्बिकाकल्प, ७/२-३ । शुभचन्द्राचार्य ने अम्बिका कल्प की रचना जितदत्त के अप्रहस ब्रह्मशाल के पठन के लिए की थी ।

मानते हैं पर श्वेताम्बर लोग चतुर्भुजा । शुभचन्द्राचार्य ने तीन स्थितियों में तीन प्रकार से भुजाओं की संख्या का विधान किया है । तदनुसार जब यक्षी अष्टि नेमि के पादमूल में स्थित हो तो अष्टभुजा होती है; जब उसकी प्रतिमा मिहामन पर बनायी जावे तो चतुर्भुजा और जब पार्श्व में स्थित की जावे तो द्विभुजा होना चाहिये । आशाधर के अनुसार आम्ना देवी आम्र वृक्ष को छाया में स्थित होनी है । नेमिचन्द्र ने उसे आम्रवृक्ष की छाया में वाम कटि पर प्रियंकर को रवे हुये बताया है । अपराजितपृच्छा में भी इस यक्षा को पुत्रेण उपास्यमाना और मुतोत्संगा कहा गया है ।

अपराजितपृच्छा में, अम्बिका का दायां हाथ वरद मुद्रा में और बायें हाथ में फल का होना बताया गया है । आशाधर के अनुसार अम्बिका के दायें हाथ की अंगुलियां अपने पुत्र शुभंकर के हाथ को छूती हुयी दिखायी जाती हैं और बायें हाथ में वह गोद में बैठे प्रियंकर के लिये आम्रस्तंबक पकड़े रहती है ।^१ नेमिचन्द्र ने भी उसी प्रकार का विवरण दिया है ।^२ श्वेताम्बर परम्परा के प्रवचनमारोद्धार में अम्बिका के दाये हाथों में आम्र-लुम्बि और पाश तथा बायें हाथों में चक्र और अंकुश बनाये गये हैं । त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र के अनुसार यक्षी के दायें हाथों में आम्रलुम्बि और पाश तथा बायें हाथों में पुत्र और अंकुश होते हैं । रूपमण्डन ने पाश के स्थान पर नागपाश कहा है । आचारदिनकर का मत त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र जैसा है । किन्तु निर्वाणकलिका में आम्रलुम्बि या आम्राली के स्थान पर मानुलिंग का उल्लेख किया गया है ।^३ शुभचन्द्र आचार्य ने चतुर्भुजा अम्बिका के आयुध शंख, चक्र, बरद और पाश बताये हैं । उन्हीं आचार्य ने अष्टभुजा स्थिति में आम्रकूष्माण्डी को शंख, चक्र, धनुष, पशु, तोमर, तलवार, पाश और कौक्षेय इन आयुधों से युक्त कहा है ।

पद्मावती

तैस्रै तीर्थंकर पाश्र्वनाथ की यक्षी पद्मावती को तिलोयपण्णत्ती में पद्मा कहा गया है । इन्द्रनन्दि और मल्लिषेण ने भी उसे पद्मा नाम से

१. प्रतिष्ठासारोद्धार, ३/१७६
२. प्रतिष्ठातिलक पृष्ठ ३४७
३. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना; १७८
४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

स्मरण किया है। इस यक्षी की लेकर अनेक कल्पों और स्तोत्रों की रचनाएं हुई हैं। इन्द्रनन्दि का पद्मावती पूजन, मल्लिषेण का भैरवपद्मावतीकल्प, यशोभद्र उपाध्याय के लिप्य श्रीचन्द्रमूरि का अद्भुत पद्मावतीकल्प आदि उनमें प्रमुख हैं। दिगम्बरो के अनुसार पद्मावती का वर्ण रक्त है। अपराजित पृच्छा और रूमण्डन ने भी उसे रक्तवर्ण बनाया है। श्वेताम्बर ग्रंथों के अनुसार वह सुवर्ण के समान पीतवर्ण की है।

वसुनन्दि पद्मावती का पद्मामीना कहते हैं। आशाधर पद्मस्था तो कहते ही हैं पर कुकुटसर्पंगा भा बताते हैं। अपराजितपृच्छा ने पद्मामना और कुक्कुटस्था तथा रूपमण्डन ने कुकुटोत्सव्या का विधान किया गया है। मल्लिषेण ने पद्मस्था कहा है। श्वेताम्बर ग्रंथों में से त्रिपट्टिशनाकापुष्पचरित्र और आचारदिनकर ने पद्मावतीको कुकुट सर्प पर स्थित बताया गया है किन्तु श्रीचन्द्रमूरि ने उसे पद्म एवं हंस पर स्थित कहा है। मल्लिषेण ने पद्मावतीको त्रिलोचना बताया है। आशाधर और श्रीचन्द्रमूरि ने त्रिफणसर्पमौलि तथा मल्लिषेण ने पद्मगांधपदेखर आदि विशेषणों द्वारा सूचित किया है कि पद्मावती के मस्तक पर सर्पफण का छत्र होता है। पद्मावती की भुजाओं की संख्या के संबंध में मतभिन्नता है। वसुनन्दि और नेमिचन्द्र उसे चार, छह या चौबीस भुजाओं वाली बताते हैं। आशाधर ने चार, छह और आठ भुजाओं का उल्लेख किया है। श्वेताम्बर ग्रंथों में सामान्यतया पद्मावती देवी को चतुर्भुजा ही कहा है। उसी प्रकार, मल्लिषेण, श्रीचन्द्रमूरि, अपराजितपृच्छाकार एवं रूपमण्डनकार भी पद्मावती को चतुर्भुजा मानते हैं। नेमिचन्द्र के अनुसार पद्मावती देवी के आयुध निम्न प्रकार है :—

चतुर्भुजा : दाये हाथों में अश्रमाला और वरदमुद्रा तथा बायें हाथों में अंकुश और कमल ।

षड्भुजा : पाश आदि (विवरण अपूर्ण)

चतुर्विंशतिभुजा : शंख, तलवार आदि (विवरण अपूर्ण)^१

आशाधर ने नेमिचन्द्र के समान मत प्रकट किया है। अन्तर केवल इतना है कि आशाधर के अनुसार चतुर्भुजा पद्मावती के दायें हाथों के आयुधों में

वरदमुद्रा के स्थान पर व्यालांबर हुआ करता है ।^१ वसुनन्दि ने पद्मावती के आयुधों का वर्णन विस्तार से किया है।^२ उनके अनुसार चतुर्भुजा पद्मावती अंकुश, अभ्रमूत्र, कमल और संभवनः वरदमुद्रा धारण करती है; पद्मभुजा देवी के हाथों में पाश, अग्नि, कुंत, अर्धचन्द्र, गदा और मूसल हुआ करते हैं जबकि चतुर्विंशति-भुजा अवस्थाके आयुध, शंख, अग्नि, चक्र, अर्धचन्द्र, श्वेतपद्म, उत्पल (नीलकमल), धनुष, शक्ति, पाश, अंकुश, घण्टा, बाण, मूसल, खेटक, त्रिशूल, परशु, वज्र, माला, फल, गदा, पत्रपल्लव, वरदमुद्रा तथा अन्य द्वाे होने हैं। रूपमण्डन ने पद्म, पाश, अंकुश और बीजपूर तथा अर्पणजितपृच्छा ने पाश, अंकुश, पद्म और वरदमुद्रा इनका विधान किया है।

आचारदिनकर में पद्मावती के दायें हाथों के आयुध पद्म और पाश तथा बायें हाथों के आयुध अंकुश और दक्षिण कहे गये हैं।^३ निर्वाणकलिका में भी दायें हाथों में पद्म और पाश का, तथा बायें हाथों में फल और अंकुश का उल्लेख है।^४ श्रीचन्द्रमूरि ने पद्म, अंकुश, वरद और पाश^५ तथा मल्लिपेण ने वामोर्ध्व कर त्रय में पाश, फल, वरद और अंकुश, इन आयुधों का वर्णन किया है।^६

भैरवपद्मावतीकल्प (१/२) में पद्मा देवी के तंतुला, त्वरिता, नित्या, त्रिपुरा, काममाधिनी और त्रिपुरभैरवी, उन छह भिन्न भिन्न रूपा का उल्लेख है। तंतुला के आयुध, पाश, वज्र, फल और कमल हैं। त्वरिता रक्त वर्ण की है और शंख, पद्म, अभ्रमुद्रा तथा वरदमुद्रा धारण करती है। नित्या रूप में देवी की जटाएँ बालचन्द्र में मण्डित होत हैं। उसके हाथों में पाश, अंकुश, कमल और गङ्गामाला, तथा वाहन हंस है। कुंकुम के समान वर्ण वाली त्रिपुरा की आठ भुजाओं में शूल, चक्र, कशा, कमल, चाप, बाण, फल और अंकुश होते हैं। काममाधिनी बधक पुष्प के समान वर्ण वाली है और शंख, पद्म, फल एवं कमल धारण करती है। त्रिपुरभैरवा का वर्ण इन्द्रगोप के समान है। वह त्रिलोचना है। उसके हाथों में पाश, चक्र, धनुष, बाण, खेट, खड्ग, फल और अम्बुज हुआ करते हैं।

१. प्रतिष्ठामाराद्वार, ३/१७७
२. प्रतिष्ठासागरसंग्रह, ५/६०-६८
३. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७=
४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७
५. अद्भुतपद्मावतीकल्प, ४/५२-५४
६. भैरवपद्मावतीकल्प, १/२

सिद्धायिका

चौबीसवें तीर्थंकर महावीरस्वामी की यक्षी सिद्धायिका है। उसे सिद्धायिनी भी कहा जाता है। प्रवचनमारोद्धार में उसका नाम केवल सिद्धा मिलता है। सिद्धायिका यक्षा का वर्ण दिगम्बरो के अनुसार स्वर्ण जैसा है पर नेमिचन्द्र ने उ-द्रनीलवर्ण का उल्लेख किया है। श्वेताम्बर परम्परा में सिद्धायिका को हरित् वर्ण वाली माना गया है।

वसुनन्दि ने सिद्धायिका को भद्रासना, आशाधर ने भद्रासना और सिंहगति, नेमिचन्द्र ने भद्रासना और हंसगति, अपराजितपृच्छाकार ने भद्रासना, रूपमण्डन में मिहार्ढा या सिद्धार्ढा, निर्वाणकलिका और आचारदिनकर में मिहवाहना एवं अमरचन्द्र ने गजवाहना कहा है। दिगम्बरों के अनुसार यह यक्षी द्विभुजा है और श्वेताम्बरों के अनुसार चतुर्भुजा। अपराजितपृच्छा में द्विभुजा और रूपमण्डन में चतुर्भुजा का विधान है।

दिगम्बर परम्परा के अनुसार, सिद्धायिका का दाया हाथ वरद मुद्रा में होता है और उसके बायें हाथ में पुस्तक रहती है।^१ अपराजितपृच्छा में दायां हाथ अभयमुद्रा में और बाया हाथ पुस्तकयुक्त बताया गया है। श्वेताम्बर परम्परा के आचारदिनकर के अनुसार इस यक्षी के दायें हाथों में पुस्तक और अभयमुद्रा तथा बायें हाथों में पाश और कमल होते हैं।^२ निर्वाणकलिका में बायें हाथों में मातुलिग और वीणा का विधान है।^३ रूपमण्डन में वीणा के स्थान पर वाण का उल्लेख है जो संभवतः भूल है।

शासन देवताओं की उत्पत्ति

प्राचीनतम जैन साहित्य में शासन देवताओं का विवरण नहीं मिलता। प्राचीनतम तीर्थंकर प्रतिमाओं के साथ भी शासन देवताओं की प्रतिमाएं नहीं मिली हैं। इसके ज्ञात होता है कि जैन प्रतिमा निर्माण के प्रारंभिक काल में शासन यक्षों और यक्षियों की प्रतिमाएं निमित्त किये जाने की परम्परा नहीं थी।

१. प्रतिष्ठासारसंग्रह, ५/६६-६७; प्रतिष्ठामारोद्धार, ३/१७०; प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३४८.
२. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८
३. निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

श्री उमाकान्त परमानन्द शाह ने शासन देवताओं के जैन शासन में प्रवेश के संबंध में विस्तार से विवेचन किया है।^१ उन्होंने बताया है कि अकोटा की कायोत्सर्ग ऋषभनाथ प्रतिमा के साथ प्रथम बार शासन देवताओं की प्रतिमाएं देखी गयी है।^२ वह प्रतिमा अनुमानतः ५५० ईस्वी के लगभग की कला-कृति है। उस पर उत्कीर्ण लेख में जिनभद्र वाचनाचार्य का उल्लेख है जिन्हें श्री शाह ने जिनभद्रगण क्षमाश्रमण से अभिन्न माना है। उपर्युक्त ऋषभनाथ प्रतिमा के साथ प्राप्त यक्ष और यक्षी का रूप क्रमशः कुबेर और अम्बिका जैसा है। श्री शाह का मत है कि नौवीं शताब्दी ईस्वी के अन्त तक सभी तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के साथ कुबेर और अम्बिका की जोड़ी ही बनायी जाती रही है जैसाकि एलोरा तथा अन्य स्थानों की तीर्थंकर प्रतिमाओं में देखा जाता है।

मध्यकाल में भारत में तांत्रिक युग आया। उसके प्रभाव से ही बौद्धों में वज्रयान सम्प्रदाय का निर्माण हुआ। तांत्रिक युग में नये नये देव और देवियों की कल्पना की गयी और उनकी पूजा का प्रचार-प्रसार हुआ। पुराने देवों को नये रूप दे दिये गये। पूर्व में जो देव द्विभुज थे, उनके हाथों की संख्या बढ़ी। अवलोकितेश्वर सहस्रभुज तक बन गये।

जैनों पर भी तांत्रिक युग का प्रभाव पड़ा। वैसे तो जैनों ने अपनी आचारविधि के मूल रूप की रक्षा करने का यथाशक्य प्रयास किया पर तंत्र उस समय युगधर्म बन चुका था, इसलिये जैन लोग उससे अछूते नहीं बचे। जैनों को भी नये नये देवों और देवियों की कल्पना करनी पड़ी। सोमदेवसूरि ने स्वीकार किया है कि शासन की रक्षा के लिये परमागम में शासन देवताओं की कल्पना की गयी है।^३

जैनों की इतनी विशेषता अवश्य रही कि उन्होंने नये देवताओं को तीर्थंकरों के रक्षक और सेवक देवताओं के रूप में प्रस्तुत किया और तीर्थंकरों के देवाधिदेव पद की पूर्ण रूप से रक्षा की। तंत्र से प्रभावित जैन आचार्यों ने ज्वालिनिकल्प और भैरवपद्मावतीकल्प जैसी रचनाएं भी की और विशिष्ट चमत्कारों का प्रदर्शन किया।

१. प्रोसीडिंग्स एण्ड ट्रान्जेक्शन्स आफ दि ऑल इण्डिया ओरियण्टल कान्फ्रेंस, भुवनेश्वर, १९५६
२. वही, पृष्ठ १४२
३. उपासकाध्ययन, ध्यानप्रकरण, श्लोक ६६७-६६

जयमेन (वमुविन्दु) के प्रिष्ठापाठ में शामन देवों की अर्चा-पूजा का उल्लेख नहीं है पर अशाधर के प्रतिष्ठामारोद्धार, नेमिचन्द्र के प्रतिष्ठातिलक, पादलिप्तमूर्ति की निर्वाणकलिका और वर्धमानमूर्ति के आचारदिनकर जैसे ग्रन्थों में शामन देवताओं को यथोचित बलि प्रदान किये जाने का विधान किया गया है।

श्री उमाकान्त शह के अनुसार, आठवीं शताब्दी ईस्वी में जैन साहित्य में, और नौवीं शताब्दी ईस्वी में जैन प्रतिमा निर्माण में शामन देवताओं का प्रवेश हुआ। इतने पर भी सभी देव-देवियों की कल्पना एक साथ नहीं, बल्कि क्रमशः हुयी थी।^१ श्वेताम्बर ग्रन्थों में शमन देवताओं की सम्पूर्ण सूची सर्वप्रथम हेमचन्द्र के अभिधानचिन्तामणि में मिलती है। उन देवताओं के स्वरूप सबकी विवरण त्रिपिटकालाकापुराणवर्णन में उल्लेख होने हैं।^२

अम्बिका

दिगम्बर परम्परा के आचार्य जिनगन (८ वीं शताब्दी) के हरिवश-पुराण में और श्वेताम्बर परम्परा के बणभद्रमूर्ति की चतुर्विंशतिवा (८००-८६५ ईस्वी) में अम्बिका का वर्णन मिलता है। तदनुसार वह देवी द्विभुजा है। जिनसेन आचार्य के उसी श्लोक में^३ अप्रतिचक्रा का भी उल्लेख है।^४

हरिभद्रमूर्ति ने आवश्यकतिर्युक्ति का टीका में^५ भी अम्बिका कूष्माण्डी विद्या का उल्लेख किया है पर उसके वाहन आदि का विवरण नहीं दिया है। इससे पूर्व में भी विशेषावश्यक महाभाग की क्षमाश्रमणमहत्तरीय टीका में यस्मिन्मन्त्रदेवता स्त्री सा विद्या अम्बिकाकूष्माण्ड्याः उल्लेख तो मिलता है पर

१. निलोयपण्णत्ती में दी गयी यक्ष-यक्षियों की सूची के संबंध में श्री शाह का मत है कि वह अश पश्चात्काल में जोड़ा गया था।
२. श्री शाह निर्वाणकलिका को ११ वी- १२ वीं शताब्दी की कृति मानते हैं।
३. हरिवशपुराण, जिल्द २, मार्ग ६६, श्लोक ४४
४. गृहीतचक्राऽप्रतिचक्रदेवता तथोर्ज्जयन्तालयासिहवाहिनी ।
शिवाय यस्मिन्निह सन्निधीयते क्व तत्र विघ्नाप्रभवन्ति शान्त्यं ॥
५. श्लोक ६३१

अम्बिका या कूष्माण्डी का नाम विद्यादेवियों की सूची में नहीं मिलता ।^१ इस प्रकार अम्बिका का उल्लेख पूर्व में मिलने लगा था; उसकी प्रतिमाएं ५५० ईस्वी के लगभग (संभवतः उससे पूर्व भी) निर्मित होने लगी थी। अम्बिका की प्राचीन प्रतिमाएं अकोटा, मेगुटि मंदिर ऐहोल, महुडी, टाक और मथुरा में उपलब्ध हुई हैं।

सर्वानुभूति / सर्वाल्ल

कुवेर जैसे जिस यक्ष की प्रतिमाएं प्रायः सभी तीर्थकरों की प्रतिमाओं के साथ देखी जाती हैं। उम यक्ष को श्री उमाकान्त शाह सर्वानुभूति यक्ष से अभिन्न मानते हैं। प्रतिग्रमणसूत्र की प्रबोधा टीका^२ में सर्वानुभूति यक्ष का वर्णन मिलता है। वह यक्ष दिव्य गज पर आरूढ़ ताकर विचरण किया करता है।

तिलोयपण्णत्ती में अनेक स्थलों पर सर्वाल्ल नामक यक्ष की प्रतिमाओं (रूप) का उल्लेख किया गया है।^३ वाद के प्रतिष्ठा ग्रन्थों में भी सर्वाल्ल यक्ष का विवरण मिलता है। उसे भी दिव्य श्वेत गज पर आरूढ़ बनाया गया है।^४ वह जैन पूजा-यज्ञ आदि की रक्षा किया करता है।

अन्य शासन देवता

आठवीं शताब्दी ईस्वी में रचिन भद्रेश्वरमूरि की कहावली की स्थवि-रावली में विभिन्न शासन देवताओं का उल्लेख मिलता है पर उस समय की कला में अम्बिका जैसी देवियों को छोड़कर अन्य शासन यक्षों या यक्षियों की प्रतिमाएं प्राप्त नहीं होती हैं। भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि की नवमुनिगुफा में जो कुछेक यक्षी प्रतिमाएं हैं, उनका काल नौवीं शताब्दी आंका गया है।

१. संभवतः वही अप्रतिचक्रा है।
२. प्रबोधा टीका, जिल्द ३, पृष्ठ १७०
निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलमहर्षं बालचन्द्राभदंष्ट्रम्
मत्तं घण्टारवेण प्रसूतमदजलं पुरयन्तं समन्तात् ।
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी
यक्षः सर्वानुभूतिदिशतु मम सदा सर्वकार्येषु मिद्धिम् ॥
३. ४/१८८१ आदि
४. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ६६

देवगढ़ किले के जैन मंदिर (क्रमांक १२) में यक्षियों की नामयुक्त प्रतिमाएं हैं पर वे प्रतिमाएं भी नौवीं शताब्दी ईस्वी से पूर्व की प्रतीत नहीं होतीं।

श्री उमाकान्त शाह का मत है कि ईस्वी १००० के पश्चात् ही यक्षों और यक्षियों की कल्पना विकसित हो सकी थी और बारहवीं शताब्दी ईस्वी में दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही परम्परा की मूर्तियों ने पूर्णता प्राप्त कर ली थी।

देवगढ़ की यक्षियां

देवगढ़ के जैन मंदिर में यक्षियों की प्रतिमाओं के पट्ट पर उनके नाम उत्कीर्ण किये हुये हैं। उत्कीर्ण लेखों की लिपि ६५० ईस्वी के लगभग की प्रतीत होती है। उन नामों से ज्ञात होता है कि उस समय तक यक्षियों की एक सूची तैयार हो चुकी थी। देवगढ़ की यक्षीप्रतिमाएं दिगम्बर आम्नाय की हैं। इसलिये उनके नामों की तुलना तिलोयपण्णत्ती में प्राप्त नामों से करके क्रमिक विकास का अध्ययन किया जा सकता है। वे नाम इस प्रकार हैं:-

क्रमांक	तीर्थंकर	देवगढ़ की यक्षी	तिलोयपण्णत्ती की यक्षी
१.	ऋषभनाथ	चक्रेश्वरी	चक्रेश्वरी
२.	अजितनाथ	—	रोहिणी
३.	संभवनाथ	—	प्रज्ञप्ति
४.	अभिनन्दननाथ	सरस्वती	वज्रशृंखला
५.	सुमतिनाथ	—	वज्रांकुशी
६.	पद्मप्रभ	सुलोचना	अप्रतिचक्रा
७.	सुपाश्वनाथ	—	पुरुषदत्ता
८.	चन्द्रप्रभ	सुमालिनी	मनोवेगा
९.	पुष्पदन्त	बहुरूपी	काली
१०.	शीतलनाथ	श्रियदेवी	ज्वालामालिनी
११.	श्रेयांसनाथ	वह्निदेवी	महाकाली
१२.	वासुपूज्य	आभोगरोहिणी	गौरी
१३.	विमलनाथ	सुलक्षणा	गांधारी
१४.	अनंतनाथ	अनंतवीर्या	वैरोद्या
१५.	धर्मनाथ	सुरक्षिता	अनन्तमती
१६.	शान्तिनाथ	श्रियदेवी या अनंतवीर्या	मानसी
१७.	कुण्डुनाथ	अरकरभि	महामानसी

१८.	अरनाथ	तारादेवी	जया
१९.	मल्लिनाथ	भीमदेवी	विजया
२०.	मुनिगुन्ननाथ	—	अपराजिता
२१.	नमिनाथ	—	वृद्धरिणी
२२.	नेमिनाथ	अम्बिका	कामाण्डिनी
२३.	पार्श्वनाथ	पद्मावती	पद्मा
२४.	महावीरस्वामी	अपराजिता	सिद्धायिनी

नागौड के निकट प्राप्त पत्तानी या पत्तान देवी के नाम से ज्ञात अम्बिका प्रतिमा के तीन और अन्य निर्म यक्षिया का छाटी छाटी प्रतिमाएं निर्मित की गयी है। उन मय के साथ उनके नाम भी उत्कीर्ण है। यद्यपि उनमेंसे कई नाम ठीक ठीक नहीं पड़े जा सके है पर उनमें यक्षियों के नाम इस प्रकार ज्ञात होते है :—

वहुरूपिणी, चामुण्डा, सरस्वती, पद्मावती, विजया, अपराजिता, महामातमी, अनन्तमती, गाधारी, मानमी, ज्वालामालिनी, भाउमी, वज्रशृंखला, भानुजा ?, जया, अनन्तमती, वैरोद्या, गौरी, महाकाली, काली, बुधदधी ?, प्रजापति ? वल्लि ?

श्री उमाकान्त शाह का विचार है कि उपर्युक्त यक्षी प्रतिमाएं तिलो-यपणन्ती के अनुसार है और वे देवगढ़ की प्रतिमाओं के निर्माण से पश्चात् की तथा आगाधर से पूर्व की हैं। देवगढ़ में सरस्वती की चतुर्भुजा प्रतिमा १०७० ईस्वी में निर्मित की गयी थी। वही समय गुमालिनी की प्रतिमा का भी है।

हिन्दू और बौद्ध प्रभाव

जैन शासनदेवताओं की सूची में ब्रह्म, कुमार, षण्मुख, वरुण, ईशान, चामुण्डा, चण्डा, काली, महाकाली, गौरी आदि अनेक नाम ऐसे हैं जो हिन्दू देववाद में भी हैं। उमी प्रकार, तारा, भृकुटि, विद्युज्ज्वालाकराली, वज्रशृं-खला, वज्राकुशा, अपराजिता जैसे नाम बौद्धों की देवियों के है।

तांत्रिक युग में जनसमुदाय को अपने धर्म के प्रति आकृष्ट करने के लिये अपने देवताओं को उच्च और उन्कृष्ट दिव्याना आवश्यक हो गया था। महायानी बौद्धों ने हिन्दू देवताओं को अपराजिता जैसे देवियों द्वारा पददलित

किये जाने तक का प्रदर्शन किया था किन्तु जैनों ने विसान करके अन्य देवताओं को अपने तीर्थकरों के रक्षक देवताओं के रूपमें स्वीकार कर लिया। इतना ही नहीं, तीर्थकरों को भी ईशान, वामदेव, नत्पुरुष आदि नामों से विभूषित किया।

दूसरे ओर, ऐसी भी संभावना है कि जैनों और हिन्दुओं दोनों ने ही पूर्व परम्परा के कुछ देव-देवियों को समान रूप में स्वीकार कर लिया हो। कुछ भी हो, इतना तो स्पष्ट है कि जैनों के अनेक यक्ष और यक्षियां या तो हिन्दू देवताओं के नामों में साम्य रखते हैं या उनके रूप में। कहीं कहीं तो नाम और रूप दोनों में ही पूर्ण साम्य है। बौद्धों ने भी महाकाल, गणपति, सरस्वती, दिक्पाल, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, कार्तिकेय, वाराही, चामुण्डा, भृंगि, नन्दिकेश्वर आदि विभिन्न देवताओं के साथ यक्ष, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर, नक्षत्र, तिथिदेवता आदि को स्वीकार किया था। वैसे ही जैनों ने भी दिक्पालों, गणपति, भैरव आदि को अपने देववाद में सम्मिलित किया और उन्हें भी जैनी बना लिया।

कुछ विशिष्ट यक्ष और देवियां

शासनदेवताओं के अलावा और भी अनेक विशिष्ट विशिष्ट यक्षों तथा देवियों का उल्लेख और उनका वर्णन जैन ग्रन्थों में पाया जाता है। उन में दिग्म्बर परम्परा के अनावृत और सर्वाल्ल यक्ष तथा श्वेताम्बर परम्परा के ब्रह्मशान्ति और तुम्बरु यक्ष प्रमुख हैं।

अनावृत यक्ष

अनावृत यक्ष व्यन्तर जाति के देवों में से है। उसका निवास मेरु पर्वत के ईशान भाग में, उत्तर कुरु के जंबू वृक्ष की पूर्व शाखा पर स्थित प्रासाद में बताया गया है। अनावृत यक्ष का वर्ण जलद के समान कृष्ण है। उसका वाहन पक्षीन्द्र गरुड है। अनावृत अपने चार हाथों में शंख, चक्र, कमण्डलु और अक्षमाला धारण करता है।^१

सर्वाल्लि यक्ष

इस यक्ष की चर्चा पूर्व में की जा चुकी है। अम्बिका से सम्बद्ध होने के कारण इसे गोमेघ यक्ष का आद्य रूप कहा जा सकता है किन्तु इसका वाहन दिव्य श्वेत गज बताया गया है। सर्वाल्लि यक्ष का वर्ण इयाम है। इसके मस्तक पर धर्मचक्र स्थित होता है जिसे वह अपने दो हाथों से पकड़े रहता है; अन्य दो हाथ बद्धांजलिमुद्रा में हुआ करते हैं।

ब्रह्मशान्ति यक्ष

इस यक्ष का रूप तो विकराल है पर स्वभाव और कार्य अत्यन्त सौम्य। श्वेताम्बर परम्परा के ग्रन्थों में इसके स्वरूप का वर्णन मिलता है। तदनुसार इसका वर्ण पिंग है। भद्रासन पर स्थिति और पादुकारूढ़ होना ब्रह्मशान्ति यक्ष की विशेषता है। इसके मस्तक पर जटामुकुट, विकराल दाढ़ें और कन्धे पर उपवीत होता है। यक्षके दायें हाथों में अक्षसूत्र और दण्डक तथा बायें हाथों में कमण्डलु और छत्र होते हैं।^१

तुम्बरु यक्ष

अहंन्तदेव का प्रतीहार। जटामुकुटधारी, नरगुण्डमालाभूषित शिर, हाथ में खटवांग।^२ इस यक्ष का नाम शासन यक्षों की सूची में भी मिलता है।

शान्ति देवी

यह देवी धवल वर्ण की है। निर्वाणकलिका में एक स्थल पर^३ इसके अनेक हाथ बताये गये हैं जिनमें वह वरदमुद्रा, कमल, पुस्तक, कमण्डलु आदि धारण करती है किन्तु उसी ग्रन्थ में अन्य स्थल पर^४ शान्ति देवता को कमलासना और चतुर्भुजा कहा गया है और उसके दायें हाथों के आयुध, वरद एवं अक्षसूत्र तथा बायें हाथों के आयुध कुण्डिका और कमण्डलु कहे गये हैं।

१. निर्वाणकलिका, पन्ना ३८
२. निर्वाणकलिका, बिम्बप्रतिष्ठाविधि, पन्ना २०
३. बिम्बप्रतिष्ठाविधि, पन्ना १८
४. पन्ना ३७

कुबेरा यक्षी

सकलचन्द्रगणी के प्रतिष्ठाकल्प (पृष्ठ २०) में इस यक्षी को नरवाहना और श्रुतांका बताया गया है। यह मथुरा पुरी के मुपाश्वस्तूप की रक्षिका यक्षी के रूप में प्रसिद्ध है।

षष्ठी

आचारदिनकर में षष्ठी देवी का वर्ण व्याम और वाहन नर बताया है। षष्ठी का निवास ग्राम्भवन में होता है। वह कदम्बवनों में विहार करती है। उसके दो पुत्र उसके साथ रहते हैं।

कामचाण्डाली

मल्लिपेण ने कामचाण्डालीकल्प में इस तांत्रिक देवी के रूप का विचार किया है। वह कृष्णवर्णा, निर्वस्त्रा, मुक्तकेशा, सर्वाभरणभूषिता और चतुर्भुजा है। उसके आयुध फलक, कलश, शाल्मलिदण्ड और सप हैं।

सर्व एव हि जैनानां प्रमाणं लौकिको विधिः ।

यत्र सम्यक्त्वहानिर्न यत्र न व्रतदूषणम् ॥

अष्टम अध्याय

क्षेत्रपाल

जैन मन्दिरों में क्षेत्रपाल की प्रतिमाएं स्थापित रहती हैं। उन्हें जिन-मन्दिर का रक्षक माना जाता है। भट्ट अकलंक के प्रतिष्ठाकल्प में क्षेत्रपाल को जिनेश्वर और जैन मुनियों का भक्त एवं धर्मवत्सल कहा गया है। उन के जटामुकुट में जिनपूजा का चिह्न होना बताया गया है।^१

नेमिचन्द्र ने क्षेत्रपाल को तैल में अभिषिक्त कर सिद्धर से धूसरित किये जाने का विधान किया है।^२ आचारदिनकर ने कुंकुम, तैल, सिद्धर एवं लाल रंग के पुष्पों से क्षेत्रपाल की पूजा का विधान है। भट्ट अकलंक के प्रतिष्ठाकल्प में वर्णन है कि तैललिप्त विग्रह और सिद्धराकिन मील के कारण क्षेत्रपाल अंजनाद्रि के समान दिखायी पड़ते हैं।

क्षेत्रपाल की प्रतिमाएं कार्यरूप भी होती हैं और लिंगरूप भी।^३ खजुराहो के शान्तिनाथ मंदिर में क्षेत्रपाल की चन्देलकालीन कार्यारूप प्रतिमा है जिस पर उनका नाम भी उत्कीर्ण है। अनेक जैन मंदिरों में लिंगरूप क्षेत्रपाल प्रतिष्ठित हैं।

आशाधर के अनुसार क्षेत्रपाल का अलंकरण नाग, और वाहन श्वान है। भट्ट अकलंक ने क्षेत्रपाल के नग्न, साग्मेयममारूढ, नागविभूषण, त्रिलोचन रूप का वर्णन किया है। आशाधर के अनुसार, क्षेत्रपाल के उपरले दो हाथों में तलवार और ढाल, नीचे के दाये हाथ में काला कुन्ता और नीचे के ही बायें

१. हिन्दुओं में क्षेत्रपाल को शिव का रूप माना गया है। रूपमण्डन (५/७४-७५) के अनुसार क्षेत्रपाल नग्न एवं घण्टाभूषित होते हैं। उनकी जटाएं मर्प और मुण्डमाला में ग्रथित होती हैं। उनका यज्ञोपवीत भी मुण्डग्रथित होता है। उनके दायें हाथों के आयुध कर्तिका और डमरू तथा बायें हाथों के आयुध शूल और कपाल बताये गये हैं।

२. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ११५-१६

३. आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना २१०

हाथ में गदा रहती है ।^१ नेमिचन्द्र ने भी उपरले हाथों में तलवार और ढाल तथा निचले हाथों में काला कुत्ता और गदा, इन्हीं आयुधों का होना बताया है ।^२ भट्ट अकलंक के प्रतिष्ठाकल्प में स्वर्णपात्र, गदा, डमरू और धेनुका ये चार आयुध कहे गये हैं । उनमें स्वर्णपात्र की कल्पना बिलकुल नवीन प्रतीत होती है और वह आशाधर एवं नेमिचन्द्र द्वारा दिये गये विवरणों से भिन्न है ।

आचारदिनकर में क्षेत्रपाल के रूप का वर्णन बिस्तार से किया गया है । वह वर्णन प्रायः बंसा ही है जो हिन्दू परम्परा के शिल्प ग्रन्थों में मिलता है । आचारदिनकर के अनुसार, क्षेत्रपाल की बीस भुजाएं हैं । वे कृष्ण, गौर, काश्चन, धूसर और कपिल वर्ण के हैं । क्षेत्रपाल के अनेक नाम हैं जिनमें से एक प्रेतनाथ भी है । बर्बर केश, जटाजूट, वासुकि का जिनयज्ञोपवीत, तक्षक की मेखला, शेष (नाग) का हार, नाना-आयुध, सिंह चर्म का आवरण, प्रेत का आसन, कुक्कुरवाहन, त्रिलोचन, आनन्दभैरव आदि अष्ट भैरवों से युक्त तथा चौंसठ जोगिनियों के बीच स्थिति, यह क्षेत्रपाल का रूप है जो आचारदिनकर में वर्णित है ।^३

निर्वाणकलिका में कहा है कि क्षत्र के अनुसार क्षेत्रपाल के भिन्न-भिन्न नाम हुआ करते हैं । उसी ग्रन्थ के अनुसार, क्षेत्रपाल श्यामवर्ण, बर्बर केश, आवृत्तपिगनयन, विकृतदंष्ट्रा, पादुकारूढ़ और नग्न होते हैं । उनके दायें हाथों में मुद्गर, पाश और डमरू तथा बायें हाथों में श्वान, अंकुश और गेडिका, ये आयुध होते हैं ।^४ निर्वाणकलिका में क्षेत्रपाल का स्थान जिनेन्द्र भगवान् के दक्षिण पार्श्व में ईशान की ओर दक्षिणदिशामुख बताया गया है । अमृतरत्नसूरि ने माणिभद्र प्रारती में माणिभद्र क्षेत्रपाल के छह हाथ और उन हाथों के आयुध ढक्का, शूल, दाम, पाश, अंकुश और खड्ग कहे हैं ।

गणपति

गणपति या गणेश ने हिन्दुओं में ही नहीं, अपितु बौद्धों और जैनों में भी प्रतिष्ठा प्राप्त की है । प्रारंभ में जैनों ने उन्हें गणधर के रूप में मान्यता दी थी । आचारदिनकर (पन्ना २१०) में विद्यागणेश को द्विभुज, चतुर्भुज, षड्भुज, नवभुज, अष्टादशभुज और यहां तक कि १०८ भुजा युक्त भी कहा है ।

१. प्रतिष्ठासरोद्धार, ६/५५
२. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ११५-१६
३. उदय ३३, पन्ना १८१
४. निर्वाणकलिका, पन्ना ३८-३९

नवम अध्याय

अष्ट मातृकाएं

इन्द्राणी, वैष्णवी, कौमारी, वाराही, ब्रह्माणी, महालक्ष्मी, चामुण्डी और भवानी इन आठ देवियों की ख्याति मातृका नाम से है। इनमें से प्रथम चार की स्थापना दिशाओं में और अन्य चार की स्थापना विदिशाओं में की जाती है। जैन ग्रंथों में मातृकाओं के रूप का लगभग वैसे ही वर्णन प्राप्त होता है जैसा कि हिन्दू शिल्प ग्रंथों में है। कहीं कहीं चामुण्डी और महालक्ष्मी को छोड़कर छह मातृकाएं भी बतायी गयी हैं। शिल्प शास्त्रों में मातृकाओं की सामान्य संख्या सात ही है पर कभी कभी वह संख्या सोलह तक बता दी जाती है।

इन्द्राणी

इन्द्राणी की स्थापना पूर्व दिशा में की जाती है। उसका वर्ण सोने के समान है। वह ऐरावत गज पर आसीन रहती है। इन्द्राणी का प्रमुख आयुध वज्र है।^१

वैष्णवी

वैष्णवी की स्थापना वेदी की दक्षिण दिशा में की जाती है। वह देवी गरुडवाहना एवं नील वर्ण की मानी गयी है। वैष्णवी का मुख्य आयुध चक्र है।^२ आचारदिनकर में उसे श्याम वर्ण की तथा शंख, चक्र, गदा और शार्ङ्ग (खड्ग) धारिणी कहा है।^३

कौमारी

वेदी की प्रतीची दिशा में स्थित कौमारी प्रचण्डमूर्ति, विद्रुम वर्ण, मयूरवाहना और खड्गधारिणी है।^४ आचारदिनकर में उसे गौरवर्ण और षण्मुखा बताते हुए उसके आयुध शूल, शक्ति, बरद और अभय, ये चार कहे गये हैं।^५

१. प्रतिष्ठातिलक, पृष्ठ ३६५। आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

२. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६५

३. उदय ६, पन्ना १३

४. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६५

५. उदय ६, पन्ना १३

वाराही

उत्तर दिशा में स्थापित की जाने वाली वाराही का वर्ण श्याम है। वह वन्य वाराह पर सवारी करती है। उसके आयुध अभय और सीर (हल) हैं।^१ आचारदिनकर में वाराही का वाहन शेष (नाग), मुख वराह का तथा आयुध चक्र और खड्ग बताए गये हैं।^२

ब्रह्माणी

ब्रह्माणी की स्थापना आग्नेय दिशा में की जाती है। उसका वर्ण पद्म जैसा लाल और यान भी पद्म ही है। ब्रह्माणी के हाथ में मुद्गर होता है।^३ आचारदिनकर के अनुसार ब्रह्माणी का वर्ण श्वेत, वाहन हंस एवं आयुध वीणा, पुस्तक, पद्म और अक्षसूत्र हैं।^४

महालक्ष्मी / त्रिपुरा

भट्ट अकलंक के प्रतिष्ठाकल्प में महालक्ष्मी, नेमिचन्द्र के प्रतिष्ठातिलक में लक्ष्मी और आचारदिनकर में त्रिपुरा के नाम से इस मातृका का वर्णन है। नेमिचन्द्र के अनुसार लक्ष्मी दक्षिण-पश्चिम कोण में स्थित होती है। उसका वर्ण श्वेत, वाहन उलूक और मुख्य आयुध गदा है।^५ आचारदिनकर में त्रिपुरा का वर्ण श्वेत, वाहन सिंह तथा आयुध, पद्म, पुस्तक, वरद और अभय बताये गये हैं।^६

चामुण्डा

चामुण्डा या चामुण्डिका को वेदी के उत्तर-पश्चिम कोण में स्थापित किया जाता है। मध्याह्न के सूर्य के समान दीप्त चामुण्डा प्रेतवाहना है। उसके आयुध दण्ड एवं शक्ति बताये गए हैं।^७ आचारदिनकर के अनुसार चामुण्डा का वर्ण धूसर और वाहन प्रेत है। उसका सम्पूर्ण शरीर शिराजाल से

१. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६६
२. उदय ६, पन्ना १३
३. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६६
४. उदय ६, पन्ना १२
५. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६६
६. उदय ६, पन्ना १३
७. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६६

कराल दिखायी पड़ता है; केशों से ज्वालाएं निकलती हैं। चामुण्डा त्रिनयना है। शूल, कपाल, खड्ग और प्रेतकेश (मुण्ड) इन्हें वह अपने हाथों में धारण करती है।^१

भवानी / माहेश्वरी

वेदी के पूर्वोत्तर कोण में माहेश्वरी का स्थान होता है जिसे भवानी और रुद्राणी भी कहा जाता है। भवानी का वर्ण श्वेत, वाहन शत्रुकर और आयुध भिण्डिमाल है।^२ आचारदिनकर के अनुसार माहेश्वरी के आयुध, शूल, पिनाक, कपाल और खट्वांग हैं। माहेश्वरी का वर्ण श्वेत, वाहन वृषभ और नेत्र तीन हैं। उसके ललाट पर अर्धचन्द्र बताया गया है। गजचर्म में आवृत माहेश्वरी शेषनाग की मेखला धारण करती है।^३

१. उदय ६, पन्ना १३

२. प्रतिष्ठातिलक, पन्ना ३६६

३. देवीमाहात्म्य आदि जैनेतर कृतियों में नारमिही को भी मातृकाओं की सूची में सम्मिलित किया गया है किन्तु वह रूपमण्डन की सूची में नहीं है।

दशम अध्याय

दस दिक्पाल

जैन परम्परा में दिक्पालों की संख्या दस बतायी गयी है। ऊर्ध्व और अधो दिशाओं के दिक्पालों की कल्पना जैनों की अपनी विशेषता है।

कुछ विद्वान् दिक्पालों की कल्पना का आधार वैदिक संहिता को मानते हैं।^१ वैदिक देववाद में इन्द्र, अग्नि, वरुण, पवन, नैऋत्य आदि को महत्त्व का स्थान प्राप्त था पर जब पौराणिक देववाद को प्रधानता मिली तो वैदिक देवों का स्थान गौण हो गया और अन्ततोगत्वा वे दिक्पालों की श्रेणी में आ गये।

बताया जाता है कि प्रारंभ में चार ही दिक्पालों की गणना की जाती थी। पश्चात्काल में उनकी संख्या आठ हो गई। ऐसा भी मत है कि अष्ट दिक्पालों की पूर्ण सूची में कुबेर और ईशान नहीं थे। उनके स्थान पर सूर्य और चन्द्र की गणना की जाती थी।

जैनों की प्रारंभिक सूची में भी चार लोकपालों या दिक्पालों का नाम मिलता है। तिलोयषण्णत्ती (तृतीय महाधिकार) में उल्लेख है कि भवनवासी देवों के इन्द्रों के सोम, यम, वरुण और घनद (कुबेर) नाम के चार लोकपाल होते हैं। जंबूदीपपण्णत्तिसंगहो^२ में सौधर्मकल्प के नगरों की चारों दिशाओं में यम, वरुण, सोम और कुबेर इन चार लोकपालों के निवास का उल्लेख है। वे इन्द्र के प्रतीन्द्र हुमा करते हैं। इस प्रकार सोम या चन्द्र को लोकपाल मानने की जैन मान्यता अधिक प्राचीन जान पड़ती है।

विष्णुधर्मोत्तर^३ ने चतुर्भुज लोकपालों की कल्पना की थी। अपराजित-पूच्छा और रूपमण्डन जैसे ग्रन्थों में चतुर्भुज लोकपालों की परम्परा का निर्बहान किया गया किन्तु अग्निपुराण^४, मानसोल्लास^५ और बृहत्संहिता^६ आदि से ज्ञात होता है कि लोकपालों के द्विभुज होने की मान्यता अधिक प्राचीन है। जैन परम्परा में भी दिक्पालों को द्विभुज माना गया है।

१. बनर्जी: डेवलपमेण्ट आफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, पृष्ठ ५२१
२. उद्देश्य ११, २१६-२१७।
३. ३/५०-५३
४. ५१/५६
५. १/३/७७२-७९८
६. ५७/४२/५७

जैनों ने अग्नि को रक्तवर्ण, यम, नैऋत्य और पवन को स्यामवर्ण, वरुण, ईशान, चन्द्र और धरणेन्द्र को श्वेत वर्ण तथा इन्द्र और कुबेर को स्वर्ण के समान पीत वर्ण माना है। श्वेताम्बर परम्परा में चन्द्र के स्थान पर ब्रह्मा को ऊर्ध्व दिशा का अधीश्वर कहा गया है जिसका वर्ण सुवर्ण के समान है।

वाहन

दिक्पालों के वाहनों के संबंध में जैनों की मान्यता प्रायः अग्निपुराण के^१ विधान से मिलती-जुलती है। केवल कुबेर के वाहन के संबंध में भिन्नता है। अग्नि पुराण में कुबेर को मेषस्थ बताया गया है^२ पर दिग्म्बर जैन परम्परा के ग्रन्थों में उसे पुष्पक विमान में आसीन और श्वेताम्बर परम्परा के आचार-दिनकर में नरवाहन कहा गया है।^३ वसुनन्द, आशाधर और नेमिचन्द्र ने वरुण का वाहन करिमकर कहा है जबकि अग्निपुराणमें वह मकर बताया गया है। अधिकतर प्रतिमात्रों में वरुण का वाहन करिमकर रूप में मिलता है।

दिग्म्बर जैन परम्परा के अनुसार ऊर्ध्व दिशा का लोकपाल सोम या चन्द्र सिंहासनारूढ़ होता है। श्वेताम्बर जैन परम्परा का ब्रह्मा हंसारूढ़ बताया गया है। अधोदिशा के लोकपाल नागेन्द्र धरण की सवारी आशाधर और नेमिचन्द्र ने कच्छप बताया है पर आचारदिनकर के अनुसार धरणेन्द्र पद्म पर आसीन है और कृष्ण वर्ण का है।

आयुध

दिग्म्बर ग्रन्थों में इन्द्र को वज्री एवं अग्नि को अक्षसूत्र और कमण्डलु युक्त माना गया है। आचारदिनकर के अनुसार अग्नि के हाथों में धनुष और बाण होते हैं। निर्वाणकलिका ने धनुष के स्थान पर शक्ति बताया है। मत्स्य-पुराण में अग्नि के आयुध अक्षसूत्र और कमण्डलु बताये गये हैं पर अग्निपुराणमें अग्नि को शक्तिमान् ही कहा है।

यम दण्डी हैं पर उनके द्वितीय आयुध के संबंध में मतवैषम्य है। आशाधर ने वह आयुध धनुष कहा है पर नेमिचन्द्र ने नाग। मत्स्यपुराण में यमके आयुध दण्ड और पाश बताये गये हैं।

१. अग्निपुराण, ५१/१४-१५

२. वही, ५१/१५

३. नरवाहन कुबेर की परम्परा मत्स्यपुराण और विष्णुधर्मोत्तर की है। मत्स्यपुराणमें अग्निका वाहन अधंचन्द्र है।

नैर्ऋत्य को जैन परम्परा में मुद्गरधारी बताया गया है। मत्स्यपुराण आदि में वे खड्गधारी हैं। निर्वाणकलिकाकार ने नैर्ऋत्य को खड्गधारी कहा है।

वरुण के हाथ में नागपाश या पाश होता है। वसुनन्दि आदि ने पवन का आयुध महावृक्ष बताया है पर आचारदिनकरकार ने पवन को ध्वजधारी कहा है जैसा कि अग्नि पुराण और मत्स्यपुराण में है।

अग्निपुगण में कुबेर का आयुध गदा बताया गया है। जैन लोग भी वैसा ही मानते हैं। आशाधर ने गदा और वसुनन्दि ने शक्ति आयुध का उल्लेख किया है। आचारदिनकरकार धनद को रत्नहस्त पर निर्वाणकलिकाकार कुबेर को गदापाणि कहते हैं।

ईशान जूल या त्रिशूल धारी है। आशाधर के अनुसार उनके द्वितीय हस्त में कपाल किन्तु आचारदिनकरकार के अनुसार पिनाक होता है।

चन्द्र के आयुध भाला और धनुष है। ब्रह्मा के हाथों में पुस्तक और कमल होने हैं।

धरणेन्द्र अंकुश और पाश धारण करते हैं। आचार दिनकर और निर्वाणकलिका के अनुसार उनके हाथमें सर्प होता है।

दिवपालों की पत्नियां

शची, स्वाहा, छाया, निर्ऋति, वरुणानी, वायुवेगी, धनदेवी, पार्वती, रोहिणी और पद्मावती, ये क्रमशः इन्द्र, अग्नि, छाया, नैर्ऋत्य, वरुण, वायु कुबेर ईशान, सोम और धरणेन्द्र की पत्नियां कही गयी हैं। ब्रह्मा की पत्नी का उल्लेख नहीं है। विष्णुधर्मात्तर में यम की पत्नी धूमोर्णा और कुबेर की पत्नी ऋद्धि कही गयी है।

दिवकुमारिकाएं

हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुवमी और शिखरी, इन छह कुलाचलो पर स्थित पद्म, महापद्म, निर्गिच्छ, केसरी, पुण्डरीक और महापुण्डरीक हृदों के^१ मध्य में स्थित अति विस्तीर्ण कमलो पर क्रमशः श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी, ये देवकन्याएं अपने सामानिक और पारिषत्कों के साथ निवास करती हैं।^२ ये तीर्थकरों के गर्भ में आने पर जननी की सेवा किया करती हैं। यथा श्री चामर ढलाती है, ह्री छत्र तानती है आदि आदि।

१. जंबूद्वीपपण्णात्तसंगहो, ३/६६

२. वही, ३/७८

उपर्युक्त देवियों में से ह्री का वर्ण लाल बताया गया है। अन्य देव कन्याएं सुवर्ण के समान पीतवर्ण की है। नेमिचन्द्र ने इन देवियों को पुष्पमुखकलशकमलहस्ता लिखा है पर वसुनन्दि ने उन्हें पुष्पमुखकमलहस्ता और चतुर्भुजा बताया है। आशाधर ने भी उमी प्रकार का वर्णन किया है।

तीर्थकर जननी की सेवा करने वाली छप्पन दिवकुमारियो का भी उल्लेख जैन ग्रन्थों में मिलता है। त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र में उनकी सूची निम्न प्रकार दी गयी है।

आठ अधोलोकवासिनी : भोगकरा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, तोयधारा (सुव्रता), विचित्रा (वत्समित्रा), पुष्पमाला और अभिदिता (नंदिता)

आठ ऊर्ध्वलोकवासिनी : मधकरा, मेघवती, मृमेघा, मेघमालिनी, तोयधारा, विचित्रा, वारिपेणा और बलाहिका

आठ पूर्व रुचकाद्रि स्थित : नंदा, उत्तरानंदा, आनंदा, आनंदवर्धना, विजया, वैजयन्ती, जयन्ती और अपराजिता

आठ दक्षिण रुचकाद्रि स्थित : नमाहागा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता और वसुधरा

आठ पश्चिम रुचकाद्रि स्थित : दलादेवी, मुरादेवी, पृथिवी, पद्मवती, एकनासा, अनर्वामिका, भद्रा और अशोका

आठ उत्तर रुचकाद्रि स्थित : अलंबुशा, मिश्रकेशी, पुण्डरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री, ह्री

चार विदिक् रुचक गोल से : चित्रा, चित्रकनका, सतेरा और मौत्रामणी

चार रुचक द्वीप से : रूपा, रूपांशिका, सुरूपा और रूपकावती।

१. वसुनन्दि/६

२. पर्व १, सर्ग १

एकादश अध्याय

नव ग्रह

सकलचन्द्र गणी के प्रतिष्ठाकल्प में श्रादित्य, चन्द्र, भीम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु क्रमशः छठे तीर्थकर पद्मप्रभ, अष्टम तीर्थकर चन्द्रप्रभ, द्वादश तीर्थकर वासुपूज्य, पौडश तीर्थकर शान्तिनाथ, प्रथम तीर्थकर ऋषभनाथ, नवम तीर्थकर सुविधिनाथ, बीमवे तीर्थकर मुनिमुव्रतनाथ, बाईसव तीर्थकर नेमिनाथ और तेईमवें तीर्थकर पार्श्वनाथ के शासनवामी कहे गये हैं। आचारदिनकर^१ के अनुसार मार्तण्ड (सूर्य) की शान्ति के लिये पद्मप्रभ की, चन्द्र की शान्ति के लिये चन्द्रप्रभ की, भूमिपुत्र, (मंगल) की शान्ति के लिये वासुपूज्य की, बुध की शान्ति के लिये अष्ट जिनेन्द्र — विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, नमिनाथ और वर्धमान—की, बृहस्पति की शान्ति के लिये ऋषभनाथ, अजितनाथ, मंभवनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ, सुपार्श्वनाथ, शीतलनाथ और श्रंयांसनाथ की, शुक्र की शान्ति के लिये सुविधिनाथ की, शनि की शान्ति के लिये मुनिसुव्रतनाथ की, राहु की शान्ति के लिये नेमिनाथ की और केतु की शान्ति के लिये मल्लिनाथ और पार्श्वनाथ की पूजा करनी चाहिये।

ग्रहों को सभी भारतीय धर्मों ने किमी न किमी रूप में मान्यता दी है।^२ जैन परम्परा में पूर्व में आठ ग्रहों की गणना की जाती थी। पश्चात्काल में उनकी संख्या नव हुई। जे० एन० बनर्जी का मत है कि भारतीय मूर्ति विधान में अन्तिम ग्रह केतु वाद में जोड़ा गया था।^३

आचारदिनकर ने सूर्य को पूर्व दिशा का अधीश, चन्द्र को वायव्य दिशा का, मंगल को दक्षिण दिशा का, बुध को उत्तर का, गुरु को ईशान का, शुक्र को आग्नेय का, शनि को पश्चिम का और राहु को नैऋत्य दिशा का अधीश बताया है जबकि उक्त ग्रन्थ के अनुसार केतु राहु का प्रतिच्छन्द है। सकलचन्द्र गणी के प्रतिष्ठाकल्प में चन्द्र को प्रतीची और मंगल को वारुण दिशा से सम्बद्ध किया गया है।

१. उदय ३८, शान्त्यधिकार।

२. बौद्धों ने भी नवग्रहों को स्वीकार किया है।

३. डेवलपमेण्ट आफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, पृष्ठ ४४४।

निर्वाणकलिका के अनुसार^१ सूर्य द्विगुलवर्ण, सोम और शुक्र श्वेतवर्ण, मंगल रक्तवर्ण, बुध और गुरु पीतवर्ण, शनि ईषत्कृष्ण, राहु अति कृष्ण और केतु धूमवर्ण है। आचारदिनकर में सूर्य^२ को स्फटिक के समान उज्ज्वल बताया गया है। सूर्य के वस्त्रों का रंग लाल, चन्द्र के श्वेत, मंगल के लाल, बुध के हरित, बृहस्पति के पीत, शुक्र के श्वेत, शनि के नील तथा राहु और केतु के वस्त्रों का रंग श्याम कहा गया है।

वाहन

आचारदिनकर में ग्रहों के वाहन इस प्रकार बताये गये हैं—

सूर्य	सप्ताश्व रथ
चन्द्र	अश्व
मंगल	भूमि
बुध	कलहंस
बृहस्पति	हम
शुक्र	अश्व
शनि	कमठ
राहु	गिरु
केतु	पद्मग

सकलचन्द्र गणी ने सूर्य को गज वृषभसिंहनुरग वाहन, सोम को मृगवाहन, भीम को गजवाहन, बुध को केमरीवाहन, बृहस्पति को हंसगण्ड-वाहन, शुक्र को शूकरवाहन और शनि को मेषवाहन कहा है। पंडित परमानंद की सिंहासनप्रतिष्ठा में ग्रहों के वाहन भिन्न प्रकार से बताये गये हैं।

भुजाएं

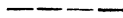
सभी ग्रह द्विभुज निरूपित किए गए हैं। निर्वाणकलिका के अनुसार सूर्य के दोनों हाथों में कमल हैं। अर्धकायररहित राहु के दोनों हाथ अर्धमुद्रा में होते हैं। अन्य सभी ग्रह अर्धमूर्ख एवं कुण्डिका धारी हैं। सिंहासनप्रतिष्ठा में ग्रहों के आयुध भिन्न बताये गये हैं, यथा सोम कुन्तधारी, मंगल त्रिशूलधारी, बृहस्पति पुस्तकधारी, शुक्र अहिधारी आदि आदि। आचारदिनकर ने सूर्य को कमलहस्त, चन्द्र को सुधाकुम्भहस्त, मंगल को कुदालहस्त, बुध को पुस्तकहस्त, शुक्र को कुम्भहस्त, शनि को परशुहस्त, राहु को भी परशुहस्त और केतु को

१. पन्ना ३८

२. उदय ३३, पन्ना १८१।

पन्नगहस्त बताया है ।^१

मूल जैन परम्परा में सूर्य चन्द्र आदि को ज्योतिष्क देवों के समूह में सम्मिलित किया गया है । ज्योतिष्क देवों के पांच समूह हैं, चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारा ।^२ चन्द्र ज्योतिष्क देवों का इन्द्र है और सूर्य प्रतीन्द्र है । प्रत्येक चन्द्र के अठासी ग्रह बताये गए हैं जिनमें से बुध, शुक्र, बृहस्पति, मंगल और शनि ये प्रथम पांच हैं ।^३ प्रत्येक चन्द्र के २८ नक्षत्र होते हैं ।^४ नक्षत्रों के आकार का वर्णन तिलोयपण्णत्ती में है ।^५ नेमिचन्द्र के अनुसार चन्द्र मिहाधिरूढ़ और कुन्त (भाला) धारी है । सूर्य अश्वारूढ़ है ।^६



१. उदय ३३, पन्ना १८१ ।

२. तिलोयपण्णत्ती, ७।७

३. वही, ७।१४-२२

४. वही, ७।२५-२८

५. वही, ७।४६५-४६७

६. नेमिचन्द्र ने (प्रतिष्ठातिलक, गृष्ठ ३१६-३२२) यक्ष, वैश्वानर, राक्षस, नघृत, पन्नग, असुर, सुकुमार, पितृ, विश्वमालिनि, चमर, वैरोचन, महाविद्याभार, विश्वेश्वर, पिडाशी, ये पंद्रह तिथिदेव बताये हैं ।

परिशिष्ट एक
तालिका १
षोडश विद्यादेवियां

क्र०	नाम	परम्परा	शरीर का वर्ण	वाहन	भुजाओं की संख्या	आयुष
१.	रोहिणी	दिग०	सुवर्ण	कमलामना	चार	कलश, शंख, कमल, बीजपूर
		श्वे०	धवल	गंगामिनी	चार	धनुष, वाण, शंख, अक्षमूत्र
२.	प्रज्ञप्ति	दिग०	नील	अश्व	चार	चक्र, खड्ग, कमल, फल
		श्वे०	श्वेत	मयूर	चार	वरद, शक्ति, मातुलिग, गन्धि,
		श्वे०	श्वेत	मयूर	दो	शक्ति और कमल
३.	वज्रशृंखला	दिग०	सुवर्ण	गज	दो	वज्र, शृंखला
		दिग०	सुवर्ण	गज	चार	वज्रशृंखला, शंख, कमल, बीजपूर
		श्वे०	सुवर्ण	पद्म	दो	शृंखला और गदा
		श्वे०	श्वेत	पद्म	चार	वरद, शृंखला पद्म, शृंखला
४.	वज्राकुशा	दिग०	सुवर्ण	पुष्प	चार	अक्रुग, कमल, बीजपूर, वीणा
		श्वे०	सुवर्ण	गज	चार	नलवार, वज्र, डाल, भाजा
		श्वे०	सुवर्ण	गज	चार	वरद, वज्र, मातुलिग, अक्रुग

५.	जांबूनदा	दिग०	सुवर्ण	केकि	चार	खड्ग, भाला, कमल, बीजपूर
	अप्रतिचक्रा (चक्रेश्वरी)	श्वे०	सुवर्ण	गरुड	चार	चारों भुजाओंमें चक्र
६.	पुरुषदत्ता	दिग०	श्वेत	कांक	चार	वज्र, कमल, शंख, फल
		श्वे०	सुवर्ण	महिषी	दो	खड्ग और ढाल
		श्वे०	सुवर्ण	महिषी	चार	वरद, असि, मातुलिग, खेटक
७.	काली	दिग०	सुवर्ण	मृग	चार	मूसल, असि, पद्म, फल
		श्वे.	कृष्ण	पद्म	दो	गदा और वज्र
		श्वे०	कृष्ण	पद्म	चार	अससूत्र, गदा, वज्र, अभय
८.	महाकाली	दिग०	श्याम	शरम	चार	धनुष, बाण, खड्ग, फल
		श्वे०	तमाल	नर	चार	अक्षसूत्र, वज्र, अभय, घण्टा
		श्वे०	श्वेत	नर	चार	अक्षसूत्र, वज्र, फल, घण्टा
९.	गौरी	दिग०	सुवर्ण	गोधा	चार	कमल आदि चार
		श्वे०	गौर	गोधा	चार	वरद, मूसल, अक्षमाला, कुवलय
१०.	गांधारी	दिग०	श्याम	कच्छप	दो	चक्र और खड्ग
		श्वे०	श्याम	कमल	दो	मूसल और वज्र
		श्वे०	श्याम	कमल	चार	वरद, मूसल, अभय, वज्र
११.	ज्वालामालिनी ज्वाला	दिग०	श्वेत	महिष	आठ	धनुष, बाण, खड्ग, खेटक, चक्र आदि
		श्वे०	श्वेत	वराह	अनेक	विभिन्न आयुध

	ज्वाला	श्वे०	श्वेत	मार्जार	दो	दोनों भुजाओं में ज्वाला
१२.	मानवी	दिग०	नील	शूकर	चार	मत्स्य, खड्ग, त्रिवूल, X
		श्वे०	नील	सरोज	चार	वरद, पाश, अक्षसूत्र, वृक्ष
१३.	बैरोटी	दिग०	नील	सिंह	चार	दो सर्प, दो हाथ प्रणाममुद्रामें
	बैरोट्या	श्वे०	श्याम	अजगर	चार	खड्ग, सर्प, ढाल, सर्प
		श्वे०	गौर	मिह	चार	खड्ग, ऊर्ध्वहस्त, सर्प ? वरद
१४.	अच्युता	दिग०	सुवर्ण	अश्व	चार	खड्ग, वज्र, दो हाथ प्रणाममुद्रामें
	अच्छुप्ता	श्वे०	विद्युत्कर्ण	अश्व	चार	बाण, खड्ग, धनुष, ढाल
		श्वे०	विद्युत्कर्ण	अश्व	चार	बाण, खड्ग, ढाल, सर्प
१५.	मानसी	दिग०	रक्त	सर्प	चार	दो हाथ प्रणाममुद्रामें
		श्वे०	सुवर्ण	हंस	दो	वरद, वज्र
		श्वे०	धवल	हंस	चार	वरद, वज्र, अक्षसूत्र, अगति
१६.	महामानसी	दिग०	विद्रुम	हंस	चार	अक्षमाला, माला, वरद, अंकुश
		दिग०	विद्रुम	हंस	चार	दो हाथ प्रणाममुद्रामें
		श्वे०	धवल	सिंह	चार	वरद, ग्रामि, कुण्डिका, ढाल

चतुर्विंशति शासन यक्ष

क्र०	नाम	परम्परा	शरीर का वर्ण	वाहन	भुजाओं की संख्या	आयुत्र	विशेष
१.	गोमुख	दिग०	सुवर्ण	वृषभ	चार	परशु, बीजपूर, प्रक्षसूत्र, वरद	गोवक्त्र और मस्तक पर घर्मचक्र
२.	महायक्ष	श्वे० दिग०	सुवर्ण सुवर्ण	गज गज	चार आठ	वरद, अक्षसूत्र, पाश, बीजपूर खड्ग, दण्ड, परशु, वरद, चक्र, त्रिशूल, कमल, अंकुश	चतुर्मुख
३.	त्रिमुख	श्वे० दिग०	श्याम श्याम	गज मयूर	आठ छह	वरद, मुद्गर, पाश, अक्षसूत्र, अभय, बीजपूर, अंकुश, शक्ति दण्ड, त्रिशूल, कर्तिका, चक्र, असि, मृण	त्रिमुख, त्रिलोचन
४.	यक्षेश्वर ईश्वर	श्वे० दिग० श्वे०	श्याम श्याम श्याम	गज गज	चार चार	नकुल, गदा, अभय, बीजपूर, अक्षसूत्र, नाग बाण, खड्ग, धनुष, ढाल अक्षसूत्र, बीजपूर, नकुल, अंकुश	

५.	तुम्बरु	दिग० श्वे०	श्याम श्वेत	गरुड गरुड	चार चार	दी हाथों में सर्प, वरद, फल वरद, शक्ति, गदा, नागपाश	सर्पयज्ञोपवीत
६.	पुष्प कुसुम	दिग० श्वे०	श्याम नील	मृग मृग	चार चार	सेट, अभय, कुन्, वरद फल, अभय, नकुल, अक्षसूत्र	
७.	मातंग	दिग० श्वे०	श्याम नील	मिह गज	दो चार	सूल, दण्ड विल्क, पाश, नकुल, अंकुश	वक्रतुण्ड
८.	श्याम विजय	दिग० श्वे०	श्याम नील	कर्पोन तंस	चार दो	अक्षसूत्र, वरद, परशु, फल चक्र और मुद्गर	
९.	अजित	दिग० श्वे०	श्वेत श्वेत	कर्म कर्म	चार चार	अक्षसूत्र, वरद, शक्ति, फल बीजपूर, अक्षसूत्र, नकुल, कुन्त	
१०.	ब्रह्म	दिग०	श्वेत	पद्म	आठ	वाण, धनुष, परशु, दण्ड, तलवार, ढाल, वरद, वज्र	चतुर्भुज
११.	ईश्वर	श्वे०	श्वेत	पद्म	आठ	बीजपूर, मुद्गर, पादा, अभय, नकुल, गदा, अंकुश अक्षसूत्र	चतुर्भुज
१२.	कुमार	दिग० श्वे०	श्वेत श्वेत	वृषभ वृषभ	चार चार	अक्षसूत्र, त्रिशूल, दण्ड बीजपूर, गदा, नकुल, अक्षसूत्र	त्रिभुज
				हंस हंस	छह चार	वाण, गदा, वरद, धनुष, नकुल, फल बीजपूर, वाण, धनुष, नकुल	

१३.	वणमुल	दिग०	हरित	मयूर	वारह	उपर के आठ हाथों में परशु, शेष चार हाथों में खड्ग, अक्षसूत्र, ढाल, वण्ड	छह मुल
	चतुर्मुल वणमुल	दिग० स्वे०	हरित स्वैत	मयूर मयूर	वारह वारह	उपर्युक्त प्रकार फल, चक्र, बाण, खड्ग, पाश, अक्षसूत्र, नकुल, चक्र, धनुष, ढाल, अंकुश, अभय	चार मुल छह मुल
१४.	पातान	दिग०	रक्त	मकर	छह	ढाल, अंकुश, कमल, कशा, हल, फल	त्रिमुल
		स्वे०	रक्त	मकर	छह	पद्म, पाश, असि, नकुल, ढाल, अक्षसूत्र	त्रिमुल
१५.	किन्नर	दिग०	रक्त	मीन	छह	बीजपूर, गदा, अभय, नकुल, पद्म, अक्षसूत्र	त्रिमुल
		स्वे०	रक्त	कूर्म	छह	मुद्गर, अक्षसूत्र, वरद, चक्र, वज्र, अंकुश	त्रिमुल
१६.	गरुड	दिग०	श्याम	वराह	चार	वज्र, पद्म, चक्र, फल	शंकर मुल
		स्वे०	श्याम	वराह	चार	बीजपूर, कमल, अक्षसूत्र, नकुल	उपर्युक्त
१७.	गंप्रवं	दिग०	श्याम	पक्षी	चार	दो हाथों में नागपाश, बाण, धनुष	
		स्वे०	श्याम	हंस	चार	वरद, पाश, बीजपूर, अंकुश	

१२.	लेन्द्र	दिग०	श्याम	शंख	बारह	बाण, कमल, फल, माला, अक्षसूत्र, अभय, धनुष, वज्र, पाश, मुद्गर, अंकुश, वरद	छह मुख
	यक्षेन्द्र	श्वे०	श्याम	शंख	बारह	बीजपूर, वाण, खड्ग, मुद्गर, पाश, अभय, तकुल, धनुष, डाल, शूल, अंकुश, अक्षसूत्र	छह मुख
१६.	कुबेर	दिग०	इन्द्रधनुष	गज	आठ	कृपाण, वाण, पाश, वरद, डाल, धनुष, दण्ड, पद्म	चतुर्मुख
	वरुण	श्वे०	इन्द्रधनुष	गज	आठ	शूल, परशु, अभय, वरद, मुद्गर, अक्षसूत्र, बीजपूर, शक्ति	चतुर्मुख
२०.	वरुण	दिग०	श्वेत	वृषभ	चार	वरद, तलवार, डाल, फल	अष्ट मुख
	भृकुटि	श्वे०	श्वेत	वृषभ	आठ	बीजपूर, गदा, वाण, शक्ति, तकुल, पद्म, धनुष, परशु	चतुर्मुख
२१.	भृकुटि	दिग०	सुवर्ण	वृषभ	आठ	खेट, शक्ति, धनुष, वाण, अंकुश, कमल, चक्र, वरद	चतुर्मुख
	गोमेद	श्वे०	सुवर्ण	वृषभ	आठ	बीजपूर, शक्ति, मुद्गर, अभय, तकुल, परशु, वज्र, अक्षसूत्र	चतर्मुख
२२.	गोमेद	दिग०	श्याम	नृवाहन पुष्पयान	छह	मुद्गर, कुठार, दण्ड, फल, वज्र, वरद	त्रिमुख

गोमिष	श्वे०	श्याम	नगत्राहन	छह	परशु, बीजपूर, चक्र, नकुल, शूल, शक्ति	त्रिमुख
२३. धरणेन्द्र पादबंध	दिग०	श्व म	कूर्म	चार	दो हाथों में नाग, वर, नागपाश	सर्पफण
	श्वे०	श्याम	कूर्म	चार	गदा, बीजपूर, सर्प, नकुल	गजमुख सर्पफण
	श्वे०	श्याम	कूर्म	चार	सर्प, बीजपूर, सर्प, नकुल	
२४. मातंग	दिग०	सुदृग्	गज	दो	वरद और फल	मस्तक पर धर्मचक्र
	श्वे०	श्याम	गज	दो	नकुल और बीजपूर	

तालिका ३

चतुर्विंशति शासन यक्षियां

क्र०	नाम	परम्परा	शरीर का वर्ण	वाहन	भुजाओं की संख्या	आयुध	विशेष
१.	चक्रेश्वरी	दिग०	सुवर्ण	कमलासना	बारह	दो हाथों में वज्र, आठ हाथों में चक्र, वरद, फल	
		दिग०	सुवर्ण	गरुड	चार	दो चक्र, वरद, फल	
	अप्रतिचक्रा	श्वे०	सुवर्ण	गरुड	आठ	वरद, चक्र, पाश, बाण, धनुष, चक्र, शंक्रुग, वज्र	

२	रोहिणी अजिता प्रज्ञप्ति	दिग० श्वे० दिग०	सुवर्णं धवल श्वेत	लोहासना लोहासना पक्षी	चार चार छह	चक्र, शंख, अभय, वरद वरद, पाश, अंकुश, फल शर्वचन्द्र, परशु, फल, तलवार, तूम्बी, वरद
४.	दुरितारि बज्रशृंखला	श्वे० दिग०	श्वेत सुवर्णं	मेष हंस	चार चार	वरद, अक्षसूत्र, फल, अभय नागपाश, अक्षसूत्र, फल, वरद
५.	कालिका पुरुषदत्ता महाकाली	श्वे० दिग० श्वे०	श्याम सुवर्णं सुवर्णं	पद्म गज पद्म	चार चार चार	वरद, पाश, नाग अंकुश चक्र, वज्र, फल, वरद पाश, वरद, अंकुश, बीजपूर
६.	मनीषा श्यामा	दिग० श्वे०	सुवर्णं श्याम	अश्व नर	चार चार	वरद, असि, ढाल, फल पाश, वरद, बीजपूर, अंकुश
७.	काली शाप्ता	श्वे० दिग०	श्याम श्वेत	नर वृषभ	चार चार	वरद, बाण, धनुष, अभय वरद, पाश, धनुष, अभय
८.	ज्वालामालिनी	श्वे० दिग०	श्वेत पीत	गज महिष	चार आठ	घण्टा, त्रिशूल, पल, वरद वरद, अक्षसूत्र, ज्ञान, अभय चक्र, धनुष, पाग, ढाल, त्रिशूल, बाण, मन्स्य, तलवार
९.	शुक्रुटि महाकाली	श्वे० दिग०	पीत कृष्ण	वराह/विडाल कूर्म	चार चार	खड्ग, मुद्गर, फलक, परशु वज्र, फल, मुद्गर, वरद

१०.	सुतारा मानवा अशोक गौरी मानवी गांधारी प्रचण्डा चैरोटी विदिता अनंतमती अंक्रुशा मानसी कन्दर्पा महामानसी निवीणी जया विजया नारावती धारिणी अपराजिता चैरोट्या बहुरूपिणी नरदत्ता चामुण्डा	श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग० श्वे० दिग०	गौर हरित् हरित् सुवर्णं गौर हरित श्याम हरित सुवर्णं सुवर्णं गौर प्रवाल गौर सुवर्णं गौर सुवर्णं गौर सुवर्णं गौर कृष्ण हरित कृष्ण पीत गौर हरित	वृषभ शूकर पद्म मृग सिंह मकर अवब अजर पद्म हंस पद्म व्याघ्र मत्स्य मयूर पद्म शूकर मयूर हंस पद्म अष्टापद पद्म नाग भद्रासन मकर	चार चार	वरद, अक्षसूत्र, कलशा, अंकुशा माला, वरद, मत्स्य, फल वरद, पाशा, फल, अंकुशा मुद्गर, कमल, कलशा, वरद वरद, मुद्गर, कलशा, अंकुशा पद्म, वग्द, कमल, मूसल वरद, शक्ति, पुष्प, गदा दो हाथों मे सर्प, धनुष, बाण बाण, पाशा, धनुष, नाग धनुष, बाण, फल, वग्द पाशा, तलवार, अंकुशा, डाल कमल, धनुष, वरद, अंकुशा, बाण, कमल उत्पल, अंकुशा, पद्म, अभय फल, चक्र, खड्ग, वरद पुस्तक, उत्पल, कमण्डलु, कमल शंख, अस्त्रि, चक्र, वरद बीजपूर, शूल, मुषण्डी, पद्म सर्प, वज्र, मृग, वरद बीजपूर, कमल, पाशा, अक्षसूत्र डाल, तलवार, फल, वरद वरद, अक्षसूत्र, बीजपूर, शक्ति डाल, तलवार, फल, वरद वरद, अक्षसूत्र, बीजपूर, शूल यष्टि, डाल, अक्षसूत्र, तलवार	अष्टानना चतुर्मुख
-----	--	---	--	---	--	---	----------------------

गांधारी	श्वे० श्वे० श्वे० दिग०	श्वेत श्वेत श्वेत हरित	हंस हंस हंस सिंह	चार चार चार दो	वरद, खड्ग, बीजपूर, कुम्भ वरद, खड्ग, शकुन्त, कुम्भ वरद, खड्ग, बीजपूर, बीजपूर आम्रस्तवक, पुत्र शुभंकर का हाथ छूटी हुई	आम्र दूध की छाया में दो पुत्रों के साथ स्थित
२२. आम्रा	श्वे०	पीत	मिंह	चार	बीजपूर, पाश, पुत्र, अंकुश	त्रिफणसंपमोलि
अम्बिका	श्वे०	पीत	मिंह	चार	आम्राली, पाश, पुत्र, अंकुश	
पद्मावती	दिग०	रक्त	पद्म	चार	अंकुश, अक्षमूत्र, कमल, वरद	
२३.	दिग०	रक्त	पद्म	छह	पाश, अक्षमूत्र, कुन्त, अर्धचन्द्र, गदा, मूसल	
	दिग०	रक्त	पद्म	आठ	यथोचित	
	दिग०	रक्त	पद्म	चौबीस	विभिन्न	
	श्वे०	सुवर्ण	कुक्कुटसर्प	चार	पद्म, पाश, फल, अंकुश	
सिद्धायिका	दिग०	सुवर्ण	भद्रासन, सिंह	दो	वरद आर पुस्तक	
२४.	श्वे०	हरित्	सिंह	चार	पुस्तक. अमय, बीजपूर, वीणा	
	श्वे०	हरित्	गज	चार	पुस्तक अमय, पावा, कमल	
नाम	परम्परा	शरीर का वर्ण	वाहन	तारिका ४	विशेष	
क्षेत्रपाल	दिग०	श्याम	श्वान	चार	आयुध	नाग अलंकरण त्रिनेत्र

क्षेत्रपाल	श्वे०	विभिल्ल	श्वान	बीस	विभिन्न
	श्वे०	श्याम	श्वान	छह	मुद्गर, पाश, डमरू, श्वान, अंकुश, गेडिका
	श्वे०	श्याम	श्वान	छह	ढक्का, शूल, माला, पाश, अंकुश, खड्ग
अनावृत यक्ष	दिय०	कृष्ण	गरुड	चार	शंख, चक्र, कमण्डलु, अक्षमूत्र
सर्वाल्लि यक्ष	दिय०	श्याम	श्वेत गज	चार	दो हाथ बद्धांजलि दो हाथों मे
अस्त्रगान्ति यक्ष	श्वे०	पिंग	भद्रामन	चार	धर्मचक्र सम्हाले
			पादुकारूढ		अक्षमूत्र, दण्ड, कमण्डलु, छत्र
					मन्तक पर धर्मचक्र
					विकराल दाढ़ि

परिशिष्ट दो
जैन प्रतिमा लक्षण

श्रुतदेवता

श्रुतदेवता श्वेतवर्णा श्वेतवस्त्रधारिणी हंसवाहना श्वेतसिंहासनासीना
भामण्डलालंकृता चतुर्भुजा श्वेताब्जवीणालंकृतवामकरा पुस्तकमुक्ताक्षमालालंकृत-
दक्षिणकरा.....

आचारदिनकर उदय ३३, पन्ना १५५

श्रुतदेवतां शुक्लवर्णां हंसवाहनां चतुर्भुजां वरदकमलान्वितदक्षिणकरां
पुस्तकाक्षमालान्वितवामकरां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

दक्षिणपार्श्वसीनधवलमूर्तिवरदपद्याक्षसूत्रपुस्तकालंकृतानेकपाणि-
द्वादशाङ्गश्रुतदेवाधिदेवते सरस्वत्यै स्वाहा ।

निर्वाणकलिका, पन्ना १७

अभयज्ञानमुद्राक्षमालापुस्तकधारिणी ।

त्रिनेत्रा पातु मां वाणी जटाभालेदुमण्डिता ॥

मल्लिषेण, भारतीकल्प, १-२

सितांबरां चतुर्भुजां सरोजविष्टरसंस्थिताम् ।

सरस्वती वरप्रदामहर्निशं नमाम्यहम् ॥

मल्लिषेण, भारतीकल्प

चंचचन्द्ररुचं कलापिगमनां यः पुण्डरीकासना

सज्ञानाभयपुस्तकाक्षवलयप्रावारराज्युज्ज्वलाम् ।

त्वानघ्येति सरस्वति त्रिनयनां ब्राह्मे मुहूर्ते मुदा

व्याप्ताशाघरकीर्तिरस्तु सुमहाविद्यः स बंधः सदा ॥

मलयकीर्ति, सरस्वतीकल्प

विद्यादेवियां

रोहिणी प्रज्ञप्तिबंधश्चशृङ्खला कुलिशाङ्कुशा ।
 चक्रेश्वरी नरदत्ता काल्यथासी महापरा ॥
 गीरी गान्धारी सर्वास्त्रमहाज्वाला च मानवी ।
 वैरोद्याच्छ्रुता मानसी महामानसिकेति ताः ॥
 वाग् ब्राह्मी भारती गौर्गीर्वाणी भाषा मरस्वती ।
 श्रुतदेवी वचनं तु व्याहारो भाषितं वचः ॥

अभिधानचिन्तामणि, देवकाण्ड (द्वितीय)

१. रोहिणी

सकुंभशंखाब्जफलांबुजस्थान्निताच्यंमे रोहिणि रुक्मवक्त्रम् ।

आशाधर, ३/३७

दोर्भर्चंतुभिः कलशं दधाना शंखं पयोजं फलपूरमुद्धं ।

सददृष्टिसंसिद्धजिनानुरागा या रोहिणी तां प्रभजामि देवीम् ॥

नेमिचन्द्र, पृष्ठ २८४

ओं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे शंखपद्मफलहस्ते कमलासने रोहिणि आगच्छ ।

वमुनन्दि, ६

शंखाक्षमालाशरचापशालिचतुःकरा कुन्दतुषारगौरा ।

गोगामिनी गीतवरप्रभावा श्रीरोहिणी सिद्धिमिमां ददातु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

तत्राद्या रोहिणीं धवलवर्णा सुराभवाहना चतुर्भुजा-

मक्ष्मू-बाणान्वितदक्षिणपाणिं शंखधनुर्वृत्तवामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

२. प्रज्ञप्ति

तद्भाक्तिका त्वश्रवणेतिनीला प्रज्ञप्तिकेर्चामि सचक्रखङ्गाम् ।

आशाधर

दृष्ट्यादिसम्यग्विनयानुरागां चक्रं समाक्रान्तिविरोधिचक्रम् ।

खड्गं पयोजं फलमुद्धहन्ती प्रज्ञप्तमर्चामि धृताहंताज्ञाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८४

श्री श्यामवर्णं चतुर्भुजे रत्रंह ? हस्ते प्रज्ञप्ते प्रागच्छ ।

वसुनन्दि, ६

शक्तिसरोरुहहस्ता मयूरकृतयाननीलया कलिता ।

प्रज्ञप्तिविज्ञप्ति शृणोतु नः कमलपत्राभा ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

प्रज्ञप्ति श्वेतवर्गा मयूरवाहनां चतुर्भुजां वरदशक्तियुक्तदक्षिणकरा

मातुलिगशक्तियुक्तवामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

३. वज्रशृंखला

शीलव्रताभा जिनभावनास्था बिभर्ति दोभिः पविश्रृंखलां या ।

शंखं सरोजं वरबीजपूरमाराधयामः पविश्रृंखला ताम् ॥

नेमिचन्द्र, २८५

श्री सुवर्णवर्णं चतुर्भुजे श्रृंखलहस्ते वज्रशृंखले प्रागच्छ ।

वसुनन्दि, ६

सश्रृंखलगदाहस्ता कनकप्रभविग्रहा ।

पद्मासनस्था श्रीवज्रश्रृंखला हन्तु नः खलान् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

वज्रशृंखला शंखावदाना पद्मवाहना चतुर्भुजा वरदश्रृंखलान्वितदक्षिणकरां

पद्मश्रृंखलाधिष्ठितवामकरा चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

४. वज्राकुशा

या सुप्रमोदा मुतरामभीक्षणं ज्ञानोपयोगोत्तमभावनायाम् ।

घृताकुशाभोजमुबीजपूरा वज्राकुशा तामिह यायजीमि ॥

नेमिचन्द्र, २८५

श्री अंजनवर्णं चतुर्भुजे अंतुजाहस्ते वज्राकुशे प्रागच्छ ।

वसुनन्दि, ६

निस्त्रिशवज्रफलकोत्तमकुन्तयुक्तहस्ता मुनप्तविलसत्कलधौतकान्तिः

उन्मत्तदन्तिगमना भुवनस्य विघ्नं वज्राकुशी हरतु वज्रसमानशक्तिः ॥

आचारदिनकर, उदय ३६, पन्ना १६२

वज्रांकुशां कनकवर्णां गजवाहनां चतुर्भुजां वरदवज्रयुतदक्षिणकरां
मातुलिगांकुशयुक्तवामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

५. जाम्बूनदा / अग्रप्रतिचक्रा

सद्धर्मतत्फलजरागभवातिभीतिस्वरूपसंवेगविभावनोत्काम् ।

सखङ्गकुंतांबुजबीजपूरां जांबूनदां भक्तहितां यजामि ॥

नेमिचन्द्र, २८५

श्रीं कनकवर्णो चतुर्भुजे करधालहस्ते जांबूनदे प्रागच्छ ।

वसुनन्दि, ६

गरुत्मत्पृष्ठ आमीना कार्तस्वरसमच्छत्रिः ।

भूयादग्रप्रतिचक्रा नः सिद्धये चक्रधारिणी ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

अग्रप्रतिचक्रा तडिद्वर्णां गरुडवाहनां चतुर्भुजां

चक्रचतुष्टयभूषिणकरां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

६. पुरुषदत्ता

कोकश्रितां वज्रसरोजहस्तां यजे सितां पुरुषदत्तिके त्वाम् ।

आशाधर, ३/४२

धीसंयमत्यागविभावनाप्तश्रीतीर्थकृन्नामजिनांघ्रिभक्ताम् ।

वज्राब्जशंखोद्धफलांकहस्ता यजामहे पुरुषदत्तिके त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८६

श्रीो गवलनिभे चतुर्भुजे वज्रहस्ते पुरुषदत्ते प्रागच्छ ।

वसुनन्दि, ६

खङ्गस्फरांकितकद्वयशाममाना मेघाभसैरिभपटुस्थितिभासमाना ।

जात्यार्जुनप्रभतनुः पुरुषाग्रदत्ता भद्रं प्रयच्छतु सतां पुरुषाग्रदत्ता ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

पुरुषदत्तां कनकावदाता महिषीवाहनां चतुर्भुजां वरदासि-

युक्तदक्षिणकरा मातुलिगक्षेटकयुतवामहस्ता चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

७. काली

तप्त्वा तपो दुश्चमराय पुण्यं यस्तीर्थकृन्नाम तमचंयंतीम् ।

कालीं यजामो मुसलासिपद्मफलोत्लसद्दुर्जयदोश्चतुष्काम् ॥

नेमिचन्द्र, २८७

ओं हेमप्रभे चतुर्भुजे मुसलहस्ते कालि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

शरदम्बुधरप्रमुक्तचञ्चद्मगनतलाभतनुद्युतिर्दयाढ्या ।

विकचकमलवाहना गदाभृत् कुशलमलंकुरुतात् सदैव काली ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

कालीदेवी कृष्णवर्णा पद्मासनां चतुर्भुजा अक्षसूत्रगदालंकृतदक्षिणकरां
वज्राभययुनवामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

८. महाकाली

भक्त्यन्विता साधुसमाधिरूपसद्भावनासिद्धजिनांघ्रिपद्मे ।

चापं फलं बाणमासि बभार या ता महाकालिमहं यजामि ॥

नेमिचन्द्र, २८६

ओं कृष्णवर्णे चतुर्भुजे वज्रहस्ते महाकालि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

नरवाहना शशधरोपनीज्ज्वला रुचिराक्षसूत्रफलविस्फुरत्करा ।

शुभघटिकापविवरेण्यधारिणी भुवि कालिका शुभकरा महापरा ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

महाकालीं देवीं तमालवर्णां पुरुषवाहनां चतुर्भुजां अक्षसूत्रवज्रान्वितां
दक्षिणकरामभयघटालंकृतवामभुजां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

९. गौरी

यस्तीर्थकृन्नाम बबंध वैयावृत्त्ये स्फुरद्भावनयाग्रपुण्यम् ।

तं मेवमानामरविदहस्तामाराधयामो वरगौरिदेवीम् ॥

नेमिचन्द्र, २८७

ओं हेमवर्णे चतुर्भुजे पद्महस्ते गौरि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

गोधासनसमासीना कुन्दकूर्परनिर्मला ।

सहस्रपत्रसंयुक्तापाणिगौरी श्रियेस्तु नः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

गौरी देवी कनकगौरी गोधावाहनां चतुर्भुजां वरदमुसलयुत-
दक्षिणकरामक्षमालाकुत्रलयालंकृतवामहस्ता चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

१०. गांधारी

योर्हन्महाभक्तिभरात्तपुण्यै रचिन्त्यमार्हन्त्यमुपाससाद ।

तत्पादभक्तां घृतचक्रवङ्गां गांधारि गंधादिभिरर्चये त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८७

ओं भ्रमरवर्णं चतुर्भुजे चक्रहस्ते गांधारि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

शतपत्रस्थितचरणा मुसलं वज्रं च हस्तयोर्दधती ।

कमनीयांजनकान्तिर्गान्धारी गां शुभां दद्यात् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

गांधारीदेवी नीलवर्णा कमलासनां चतुर्भुजां वरदमुसलयुतदक्षिणकरां
अभयकुलिशयुतवामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७-३८

११. ज्वालामालिनी /ज्वाला

आचार्यभक्तयोद्यदगण्यपुण्यमर्हन्तमर्हन्त्यनुरागयोगात् ।

कोदंडकांडादियुताष्टबाहुं ज्वालोज्ज्वलज्ज्वालिनि पूजये त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८७

ओं श्वेतवर्णं अष्टभुजे धनुस्त्रिङ्गवाणखेटहस्ते ज्वालामालिनि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

मार्जारवाहना नित्यं ज्वालोद्भासिकरद्वया ।

शशाङ्कधवला ज्वालादेवी भद्रं ददातु नः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

सर्वास्त्रमहाज्वालां धवलवर्णां बराहवाहनां असंख्यप्रहरणयुतहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

१२. मानवी

बहुश्रुतेष्वाहितभक्तिमीशं भक्त्या भजंती भूषमुद्वहन्तीम् ।

घोरं करालं करवालमुग्रत्रिशूलकं मानवि मानये त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८८

ओं शिखिकंठनिभे चतुर्भुजे त्रिशूलहस्ते मानवी आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

नीलांगी नीलसरोजवाहना वृक्षभासमानकरा ।

मानवगणस्य सर्वस्य मङ्गलं मानवी दद्यात् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६२

मानवी श्यामवर्गा कमलासनां चतुर्भुजा वरदपाशालंकृतदक्षिणकरां

अक्षमूत्रविटपालंकृतवामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

१३. वैरोटी / वैरोट्या

यः श्रद्धया प्रत्ययरोचनाभ्यां स्पृष्टया जिनागममेव भेजे ।

तमानमंतीमहिमुद्वहन्तीमर्चामि वैरोटि हृत्त्विवषम् ताम् ॥

नेमिचन्द्र, २८८

आं जलदप्रभे चतुर्भुजे सर्पहस्ते वैरोटि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

खङ्गस्फुरत्स्फुरितवीर्यवदूर्ध्वहस्ता सद्दन्दशूकवरदापरहस्तयुग्मा ।

सिंहासनाब्जमुदनारतुषारगोरा वैरोट्याऽयभिधयास्तु शिवाय देवी ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६३

वैरोट्यां श्यामवर्गा अजगरवाहनां चतुर्भुजां खङ्गोरगालंकृतदक्षिणकरां
खेटकाहियुतवामकरां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

१४. अच्युता / अच्छुप्ता

आवश्यकन्यापरिहाणिमुच्चैश्चचार षड्भेदवती वशी यः ।

तमच्युतं सादरमर्चयंती त्वामच्युते खड्गभुजं यजामि ॥

नेमिचन्द्र, २८८

ओं जांबूनदप्रभे चतुर्भुजे वज्रहस्ते अच्युते आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

सव्यपाणिधृतकार्मुकराण्यस्फुरद्विशिखखङ्गधारिणी ।

विद्युदाभतनुरश्रवाहनाञ्छुप्तिका भगवती ददातु शम् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६३

अच्छृप्तां तडिद्वर्णां तुरगवाहनां चतुर्भुजां खङ्गवाणयुतदक्षिणकरां
खेटकाहियुतवामकरां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

१५. मानसी

तपःश्रुताद्यैर्विनतान मार्गप्रभावनां यो वृषनीतभव्यः ।

तस्य प्रणामप्रवर्णां प्रणाममुद्रान्वितां मानसि मानये त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८६

ओं रत्नप्रभे चतुर्भुजे नमस्कारमुद्रासहिते मानसि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

हंसासनसमासीना वरदेन्द्रायुधान्विता ।

मानसी मानसी पीडा हन्तु जाम्बूनदच्छविः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६३

मानसी धवलवर्णा चतुर्भुजां वरदवज्जालकृतदक्षिणकरा

अक्षवलयशनियुक्तवामकरा चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

१६. महामानसी

साधामिकेष्वाहितवत्सलत्वमाराधयन्ती विभुमक्षमालाम् ।

मालां वर चाकुशमादधानां मान्ये महामानसि मानये त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, २८६

ओं विद्रुमवर्गे चतुर्भुजे प्रणाममुद्रासहिते महामानसि आगच्छ ।

वसुनन्दि, ६

करखङ्गरत्नवग्दाढ्यपाणिभृच्छशिनिभा मकरगमना ।

संघस्य रक्षणकरी जयाति महामानसां देवी ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १६३

महामानसीं देवी धवलवर्णां सिंहवाहनां चतुर्भुजां वरदासियुक्त-
दक्षिणकरां कुण्डिकाफलकयुतवामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

शासन देवता

आपदाकुलितोपि दार्शनिकः तन्निवृत्त्यर्थम् ।

शासनदेवतादीन् कदाचिदपि न भजते पाक्षिकस्तु भजन्यपि ॥

सागारघर्माभूत्

यक्षं च दक्षिणे पार्श्वे वामे शासनदेवताम् ।

लाञ्छनं पादपीठाद्यः स्थापयेत्यस्य यद्भवेत् ॥

वसुनन्दि, ५/१२

यक्षाणां देवतानञ्च सर्वालंकारभूषितम् ।

स्ववाहनायुधोपेतं कुर्यात्सर्वाङ्गसुन्दरम् ॥

वसुनन्दि, ४/७१

चतुर्विंशति यक्ष

गोवदनमहाजम्बा तिमूहो जवखेसरो य तंगुरश्रो ।

मादंगविजय अजिधो बम्हो बम्हेमरो य कोमारो ॥

छम्मुहश्रो पादानो किण्णरकिंपुरुमगरुडगंधवा ।

तह य कुबेरे वरुणो भिउडीगोमेघपासमातंगो ॥

गुजभ्रकश्रो इदि एदे जवखा चउवीस उसहपट्टदीणं ।

तित्थयरारणं पामे चेद्वंते भन्तिमंजुत्ता ॥

तिलोयपण्णत्ती, ४/९३४-३६

जवख गोमुहमहज्जकम्ब तिमूह ईमर स तंवरु कुमुमो ।

मार्यंगो विजयाजिय बंभो मणुश्रो मुरकुमारो ॥

छम्मुह पयाल किन्नर गरुडो गंधव्व तहय जक्खिदो ।

कूबर वरुणो भिउडी गोमेहो वामण मयंगो ॥

प्रवचनसारोद्धार, द्वार २६/३७५-३७६

स्याद्गोमुखो महायक्षस्त्रिमुखो यक्षनायकः ॥

तुम्बरुः सुमुखश्चापि मातंगो विजयोजितः

अह्ना यक्षेत् कुमारः षण्मुखपानालकिन्नराः ॥

गरुडो गन्धर्वो यक्षेत् कुबेरो वरुणोपि च ।

भृकुटिर्गोमेघः पार्श्वो मातंगोर्दुपासकाः ॥

अभिधानचिन्तामणि, देवाधिदेवकाण्ड प्रथम । ४१-४३

वृषवक्त्रो महायक्षस्त्रिमुखश्चतुरानतः ।
 तुम्बरुः कुमुदार्यश्च मातंगो विजयस्तथा ॥
 जयो ब्रह्मा किन्नरेशः कुमारश्च तथैव च ।
 षण्मुखः पातालयक्षः किन्नरो गरुडस्तथा ॥
 गन्धर्वश्च यक्षेशः कुबेरो वरुणस्तथा ।
 भृकुटिश्चैव गोमेघः पार्वो मातंग एव च ॥
 यक्षाश्चतुर्विंशतिकाः ऋषभादेर्यथाक्रमम् ।
 भेदांश्च भुजशस्त्राणां कथयामि समासतः ॥

अपराजितपृच्छा । २२१/३६-४२

१. गोमुख

सव्येतरोर्ध्वकरदीप्रपरश्रधाक्ष
 सूत्रं तथाधरकरांकफनेष्टदानम् ।
 प्राग्गोमुखं वृषमुखं वृषगं वृषांक-
 भवनं यजे कनकभं वृषचक्रशीर्षम् ॥

आशाधर, ३/१२६

वामान्योर्ध्वकरद्वयेन परशुं घत्तेक्षमालामघः
 सव्यासव्यकरद्वयेन ललितं यो बीजपूरं वरम् ।
 तं मूघर्ना कृतघर्मचक्रमनिशं गोवक्त्रकं गोमुखं
 श्रीनाभेयजिनेन्द्रपादकमलालोलालिमालापये ॥

नेमिचन्द्र, ३३१

चतुर्भुजः सुवर्णाभः समुखो वृषवाहनः ।
 हस्ते परशुं घत्ते बीजपूराक्षसूत्रकम् ॥
 वरदानपरः सम्यक् घर्मचक्रं च मस्तके ।
 संस्थाप्यो गोमुखो यक्ष आदिदेवस्य दक्षिणे ॥

वसुनन्दि, ५/१३-१४

स्वर्णाभो वृषवाहनो द्विरदगोयुक्तश्चतुर्बाहुभिः
 बिभ्रद्दक्षिणहस्तयोश्च वरदं मुक्ताक्षमालामपि ।
 पाशं चापि हि मातुलिङ्गसहितं पाण्योर्वहन् वामयोः
 संघं रक्षतु दाक्ष्यलक्षितमतिर्यक्षोत्तमः गोमुखः ॥

आचारदिनकर, ३३, पन्ना १७४

तत्तीर्थोत्पन्नगोमुखयक्षं हेमवर्णं गजवाहनं चतुर्भुजं
 वरदाक्षसूत्रयुतदक्षिणपाणिं मातुलिङ्गपाशान्वितवामपाणिं चेति ।
 निर्वाणकलिका, पन्ना ३४

वराक्षसूत्रे पाशश्च मातुलिंगं चतुर्भुजः ।
 श्वेतवर्णा वृषमुखो वृषभासनसंस्थितः ॥

अपराजितपृच्छा, २२१/४३

ऋषभे गोमुखे यक्षो हेमवर्णो गजाननः ।
 वरोक्षसूत्रं पाशञ्च बीजपूरं करेषु च ॥

रूपमण्डन, ६/१७

२. महायक्ष

चक्रत्रिशूलकमलांकुशवामहस्तो
 निस्त्रिंशदंडपरशूद्यवरान्यपाणिः ।
 चामीकरद्युतिरिभांकनतो महादि-
 यक्षोर्च्यतो हि जगत्शत्रुराननोसौ ॥

आशाघर, ३/१३

चक्रं त्रिशूलं कमलं मृगिं चै खड्गं च दंडं परशुं प्रधा(दा)नम् ।
 विभ्राणमिष्टाजिननाथपादं यजे महायक्ष चतुर्मुखं त्वाम् ॥
 नेमिचन्द्र, ३३१

अजितस्य महायक्षो हेमवर्णश्चतुर्भुजः (मुखः) ।
 गजेन्द्रवाहनारूढः स्वोचिताष्टभुजायुधः ॥

वमुनन्दि, ५/१७

द्विरदगमनकृच्छ्रतिश्चाष्टबाहुष्वतुर्वक्त्रभागमुद्गरं
वरदमपि च पाशमक्षावलिं दक्षिणे हस्तवृन्दे वहन् ।
अभयमविकलं तथा मातुलिगं सृणिशक्तिमाभासयत्
सततमतुलं वामहस्तेषु यक्षोत्तमोसौ महायक्षकः॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

तथा तत्तीर्थोत्पन्नं महायक्षाभिधानं यक्षेश्वरं चतुर्मुखं
श्यामवर्णं मातङ्गवाहनमष्टपाणिं वरदमुद्गराक्षमूत्र-
पाशान्वितदक्षिणपाणिं बोजपूरकाभयांकुशशक्तियुक्त-
वामपाणिपल्लवं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३४

सपाशाक्षस्त्रमुद्गरवरदैर्दक्षिणेतरेः करैः ।
शक्त्यङ्कुशबोजपूराभयदैर्दक्षिणे तरेः॥
अष्टबाहुर्महायक्ष नामा यक्षश्चतुर्मुखः ।
श्यामो गजरथस्तीर्थे समभूदजितप्रभोः ॥

अमरचन्द्र, अजितचरित्र, १९, २०

श्यामोष्टबाहुर्हस्तिस्थो वरदाभयमुद्गरः ।
अक्षपाशांकुशाः शक्तिमातुलिगं नथैव च ।

अपराजितपृच्छा, २२१।४४

३. त्रिमुख

चक्रासिशृणुपगसव्यमयोन्यहस्तं
दंडत्रिशूलमुपयन् शितकतिकां च ।
वाजिध्वजप्रभुनतः शिखिगंजनाभ
स्त्र्यक्षः प्रनीक्षतु वलिं त्रिमुखःख्ययक्षः ॥

आगाधर, २।१३१

सव्यैः करैश्चक्रमसि सृणि यो दंडं त्रिशूलं सितकतिकां च ।
अन्यैर्बिभर्ति श्रितसंभव तं यजे त्रिनेत्रं त्रिमुखाख्ययक्षम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३२

षड्भुजस्त्रिमुखो यक्षस्त्रिनेत्रशिखिवाहनः ।
श्यामलांगो विनीतात्मा संभवजिनमाश्रितः ॥

वसुनन्दि, ५।१९

श्यास्यः श्यामो नवाक्षः शिखिगमनरतः षड्भुजो वामहस्त-
प्रस्तारे मातुलिगाक्षवलयभुजगान् दक्षिणे पाणिवृन्दे ।
बिभ्राणो दीर्घजिह्वद्विषदभयगदासादिताशेषदष्टः
कष्टं संघस्य हन्यात्त्रिमुखसुरवरः शुद्धसम्यक्त्वधारी ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

तस्मिंस्तीर्थे समुत्पन्नं त्रिमुखयक्षेश्वरं त्रिमुखं त्रिनेत्रं श्यामवर्णं
मयूरवाहनं षड्भुजं नकुलगदाभययुक्त्रदक्षिणपाणिं
मातुलिगनागाक्षसूत्रान्वितवामहस्तं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३४

स बभ्रुगदाभृदभीप्रददक्षिणादोस्त्रयः ।
समातुलिङ्गनागाक्षसूत्रवामभुजत्रयः ॥
त्रिनेत्रः षड्भुजो यक्षः श्यामो बहिणवाहनः ।
त्रिमुखस्त्रिमुखारूढोभूत् तीर्थे श्रीसम्भवप्रभोः ॥

अमरचन्द्र, संभवचरित्र, १७-१८

मयूरस्थस्त्रिनेत्रः त्रिवक्त्रः श्यामवर्णकः ।
परश्वक्षगदाचक्रशंखा वरश्च षड्भुजः ॥

अपराजितपृच्छा, २२१ । ४५

४. यक्षेश्वर

प्रेखद्धनुःखेटकवामपाणिं सकंपत्रास्यपसव्यहस्तम् ।
श्यामं करिस्यं कपिकेतुमवनं यक्षेश्वरं यक्षमिहाचंयामि ॥

आशाधर, ३/१३२

कांदगडसखेटकवामहस्तं वामान्यहस्तौद्धृतबाणखड्गं ।
यक्षेश्वरं त्वामभिनंदनाहंत्पादाब्जभृगं प्रयजे प्रसीद ॥

नेमिचन्द्र, ३३२

अभिनंदननाथस्य यक्षो यक्षेश्वराभिधः ।
हस्तिवाहनमारूढःश्यामवर्णश्चतुर्भुजः ॥

वसुनन्दि, ५।२१

श्यामः सिन्धुरवाहनो युगभुजो हस्तद्वये दक्षिणे
मुक्ताक्षावलिमुत्तमां परिणतं सन्मातुलिगं बहन् ।
वामेप्यङ्कशमुत्तमं च नकुलं कल्याणमालाकरः
श्रीयक्षेश्वर उज्ज्वलां जिनवदेदद्यान्मतिं शासने ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

तत्तीर्थोपपन्नमीश्वरयक्षं श्यामवर्णं गजवाहनं चतुर्भुजं
मातुलिङ्गाक्षसूत्रयुतदक्षिणपाणिं नकुलांकुशान्वितवामपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, पन्ना ३४

श्यामः समातुलिङ्गाक्षसूत्रदक्षिणदोर्द्वयः
नकुलांकुशभृद्वामदोर्युगो गजवाहनः ॥
यक्षेश्वराख्यो यक्षोभूत् तीर्थेभिनन्दनप्रभोः ।

अमरचन्द्र, अभिनन्दनचरित्र, १६-१७

५. तुम्बरु / तुम्बर

सर्पोपवीतं द्विकपन्नगोर्ध्वकरं स्फुरद्दानफलान्यहस्तम् ।
कोकांकनम्रं गरूडाधिरूढं श्रीतुम्बरं श्यामरुचिं यजामि ॥

आशाधर, ३।१३३

ऊर्ध्वस्थिताभ्यां फणिनी कराम्यां अधःस्थिताभ्यां दधत्ते प्रदानम् ।
फलं प्रयक्ष्ये मुमनीशभक्तं श्रीतुम्बरं सर्पमयोपवीतम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३२

सुमतेस्तुम्बरो यक्षः श्यामवर्णश्चतुर्भुजः ।
सर्पद्वयं फलं धत्ते वरदः परिकीर्तितः ॥
सर्पयज्ञोपवीतोसौ खगाधिपतिवाहनः ।

वसुनन्दि, ५।२३-२४

वर्णश्वेतो गरुडगमनो वेदबाहुश्च वामे
हस्तद्वन्द्वे सुललितगदां नागपाशं च बिभ्रत् ।
शक्तिं चञ्चद्वरदमतुलं दक्षिणां तुम्बरं स
प्रस्फीतां नो दिशतु कमलां संघकार्येऽव्ययां नः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

तुम्बुर्यक्षं श्वेतवर्णं गरुडवाहनं चतुर्भुजं वरदशक्तियुत
दक्षिणपाणिं नागपाशयुक्तवामहस्तं चेति ।

निर्वाणकलिका, पद्मा ३५

यक्षः सुमतितीर्थभूत् तुम्बुरर्क्ष्यवाहनः ।

श्वेताङ्गो वरदशक्तियुतदक्षिणदोर्युगः ॥

गदापाशधरवामकरद्वन्द्वोऽन्तिकस्थितः ।

अमरचन्द्र, सुमतिचरित्र, ४-५

६. पुष्प/कुसुम

मृगराहं कुंतवरापसव्यकरं सखेटाभयसव्यहस्तम् ।

श्यामागमब्रजध्वजदेवमेव्यं पुष्पाख्ययक्षं परिणपयामि ॥

आशाधर, ३/१३४

खेटोभयोद्भाषितसव्यहस्तं कुंतेष्टदानस्फुरितान्यपाणिम् ।

पद्मप्रभश्रीपदपद्मभृगं पुष्पाख्ययक्षेश्वरमर्चयामि ॥

नेमिचन्द्र, ३३३

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य यक्षो हरिणवाहनः ।

द्विभुजः पुष्पनामामी श्यामवर्णः प्रकांतितः

वसुनन्दि, ५/२६

नीलस्तुरंगगमनश्च चतुर्भुजाढ्यःःफूजंफलाभयमुदक्षिणपाणियुग्मः ।

बभ्राक्षमूत्रयुनवामकरद्वयश्च संघं जिनाचंनरत कुसुमः पुनातु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पद्मा १७४

कुसुमं यक्षं नीलवर्णं कुरङ्गवाहनं चतुर्भुजं फलाभययुक्तदक्षिणपाणिं
नकुलाक्षमूत्रयुक्तवामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पद्मा ३५

यक्षः कुसुमनामामीश्रीलाङ्गो मृगवाहनः ।

बिभ्राणो दक्षिणी पाणी सफलाभयदो परो ॥

नकुलाक्षमूत्रयुक्तो तीर्थो पद्मप्रभप्रभोः ।

अमरचन्द्र, पद्मचरित्र, १६-१७

७. मातंग

मिहादिरोहस्य सदंडशूलसव्यान्वपाणेः कुटिलाननस्य ।
 कृष्णत्ववषः स्वस्तिककेतुभक्तेर्मातङ्गयक्षस्य करोमि पूजाम् ॥
 आशाधर, ३-१३५

यमोग्रदंडोपमचंडदंडं सव्येन चासव्यकरेण शूलम् ।
 विभ्राणमर्चामि सुपाश्वर्भक्तं मातंगयक्षं कुटिलाननोग्रम् ॥
 नेमिचन्द्र, ३३३

सुपाश्वर्नाथदेवस्य यक्षो मातंगसंज्ञकः ।
 द्विभुजो वक्रतुंडोसो कृष्णवर्णप्रकीर्तितः ॥
 वसुनन्दि, ५/२८

नीलो गजेन्द्रगमनश्च चतुर्भुजोपि
 बिल्ववाहिपाशयुतदक्षिणपाणियुग्मः ।
 वज्रांकुशप्रगुणितीकृतवामपाणि
 मातङ्गराट् जिनमतेर्द्विषतो निहन्तु ॥
 आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

मातङ्गयक्षं नीलवर्णं गजवाहनं चतुर्भुजं बिल्वपाशयुक्तदक्षिणपाणि
 नकुलांकुशाश्रितवामपाणि चेति ।
 निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

दक्षिणो बिल्वपाशाङ्कौ वामो सनकुलांकुशौ ॥
 भुजौ दधानो मातङ्गो यक्षो नीलो गजाश्रयः ।
 अमरचन्द्र, सप्तमजिनवरित्र, १८-१९

८. श्याम / विजय

यजे स्वधित्युद्यफलाक्षमाला वरांकवामान्यकरं त्रिनेत्रम् ।
 कपोतपत्रं प्रभयाख्यया च श्यामं कृतेःदुध्वजदेवसेवम् ॥
 आशाधर, ३/१३६

सव्येन धत्ते परशु फलं यस्तथाक्षमालां च वरं परेण ।
 करद्वयेन प्रयजे त्रिनेत्रं श्यामं तमिन्दुप्रभभक्तिभारम् ॥
 नेमिचन्द्र, ३३३

चंद्रप्रभजिनेन्द्रस्य श्यामो यक्षस्त्रिलोचनः

फलाक्षसूत्रकं धत्ते परशुं च वरप्रदः ॥

वसुनन्दि, ५/३०

श्यामानिभो हंसगतिस्त्रिनेत्रो

द्विबाहुधारी कर एव वामे ।

सन्मुद्गरं दक्षिण एव चक्रं

वहन् जयं श्रोविजयः करोतु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

विजययक्षं हरितवर्णं त्रिनेत्रं हंसवाहनं द्विभुजं

दक्षिणहस्ते चक्रं वामे मुद्गरमिति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

तीर्थेभूद् विजयो यक्षो नीलाङ्गो हंसवाहनः ।

सखङ्गं दक्षिणं बाहुं वहन् वामं समुद्गरम् ॥

अमरचन्द्र, अष्टमजितचरित्र, १७

८ अजित

महाक्षमालावरदानशक्तिफलापमव्यापरपाणिगुग्मः ।

स्वारूढकूर्मो मकराङ्कभयतां गृह्णातु पूजामजितः सिताभः ॥

आशाधर, ३/१३७

यजामहे शक्तिफलाक्षमालावराङ्कवामेतरहस्तयुग्मम् ।

पुष्पेषु निष्पेषकपुष्पदन्तश्रीपादभक्ताजितयक्षनाथम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३३

अजितः पुष्पदन्तस्य यक्षः श्वेतश्चतुर्भुजः ।

फलाक्षसूत्रशभचाढ्यो वरदः कूर्मवाहनः ॥

वसुनन्दि, ५/३२

कूर्मारूढो धवलकरगो वेदबाहुश्च वामे

हस्तद्वन्द्वं नकुलमनुलं रत्नमुत्तंसयंश्च ।

मुक्तामालां परिमलयुतं दक्षिणे बीजपूरं

सम्यग्दृष्टिप्रमृमरधियां सोऽजितः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

तत्तार्थोत्पन्नमजिनयक्षं श्वेतवर्णं कूर्मवाहनं चतुर्भुजं
मातुलिङ्गाक्षमूत्रयुक्तदक्षिणपाणिं नकुलकुन्तान्वितवामपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

अजिताख्यांभवद् यक्षः श्वेताङ्गः कूर्मवाहनः ।
मातुलिङ्गाक्षमूत्राङ्को विभ्राणो दक्षिणो करो ॥
वामो नकुलकुञ्जाङ्को तीर्थे श्रीमृत्रिधिप्रभोः ।
अमरचन्द्र, मुविधिचरित्र, १७-१८

१० ब्रह्म

श्रीबृक्षकेतनततो धनुदण्डखेटवज्राद्यसव्यमय-
इंदुसिनाऽम्बुजस्थः ।

ब्रह्मा शरम्बधितिलङ्गवर्गप्रदानं व्यग्रान्यपाणि-
रूपयातु चतुर्मुखांर्चाम् ॥
आशाधर, ३/१३८

सचापदंडोजितखेटवज्रमव्योद्धपाणिं नुत्शीतलेशम ।
मध्यान्यहस्तेषु परश्वसोष्टदानं यजे ब्रह्मममाख्ययक्षम् ॥
नेमिचन्द्र, ३३४

शीतलस्य जिनेन्द्रस्य ब्रह्मयक्षश्चतुर्भुवः ।
आटवाहु सरोजस्थः श्वेतवर्णः प्रकीर्तितः ॥
वसुनन्दि, ५/३४

वसुनितभुजयुक् चतुर्वक्त्रभागद्वादशाक्षो रुचा
सर्गभेजविहिनामतो मातुलिङ्गाभये पाणयुग्मुद्गरं
दधदति गुणमेव हस्तोत्करे दक्षिणे चापि वामे
गदा मूणिनकुनमरोद्भवक्षवतीर्ब्रह्मनामा सुखर्षितमः ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७४

ब्रह्मयक्षं चतुर्मुखं त्रिनेत्रं धवलवर्णं पद्माननमष्टभुजं
मातुलिङ्गमुद्गरपाशाभययुक्तदक्षिणपाणिं नकुलगदा-
ङ्कुशाक्षमूत्रान्वितवामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

यक्षस्तीर्थे प्रभो ब्रह्मनामा त्र्यक्षश्चतुर्मुखः ।
 श्वेतः पद्मासनो विभ्रच्चवतुरो दक्षिणान् भुजान् ॥
 मातुलिङ्गमुद्गरिण्यौ सपाशाभयदायिनौ ।
 वामास्तु नकुलगदाकुशाक्षमूत्रधारिण ॥

अमरचन्द्र, दशमजिनचरित्र, १७-१८

११. ईश्वर

त्रिशूलदण्डान्वितवामहस्तः करेक्षमूत्र त्वरे फलं च ।
 विभ्रतिमना गडककेतुभक्तो लाट्वीश्वरोर्चा वृषगस्त्रिनेत्रः ॥
 आनाधर, ३/१३६

मध्यान्वहस्तोद्धतमन्त्रिशूलदडाक्षमालाफलमीश्वराख्यम् ।
 यक्ष त्रिनेत्र परितर्पयामि श्रेयोजिनश्रीपददत्तचित्तम् ॥
 नेमिचन्द्र, ३३४

ईश्वरः श्रेयसा यक्षस्त्रिनेत्रो वृषवाहनः ।
 फलाक्षमूत्रमसान् मन्त्रिशूलचतुर्भुज ॥
 वसुन्दि, ५।३६

त्र्यक्षो महोक्षगमनो धवलश्रनुर्दार्वामय इमायुगल नकुलाक्षमूत्रे ।
 मस्थापयस्तदनु दक्षिणपाणियुग्मे मन्मातुलिगकगदवतु यक्षराजः ॥
 आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

नर्त्तार्योत्पन्नमीश्वरयक्ष धवलवर्ण त्रिनेत्र वपभवाहन चतुर्भुजं
 मातुलिङ्गगदान्वितदक्षिणपाणि नकुलाक्षमूत्रयुक्तवामपाणिं चिति ।
 निषाणकालिका, पन्ना ३५

ईश्वराख्योभवद्यक्षत्र्यक्षो गौरो वृषाश्रयः ।
 मातुलिगगदायुक्तो विभ्राणो दक्षिणो करो ॥
 वामो तु सनकुलाक्षमूत्रौ श्रेयामशामनः ।
 अमरचन्द्र, श्रेयामजिनचरित्र, १६-२०

१२ कुमार

शुभ्रो धनुर्वभ्रुफलाद्यमव्यहस्तान्यहस्तेषु गदेष्टदानः ।

तुलायलक्ष्मप्रणतस्त्रिवक्त्रः प्रमोदना हंसचरः कुमारः ॥

आशाधर, ३।१४०

हस्तैर्धनुर्वभ्रुकुलानि मन्दैरभ्यैरिणु चारुगदा वरं च ।

धरतमर्चामि कुमारयक्षं त्रिवक्त्रमाराधितवामुपुज्यम् ॥

तमिचन्द्र, ३३४

वामुपुज्यजिनेन्द्रस्य यक्षो नाम्ना कुमारकः ।

त्रिमुखपद्भुजध्वजैः मूर्त्तया हंसवाहनः ॥

वसुनन्दि, ५।३८

एतच्छत्रभुजयुगा गतिकृच्च हंसे

कोदण्डपिङ्गलमुलक्षितवामहस्तः ।

मर्त्याजपुरगारपुरितदक्षिणाभ्य-

हस्तद्वय शिवमलकृत्नाम्बुमार ॥

आचारदिनेकर, उदय ३३, पन्ना १७५

तन्नाथोपन्न कुमारयक्ष एतवर्गा हंसवाहन चतुर्भुजं

मातुलिनगवाणान्वितदक्षिणपाणि तकुलकधनुर्युक्तवामपाणि चेति ।

निवाणकलिका, पन्ना ३६

यक्षोजर्जित कुमारस्यः स्यामागो हंसवाहनः ।

दधाना दक्षिणी हस्तो मातुलिङ्गगरान्वितो ॥

वामो तकुलचापाङ्गो श्रीवामुपुज्यशामने ।

अमरचन्द्र, वामुपुज्यचर्ित्र, १७-१८

१३. चतुर्मुख / पणमुख

यक्षो हरित्सपरसुपरिमात्पाणिः कोक्षेयकाक्षमणिवेष्टकदंडमुद्राः ।

त्रिभ्रच्चतुर्भिरपरैः शिखिग. किराकनभ्र प्रतृप्तयन् यथार्थचतुर्मुखाख्यः

आशाधर, ३।१४१

विमलस्य जिनन्द्रस्य नामाथाभ्यां चतुर्मुखः ।

यक्षो द्वादशदोर्दण्ड-मूर्त्तयः शिखिवाहनः ॥

वसुनन्दि, ५।४०

ऊर्ध्वाष्टहस्तविलसत्परम् चतुर्भिः खड्गामलाक्षमणिखेटकदंडमुद्राः ।
शेषैः करैश्च दधत्तं विमलेशभक्तं नाम्नोर्येन षण्मुखमर्चयामि ॥

नेमिचन्द्र, ३३५

शशधरकरदेहरुग् द्वादशाक्षस्तथा द्वादशोशद्भुजो बर्हिगामी
परं षण्मुख. ।

फलशरकरवालपाशाक्षमाला महाचक्रवस्तूनि पाण्डुत्करे
दक्षिणे धारयन् ॥

तदनु च ननु वामके चापचक्रपरान् पिङ्गला चाभय माकुशं
सज्जनानन्दनो विरचयतु मुखं मदा षण्मुख सर्वमघरस्य
सर्वामु दिक्ष् प्रतिस्फुरिताद्यद्याः ॥

आचारदिनकर, उदय २३, पन्ना १७५

तन्तीर्थोत्पन्न षण्मुख यक्षं श्देतवर्गं शिखिवाहनं द्वादशभज
फलचक्रवाणखट्वापाशाक्षसूत्रयुक्तदक्षिणपाणि नकुलचक्रधनु
फलकाद्दु शाभयपुस्तवामपाणि वर्ति ।

निर्वाणकालिका, पन्ना ३५-३६

बभूव षण्मुखो यक्ष शिखियानो बलदाहक ।

दक्षिणे फलचक्रेण खट्वापाशाक्षसूत्रिभिः ॥

वामे स नकुलचक्रकोदण्डफलकाद्दु यी ।

अभीदेन च दोर्दण्टे श्रीमद्विमलशागने ॥

अमरचन्द्र, विमलजिनचरित्र, १६-२०

१८. पानाल

पानालक मन्त्राण्यूलकजापमव्यहस्त कपाहलफलाकिनमव्यपाणिः ।

सेधाध्वजैकशरणो मकरादिरूढो रक्तोर्च्येना त्रिफणतागशिरस्त्रि

वक्त्रम् ॥

आशाधर, ३।१८२

सव्यैः कशाहलफलान्यपमव्यहस्तेत्रिभ्राणमकुशस्यूलमरोरुहाणि ।

पानालकं त्रिफणतागशिरस्त्रिवक्त्रमर्चाम्यनंतजिनमादरनोर्चयन्तम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३५

अनंतस्य जिनेन्द्रस्य यक्षः पातालनायकः ।

त्रिमुखः षड्भुजो रक्तवर्णो मकरवाहनः ॥

वमुनन्दि, ५।४२

खट्वागस्त्रिमुखः पडम्बकधरो वादोर्गतिर्लोहितः

पद्मं पाशममि च दक्षिणकरव्यूहे वहन्नरुजमा ।

मुक्ताक्षावलिखेटकोरगरिपू वामेषु हस्तेष्वपि ॥

श्रीबिस्तारमलंकरोतु भवितां पातालनामा सुरः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

तत्तीर्थोत्पन्नं पातालयक्षं त्रिमुखं रक्तवर्णं मकरवाहनं षड्भुजं

पद्मखङ्गपाशयुक्तदक्षिणपाणिं नकुलफलकाक्षसूत्रयुक्तवामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

पातालस्त्रिमुखो यक्षस्ताम्रो मकरवाहनः ।

दक्षिणैर्बाहुभिः खङ्गपद्मपाशाङ्कितैस्त्रिभिः ॥

वामैर्नकुलफलकाक्षसूत्रप्रवरैर्युतः ।

अमरचन्द्र, अनंतजिनचरित्र, १८-१९

१५, किन्नर

सचक्रवर्जांकुशवामपाणिः समुद्गराक्षानिवरान्यहस्तः ।

प्रवालवर्णस्त्रिमुखो भ्रष्टस्थो वर्जांकभक्तांचतु किन्नरोच्यमि ॥

आशाधर, ३।१४३

चक्रं पवि चाकुशमुद्वहन्तं मय्यैः परैर्मुद्गरमक्षमालाम् ।

वरं च संवेबितधमनायं त्रिवक्त्रकं किन्नरमचंयामि ॥

नेमिचन्द्र, ३३५

धर्मस्य किन्नरो यक्षस्त्रिमुखः मीनवाहनः ।

षड्भुजः पद्मरागाभो जिनधर्मपरायणः ॥

वमुनन्दि, ५।४४

श्यास्यः षण्णयनोरूढः कमठगः षड्बाहुयुक्तोभयं

विस्पष्टं फलपूरकं गुरुगदां चावामहस्तावली ।

बिभ्रद्बामकरोच्चये च कमलं मुक्ताक्षमालां तथा

बिभ्रन् किन्नरनिर्जरो जनजरारोगादिकं कृन्ततु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

तत्तीर्थोत्पन्नं किन्नरयक्षं त्रिमुखं रक्तवर्गं कूर्मवाहनं षड्भुजं
बीजपूरकगदाभययुक्तदक्षिणपाणिं नकुलपद्माक्षमालायुक्त-
वामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

त्रिमुखः किन्नरारूपोभूद् यक्ष कूर्मरथोरुणः ।
समातुर्लिंगगदाभृदभीदान् दक्षिणान् भुजान् ॥
वामास्तु नकुलाम्भोजाक्षमालामालिनो दधत् ।

अमरचन्द्र, धर्मजिनचरित्र, १६-२०

१६. गरुड

वक्राननोधम्ननहस्नपद्मफलोन्यहस्तापितवज्रचक्रः ।
मृगध्वजाहंत्प्रणतः सरयीं श्यामः क्तिम्बो गरुडोभ्युपैतु ॥
आशाधर, २, १४४

पद्मं फलं मंदघतं कराभ्या अघम्बिनाभ्यामुपरिस्थिताभ्याम् ।
वज्रं च चक्रं गरुडाह्वयं त्वामर्चामि शातिश्रितवक्रवक्त्र ॥
नमिचन्द्र, ३३६

गरुडो नामनो यक्षो शानिनाथस्य कीर्तितः ।
वराहवाहनः श्यामो वक्रवक्त्रश्चतुर्भुजः ॥
वसुनन्दि, ५, ४६

श्यामो वराहगामनश्च वराहवक्त्रश्चञ्चचतुर्भुजधरो गरुडश्च पाण्योः ।
सव्याक्षमूत्रनकुलोप्यथ दक्षिणे च पाणिद्वये धृतमरोरुहमानुलिंगः ॥
आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

तत्तीर्थोत्पन्नं गरुडयक्षं वराहवाहनं क्राडवदनं श्यामवर्णं
चतुर्भुजं बीजपूरकपद्मयुक्तदक्षिणपाणिं नकुलाक्षमूत्रवामपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

१७ गंधर्व

मनागपाशोर्ध्वंकरद्रयोधः करद्वयान्नेपुधनुः मृत्नीलः ।

गंधर्वयक्षः स्तभकेतुभक्तः पूजामुपेतु श्रितपक्षियानः ॥

आशाघर, ३ १८५

ऊर्ध्वं द्विहस्तोद्धृतनागपाशमधो द्विहस्तस्थितचापवाणम् ।

गंधर्वयक्षेश्वर कुन्थनाथमेवांस्थितानंदशुभ्रं च ये स्वाम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३६

कुन्थनाथजितेन्द्रस्य यक्षो गंधर्वमंजकः ।

पक्षियानममारुहः श्यामवर्गंश्चतुर्भंजः ॥

वसुनन्दि, ५/८८

श्यामश्चतुर्भंजधरः श्वेतपत्रगामी विभ्रश्च दक्षिणकरद्वितयेपि पाशम् ।

विस्फुजितं च वरदं क्विलयामाण्योगंधर्वंगट् परिधृताकुशबीजपूरः ॥

आचारदिनवर, उदय ३३, पन्ना १७५

तत्तीर्थोत्पन्नं गन्धर्वयक्षं श्यामवर्गं हंसवाहनं चतुर्भंज धरदपाशा-

न्वितदक्षिणभुजं मानुलिङ्गाङ्कुशाधिष्ठितवामभुजं चेत ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

गन्धर्वनामा यक्षोभूदमितो हंसवाहनः ।

दक्षिणी वरदं पाशधर विभ्रन् करी परी ॥

मानुलिङ्गाकुशधरी तीर्थे कुन्थजितेशितु ।

अमरचन्द्र, कुन्थजितचरित्र, १८-१९

१८ खेन्द्र / यक्षेश्वर

आरम्योपरिमात्करेषु कलयन् वामेषु चापं पवि

पाशं मुद्गरमंकुशं च वरदः षष्ठेन युजन् परैः ।

वाणाभोजफलस्रगच्छपटलीलीलात्रिलासाम्बिद्रक्

षड्वक्त्रष्टगराकभक्तिरमितः खेन्द्रोऽर्च्यते शंखगः ॥

आशाघर, ३ १४६

सव्यैः करैरिह शरासनवज्रपाशममुद्गराकुशवगनपरैर्धरन्तम् ।
बाणाबुजोरुफलमाल्यमहाक्षमालालीला यजाम्यग्रसित त्रिदशचखेन्द्रम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३६

अरस्य जिननाथस्य खेन्द्रो यक्षमित्रलोचन ।

द्वादशोरुभुज श्याम पण्मुखशंगवाहन ॥

वसुनिन्द, ५/५०

वसुशजिनयन षडास्य मदा कम्बुगामी धृतद्वादशोद्यद्भुज श्यामलः

तदनु च शरपाशमद्भोजपूराभयामिष्कुरन्मुद्गरान्दक्षिणे स्फारयत ।

करपरिचरणे पुनर्वामके वभ्रशूलातु ।। नक्षत्र स्फरं कार्मुक

दधदवितथवाक् मरुक्षेत्राभिरुपया लक्षित पातु सर्वत्र भक्तं जनम् ॥

प्राचारदिनकर, उदय २०, पन्ना १७५

तन्नाथान्पन्न यक्षेन्द्रयज्ञ पण्मुग नित्र श्यामवर्ण

शम्बरव तन दारशमत्र मानुलिंगवाणस्य मुद्गरपाशाभय-

युक्तदक्षिणपार्श्वे नकुलधनुश्चमंकतशूलातुशास्त्रगुत्रयुगवापार्श्वे चेति ॥

निर्वाणकलिफा, पन्ना ३६

यक्षाभून् पण्मुखयक्ष श्यामाङ्ग शङ्खवाहन ।

समानुलिङ्गवाणामिमद्गगान् पाशमीप्रदौ ॥

दक्षिणान् षड्भुजान् विभ्रद वामी चक्रधनुर्धरो ।

सर्वमंशु ताकुशाक्षसूत्रान् तीर्थे त्वग्रप्रभा ॥

अमरचन्द्र, अरजिनचरित, १७-१८

१६ कुबेर

सफलकधनुर्दंडपद्मखड्गप्रदरमुपाशवग्रप्रदाष्टपार्श्वम् ।

गजगमनचतुर्मुखेन्द्रचापद्युतिकलशाकनत यजे कुबेरम् ॥

आशाधर, ३।१४७

मल्लिनाथस्य यक्षेणः कुबेरो हस्तिवाहनः ।

सुरेन्द्रचापवर्णो सावष्टहस्तश्चतुर्मुखः ॥

वसुनन्दि, ५।५२

सद्यः करैः फलककार्मुकदंष्ट्रपद्मानन्यैः कृपाणशरपाशवरान्दधानम् ।

दुर्धार्यवीर्यचतुरानन पूजयेन्वां श्रीमल्लिनाथपदभक्तकृबेरयक्षम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३७

अष्टाक्षाष्टभुजश्चतुर्मुखवरो नीलो गजाद्यद्गतिः ।

शूलं पशुमथाभयं च वरदं पाण्युच्चये दक्षिणे ।

वामे मुद्गरमक्षमूत्रममलं मद्बीजपूर दधत्

शक्तिं चापि कुबेरकूबरघृताभिरुच्यः सुरः पातु वः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

तत्तीर्थोत्पन्नं कुबेरयक्षं चतुर्मुखमिन्द्रायुधवर्णं

गरुडवदनं गजवाहनं अष्टभुजं वरदराशशूलाभययुक्तं—

दक्षिणपार्श्वं बीजपूरकयक्तिमुद्गराक्षमूत्रयुक्तवामपार्श्वं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

२० वरुण

जटाकिरीटोष्टमुखस्त्रिनेत्रो वामान्यत्वेटासिफलेष्टदानः ।

कूर्माकिनम्रो वृषणो वृषमथः श्वेनो महाकाय उपेतु तृप्तिम् ॥

आशाधर, ३।१४८

यजे जटाजूटकिरीटजुष्टविशिष्टभावाष्टमुखं त्रिनेत्रम् ।

सखेटखड्ग सफलेष्टदानं श्रीमुद्रतेजो वरुणाख्ययज्ञम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३७

मुनिसुव्रतनाथस्य यक्षो वरुणसंज्ञकः ।

त्रिनेत्रो वृषभारूढः श्वेतवर्णश्चतुर्भुजः ॥

वसुनन्दि, ५।५४

श्वेतो द्वन्द्वलोचनो वृषगतिर्वेदाननः शुभ्ररुक्
सज्जात्यष्टभुजोय दक्षिणकरव्राते गदा सायकान् ।
शक्तिं सन्फलपूरकं दधदयो वामे धनुः पंकजं
पशुं बभ्रुमपाकरोनु वरुणः प्रत्यूहविस्फुजितम् ॥

आचारदिग्कर, उदय ३३, पन्ना १७५

तत्तीर्थोत्पन्नं वरुणयक्षं चतुर्मुखं त्रिनेत्रं धवलवर्णं
वृषभवाहनं जटामृकुटमण्डितं अष्टभुज मातुलिग-
गदावाणशक्तियुतदक्षिणपाणि नकुलकपस्यधनु परशुयुतवामपाणि चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

२१. भृकुटि

खेटं खड्गं फलं घत्ते हेमवर्णः चतुर्भुजः ।

नमिनाथजिनेन्द्रस्य यक्षो भृकुटिमंजकः ॥

वसुनन्दि, ५।५६

खेटामिकोदंशरां कशाब्जचक्रं पटदानोल्लमिताष्टहस्तम् ।

चतुर्मुखं नदिगमत्पलाकभक्तं जपामं भृकुटि यजामि ॥

आशाधर, ३।१४६

यः खेटखड्गो दृढचापवाणो मृष्ययुजे चक्रवरी दधानः ।

हस्ताष्टकेनोद्यचतुर्मुखं तं नमीशयक्षं भृकुटि यजामि ॥

नेमिचन्द्र, ३३७

नमितीर्थे भृकुटयाख्यो यक्षस्त्रयक्षश्चतुर्मुखः ।

वृषस्थः स्वर्णभो जज्ञे चतुरो दक्षिणान् भुजान् ॥

बिभ्रन्मानुलिगशक्तिमग्दराङ्काभयप्रदान् ।

वामान् नकुलपरशुवज्राक्षमूत्रमंयुतान् ॥

अमरचन्द्र, नमिजिनचरित्र, १८-१६

स्वर्णभो वृषवाहनोष्टभुजभाग् वेदाननो द्वादशाक्षो

वामे करमण्डले भयमथो शक्तिं ततो मुद्गरम् ।

बिभ्रद्वै फलपूरकं तदपरे वामे च बभ्रुं पवि

पर्णं मीकिनकमालिकां भृकुटेराड् विस्फोटयेत्संकटम् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७५

तन्तीर्थोत्पन्नं भृकुटियक्षं चतुर्मुखं त्रिनेत्रं देववर्णं
वृषभवाहनं अष्टभुजं मानुलिङ्गशक्तिमुद्गराभययुक्त-
दक्षिणपाणिं नकुलपरशुवज्राक्षसूत्रवामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

२२. गोमेद / गोमेध

श्यामाश्रवन्त्रो दृघणं कुठारं दंडं फलं वज्रवरी च विभ्रत् ।
गोमेदयक्षः श्रितशंखलक्ष्मा पूजा नृवादीर्हंतु पुण्ययानः ॥

आशाधर, ३।१५०

घनं कुठार च त्रिनेत्रि दंडं मय्यैः फनेर्वज्रवरी च योग्यैः ।
हस्नेस्तमारा घननेमिनायं गोमेधयक्षं प्रयजामि दक्षम् ॥

नेमिचन्द्र, ३३७

षड्बाह्वम्बकभाक् शिनिश्रवदनो वाद्यं तत्र धारयन्
पर्शुद्य-फलपूरचक्रकलिना हस्नोत्करे दक्षिणे ।

वामे पिङ्गलशूलशक्तिकलिना गोमेधनामा मुरः

संघम्यापि हि सप्तभीतिहरणो भूयाःप्रकृष्टो हितः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तन्तीर्थोत्पन्नं गोमेधयक्षं त्रिमुखं श्यामवर्णं पुरुषवाहनं पद्भुजं
मानुलिगपरशुचक्रान्वितदक्षिणपाणिं नकुलकमूलशक्तियुत-
वामपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

२३. धरण / पाश्वर्य

ऊर्ध्वद्विहस्तधृतवामुकिहृद्भटाधः सध्यान्यपाणिफणिपाशवरप्रणता ।
श्रीनागराजककुदं धरणोभ्रनीलःकूर्मश्रितो भजनु वामुकिमौलिरिज्याम् ।

आशाधर, ३।१५१

सव्येतराभ्यामुपरिस्थिताभ्यां यो वामुकीपाशवगौ पराभ्याम् ।

धत्ते तमेतं फणिमौलिचूलं पाश्वर्येशयक्षं धरणं धिनोमि ॥

नेमिचन्द्र, ३३८

पाश्वर्यस्य धरणी यक्षः श्यामागः कूर्मवाहनः ।

वसुनन्दि, ५।६०

खर्वः शीर्षफणः शितिः कमठगो दन्धानन पाश्वक
स्थामोद्भ्रामिचतुर्भुजः मुगदया मन्मान्नालेन च
स्फुजं दक्षिणहस्तकोहिनकुलभ्राजिणु वामस्फरन्
पाणिर्मच्छन्तु विघ्नकारिर्भवता विच्छित्तिमुच्छ्रेकयुक् ॥

आचारदिनकर, उदय २३, पन्ना १७६

तन्नीर्थोत्पन्न पाश्वर्यक्ष गजमयमुरगफणामणित्तश्याम
श्यामवर्ण कूर्मवाहनं चतुर्भुजं वीजपूरबोरग्युदक्षिणपाणि
नकुलकाह्युतवामपाणि चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

२४. मानङ्ग

वधमानजितेन्द्रस्य यक्षो मानङ्गगजक ।

द्विमजा मुरगवर्णोमो वरदो गजवाहनः ॥

मानानिगं कर धन्ते धर्मचक्रं च मन्तइ ।

वसुनन्दि, ४ ६५-६६

मुरगप्रभा मूर्धान धर्मचक्रं विश्वरूपक कामकरेण यच्छ्रित् ।

वर कारिग्यो ररिक्तेतुभन्ता मानगयक्षागन्तु तुष्टिमिष्टया ॥

आशाधर, ३।१५२

दिर्भान्तं यो मूर्धान धर्मचक्रं फलं च वामेन वरं परेण ।

वरेण न मेवितवर्धमानं मानगयक्षं महिन् मत्सामि ॥

नेमिचन्द्र, ३३८

श्यामो महाहस्तिगतिद्विवाहुः मूर्धाजपूरकितवामपाणिः ।

द्विजह्वशृशदवामदन्तो मानङ्गयक्षो वितन्तानु रक्षाम् ॥

आचारदिनकर, उदय २३, पन्ना १७६

तन्नीर्थोत्पन्नं मानङ्गयक्षं श्यामवर्णं गजवाहनं द्विभुजं दक्षिणो
नकुल वामे वीजपूरकमिति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

चतुर्विंशति यक्षी

जक्खीओ चक्केसरिरोहिणपण्णत्तिवज्जमिस्सलया ।
 वज्जकुसा य अण्णदिचक्केसरिपुरिसदत्ता य ॥
 मणवेगा कालाओ तह जलामालिगी महाकाली ।
 गउरी गांधारी ओ वैरोटी मोलसा अण्णनमदी ॥
 माणमि महमाणमिया जया य विजयापराजिदाओ य ।
 बहुरूपिणि कुभंडी पउमा सिद्धायिगीओ त्ति ॥

निलायपण्णत्ती, ४/६३७-३६

चक्रेश्वर्यंजितबला दुरिनारिश्च कालिका ।
 महाकाली श्यामा शान्ना भृकुटिश्च मुतारका ॥
 अशोका मानवी चण्डा विदिता चाङ्कगा तथा ।
 कन्दर्पा निर्वाणी बला धारिणी धरणप्रिया ॥
 नरदत्ताथ गाथाट्यम्बिका पद्मावती तथा ।
 सिद्धायिका चेति जैन्यः क्रमाच्छासनदेवता. ॥

अभिधान चिन्तामणि, देवाधिदेवकाण्ड, ४४-४६

चक्रेश्वरी रोहिणी च प्रजा वै वज्रश्रृंगला ।
 नरदत्ता मनोवेगा कालिका ज्वालमालिका ॥
 महाकाली मानवी च गौरी गान्धारिका तथा ।
 विराटा तारिका चैवानन्तागतिश्च मानसी ॥
 महामानसी च जया विजया चापराजिना ।
 बहुरूपा च चामुण्डाम्बिका पद्मावती तथा ॥
 सिद्धायिकेति देव्यस्तु चतुर्विंशतिरङ्गताम् ।
 कथितान्यभिधानानि दास्त्रभेदात्र कथ्यन्ते ॥

अपराजितपृच्छा, २०१ । ११-१४

देवीओ चक्केसरि अजिआ दुरिनारि कालि महाकाली ।
 अच्चूय सता जाला मुतारया मोय सिरिवच्छा ॥
 पवर विजयकुमा पन्नयात्ति निव्वाण अच्चूया धरणी ।
 वइरुट्ट छूत गधारि अब पउमावई सिद्धा ॥

प्रवचनसारोद्धार, द्वार, २७।३७७-३७८

१. चक्रेश्वरी / अमृप्रतिचक्रा

भर्माभाष्टकरद्वयालकुलिशा चक्राकहस्ताष्टका
सव्यासव्यशयोन्नसत्फलवरा यन्मूर्तिरास्नेम्बुजे ।
ताक्ष्ये वा सह चक्रयुग्मरुचक्रप्रार्णश्चतुभिः करैः
पंचेष्वासशनोन्नतप्रभुनतः चक्रेश्वरी ता यजे ॥

आगाधर, ३।१५६

या देव्यूर्ध्वकरद्वये कुलिशं चक्राण्यधा स्थैः करैः
अष्टाभिश्च फलं वरं करयुगेनाधत्त एवाथवा
धत्ते चक्रयुगं फलं वरमिमा दोभिश्चतुभिः श्रिताम्
ताक्ष्ये तां पुरुतीर्थपालनपरां चक्रेश्वरी मयजे ॥

नेमिचन्द्र, ३४०

वामे चक्रेश्वरी देवी म्याप्या द्वादशसद्भजा ।
धत्ते हस्तद्वये वज्रे चक्रानि च तथाष्टमु ॥
एकेन बीजपूरं तु वरदा कमलामना ।
चतुर्भुजाथवा चक्रद्वयोर्गुरुडवाहना ॥

वसुमन्दि, ५।१५-१६

स्वर्णाभा गरुडामनाष्टभुजयुग्वामे च हस्तोच्चये
वज्र चापमथाङ्कुश गुरुधनुः मौम्यागया बिभ्रती ।
तस्मिंश्चापि हि दक्षिणथ वरदं चक्र च पाश गगन्
सच्चक्रा परचक्रभञ्जनरता चक्रेश्वरी पातु नः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तथा तस्मिन्नेव तीर्थे सम्पन्नामप्रतिचक्राभिधाना
यक्षिणी हेमवर्णी गरुडवाहनामष्टभुजा वरदवाणचक्र-
पाशयुक्तदक्षिणकरा धनुर्वज्रचक्राकुशवामहस्ता चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३४

प्रभोरप्रतिचक्राख्या तीर्थे शासनदेवता ।
युता सच्चक्रपाशेषु वरदैर्दक्षिणैः वरैः ॥
चक्राङ्कुशधनुर्वज्रलक्षणैर्दक्षिणोत्तरैः ।
मुपगंवाहना स्वर्गवर्णा सन्निधिवर्तनी ॥

अमरचन्द्र, प्रथम जित चरित्र, १०२-१०३

षट्पादा द्वादशभुजा चक्राप्यष्टौ द्विवज्रकम् ।

मातुलिगाभये चैव तथा पद्यामनापि च ।

गण्डोपरिसंस्था च चक्रेणो हेमवर्णिका ।

अपराजितपृच्छा, २२१।१५-१६

२. रोहिणी । अजिता । अजितबला

स्वर्णद्युतिशंखरथाङ्गशस्त्रा लोहामनस्थाभयदानहस्ता ।

देवं धनुःसार्धचतुःशतैश्च वदाम्बोष्ठाभिह रोहिणीष्टैः ॥

आद्याधर, ३।१५७

ऊर्ध्वद्विहस्तादधृतचक्रशस्त्रा अधोद्विहस्ताभयदानमुद्राम् ।

प्रभावयतीमजितेशतीर्यं यजेत्त्रिधाकारिणि रोहिणि त्वाम् ॥

नमिचन्द्र, ३४१

देवी लोहामनारूढा रोहिण्याख्या चतुर्भुजा ।

वरदाभयहस्तामो शंखचक्राङ्गवलायुधा ॥

वसुनन्दि, ५।१८

गोगामनी धवलरक् च चतुर्भुजाहया वामेतर वरदपाशविभासमाना ।

वाम च पाणियुगल सृणिमातुर्निङ्गयुक्त मर्दाजितबला दधती पुनानु ॥

आचारदितकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तथा तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्नामजिताभिधाना यक्षिणी

गौरवर्णा लोहामनाधिहस्ता चतुर्भुजा वरदपाशाधिष्ठित-

दक्षिणकरा बीजपूराङ्कजयुक्तवामकरा चेति ।

निर्वाणकालिका, पन्ना ३४

बिभ्राणा दणिणी बाहू वरदं पाशशानिनम् ।

बीजपूराङ्कशयुती वामी तु कनकद्युतिः ॥

देवता त्वजितबला तीर्थभूदजितप्रभो ।

लोहासनसमामीना पाश्वे शामनदेवता ॥

अमरचन्द्र, अजितचरित्र, २१-२२

चतुर्भुजा श्वेतवर्गा शंखचक्राभयवरा ।

लोहासना च कर्तव्या रथाहस्ता च रोहिणी ॥

अपराजितपृच्छा, २२१।१६

३. प्रज्ञप्ति/दुरितारि

पक्षिस्थार्धेदुपरशुफलामीढीवरैः मिता ।

चतुश्चापशतोच्चारहद्भक्ता प्रज्ञप्तिरिज्यते ॥

आशाधर, ३/१५८

घत्तेर्ध्वचंद्रपरशु फलं वै कृपाणपिडीवरमादधानम् ।

यजामहे सभवनाथयक्षा प्रज्ञप्तिस्त्रिज्ञा क्षपितारिशक्तिम् ॥

नेमिचन्द्र, ३४१

प्रज्ञप्तिदेवता चैना षड्भुजा पक्षिवाहना ।

अर्धेदुपरशु घत्ते फलासीढिवरप्रदा ॥

वसुनादि, ५/२०

मेषारूढा विशदकरणा दोषचतुष्केण युक्ता

मुक्तामालावरदकलितं दक्षिण पाणियुग्मम् ।

वामं तच्चाभयफलशुभ विभ्रतां पुण्यभाजा

दद्यात् भद्र सपदि दुरितारिगतिदवी जनानाम् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना दुरितारिदवी गौरवर्णा

मेषवाहना चतुर्भुजा वरदादागुप्तयुक्तदक्षिणकरा

फलाभयान्वितवामकरा गति

निर्वाणकालिका, पन्ना ३४

वरदानपराशस्यगुना दक्षिणदांगुला ।

अभयप्रदकणिभृदवरवामकरद्वया ॥

दुरितारिगति नाम्ना गौराङ्गीचन्द्रागयाहता ।

चतुर्भुजा श्रीमम्भवनीये शामनद्वयभृत् ॥

अमरचन्द्र, सभवचरित्र, १९-२०

४. वज्रशृङ्खला/कान्तिका

मनागपाशोरफलाक्षमूत्रा त्साधिरूढा वरदानुभक्ता ।

हमप्रभार्थत्रिधनु जनाच्चत्कीर्थेजतन्ना पविश्रृंखलाचर्चा ॥

आशाधर, ३/१५९

या नागपाशं फलमक्षमूत्रं वरं विभन्ति प्रवरप्रभावा ।

यजे यजन्तामभिनदनेशमुच्छ्रंखलाद्धि पविश्रृंखला ताम् ॥

नेमिचन्द्र, ३४१

वरदा हंसमारुढा देवता वज्रधृंखला ।

नागपाशाक्षमूत्रोरुफलहस्ता चतुर्भुजा ॥

वमुनन्दि, ५।२२.

श्यामा पद्मसंस्था बलयवलिचतुर्बाहुविभ्राजमाना

पाशां विम्फूर्जमूर्जस्वलमपि वरदं दक्षिणो हस्तयुग्मे ।

विभ्राणा चापि वामेऽङ्कुशमपि कवियं भोगिनं च प्रकृष्टा

देवीनामस्तु कार्त्तिका कलिकलिनकलिस्फूर्तितद्भूतये नः ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्नां कालिकादेवी श्यामवर्णा

पद्मासनां चतुर्भुजा वरदपाशाधिष्ठितदक्षिणभुजा

नागाङ्कुशान्वितवामकरा चैति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३४-३५

श्यामा वरदपाशाङ्कौ विभ्राणा दक्षिणी करो ॥

नागांकुशधरी वामो कालिका कमलासना ।

अभिनंदनदेवस्य तीर्थे शासनदेवता ॥

अमरचन्द्र, अभिनंदनचरित्र, १७-१८

५. पुरुषदत्ता / महाकाली

गजेन्द्रगा वज्रफलोद्यचक्रवरागहस्ता कनकोज्ज्वलांगी ।

गृह्णानुदंडात्रिगतान्ननाचर्चना खङ्गवराचर्यनेत्वम्

आशाधर, ३।१६०

वज्रं फलं सव्यकरद्वयेन चक्रं वरं चान्यकरद्वयेन

समुद्रहन्तो मुमत्तौशयक्षी यजामहे पुरुषदत्तिकाख्याम् ॥

नेमिचन्द्र, ३।४२

देवी पुरुषदत्ता च चतुर्हस्ता गजेन्द्रगा ॥

रथाङ्गवज्रशस्त्रासौ फलहस्ता वरप्रदा ।

तिमूणां प्रोक्त्वादेवीनां शरीरं कनकप्रभम् ॥

वमुनन्दि, ५।२४-२५

स्वर्णाभाम्भोरुहकृतपदा स्फारबाहा चतुष्का
सार पाश वरदममल दक्षिणे हस्तयुग्मे ।
वामे रम्याटकुशमतिगुण मातुलिङ्गं वहन्ती
सद्भक्तानां दुरितहरणी श्रीमहाकालिकास्तु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना महाकाली देवी मुवर्गावर्णा
पद्मवाहना चतुर्भुजा पाशाषिष्ठितदक्षिणकरा
मातुलिङ्गाकुशयुक्तवामभुजा चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

करो वरदपाशाङ्की दक्षिणी दक्षिणेतरो ॥
मातुलिङ्गाकुशधरो बिभ्राणाम्भोरुहामना ।
हेमकान्तिमहाकाली देवी मुमतिशासन ॥

अमरचन्द्र, मुमतिचरित्र, १६-२०

६. मनोवेगा / अच्युता

फलक फलमुग्रामि वर वहति दुर्जया ।
पद्मप्रभस्य या यक्षी मनोवेगा महामि ताम् ॥
नेमिचन्द्र, ३४२

तुरगवाहना देवी मनोवेगा चतुर्भुजा ।
वरदा काचनस्त्राया माध्रामिफलका ॥
वसुनन्दि, ५।२७.

श्यामा चतुर्भुजधरा नरवाहनस्था पाश तथा च वरद
करयार्दधाना ।
वामान्ययोस्तदनु मुन्दरबीजपूर तं क्षणाकुश च परयो.
प्रभुदञ्च्युतास्तु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्नामच्युतादेवी श्यामवर्णा
नरवाहना चतुर्भुजा वरदबीणा (वाणा) न्वितदक्षिणकरा
कार्मुकाभययुतवामहस्ता चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३५,

अच्युता शासनदेवी श्यामागो नरवाहना ॥
दक्षिणी वरद पाशं घोभिन्नं बिभ्रती भुजो ।
वामो पुनर्धनुर्दण्डप्रचण्डाभयदायिनी ॥

अमरचन्द्र, पद्मप्रभचरित्र, १७-१८

७. काली / शान्ता

मिता गोवृषगां घटा फलशूलवरावृताम् ।
यजे कालीं द्विकोदण्डगतोच्छ्रार्याजनाश्रयाम् ॥
आशाघर, ३/१६१

आरभ्य वामोपरि हृन्ततो या घटा फल शूलमभीष्टदानम् ।
दधानि कालीं कलितप्रमादा समर्पया मास्तु मुपाश्वर्यश्री ॥
नेमिचन्द्र, ३४२

मितागा वृषभारूढा कानोदवा चतुर्भुजा ।
घटात्रशूलमयुक्ता फलहस्ता वरप्रदा ॥
वसुतन्दि, ५/२६

गजारूढा पाता द्विगुणभृजपुग्मन सहिता
लम्बमुक्तामाला वरदमाप मव्यान्वकरयो ।
वहन्ती शूल चाभयमपि च सा वामकरया
निशान्त भद्राणा प्रतिदिशतु गाता महुदयम् ॥
आचारदिनकर उदय ३३ पद्मा १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुपपन्ना शान्तिदेवा मुरर्णा गजवाहना
चतुर्भुजा वरदाक्षमूत्रयुक्तादशकणा शूनाभयपुनत्राम-
हस्ता चर्ति ।

निर्वाणकलिका, पद्मा ३५

शासन देवता शान्ता स्वर्णवर्णवाहना ॥
दक्षिणी वरद साक्षमूत्र वामो तु बिभ्रती ।
शूलाङ्काभयदी वाह श्रामुपाश्वप्रभारभवत् ॥

अमरचन्द्र, मुपाश्वर्चरित्र १६-२०

८. ज्वालिनी / ज्वाला / ज्वालामालिनी / भृकुटि

चंद्रोज्ज्वलां चक्रशारासपाशचर्मत्रिशूलेपुष्पासिंहस्ताम् ।
श्रीज्वालिनी सादृग्धनुःशतोच्चजिनातनां कोणगतां भजामि ॥

आशाधर, ३/१६२

चक्रं चापमहीशपाशफलके सव्यैश्चतुर्भिः करै
रन्यैः शूलमिषु भयं ज्वलदसि धत्ते त्रया दर्जया ।
तां इन्द्रप्रभदेवमेवतपरामिष्टार्थमार्थप्रदाम्
ज्वालामालकरालमौलिकलिता देवा यजे ज्वालिनीम् ॥
तेमिचन्द्र, ३४३

ज्वालिनी महिषारूढा देवी श्वेता भूजाटका ।
काण्डवज्रशूलं च धत्ते पाशे धनुर्भयम् ॥
वसुनन्दि, ५/३१

शीता विडालगमना भृकुटिश्रुतदो
वामि च हस्तयुगले फलकं गुपशुम् ।
तत्रैव दक्षिणकरेप्यमिमुद्गरो च
विभ्रान्यनन्यहृदयान् परिपातु देवी ॥

आचारदिनकर उदय ३३, पन्ना १७७.

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना भृकुटिदेवी पीतवर्णा वराह
(विडाल) वाहना चतुर्भजा खड्गमुद्गरान्वितदक्षिणभजां
फलकपरशुयुतवामहस्ता चेति ।

निर्वाणकालिका, पन्ना ३५

खड्गमुद्गरमंयुतौ विभ्राणा दक्षिणी करो ।
वामो फलकपरशुशालिनी हंमवाहना ॥
मुवर्णवर्णा भृकुटी प्रभोःशामनदेव्यभूत ।

अमरचन्द्र, अष्टमजिनचरित्र, १८-१६

९ महाकाली / मुतारा

कृष्णा कूर्मासना धन्वशतोल्लतजिनानता ।
महाकालीज्यने वज्रफलमुद्गरदानयुक् ॥

आशाधर, ३/१६३

या वज्रमत्पूजितमानुलुगं घत्ते स्फुरन्मुद्गरमिष्टदानम् ।
तां पुष्पदन्तप्रभुपादसेवासक्तां महाकालिमिमा महामि ॥
नेमिचन्द्र, ३४३

देवी तथा महाकाली विनीता कृम्मवाहना ।
मवज्रमुद्गरा कृष्णफलहस्ता चतुर्भुजा ॥
वसुनन्दि, ५/३३

वृषभगतिरथोद्यच्चारुबाहा चतुष्का
शशधरकिरणभा दक्षिणे हस्तयुग्मे ।
वरदरमजमाले बिभ्रती चैव वामे
मृणिकलयमनोज्ञा स्तान् मुतारा महाध्वं ॥
आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे ममुत्पन्ना मतारादेवी गौरवर्णा वृषवहाना
चतुर्भुजा वरदाक्षमृत्रयुक्तादक्षिणभुजा कलशाकुशान्वित-
वामपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

दक्षिणी वरदं साक्षमृत्रं च दधती भुजौ ॥
वामौ कलशाकुशाङ्गौ गौराङ्गी वृषवाहना ।
मुतारा मुविधेरासीत् तीर्थे शासनदेवता ॥
अमरचन्द्र, मुविधिजिन चरित्र, १८-१९

६. मानवी / अशोका

ऋषदामरुचकदानोचितहस्ता कृष्णकालगा हरिताम् ।
नवतिधनुस्त्रुग्जिनप्रणतामिह मानवी प्रयजे ॥
आशाधर ३।१६४

ऊर्ध्वद्विहस्तोद्धृतमत्स्यमाला अधोद्विहस्तात्तफलप्रदानाम् ।
वामादिन. शीतलनाथयक्षी महद्विका मानवि मानये त्वाम् ॥
नेमिचन्द्र, ३४३

मानवी च हरिद्वर्णा ऋषहस्ता चतुर्भुजा ।
कृष्णशूकरसंस्था च फलहस्ता वरप्रदा ॥
वसुनन्दि, ५।३५.

नीला पद्मकृतामना वरभृजर्वेदेषमाण्युता
पाश सद्वरद च दक्षिणकरे हस्तद्वये विभ्रती ।
वामे चाकुशवर्त्मणी बहुगुण दामा विशोका जन
कुर्यादामरमा गर्णं दग्धिता नन्याङ्गानन्दिने ॥

आचारदिनकर उदय ३३, पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना अशोका दग्धे मुदगवर्णा
पद्मवाहना चतुर्भुजा वरदपाशयुतदर्शिनकरा फलाकुशयुत-
वामकरा चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

दक्षिणी वरद पाशशोभित विभ्रता भुजी ।
वामो फलाकुशवर्गी मुदगाभाञ्जामनाजनि ॥
अशाकारन्वा श्राणीतलतार्थे शामनदेवता ।

अमरचन्द्र, शीतलनाथचरित्र, १६-२०

११. गौरी/मानवी

समुद्गराब्जकलया वरदा कनकप्रभाम ।

गौरी यजज्ञानिधनु प्राशुदेवा मृगापगाम ॥

आशाधर, ३।१६५

दोभिश्चतुर्भिर्द्वैघण पयोजन्वा विभ्रती तुभमर्भाष्टदानाम ॥

श्रेयोजितश्रीपदपद्मभृगी गौरी यज विघ्नविधाकारिणीम् ॥

नमिचन्द्र, ३४८

पद्महस्ता मुवर्णाभा गौरीदेवी चतुर्भुजा ।

जितन्द्रशामने भक्ता वरदा मृगवाहना ॥

वसुनन्दि, ५।२७.

श्रीवन्माप्यथ मानवी शशिनिभा मानङ्गजिदवाहना ।

वाम हस्तयुग घटाकुशयुत तस्मान्तर दक्षिणम् ॥

गाढ स्फजितमुद्गरेण वरदेनालङ्घित विभ्रती

पूजाया सकल निहन्तु कतुष्व विद्वत्तयस्वामिन ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७.

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना मानवी देवा गौरवर्णा

मिहवाहना चतुर्भुजा वरदमुद्गरान्वितदक्षिणपाणि

कलशाकुशयुस्तवामकरा चेति ।

निर्वाणकलिका पन्ना ३५

देवी च मानवी गौरशरीरा मिहवाहना ।
वरदं मुद्गरप्राग्रं विभ्राणा दक्षिणी करौ ।
कलशेनाकुशेनापि प्रशस्यौ दक्षिणेतरौ ॥

अमरचन्द्र, एकादशजिनचरित्र, २०-२१

१२. गांधारी / चण्डा

सपद्ममुमलाभोजदाना मकरगा हरित् ।
गांधारी मप्लर्नाड्वामतुगप्रभुताच्यंते ॥

आशाधर ३।१६६

लीलावुजाकोपरि हस्तयुग्मामघोद्विहस्ते मुमलेष्टदानाम्
त्वा वामुपूज्यप्रमितान्तरगा गांधारि मान्ये बहु मानयामि ॥

नेमिचन्द्र, ३४४

गांधारी मजका देवी हरिद्भामा चतुर्भुजा ।
मुशल पद्मयुग्म च धत्ते मकरवाहना ॥

वमुनिन्द, ५।३६

श्यामसना तुरगासना चतुर्दो करयोर्दक्षिणयोर्वर च शक्तिम् ।
दधती किल वामयोः प्रमून मुगदा मा प्रवरावताच्च चण्डा ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना प्रचण्डादेवी श्यामवर्णा अश्वारूढा
चतुर्भुजा वरदशक्तियुक्तदक्षिणकरा पुत्रगदायुक्तवामपाणि चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३५

देवी चण्डाह्वया श्यामधामदेहाश्ववाहना ॥
विभ्राणा वरद शक्तिधारिण दक्षिणी भुजौ ।
पुष्पेण गदया युक्ती दधाना दक्षिणेतरौ ॥

अमरचन्द्र, वामुपूज्य चरित्र, १८-१९

१३. वैरोटी / विदिता

षष्टिदंडोच्चतीर्थेशनता गोनसबाहना ।
ससपंचापसर्पवैरोटी हरिताच्यंते ॥

आशाधर, ३।१६७

ऊर्ध्वेन हस्तद्वितयेन सर्पाबधः स्थितेनोजितचापवाणी ।
यजे वहन्ती विमलेशयक्षी वरोटिका नाटितविघ्नकोटिम् ॥

नेमिचन्द्र, ३४४

बैरोटी नामनी देवी हरिदवर्णा चतुर्भुजा ।
हस्तद्वयेन सर्पा द्वौ धत्ते घोनमवाहना ॥

वसुनन्दि, १।४१

विजयाम्बुजगा च वेदबाहुः कनकाभा किल दक्षिणद्विपाण्योः
शरपाशधरा च वामपाण्याविदिना नागधनुर्धराऽववताद्वा ॥

आचारदिनकर, उदय ३३ पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना विदिना देवा र्हा-तालवर्णा
पद्मारूढा चतुर्भुजा बाणपाशयुक्तदक्षिणपाणि धनुर्नाग-
युक्तवामपाणि चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

१४. अनंतमती / अकृशा

हेमाभा हंसगा चापफलवाणवरोक्षता ।

पचाशच्चापतुंगार्द्रं भवतानंतमतीं ते ॥

आशाधर, ३/१६८

अधिज्यधन्वान्तममात्सुगं निशानवाण दधताष्टदानम् ।

समचितानंतमतीं प्रसन्ना भयादिहानंतजिनशयक्षी ॥

नेमिचन्द्र, ३४५

तथानंतमती देवी हेमवर्णा चतुर्भुजा ।

चापं वाणं फलं धत्ते वरदा हंसवाहना ॥

वसुनन्दि, ५।४३

पद्मासनोज्ज्वलतनुश्चतुराद्यबाहुः

पाशाम्लिक्षितमुदक्षिणहस्तयुग्मा ।

वामे च हस्तयुगलेऽङ्कुशखेटकाम्या

रम्यांकुशा दलयतु प्रतिपक्षवृन्दम् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना अंकुशा देवी गौरवर्णा
पद्मवाहना चतुर्भुजा खड्गपाशयुक्तादक्षिणकरां
चर्मफलकाकुशयुतवामद्वयता चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

अङ्कुशा नाम्ना देवी तु गौराङ्गी कमलामना ॥
दक्षिणे फलकं वामे त्रिकुशं दधती करे ।
अनन्तस्वामिनश्तीर्थोत्पन्ना शायनदेवता ॥

अमरचन्द्र, अनन्तजिनचरित्र, १६-२०

१५. मानमी / कन्दर्पा

मातृजघनुदानाकुशजरोत्पला व्याघ्रगा प्रबालनिभा ।
नवपत्रकचापाच्छित्तजिननम्रा मानमीह मान्येत ॥

आशाधर, ३/१६६

अंभोरुहं कार्मुकमिष्टदान धनेकुश मार्गणमुत्पलं च ।
दधानि वै धर्मजिनशयक्षी या मानसीमा बहु मानयामि ॥

नेमिचन्द्र, ३४५

देवता मानमी नाम्ना षड्भुजा विद्रुमप्रभा ।
व्याघ्रवाहनमारूढा नित्य धर्मानुरागिणी ॥

वसुन्दि, ५/४५

कन्दर्पाधृतपरपद्मगाभिधाना
गौरामा भूषणमना चतुर्भुजा च ।
मन्पद्याभययुतवामपाणियुग्मा
कल्हाराङ्कुशभृतदक्षिणद्विपाणिः ॥

आचारदिनकर, उदय ३०, पन्ना १७७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना कन्दर्पा देवी गौरवर्णा
मत्स्यवाहना चतुर्भुजा उत्पलाकुशयुक्तादक्षिणकरा
पद्माभययुक्तावामहस्तां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

कन्दर्पा नाम देवी त् गौराङ्गा मोनवाहना ॥
उत्तरलाङ्कू शर्मयुक्ती दक्षिणी दधती भुजी ।
वामो सपद्माभयदौ श्रीधर्मस्वामिशामने ॥

अमरचन्द्र, धर्मजिनचरित्र, २०-२१

१६. महामानसी/निर्वाणी

चक्रफलेट्टिवराकितकरं महामानसी गुवर्णाभाम् ।
शिखिगा चत्वारिषद्धनुस्नतजिननता प्रयजे ॥

आशाघर, ३।१७०

रथांगपाणि फलपूरहस्तमीशंगय दानकरामजेयाम् ।
शान्तीशपादाम्बुजदन्तचित्तां काता महामानसि मानये त्वाम् ॥

नेमिचन्द्र ३४५

सा महामानसी देवी हेमवर्णा चतुर्भुजा ।
फलेट्टचक्रहस्तामी वरदा शिखिवाहना ॥

वसुनन्दि, ५।४७

पद्मस्था कनकगर्चिश्चतुर्भुजाभूत्
कङ्कारोत्पलकलितापसव्यपाण्या ।
कारकाम्बुजसव्यपाणियुग्मा

निर्वाणा प्रदिशन्ति निवृत्ति जनानाम् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८७

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना निर्वाणी देवी गौरवर्णा पद्मामनां
चतुर्भुजा पुष्पकोत्पलयुक्तादक्षिणकरा कमण्डलुकमलयुक्ता-
वामहस्ता चैति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

१७. जया/व्रता

सचक्रश्यामिवरा रुक्माभा कृष्णकोलगाम् ।

पञ्चात्रयद्धनुस्त्रुगजिननम्रा यजे जयाम् ॥

आशाघर, ३/१७१

चक्रं समाक्रानविरोधिचक्रं शंखं स्वभुकारकृताग्निर्भीतिम् ।

अत्युग्रखड्गं वरमादधाना यजे जया कुण्डजिनेन्द्रयक्षीम् ॥

नेमिचन्द्र, ३४५-३४६

जयदेवी मुवर्णाभा कृष्णशूकरवाहना ।
शस्त्रामिचक्रहस्तामो वरदा घर्मन्वत्मला ॥

वसुनन्दि, ५।४६

शिखिगा मुचतुर्भुजानिपीता फलपूर दधती त्रिशूलयुवनम् ।
करयारपमव्ययाश्च मध्य करयुग्म तु भुशुटिभृत्बलान्यात् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७७

तस्मिन्नव तीर्थे समुत्पन्ना बला देवी गौरवर्णा मयूरवाहना
चतुर्भुजा बीजपूरकशूलान्वितदक्षिणभुजा मुखण्डिपद्यान्वित-
वामभुजा चेति ।

निर्वाणकल्पा, पन्ना ३६

देवी बलाह्वया गौरदेहा बहिणवाहना ॥

बीजपूरकशूलाङ्कुरा बिभ्राणा दक्षिणा भुजो ।

वामो मुपण्डीपद्याङ्कुरो वृन्था शामनदेव्यभूत ॥

अमरचन्द्र, वृन्थुजितचरित्र, १६-२०

१८. तारावती/ धारिणी

स्वर्णाभा हसगा सर्पमृगवज्रवराद्धुगम् ।

चाय तारावती त्रिशच्चापोच्चप्रभुभाक्त्तिकाम् ॥

आशाधर, =।१७२

देवी तारावती नाम्ना देमवर्णा चतुर्भुजा ।

सर्प वज्र मृग धत्ते वरदा हसवाहिनी ॥

वसुनन्दि, ५।५१

नीलाभाट्टजपरिष्ठिता भुजचतुष्काट्यापमव्ये कर-

द्वन्द्वे कैरवमातुलिगकलिता वामे च पाणिद्वय ।

पद्याक्षावलिधारिणी भगवती देवाचिता धारिणी

सघम्याप्यखिलस्य दस्युनिवहं दूरःकरोतु क्षणात् ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना धारिणी देवी कृष्णवर्णा चतुर्भुजा

पद्यासना मातुलिगोत्पलान्वितदक्षिणभुजा पाशाक्षसूत्रान्वित-

वामकरा चेति ।

निर्वाणकल्पा, पन्ना ३६

मातुलिगात्पलधरी विभ्र णा दक्षिणी भुजा ।
पद्माक्षमूर्त्रिणी वामो नालाङ्गी नलिनासना ॥
धारणान्यरनाथस्य तीर्थे शासनदेवता ।
प्रभो सर्वपरीवारांभवद् विहरन्निवात् ॥

अमरचन्द्र, अराजिनचरित्र, १६-२०

१६. अपराजिता / वैरोटी

पञ्चविंशतिचापोच्चदेवसेवापराजिता ।
शरभस्थार्च्यते खेटफलासिवरपुक् हरित् ॥

आशा १२, ३/१७-

हस्तद्वयेनोपरिमेत खटवृषाणमन्येन फल प्रदानम् ।
उद्विभ्र ॥ मल्लिजिनन्द्रयक्षा गुल्लानु पूजामपराजितयम ॥
तमिचन्द्र, २८७

अष्टावद समारूढा दवी नाम्नापराजिता ।
फलामिखेटहस्तामो र्द्विद्वर्णा चतुर्भुजा ॥
वसुतान्दि, ४ ५०

कृष्णा पद्मकृतासना युगमयप्रासत्तनुर्वाहृभूत
मुक्ताक्षावलिमदभूत च वरद सपूर्णमुद्विभ्रता ।
चञ्चदृक्षिणशरणयुग्मामनर्गमन्वामपाणिद्वय
मच्छक्ति फलपूरक प्रियतमा नागाधिपाम्यावतु ॥

आचार्यदिनकर, उदय २२, पन्ना १७८

तस्मिन्नेव तीर्थे समुपपन्ना वराट्या दवी पद्मासना
चतुर्भुजा वरदाक्षमूर्त्रयुक्तदक्षिणकरा मातुलिग-
दक्षिणयुतवामहस्ता चान्ति ।

निर्वाणकनिका, पन्ना २६

वरद साक्षमूर्त्र च दक्षिणी विभ्रती भुजा ।
वामो पुनर्मातुलिगयकन्यङ्गी कमलासना ॥
वैरोट्या गजपट्टाभा मन्त्रः शासनदध्यभूत् ।

अमरचन्द्र, मल्लिजिनचरित्र, ६०-६१

२०. बहुरूपिणी / नरदत्ता

अष्टानना महाकाया जटामुकुटभूषिता ।

कृष्णनागसमारूढा देवना बहुरूपिणी ॥

वमुनन्दि, ५/५५

पीना विशानिचापोच्चस्वामिका बहुरूपिणीम्

यजे कृष्णाहिगा खेटफलवङ्गवरोत्तराम् ॥

आशाधर ३/१७४

या खेटकं मंगलमानुष्यं कृपाणमुग्रं बरमादधाति ।

सा न. प्रसन्ना मुनिसुन्ननाहंभक्तास्तु भव्यबहुरूपिणीष्टया ॥

नेमिचन्द्र, ३४७

भद्रासना कनकरुक्तनुरुच्चबाहु-

रक्षावलीवरदक्षिणपादयुग्मा ।

सन्मातुलिङ्गयुतशूलिनदन्यपाणि

रच्छ्रुतिना भगवती जयनाश्रुदत्ता ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना नरदत्तां देवी गौरवर्णा

भद्रासनारूढा चतुर्भुजा वग्नाक्षमृत्रयुतदक्षिणकरा

बीजपूरककुम्भयुतवामहस्ता त्रिणि ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

२१. चामुण्डा / गाधारी

अष्टबाहुश्रतुर्वक्त्रा रक्ताक्षा नदिवाहना ।

चामुण्डा देवता भीमा हरिदवर्णा चतुर्भुजा ॥

वमुनन्दि, ५ ५७

चामुण्डा यष्टिखेटाक्षमूत्रखङ्गात्कटा हरिन् ।

मकरस्थार्च्यते पचदशदंडोन्ननेशभक् ॥

आशाधर, ३ १७५

दृष्टयास्तु तुष्टा घृतयष्टिखेटसव्यद्विहस्तान्यकरद्वयेन ।

दिव्याक्षमालामसिमादधाना चामुण्डिकां श्रीनमिमानमन्त्रीम् ॥

नेमिचन्द्र, ३४७

हंसानना शशिसितोरुचतुर्भुजाढया खड्ग वर सदपसध्यकरद्वये च ।
सव्ये च पाणियुगले दधती शकुन्तं गांधारिका बहुगुणा फलपूरमव्यात् ॥

आचारदिनकर, उदय = ३, पन्ना १७७

गांधारीदेवी श्वेतां हंसवाहना चतुर्भुजा वरदखड्गयुक्त-
दक्षिणभुजद्वया बीजपूरकुभ (कृत् ?) युतवामपाणिद्वया चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३६

गांधारी शासने देवी श्वेताङ्गी हंसवाहना ।

वरदं खड्गिनं वाहू दक्षिणावपरो पुनः ॥

सबीजपूरो बिभ्राणा सन्निधौ श्रान्मिप्रभो ।

पृथ्व्या विहरतः सवंपरीवारस्त्वभूदिति ।

अमरचन्द्र, नमिजिनचरित्र, २०-२१

२२, आम्रा / अम्बिका

द्विभुजा सिंहमारुटा आम्रादेवी हरित्प्रभा ॥

वमुनन्दि, ५/५ :

सव्येकचुपगप्रियंकरमुतुक्प्रोत्यै करे बिभ्रती

दिव्याम्रस्तबकं शुभंकरकरशिलाटान्यहस्तागुलिम् ।

सिंहे भनृचरे स्थिता हरितभामाम्रद्रुमच्छ्रायगा

वंदारं दशकामुकोच्छ्रयजिनं देवीमिहाम्रा यजे ॥

आशाधर, ३/१७६

घत्ते वामकटौ प्रियंकरमुतं वामे करे मजरी-

माम्रम्यान्यकरे शुभंकरतृजोहस्तं प्रशस्त हरी ।

आम्ने भनृचरे महाम्रविटपिच्छ्रायं श्रिताभीष्टया

यामौ ता नूननेमिनाथपदयोर्नम्रामिहाम्रा यजे ॥

नेमिचन्द्र ३४७

सिंहारुटा कनकनतुरुग्वेदवाहुश्च वामे

हस्तद्वन्द्वे कूयतनुभुवौ बिभ्रती दक्षिणे ।

पाशाभ्राली सकलजगता रक्षणैकार्द्रचिन्ता

देव्यम्बा नः प्रदिशतु समस्ताघविध्वंसमायु ॥

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८

तस्मिन्नेव तीर्थे समुपपन्नां कूष्माण्डां देवी
कनकवर्णा सिंहवाहनां चतुर्भुजां मातुलिङ्गपाणयुक्त-
दक्षिणकरां पुत्रांकुशान्विनवामकरां चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

२३. पद्मावती

देवां पद्मावती नाम्ना रक्तवर्णा चतुर्भुजा ॥
पद्मामनांकुशं धत्ते स्वक्षमूत्रं च पङ्कजम् ।
अथवा षड्भुजा देवी चतुर्विंशतिमद्भुजा ॥
पाशासिकुन्तवालेन्दुगदाममलमयुतम् ।
भुजाषट्कं समाख्यातं चतुर्विंशतिरच्यते ॥
शंखासिचक्रवालेन्दुपद्मोत्पलशरामनं ।
शक्तिपाशांकुशं घण्टां त्राणं मुमलखेटकम् ॥
त्रिशूलं परशुं कुन्तं वज्रं मालां फल गदा ।
पत्रं च पल्लवं धत्ते वरदा घर्मवन्मला ॥

वमुनिन्दि, १।६०-६४

येष्टुं कुर्कुटमर्षगा त्रिफणकोत्तसा द्विषो यानवट्
पाशादिःमदमत्कृते च घृतशंखाद्यादिदां अष्टका ।
तां शानामरुणा स्फुरच्छृणिमरोजन्माक्षमाला वरां
पद्मस्था नवहस्तकप्रभुनता यायज्जिम पद्मावतीम् ॥

आसाधर, ३।१७७

पाशाद्यन्विनपडभुजारिरजयदा ध्याता चतुर्विंशति
शंखास्यादियुतान्करांस्तु दधती या क्रूरशान्यर्थदा ।
शान्त्यै सांकुशवारिजाक्षमणिमदानैश्चतुर्भिः करै
र्युक्तां ता प्रयजामि पार्श्वंविनता पद्मस्थपद्मावतीम् ॥

नेमिचन्द्र, ३८७-४८

स्वर्णाभोत्तमकुर्कुटाहिगमता सौम्या चतुर्बाहुभद्
वामे हस्तयुजेङ्कुश दधिफलं तत्रापि वै दक्षिणे
पद्मं पाशमुदञ्चयन्त्यमविरत पद्मावतीदेवता
किन्नर्यंचितनित्यपादयुगला संघम्य विघ्न ह्यियात् ॥

प्राचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८

तस्मिन्नेव तीर्थे समुत्पन्ना पद्मावता देवी कनकवर्णा
कुर्कुटवाहना चतुर्भुजा पद्मपाशान्विनदक्षिणकरा
फलाकुशाधिष्ठितवामकरा चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

२४. सिद्धायिका

सिद्धायिका तथा देवी द्विभजा कनकप्रभा ॥

वरदा पुस्तकं धत्ते मुभद्रासनमाश्रिता ।

वसुनन्दि, ५।६६-६७

सिद्धायिका सप्तकरोच्छ्रितांगजिनाश्रयं पुस्तकदानहस्ताम् ।

श्रिता मुभद्रासनमत्र यजे हेमद्याति मिहर्गति यजेहम् ॥

याशाधर, ३/१७८

बिभ्रन्ति या पुस्तकमिष्टदान मध्यावमन्त्रेण करद्वयेन ।

भद्रामनामाश्रितवर्धमाना सिद्धायिका सिद्धिकरी भजेताम् ॥

नेमिचन्द्र, ३४८

देवी सिद्धायिका चामीदामीना गजवाहने ।

हरिच्छ्रविः पुस्तकाद्याऽभयदौ दक्षिणा करौ ॥

वामौ तु दधती बीजपूरवल्बकमंयुती ।

प्रभोरभूता ते नित्यामन्त्रेण शामनदेवते ॥

अमरचन्द्र, २४८-२४९

सिद्धस्था हरिताङ्गुल् भुजचतुष्केण प्रभावोजिता

नि-यं धारितपुस्तकाभयलसद्वामान्यपाणिद्वया ।

पाशाम्भोरुहराजिवामकरभाग् सिद्धायिका सिद्धिदा

श्रीमंघस्य करोतु विघ्नहरणं देवाचने संस्मृता ॥

प्राचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७८

तत्तीर्थोत्पन्ना मिद्धायिका हरितवर्णा मिहवाहना
चतुर्भुजा पुस्तकाभययुक्तदक्षिणकरा मातुलिग--
वीणान्वितवामहस्ता चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

सर्वाल्ल यक्ष

उत्तुग शरदभ्रशुभ्रमुचितं सद्भिभ्रम विभ्रन
यां दिव्यद्विपमाम्नाह शिरसि श्राघमंचक्र दधौ ।
हस्ताभ्याममितद्युति करयुगेनान्येन वद्धाजनि
त जेनाध्वररक्षणक्षममिम सर्वाल्लयक्ष यजे ॥

नेमिचन्द्र, पन्ना ६६

अनावृत यक्ष

मेरोरीशानभागे कुरुपु मणिमयस्यात्तरेषु स्थितस्य
श्रीजवूभूरुहस्य स्थितिजुपमनिश पूर्वशाखास्थमोधे ।
शय चक्र च कुण्ड दधनमुहकरैरक्षमाला च कृष्ण
पक्ष न्द्रारूढमस्या भवदिशि विधिनानावृत्तं भजामि ॥

नेमिचन्द्र, ३६३

जव्वक्षस्य नानामणिमयवपुषः प्राज्यजव्वृतस्य
प्रावशाखामावमन तवजलदम्ब पक्षिराजाधिरूढम् ।
कुण्डीशलाक्षमालारथचरणकर त्राणनिःशयजवू
द्वीपश्राक यजेस्मिन विधुरविधुतयनावृत व्यतरन्दम् ॥

आशाधर, ३।२० १

ब्रह्मशान्ति यक्ष

ब्रह्मशान्ति निङ्गवर्णं दष्ट्राकरालं जटामुकुटमण्डित
पादुकाम्बु भद्रामनस्थितिमपवीतालकृतम्बुध
चतुर्भुज प्रक्षसूत्रदण्डकान्वितदक्षिणपाणि कुण्डिकाक्षत्रा--
लकृतवामपाणि चेति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८

तुम्बरु यक्ष

भगवर्दहप्रतिपन्नप्रतिहारभावस्वेनाधिष्ठितद्वाराभ्यन्तराय
जटामुकुटधारिणे नरशिरःकपालमालाभूषणशिरोधराय
खट्वागपाणवे तुम्बरवे स्वाहा ।

निर्वाणकलिका, विम्बप्रतिष्ठाविधि, पन्ना २०

क्षेत्रपाल

ऊर्ध्वस्थेन करद्वयेन फलकं खड्गं कराम्यामघा
वनिभ्यामुरुमारमेयमसितं स्फुजंद्गदा विभ्रनम् ।
प्रत्यूहक्षपणक्षमं सभवितक्षेत्रव्रज क्षेत्रपम्
तैलेनाद्य सताभिषिच्य विदधे सिदूरकंधूमरम् ॥

नमिचन्द्र, १, ५-११६

क्षेत्रपालो जिनार्चाकजटामुकुटभूषितः ।
सिदूराकितमन्मोलिरंजनाद्राद्रमनिभः ॥
सारमेयममारूढा नभो नागविभूषणः ।
त्रिलोचनश्चतुर्बाहुः तैलाम्यमृमुविग्रहः ॥
स्वर्णपात्र गदा विभ्रड्डमरु धेनुकामपि ।
जिनेश्वर जिनमुनीन् वदारुधंमं वत्मलः ॥
निःपत्नीको जिनज्याया प्रत्यूहक्षपणक्षमः ।
एवविधगुणा ध्यायः पूजनाय मुवन्नाभिः ॥

भट्टाकलक, प्रतिष्ठाकल्प

नमः क्षेत्रपालाय कृष्णगौरकाञ्चनधूमरकपिलवर्णाय
कालमेघमघनादगिरिविदारण आह्लादन प्रह्लादन
खड्गकर्भामगामुखभूषणदृग्निविदारणदृग्निगिरि
द्रियकरेणनाथप्रभृतिप्रसिद्धाभिधानाय त्रिगतिभजदण्डाय
वक्रकेशाय जटाजूटमण्डनाय वामुकीकृतजिनापदीनाय
तक्षककृतमेखलाय शेषकृतहाराय नानायुग्मनाय
मिहत्रमविश्रणाय प्रेतामनाय
कुञ्जकुवाहनाय त्रिलोचनाय आनदभैरवाद्यभैरवपरिवृत्ताय
चतुर्पट्टियागिनीमध्यगनाय ।

आचार्यदिनकर, उदय ३२, पन्ना १८१.

क्षेत्रपालं क्षेत्रानुरूपनामानं श्यामवर्णं बर्बरकेश—
 मावृत्तपिङ्गनयन विकृतदंष्ट्रं पादुकाभिरूढं
 नग्नं कामचारिणं पङ्भुजं मुद्गरपाशडमरूका-
 न्वितदक्षिणपाणिं श्रानाकुशगेडिकायुतबामपाणिं
 श्रीमद्भगवतो दक्षिणपाश्वरे ईशानाश्रितं दक्षिणाशामुखमेव
 प्रतिष्ठाप्यमिति ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३८, ३९

प्रासादे वा गृहे वा क्षेत्रपालस्य द्वित्रा मूर्ति कायरूपा वा
 लिरूपा वा ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना २१०

अष्ट मातृका

इन्द्राणी वैष्णवी कौमारी वाराही ततः परा ।
 ब्रह्माणी च महालक्ष्मी चामुण्डा च भवानि च ॥
 इत्यष्टौ देवता अत्र दिक्ष्वद्राण्यादिकास्तथा ।
 ब्रह्माण्यान्या विदिश्वेव लेख्या विघ्नविनाशये ॥

भट्टाकलक, प्रतिष्ठाकल्प

दधती पविमिन्द्राणी चक्र वैष्णव्यमि च कौमारी
 सार वाराही मुशनं ब्रह्माणी गदा महालक्ष्मी ।
 शक्ति चामुण्डायनि माहेशी भिण्डमालमाघ्नवन्तु
 विघ्नान् प्रणवमूखाग्या गभम्वाहान्तमत्रविन्यस्ता ॥

आशाधर, ३।२०७

इन्द्राणी

उत्तुगमत्तद्विरदेन्द्ररूढा रूढाप्रवज्जायुधमूढहन्ती ।
 ऐन्द्री वसत्विन्द्रदिशीः वेद्या हेमप्रभा विघ्नविनाशनाय ॥

नेमिचन्द्र, ३६५

भगवनि इन्द्राणि सहस्रनयने वज्रहस्ते सर्वाभरणभूषिते
 गजवाहने सुराङ्गनाकाटिवेष्टिते काञ्चनवर्णे

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

वैष्णवी

या वैष्णवी विष्णुरथागयाना जिष्णोऽजिनेशस्तवने मृनीला ।
प्रत्यर्थचक्रप्रतिघातचक्र धृत्वेयमास्ता दिशि सा ममस्य ॥

नेमिचन्द्र, ३६५

भगवति वैष्णवि शखचक्रगदाशाङ्गखङ्गकरे
गरुडवाहने श्यामवर्णे

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

कौमारी

कौमारिका कोमलविद्रुमाभा शिखडियाना धृतमडलाग्रा ।
प्रचण्डमूर्ध्निर्वमतात्प्रतीच्या वेद्या जिनेन्द्रास्वरविष्णुशान्तये ॥

नेमिचन्द्र, ३६६

भगवति कौमारि पञ्चमुखि शूलशक्तिधरे वरदाभयकरे
मयूरवाहने गौरवर्णे

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

वाराही

वाराहिका वन्यवराह्याना श्यामप्रभाभीकर्मःस्वाणः ।
अन्नोत्तरस्या दिशि वेदिकायामाम्ना ममन्नाध्वरविघ्नशान्त्यै ॥

नेमिचन्द्र, ३६६

भगवति वाराहि वराहीमुखि चक्रखङ्गस्ने शेपवाहने
श्यामवर्णे

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

ब्रह्माणी

पद्मप्रभाका श्रितपद्मयाना विद्वेषिमत्रामकमुद्गरास्था ।
ब्रह्माणिसंज्ञा जिनयज्वेद्या हुताशनशा समन्करोतु ॥

नेमिचन्द्र, ३६६

भगवति ब्रह्माणि बीणापुस्तकपद्याक्षमूत्रकरे हंसवाहने
श्वेतवर्णे आगच्छ

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १२

लक्ष्मी / महान् लक्ष्मी / त्रिपुरा

श्वेतच्छदाभोटुरुवाहनस्या लक्ष्मीर्गदालक्षितशस्त्रहस्ता ।
विघ्नापनोदाय दिशीह वेद्याः प्रवर्तनां दक्षिणपश्चिमायाम् ॥
नेमिचन्द्र, ३६६

भगवति त्रिपुरे पद्मपुस्तकवरदाभयकरे महिवाहने
श्वेतवर्णे

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

चामुण्डा

चामुण्डिका प्रेतगता ममध्यमातण्डदीप्तिर्धृतदण्डशक्तिः ।
प्रत्यूहशान्त्यै दिशि वेदिकायाः प्रवर्तनामुत्तरपश्चिमायाः ॥
नेमिचन्द्र, ३६६

भगवति चामुण्डे शिराजालकरालशरीरे प्रकरितदशने
ज्वालाकुन्तले रक्तत्रिनेत्रे शूलकपालखट्वाङ्गभेनकेशकरे
प्रेतवाहने धूमरवर्णे

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

रुद्राणी / माहेश्वरी

उच्चंडशःकरगते धृतभिडिमाले रुद्राणि रुद्रामलचंद्रक्रान्ते ।
पूर्वोत्तरस्या दिशि तिष्ठ वेद्या विद्यानिधेरध्वरविघ्नशान्त्यै ॥
नेमिचन्द्र, ३६७

भगवति माहेश्वरि शूलपिताककपालखट्वाङ्गकरे चन्द्रार्धललाटे
गजचर्मावृते शेषाहिवद्धकाञ्चीकलापे त्रिनयने वृषभवहने
श्वेतवर्णे आगच्छ

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

षष्ठी

षो षष्ठी आम्नवनामीने कदंबवनविहारिपुत्रद्वययुते नरवाहने
स्यामागि इह आगच्छ...

आचारदिनकर, उदय ६, पन्ना १३

शान्ति / देवी

.....धवलशुतिवग्दकमलपुस्तककमण्डलुभूपिताने-
कपाणिसकलजनशान्तिकारिके शान्तिदेव्यै स्वाहा ।

निर्वाणकलिका, विम्बप्रतिष्ठाविधि, पन्ना १८

नथा शान्तिदेवता धवलवर्णा कमलागना चतुर्भुजा
वरदाक्षमूत्रयुक्तदक्षिणकरा कुण्डिकाकमण्डल्वन्वि-
तवामकरां चेत ।

निर्वाणकलिका, पन्ना ३७

१. इन्द्र

रूप्याद्रिन्पाद्विघंटायुगपद्दुकट्टंकारनानानिगम
द्रूपामर्यानिचित्रोज्ज्वलविलमल्लक्षमवर्मद्वयस्थं ।
दृष्यमानानिकापि । दशपरिवृत मन्त्राचार्यादिदेवी
लोलाक्ष वज्रभूयोद्भूटमुभगरुच प्रागिहन्द्रं यजामि ॥

आशाधर, ३।१८७

उत्तुंगं शरदभ्रशुभ्रमृचिताभ्ररुर्गदभ्रम
तं दिव्याभ्रमुवल्लभ द्विरमुपारूढ प्रगाढश्रियम् ॥
संभोनिश्रनपाणमप्रतिहताज्ञैश्वर्यंविभ्राजिन
शच्यामयुतमाह्वय नि मरुतामिन्द्रं जितन्द्राध्वरे ॥

नमिचन्द्र, ५४

नमः श्रौटन्द्राय तप्तकाञ्चनवर्णाय पीताम्बराय
ऐरावणवाहनाय वज्रहस्ताय.....पूर्वदिग्धीशाय च ।

आचारदिकर, उदय ३३, पन्ना १७८

२. अग्नि

आगतया दिशि मेघवाहनममारूढ मुधमध्वजं
अग्नेयादिवधुजनाहितदृशं ज्वालाज्वलच्छेखरम् ।
कल्पानां ग्रहमस्तरश्मिमदृशं स्फुज्जन्प्रभोत्कायुषं
गंधाद्यर्घमदो विनीयं हुनभुक् देवं ममाह्वानये ॥

वसुनन्दि, ६।५८

स्वमास्त्रघर्घरस्त्रगलच्चतुःपृथुप्राग्भगाभतुग
 स्थं गौर्द्विपक्षणयुगमनुल ब्रह्ममूत्र सिखास्त्रम् ।
 कुडी वामप्रकोटे दधतमिनरपाण्यातपुण्याक्षमूत्र
 स्वाहास्त्रीनं धिनोमि श्रुतिमुखरसभ प्राचरपाच्यतरेष्टिम् ॥
 आशाधर, ३।१८८

शोणभ्रूश्मश्रुकेशावकमरणरुच जाज्व तज्ज्वालशक्ति
 कुडी वामेक्षमानामिनरकरनले विभ्रन सोपवीतम् ।
 स्वाहायुक्त नियुक्त जिनयजनविषेर्दीपधूपादिकारे
 महेदाघापिमस्यावृत्तमनलमलकारसार यत्तम् ॥
 नमिचन्द्र, ३५६

नम ग्रन्थे सर्वदेवमुख य प्रभूतेजोमयाय
 छागवाहनाय नीलाम्बराय अनुवाणहस्ताय
 आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६
 तत्र अग्नि अग्निवर्णं मपवाहन सन्तशिख शन्तिपाणि चेति ।
 निर्वाणकालिका पन्ना ३८

३. यम

प्रोद्यन्प्रचण्डमहिषोत्तमयानमस्थ दार्दण्टनकराद्धूतदडचड-
 छायागनादिपरिवारपरिष्कृतागमाज्ञानये यममिमु निशिदक्षिणम्याम् ॥
 वसुनन्दि, ३।५६

कल्पान्ताब्दोधजेत्तृनिगुणफाणगुणादगाहृतग्रैवघण्टा
 टंकारशुभ्रश्च गक्रमहनमधरब्रानरतनाक्षमस्थम् ।
 चटाचि.काउदण्डाट्टमरकरमातक्ररदागदिलोक
 काष्ण्यैद्रेक नृशमप्रथममथ यम दिश्ययाचो यजामि ॥
 आशाधर, ३।१८८

गवलयुगलधूष्णाम्भोदमारुडवन्त महितमहिषमुच्चैरजनाद्रीन्द्रकल्पम् ।
 असितमहिषभूष भौषण चडदडाविदिनमदयधर्म व्याह्वय धर्मराजम् ॥
 नेमिचन्द्र, ५२

नमो यमाय धर्मराजाय दक्षिणदिगधीशाय कृष्णवर्णाय
 चमविरणाय महिषवाहनाय दण्डहस्ताय ।
 आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तथा यमराजं कृष्णवर्णं महिषवाहनं दण्डपाणिं चेति ।
निर्वाणकालिका, पन्ना ३८

४. नैऋति

याम्यापराया दिशि नैऋतेऽम्बर
स्वैर्भृत्यनिकरैश्च संयुतम् ।
कार्तिक्यानां धृतवज्रमुद्गर
आह्वानये जैतमहामहात्मने ॥

वसुन्दि, ६।६०

आरूढ धूमधूआयनविकटमदारनागदिगरूक्षरूक्षमा
लक्षाक्षान्शिष्टा स्फुटरचितकला याद्रमाभागमृक्ष ।
कूरकव्यान्परीतं निमिरचयरुच मद्गरक्षुण्णरोद्र
क्षुद्राघ तान याग्या परहरतमहं नैऋत तर्पयामि ॥

आशाघर, ३।१६०

तमावनील पुरनावलम्बिस्फुटस्मटाभारमदारमृक्षम् ।
आरूढमार्भालमुद्दशयित वधयत नैऋतमाहवयामि ॥

नेमिचन्द्र, ७२

तमो नैऋतय नैऋत्यादिगर्भीशाय धूम्रवर्णाय
व्याघ्रचर्मावृताय मुद्गरहस्ताय प्रेतवाहनाय ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तथा नैऋतिं हस्तिवर्णं शववाहनं खड्गपाणिं चेति ।

निर्वाणकालिका, ३८

५. वरुणा

करिमकरविमानाग्दामिद्धं मुद्युध्र
वरुणममरमुख पाशहस्त सभार्यम्
स्वपरजनसमेत ध्रुवस्तनिःशेषविधनं
अपरदिशि सपर्यापूर्वक व्याहरामि ॥

वसुन्दि, ६।६१

नित्याभः कोलिपाट्टकटकपिलविद्यच्छेदमोदर्यइत
 प्रोत्फुल्यत्पद्यमेल्करकरिमकग्व्योमयानाधिम्डम् ।
 प्रेखन्मुक्ताप्रवालाभरणभरमुपस्थः।वृदारादृताक्षं
 स्फूर्जदभीमाहिपाश वरुणमपरद्विग्रक्षणं प्रीणयामि ॥
 आशाधर, ३।१६१

करो कथंचिन्मकरः कथंचिद् मन्यापयेज्जैनकथंचिदुक्तम् ।
 यस्त करिप्राङ्मकरं गनोहिपाशोच्यते विश्रुतपाशपाणिः॥
 नेमिचन्द्र, ५३

नमो वरुणाय पश्चिमदिग्धाश्वराय ममुद्रवामाय
 मेघवर्णाय पीताश्वराय पाशहस्ताय मन्स्यवाहनाय ।
 आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

तथा वरुण धवलवर्ण मकरवाहन पाशपाणि चेति ।
 निर्वाणकलिका, ३२

६, वायु

अपरोत्तरदिग्देशे प्रचण्डदोर्दण्डधृतमहावृक्षम
 मृगवाहन सभार्य सपरिजनं बाह्वये पवनम् ॥
 वसुनन्दि, ६।६२

वल्गच्छृगाग्रभिन्नावुदपटलगलन्तोयनीतश्रमाश्रु-
 प्तुत्यस्तम्वातरहः खुरकपिन कुलग्रावमारगपुग्मम ।
 ब्यालोलद्गात्रयत्र त्रिजगदमुघृत्तियधमुग्रद्रुमान्त्र
 सर्वार्यानर्थसर्गप्रभूमनिकमुदक् प्रत्यगतः प्रणोमि॥
 आशाधर, ३।१६२

य. पञ्चधाराचतुर तुरंगं ममारुरोहोरुमरीरुहास्त्रः
 तं वायुवेगीयुतवायुदत्रं व्याह्वानये व्याहतयागविघ्नम् ॥
 नेमिचन्द्र, ५३

नमो वायवे बायध्यदिग्घोशाय धूसरांगाय
 रक्ताश्वराय हरिणवाहनाय च्यञ्जप्रहरणाय च ।
 आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

वायुः सितवर्णं मृगवाहनं वज्रां (ध्वजा) लंकृतपाणिं चेति
निर्वाणकलिका, ३ =

७. कुबेर

इनस्ततो नाभिगिरेःसगर्भा गदां मलीला अमयन्नुदीच्ये ।
द्वारे निषण्णोनुचरैवितदेः कुबेरवीरानुमरोपचार ॥

आशाधर, ३।१८४

उत्तरस्या दिशायां विमानस्थितं भूरवित्तेश्वरयश्रवृंदाचितम्
यक्षिणाभिर्वृत्तं दिव्यशक्तान्वितं ढगाङ्गाम कुबेरं मुशक्त्यान्वितम् ॥

वसुनन्दि, ६।६३

नमो धनदाय उत्तरदिग्धीशाय सर्वयक्षेश्वराय
कैलामस्थाय अलकापुरीप्रतिष्ठाय शक्रकोशाध्यक्षाय
कनकाङ्गाय श्वेतवस्त्राय नरवाहनाय रत्नहस्ताय ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १७६

कुबेरमनेकवर्णं निधिनवकारूढं निचूलकहस्तं
तुन्दिलं गदापाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, ३ =

८. ईशान

कैलासाचलमंनिभायतमितोत्तुगागविभ्राजितं
पर्जन्योर्जितगर्जनं वृषभमारूढं जगद्गृहकम् ।
नागाकल्पमनल्पिगलजटाजूटाश्चन्द्रोञ्ज्वलम्
पार्वत्याः पतिमाह वये अिनयनं भास्वन त्रिशूलायुधम् ॥

नेमिनन्द, २८

ईशान्या शीतरश्मिश्रुतिवृषभमहायानमंस्थवृषाकं
रुद्राण्यालिंगितांगकपिलतरजटाजूटस्यचन्द्रम् ।
शूलाम्त्रव्यग्रहस्तं भूमगणपरिवृतं कृष्णनागप्रभूषं
जने पूज्योत्तमवेस्मिन्भवनमभयमिहाह्वानयाम्यादराद्द्राक् ॥

वसुनन्दि, ६।६४

नम श्री ईशानाय ईशानदिगर्धशाय...श्वेनवर्णाय
गजाजिनवृताय वृषभवाहनाय विनाकशूलधराय ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८०

तथेशानं धवलवर्णं वृषभवाहनं द्विनेत्रं शूलगणिचेति ।

निर्वाणकलिका, ३८

६. धरणेद्र / नाग

बक्षोजस्तजिपृष्ठश्वमनसमनर. कूर्मराजाधिरूढ
क्षुद्रछीवेभकु भाक्रमणचणमृणिस्फारणव्यग्रपाणिम् ।
संश्लिष्टं दृक्महम्भ्रद्वितव्यघृणिकणारत्नरत्नबाल
ब्रधनीद्यापीडमहाच्छ्रितमहियमधोर्चामि पद्मासमेतम् ॥

आशाधर ४ / ६१

ऐरावणोरुचरणानिपृथ्वधर्म श्रीकृम्वञ्जनिभपृष्ठकृतप्रतिष्ठम्
व्याह्वानत्र धवलमकुशपादाहस्त पद्मार्पति फणिपतिफणिमीलिचूलम् ॥

नामचन्द्र, ५४

नमो नागाय पातालार्थश्वराय कणवर्णाय
पद्मवाहनाय उरगहस्ताय च ।

आचारदिनकर, उदय ३३

नाग श्यामवर्णं पद्मवाहनमुरगपाणिं चति ।

निर्वाणकलिका, ३८

१०. सोम / ब्रह्मा

ऊर्ध्वाया दिश्यमेवद्युतिविशरमुधाधोतभूमण्डलात्
प्राप्य चद्रेत्यभिख्यामिकुमुदवनाह्लादनात्सर्वकान्तम् ।
रोहिण्याश्रिष्टमृत्तिद्विरद'गृविमानस्थित कुनपाणि
दत्त्वार्धं चदनाद्यैज्जिनभवनविधौ सोममाह्वानयामि ॥

वमुनन्दि, ६ ६६

अश्रणमितसटौघम्राजितश्वेनगात्र-
प्रखरनखररह सिंहमारूढवन्तम् ।
कुवलयमयमाल कानकातं सकुन्तं
सितनुनकरसाद्रं चंद्रमाह्वानयामि ॥

नेमिचन्द्र, ५४

नमो ब्रह्मणे ऊर्ध्वलोकाधीश्वराय.....नाभिमभवाय काञ्चन-
वर्णाय चतुर्भुजाय श्वेतवस्त्राय पुष्पककमलहस्ताय ।

आचारदिनकर उदय ३३, पन्ना १७८

तथा ब्रह्मार्णं धवलवर्णं हंसवाहनं कमण्डलुपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, ३८

१. सूर्य

नमः सूर्याय सहस्रकिरणाय रत्नादेवीकान्तनाय यमयमुना जनकाय
.....पूर्वदिग्धीशाय स्फटिकोज्ज्वलाय रक्तवर्णाय कमलहस्ताय
सप्तश्वरथवाहनाय च ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८०

तत्रादित्यं द्विङ्गुलवर्णमूर्ध्वस्थितं द्विभुजं कमलपाणिं चेति ।

निर्वाणकलिका, ३८

आदित्यमाद्यं सकलग्रहाणामानन्दमभोरुच्यारुपाणिम् ।
पद्मप्रभं नीलतुरगयानमानन्दयामि प्रविर्नाय्यं पूजाम् ॥
सिंहामनप्रतिष्ठा

सूर्याय सहस्रकिरणाय गजवृषभमहत्तुरगवाहनाय
रक्तवर्णाय.....।

प्रतिष्ठाकल्प, पन्ना १४

२. चन्द्र

नमश्चन्द्राय.....तारागणाधीशाय वायव्यदिग्धीशाय
श्वेतवस्त्राय श्वेतदगवाजिवाहनाय मुघाकुम्भहस्ताय...।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८०

तथा सोमं श्वेतवर्णं द्विभुजं दक्षिणं अक्षसूत्रं
वामे कुण्डिकां चेति

निर्वाणकलिका, ३८

सारंगमारोहति कुन्तमन्त्रमंगीकरोति क्षतवैरिवर्गः ।
यस्तं प्रशस्तं सकलं हिमाशुमाकारयामि स्वहिताय यज्ञे ॥

सिंहासनप्रतिष्ठा

प्रतीचीदिग्दलोद्भूत अक्षमालाकमराम्बुपाणिसोमाय
मृगवाहनाय ।

प्रतिष्ठाकल्प, पन्ना १४

३. मंगल

नमः मंगलाय दक्षिणदिग्धीशाय विद्रुमवर्णाय
रक्ताम्बराय भूमिस्थिताय कुह्नालहस्ताय ।

आचारदिनकर उदय, ३३, पन्ना १८०

तथाङ्गारकं रक्तवर्णं द्विभुजं दक्षिणेशसूत्रं वामे कुण्डिकां चेति ।
निर्वाणकलिका, ३८

त्रिशूलविध्वस्तममस्तशत्रो शोणांगरक्ताक्षपरिग्रहोग्रा ।
त्वं मंगलातुच्छममुच्चवेशिमन्नागच्छ सच्छायसदाहितेष्व ॥
मिहामनप्रतिष्ठा

वारुणदिग्दलामिने रक्तप्रभाक्षसूत्रावत्यकुण्डिकालंकृते
भोमाय गजवाहनाय ।

प्रतिष्ठाकल्प, पन्ना १४

४. बुध

नमः बुधाय उत्तरदिग्धीशाय हस्तिवस्त्राय
कलहंसवाहनाय पुस्तकहस्ताय च ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८०

तथा बुधं पातवर्णं द्विभुजं अशसूत्रकुण्डिकापाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, ३८

बुधं निरुद्धाग्बिलं सनीलं नीत्रोपसच्छायपरिग्रहागम् ।
दुर्गोपसर्गेकविनाशदक्षं यजे सदा शान्तिविया यजामि ॥

मिहामनप्रतिष्ठा

५. बृहस्पति

नमः श्रीगुरवे बृहस्पतये ईशानदिग्धीशाय सर्वदेवाचार्याय
सर्वग्रहबलवत्तराय काचनवर्णाय पीतवस्त्राय
पुस्तकहस्ताय श्रीहंसवाहनाय ।

आचारदिनकर. उदय ३३, पन्ना १८०

तथा सुरगुरुं पीतवर्णं द्विभुजं अक्षमूत्रकुण्डिकापाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, ३८

बृहस्पति सारमरोरुहस्थप्रसव्यहस्त्रस्थितपुस्तक च ।
सुवर्णवर्णं प्रवितीर्णशोभं क्षोभं दधानं द्विपता यजामि ॥
सिंहासनप्रतिष्ठा

६. शुक्र

नमः शुक्राय दैन्याचार्याय आग्नेयदिग्धीशाय
स्फटिकोज्ज्वलाय श्वेतवस्त्राय कुम्भहस्ताय तुरगवाहनाय ।
आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८१
तथा शुक्रं श्वेतवर्णं द्विभुजं अक्षमूत्रकमण्डलुपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, ३८
शालूरयानाहिकरा सुराणां गुरो प्रणष्टप्रतिपक्षदक्ष ।
शुक्रं स्वयं वेदिविधानरक्षामागत्य नित्यं कुरु राजताभम् ॥
सिंहासनप्रतिष्ठा

७. शनि

नमः शनिश्चरगय पश्चिमदिग्धीशाय नीलदेहाय
नीलाम्बराय परशुहस्ताय कमठवाहनाय ।
आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८१
तथा शनिश्चरमीषकृष्णं द्विभुजं लम्बकूर्चं
किञ्चित्कर्णितं द्विभुजमक्षमालाकमण्डलुमुक्तपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, ३८
शनिश्चरं मंचरता ग्रहाणां शनिश्चरकज्जलकालमंत्र
विद्वंषिभेर्षैकविशेषवेपमन्वेपयतं स्वयमाह्वयामि ॥
सिंहासनप्रतिष्ठा

८. राहु

नमः राहवे नैर्ऋतदिग्धीशाय कज्जलश्यामलाय
श्यामवस्त्राय परशुहस्ताय सिंहवाहनाय ।
आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना १८१
तथा राहुमतिकृष्णवर्णं अर्धकायरहितं द्विभुजमर्धं—
मुद्रान्वितपाणिं चेति ।
निर्वाणकलिका, ३८
अलीन्द्रनीलामितकायकानिकेन्वातरत्राशनदामभूषम् ।
राहुं हनारिष्टमदष्टचेष्टमाकारयाम्यत्र पवित्रकार्ये ॥
सिंहासनप्रतिष्ठा

६. केतु

नमः केतवे राहुप्रतिच्छन्दाय इयामवस्त्राय

पद्मगवाहनाय पद्मगहस्ताय ।

आचारदिनकर, उदय ३३, पन्ना ११८

तथा केतु धूम्रवर्णं द्विभुजमक्षमूत्रकृण्डकान्वित--

पाणि चेति ।

निर्वाणकलिका, ३८

केतुर्महाकेतुरतीवशूरो दूरोऽभितागतिकृतापकारः ।

प्रारम्य सर्वज्जमहे फणाग्रमणप्रभाद्यः समुपैति शीघ्रम् ॥

मिह्रासनप्रतिष्ठा

ग्रहशांति

पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ।

वासुपूज्यो भूमिपुत्रो वृधांशयष्टजिनेश्वरा . ॥

विमलानंतधर्मराः शान्तिः कुन्धनंमिस्तथा ।

वर्धमानो जिनेन्द्राणा पादपद्मं बुध न्यसेत् ॥

ऋषभाजितमुपाश्र्वा अभिनन्दनशीतली ।

सुमतिः सभवः स्वामो श्रेयामश्च वृहस्पति

मुविधिः कथित शुक्रः मुन्नतश्च शनैश्चर

नमोनाथो भवेद्राहुः केतुः श्रामन्निपःश्रयोः ॥

आचारदिनकर, उदय ३४, शान्त्यविकार

दिवकुमारिकाएँ

श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	श्रीदेवी	आगच्छ
श्री रक्तवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	ह्रीदेवी	आगच्छ
श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	धृतिदेवि	आगच्छ
श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	कीर्तिदेवि	आगच्छ
श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	बुद्धिदेवि	आगच्छ
श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	लक्ष्मीदेवि	आगच्छ
श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	शान्तिदेवि	आगच्छ
श्री सुवर्णवर्णो	चतुर्भुज	पुष्पमुखकमलहस्ते	पुष्टिदेवि	आगच्छ

वसुनन्दि, ६

टीप—नेमिचन्द्र ने इन्हे पुष्पमुखकलशकमलहस्ता कहा है ।

देशना

नरेशों के नाम

अननपाल, ६	नन्दराज, ३
कृष्णराज, ५	भरत चक्रवर्ती, २, ७, ३०
चोल राजा, ७	रुद्रकुमार, ८
देवपाल, परमार, ७	लालाट्ट, ६

भौगोलिक नाम

अक्रोटा, १०५, १०७	जयपुर, ६
आरा, ६, ६, ५३	जालंधर, ६
इलाहाबाद संग्रहालय, १०६	देवकुरु, ३०
उत्तर कुरु, ३०	देवगढ़, १०८
उदयगिरि(उड़ीसा), १०७	नागोद, १०६
एकथिला नगरी, ८	नीलगिरि, ५
एलोरा, १०५	नन्दवनपुर, ६
गेहोल, १०७	नन्दीश्वरद्वीप, ४३
कर्णाटक, ७	नलकच्छपुर, ६
कालिंग, ३	नवमुनिगुफा, १०५
कुरु उत्तर ३०	टाक, १०७
—देव, ३२	पटना संग्रहालय, ३
कुलाचल, ४५	पंचमेरु, ४३
कौलास पर्वत, २	प्रिन्स आफ वेल्स संग्रहालय, बम्बई, ३
कांकण, ६	वीकानेर, ५३
कंकाली टीला, ३	भुवनेश्वर, १०७
खजुराहो, ११३	भोगभूमि, ३२
खडगिरि (उड़ीसा), ३	मगध, ३
गंगा नदी, ४५	मथुरा ३, १८, ३७, ५२, १०७
जम्बूद्वीप, ६०	— का मुपाख्वं म्प, ११२

मद्राम ओरियण्टल लायब्रेरी, ८
 महुडी, १०७
 मान्यवेष्ट, ५
 मूडविंदी, ६
 रन्नगिरि, ६
 राजगृह, ३८
 राजस्थान, ६
 लोहिनीपुर, ३

विजयाचं पर्वत, ४५
 विदेह क्षेत्र, ३२
 श्रवणबेलगुल, ८
 सिन्धु, नदी, ४५
 स्थिरकदम्ब नगर, ८
 हडप्पा, ३
 हार्थीगुफा, ३
 हेमग्राम, ५

लेखकों और आचार्यों के नाम

अकनक, ७
 —भट्ट, प्रातिष्ठाकल्प के
 रचयिता, ६ तथा
 यथाप्रमंग
 अननवीर्य, ७
 अमरचन्द्रमूर्ति ३ तथा यथाप्रमंग,
 अन्याय, ८
 अरिष्ट नमि, तार्थकर, ४४
 — भट्टारक, ६
 आर्यनन्दि, ८
 आजाधर, पंडित, १ तथा अन्यत्र
 आर्यनन्दि, ६
 इन्द्रनन्दि, ५, ७
 उभयभाषाकविशेखर, ५
 उमाकान्त शाह ३, १०, १३, ३७, १०५-८,
 उमास्वामि, ४
 एकमधि भट्टारक, ६
 कुदकुद, आचार्य, ६
 कुमुदचन्द्र, वादी, ८

—कल्याणमंदिर
 स्तोत्र के रचयिता, ४
 कन्हण, प्रातिष्ठाचार्य, ७
 गुणनन्दी, ५
 गुणरत्नाकरमूर्ति ६
 गुणविजयमूर्ति, ३
 गुप्ते, आर० एम०, १०
 चन्दननन्दी, क्षत्रक, ८
 चामुण्डरार, ३, ६
 जयमेन वसुबिन्दु, ६ तथा अन्यत्र
 —धर्मरत्नाकर के
 रचयिता, ६
 जगन्चन्द्रमूला, ६
 जिनदत्तमूर्ति, ५
 जिनप्रभमूर्ति, ५
 जिनभद्र, गणा, १०५
 — वाचनःचार्य, १०५
 जिनसेन, आचार्य, १ ३-६, १०६
 जेम्स बर्जोम, १०

जैन, छोटेलाल, १०
 जैन, हीरालाल, ४६
 देवविजय गणी, ४
 दीर्गलि शास्त्री, ८
 धनजय, कवि, ४
 नरेन्द्रमेन, पण्डिताचार्य, ६
 नेमिचन्द्र, प्रतिष्ठातिलक
 के रचयिता, ७ तथा
 यथाप्रसंग
 —दिलोकसार के
 रचयिता, ४
 —प्रवचनसारोद्धार
 क रचयिता, ६
 ठक्कुर फेरु, १०, १२, १८, १५
 पद्मनन्दि, ८
 परनातद, पण्डित, ६
 परवादिमन्त्र, मुनि, ७
 पुष्पदन्त, कवि, ३
 रज्यराज, ६
 फेरु, ठक्कुर फेरु देखे
 वगभाट्ट, ८, ६, १०३
 वर्ज्म. जम्म, १०
 ब्रह्मन्तर, ६
 भद्रेश्वरमूर्ति, १०७
 भट्टाचार्य, श्री, १०
 भण्डारकर, देवदत्त, १०
 भवदेवमूर्ति, ३
 मण्डन, १३ तथा अन्यत्र
 मलयकीर्ति, ६
 मन्त्रिषेण, ५ तथा अन्यत्र

माघनन्दी, सिद्धान्तचक्रवर्ती, ६
 मानतुङ्ग, ४
 मेरुविजय, ४
 यविवृषभ, ४
 रविषेण, आचार्य, ३
 राजकीर्ति, भट्टारक, ६
 रामचन्द्रन, टी०, एन०. १०
 लोकपाल, द्विज, ७
 वादिराज, ७
 वादीभामिह, ७
 वज्रस्वामी, ६
 वराहमिहिर, १०
 वर्धमानमूर्ति, ३, ६
 वसुनन्दि, प्रतिष्ठासारग्रन्थ
 के रचयिता, ६, ७ तथा
 अन्यत्र यथाप्रसंग
 वसुनन्दि, जयमेन, ६ तथा
 अन्यत्र यथाप्रसंग
 वास्तुपाल, महामात्य, ५
 वामननन्दी, ५
 विजयकीर्ति, आचार्य, ३, ८
 वितयविजय, उपाध्याय, ४
 विमलमूर्ति, ३
 वीरमन, ७
 शिवार्या, माधवी, ७
 गीलाक, आचार्य, ३
 शुक्ल, द्विजान्दनाथ, १०
 शुभचन्द्र, भट्टारक, ७
 गोभत, मुनि, ८
 श्यामाचार्य, ६

श्रीषेण, ५
सकलचन्द्र उपाध्याय, ६ तथा अन्यत्र
समन्तभद्र, १, ४
सांकलिया, डा०, १०
सागरचन्द्रमूरी, ५
सिद्धमेन, दिवाकर, ४

सोमदेवमूरी, १, ६६, १०५
हरिभद्रमूरि, ६, १०६
हस्तिमल्ल, ७
हेमचन्द्र, आचार्य, ३ तथा अन्यत्र
हेलाचार्य, ५
क्षपक चन्दननन्दी, ६

ग्रन्थों के नाम

अपराजितपृच्छा १०, तथा अन्यत्र
अभिलषितार्थचिन्नामणि, १०
अग्निपुराण, ११८-२०
आचारदिनकर, ६ तथा अन्यत्र
आदिपुराण, १
आदिणाहचरित, ३
अम्बिकास्तुति, जिनदत्तमूरि कृत, ५
— स्तवन, वास्तुपाल कृत, ५
— कल्प, शुभचन्द्र कृत, ५
आवश्यककर्षण २
आवश्यकनिर्युक्ति टीका, १०६
उपासकाध्ययन, ६६
— भावकाचार ग्रन्थ, ६
— पूज्यपाद कृत, ६
— सोमदेवमूरि कृत, ६
एकीभावस्तोत्र, ४
कल्पमूत्र, ३
कल्याणमंदित्र स्तोत्र, ४
कामचाण्डानिनीकल्प, ५
क्रियाविशाल, ३
चउपन्नमहापुरिसचरित, ३
चक्रेश्वरीस्तोत्र, ८६

चतुर्विधजिनेन्द्रचरित,
अमरचन्द्रमूरि कृत, ३
चन्द्रप्रज्ञप्ति, ४
चारित्रमार, ६
जिनमहम्मनामस्तात्र, सिद्धमेन
दिवाकर कृत, ४
— जिनमेन कृत, ४
— आशाधर कृत, ४
देवविजय गणी कृत, ४
— विनयविजय उपाध्याय कृत, ८
जिनमहिता, इन्द्रनन्दि कृत, ६
— एकसन्धि कृत, ६
— वादिकुमुदचन्द्र कृत, ८
जिनेन्द्रकल्याणाम्युदय, ८
जैन ग्रन्थ प्रगप्ति संग्रह, ८
जंबूद्वीपवर्णनसंग्रह, ८
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति, ४
जंबूद्वीपसमास, ४
ज्वालनीकल्प, ५
तत्त्वार्थसूत्र, ४
तिसट्टिमहापुरिसालंकार, ३

तिलोयपण्णत्ती, यथाप्रसंग	प्रवचनमारोद्धार, २
अनेक स्थानों पर	विषापहारस्तोत्र, ४
दीपार्णव, १०	वृहत्संहिता, १०, १५, १६, ११८
देवतामूर्तिप्रकरण, १०	भक्तामरस्तोत्र, ४
देवीमाहात्म्य, ११७	भैरवपद्यावतीकल्प, ५
द्वादशांग आगम, ५३	मन्थ्यपुराण, ११६-२०
धर्मरत्नाकर, ६	नहापुराण, ३ ७
निर्वाणकलिका, ६ तथा अन्यत्र	महाभारत, १५
नेमिनाथ चरित, ३	मंत्राग्निराजकल्प, ६
पटमचरित, ३	मानमार, १०, १३
पठिनमिद्धसारस्वतस्तव, ५	मानसोल्लास, ११८
पंचवास्तुप्रकरण, १०	यशस्विलकल्प, १
पद्मचरित, रविपेण कृत, ३	यक्षिणीकल्प, ५
पद्यानंदमहाकाव्य, २, ३	रत्नकरंडश्रावकाचार, १
पार्श्वनाथचरित, ३	राजवल्लभ, १०
प्रतिष्ठाकल्प, माघनदि कृत, ६	रूपमडन, १० तथा अन्यत्र
— भट्टाकलंक कृत, ६	वरागचरित, ६
प्रतिष्ठाकल्परटिप्पण, ८	वास्तुसागरप्रकरण, १०
प्रतिष्ठानिलक, नेमिचन्द्र कृत, ३ तथा	विद्यानुवाद, ३, ५
अन्यत्र यथाप्रसंग	त्रिविधतीर्थकल्प, १०
— ब्रह्ममूरि कृत, ६	त्रिवेकविलास, ६, १३
प्रतिष्ठादीपक, नरेन्द्रमेन कृत, ६	विशेषावश्यकभाष्यटीका, १०६
प्रतिष्ठादर्श, राजकीर्ति भट्टारक कृत, ६	विष्णुपुराण, ४२, ११८-१६
प्रतिष्ठापाठ, जयसेन कृत, ६ तथा	वैदिक संहिता, ११८
अन्यत्र यथाप्रसंग	शाग्दास्तवन ५
— हस्तिमल्ल कृत, ८	शुक्रनीति, १४
- सकलचन्द्र उपाध्याय, ६	श्रावकाचार, वसुनन्दि कृत, १, ७
प्रतिष्ठासारसंग्रह, वसुनन्दि कृत, ७	—रत्नकरंड, १
तथा अन्यत्र यथाप्रसंग	—युग, ६
प्रतिष्ठामारोद्धार, आशाधर कृत ७	श्रीदेवीकल्प, ६
तथा अन्यत्र यथाप्रसंग	सत्यशासनपरीक्षाप्रकरण, ८

मरस्वतीकल्प, बप्पभट्टि कृत, ६
 —विजयकीर्ति कृत, ६
 —मलयकीर्ति कृत, ६
 —स्तुति, आधाधर कृत, ५
 समरागणमूत्रधार, १६
 समवायाग, ३
 मग्रहर्णा, ४
 मागारधर्मासूत, ६६
 सूर्यप्रज्ञप्ति, ४

मूत्रकृताग, ३
 स्तुतिचतुर्विंशतिका, ४
 स्वयभूमोत्र, ४
 हृद्विशपुराण, ३, १०६
 क्षेत्रममाम, ४
 त्रिलोकमार, ४
 त्रिपटिलक्षणमहापुराण, ३
 शलाकापुरुषचरित ३ तथा अन्यत्र
 —स्मृतिशास्त्र, ३

सामान्य

अकुशा, यक्षी ६५, १२४
 अगुल, मान, २०-२५
 अचल प्रतिमा, १२
 अच्युता, शासन यक्षी, ८६, ६०, ६६
 — विद्यादेवी, ६३, ६४, १२७
 अच्छुप्ता, शासन यक्षी, ६८
 — विद्यादेवी, ६३, ६४, १२७
 अच्छुप्तिका, शासन यक्षी, ६८
 अजित शासनयक्ष, ७४
 अजितबला, शासनयक्षी, ८७
 अजिता, शासनयक्षी, ८७, १३३
 अनजातदेवी, शासनयक्षा, ६८
 अनंतमती, यक्षी, ६५, १३४
 अनंतवीर्या, यक्षी, देवगढ, १०८
 अनतागति, यक्षी, ६५
 अनावृत यक्ष, ११०, १३६
 अपराजिता, शासन यक्षी, ६८, १३४
 —प्रतीहार देवता, ४१
 —बौद्ध देवी, १०६

अप्रतिचक्रा यक्षी, ८६, १०६, १०७, १३२
 — विद्यादेवी, ५८, १०६
 अम्बा, १००
 अम्बिका, १००, १०१, १०५-०६, १३५
 — द्विभुजा, १०१
 — चतुर्भुजा, १०१
 — अष्टभुजा, १०१
 — स्तवन, १००
 — कल्प, १००
 अम्बिला, १००
 अरकरभि, यक्षी, देवगढ, १०८
 अर्हत्, १-२
 — प्रतिमा, १७
 अवलोकितेश्वर, १०५
 अवमपिणी २८
 अशोका, यक्षी ६८, १३४
 आभोगरोहिणी, यक्षी, देवगढ, १०८
 आम्नकूष्माण्डी, १००, १०१
 आम्नादेवी, यक्षी, १००, १०१, १३५

इन्द्राणी, मातृका, ११५
 ईश्वर, यक्ष, ७१, ७५, १२८
 उत्तर कुरु, ३२
 उत्सपिणी, २८
 ऋषभनाथ, २ तथा अन्यत्र
 कन्दर्पा, यक्षी, १५-१६, १३८
 कमठ, देव, ४४
 करणानुयोग, ४
 कर्मभूमि, ३२
 कन्याणक, पञ्च, ३२
 कामचाण्डाली, ११२
 काममाधनी, १०३
 कालिका, यक्षा, ८८-९०
 काली, विद्यादेवी, ५६, १२६
 — यक्षा, ८८-९०, ९३, १३३
 किन्नर, यक्ष, ७७, १३०
 किन्नरग, ७५
 कुबेर, ७६, १०५, १ ७, १०१
 कुबेरग यक्षा, ११२
 कुमार, यक्ष, ७५, १२९
 कुलकर, २६
 कुमुद, यक्ष, ७२, १२६
 कुमुदमालिनी, ९६
 क्वर यक्ष, ७६
 कूटमाण्डी, १००, १०६
 केवली, १
 — प्रजपत धर्म, १
 कीमारी, मातृका, ११५
 खड्गवरा, यक्षी, ८६
 खेन्द्र, यक्ष, ७८, १३१
 गणपति, ११४

गंधर्व, यक्ष, ७७, ७८, १३०
 गरुड, यक्ष, ७७
 गाधारो, यक्षी, ६३, ६६, ६६-१००, १३४
 — विद्यादेवी, ६१, १२६
 गुह्यक, ६८
 गोमुख, यक्ष ६६, १२८
 गोमेद, यक्ष, ८०, १३१
 गोमध, यक्ष, ८०, ८१, १३२
 गोमधकी, यक्षी, ६३
 गाम्मटेश्वर, ३१
 गोगो, यक्षा ६२, १३४
 — विद्यादेवी, ६०-६१, १२६
 चक्रवर्ती, ३०
 — मर्या, ३०
 - वरुन, ३०
 — की निर्घिया, ३०
 चक्रा, ८६
 चतुर्वर्ग, यक्षा, ८८, १३२
 — चतुर्भुजा, ८६
 — अष्टभुजा, ८६
 — द्वाभ्यभुजा, ८२
 — देवगड, १०८
 — विद्यादेवी, ५८, १२६
 चतुरानन, यक्ष, ६८, ८१
 चतुर्निकाय देव, ४, ४५
 चतुर्मुख, यक्ष, ७५, १३०
 चतुर्विंशति यक्षिया, ८२
 चंदन काष्ठ की प्रतिमा, २
 चन्द्रा, यक्षी, ६३
 चण्डा, यक्षा, ६३
 चल प्रतिमा, १२

- चामुण्डा, यक्षी, ६२, ६६, १०६, १३४
 — मातृका, ११६
 चार्वाक, ५३
 चैत्य, २
 — वृक्ष, ३
 — भ्रालय, ३
 छत्र, २६

 जय, यक्ष, ७४
 जया, यक्षी, ६६, ६७, १३४
 जाम्बूनदा, विद्यादेवी, ५८, १२६
 जिन, २
 — प्रतिमा, १७
 — वाणी, १
 जीवन्तस्वामी, १३
 ज्योतिष्क देव, ४६
 ज्वाला, यक्षी, ६०, ६१
 — विद्यादेवी, ६१, ६२, १२६, १२७
 ज्वालनीकल्प, ६०
 ज्वालामालिका, ६०
 ज्वालामालिनी, यक्षी, ६०, १३३
 — विद्यादेवी, ६१, ६२, १२६
 तारा, यक्षी, १००
 — देवी, देवगढ, १०६
 — वती, यक्षी, ६७, १३४
 तारिका, यक्षी, ६५
 ताल, १६
 — मान, १६
 — दश, १६
 — नव, १६
 तान्त्रिक युग, १०५
 तुम्बर, यक्ष, ७१,
- तुम्बरव, ७१
 तुम्बरु, ७१, ११०, १११, १२६
 त्रियदेव, १२४
 तीर्थकर, ३३
 — कुल, ३३
 — वर्ण, ३३
 — माना पिता, ३४
 — माता के स्वप्न, ३५
 — जन्मस्थान, ३६
 — लाछन, ३७
 — दीक्षास्थल, ३६
 — दीक्षावृक्ष, ३६
 — चक्रवर्ती, ४०
 — समवशरण, ४०
 — प्रतीहार, ४१, ४२
 — निर्वाणभूमिया, ४०
 तोतला, १०३
 त्वरिता, १०३
 दिक्कुमारिकाएं, १२०
 दिक्पाल, दम, ११८
 — आयुध, ११६
 — वाहन, ११६
 दुरितारि, यक्षी, ८८, १३३
 देवकुरु ३२
 द्रविड सघ, ५
 धरण, यक्ष, ८१
 धरणेन्द्र, ८१, १३२
 धरणप्रिया, ६८
 धरिणी, ६७
 धर्मचक्र, ३
 धमदेवी, १००
 धारिणी, यक्षी, ६७, १३४

ध्वजस्तंभ, ३
 नम्रा, यक्षी, ८८
 नरदत्ता, यक्षी, ८६, ६८, ६९
 नवग्रह, १२२
 —वाहन, १२३
 —भुजाएं, १२३
 नवदेवता, ४३
 नक्षत्र, ४६
 नारद, ३०
 नारमिही, मातृका, ११७
 नारायण, ३०
 नित्या, १०३
 निर्वाणा, यक्षी, ६६
 निर्वाणो, यक्षी, ६६, १३४
 नैगमेष, ३
 पतानी देवी या पताउनदेवी, १०६
 पद्मा, यक्षी, १०१, १०३
 पद्मावती, १०१-०३, १०६, १३५
 —चतुर्भुजा, १००
 —षड्भुजा, १००
 —चतुर्विंशतिभुजा, १००-०३
 पन्नगा, यक्षी, ६५
 पन्नगगति, यक्षी, ६५
 परभृता, यक्षी, ६५
 परमाणु, १६
 परमेष्ठी, १
 परिकर, २५, २६
 पर्यंक ग्रासन, १६
 पाताल, यक्ष, ७६, १३०
 पादबंध, यक्ष, ८१, १३२
 पुरुषदत्ता, यक्षी ८६, १३३

—विद्यादेवी, ५८, ५९, १२६
 पुष्प यक्ष, ७२, १२६
 पूजा, १
 —शिक्षाव्रत, १
 —श्रावक का नित्यकर्म, १
 —स्थापना, १
 —प्रकार, १
 —वैयावृच्य, १
 प्रचण्डा, यक्षी, ६३, १३४
 प्रतिनारायण, ३, ३०
 प्रथमानुयोग, ४
 प्रवरा, यक्षी, ६३
 प्रज्जग्नि, यक्षी, ८८, १३३
 —विद्यादेवी, ५६, ५७, १२५
 प्रजा, यक्षी, ८८
 प्राकृत भाषा, ३
 प्रातिहार्यं, १८, २७, ४४
 प्रियकर, १०१
 बलराम, १८, ३०
 बला, यक्षी, ६६, ६७,
 —व्यन्नरी, ४५
 बहुरूपी, देवगढ यक्षी, १०८
 बहुरूपिणी, यक्षी, ६६, १०६, १३४
 बह्निदेवी, ५, ६०
 —देवगढ, १०८
 —विद्या देवी, ६०
 बाहुबली, ३०, ३१, ४४
 ब्रह्मा, यक्ष, ७४, १२६
 ब्रह्मागक्षम, ५
 ब्रह्मशान्ति, ११०, १११, १३६
 ब्रह्मासी, मातृका, ११४

- भवनवासी देव, ४६
 —इन्द्रों के नाम, ४७
 —वाहन, ४८
 भवानी, मानुका, ११७
 भीमदेवी, देवगढ़, १०६
 भूमि परीक्षा, ११
 भृकुटि यक्ष, ८०, १३१
 —यक्षी, ६०, ६१, १३३
 भोगभूमि, ३२
 मनोवेगा, यक्षी, ८६, ६०, १३३
 महाकाली, यक्षी, ८६, ६१, १३३
 —विद्यादेवी, ५६, ६०, १२६
 महापरा, ७५
 महामानसी, यक्षी, ६६, १३४
 —विद्यादेवी, ६४, ६५, १२७
 महायक्ष, ७०, १२८
 महायानी, वौद्ध, १०६
 महालक्ष्मी, मातृका, ११६
 महावीर, २
 —की चदनकाष्ठ
 की प्रतिमा, २
 मंगल, १
 —पूजनीय, २
 —प्रकार, २
 —द्रव्य, ३, ४४
 मातृकाए, ११५
 मातंग, यक्ष, ७२, ८२, १२६, १३२
 मानवी, यक्षी, ६०, ६२-६३, ६५, ६६, १३४
 —विद्यादेवी, ६२, १२७
 मानसी, विद्यादेवी, ६४, १२७
 माहेश्वरी, मातृका, ११७
 मोमामक, ५६
 मोहिनी, यक्षी, ८६
 यक्षेन्द्र, यक्ष, ७८
 यक्षेश्वर, यक्ष, ७१, ७५, १२८
 योगिनी, ६
 गोंड्रिणा, यक्षी, ८७, १३३
 —विद्यादेवी, ५५, ५६, १२५
 रुद्र, ३०
 लवणा, ध्यन्नरी, ४५
 वज्रयान, १०५
 वज्रभृत्खला, यक्षी, ८८, ८६, १३३
 —विद्यादेवी, ५७, १२५
 वज्रा, यक्षा, १०६
 वज्राकुशा, यक्षी, ८६
 —विद्यादेवी, ५७, ५८, १२५
 वरुण यक्ष, ७६, १३१
 वराटिका, यक्षी, ६४
 वामन, यक्ष, ८१,
 वाराही, मातृका, ११६
 वामुदेव, १८
 विजय, यक्ष, ७३, १२६
 विजया, यक्षा, ६४, ६८, १३४
 विजृम्भिणी, यक्षी, ६५
 विदिता, यक्षी, ६४, १३४
 विदेह क्षेत्र के तीर्थकर, ३२
 विद्यादेविद्या, ५३
 विद्युन्मालिनी यक्षी, ६३
 विराटा, यक्षी, ६४
 वैमानिक देव, ५०-५२
 वैयावृत्त्य, १
 वैरोटी यक्षी, ६४, ६८, १३४

— विद्यादेवी, ६३, १२६
 वैष्णवी, मातृका, ११५
 व्यन्तर देव, ४८, ४९
 घरभ, ६०

शलाकापुष्प, ३
 शान्ता, यक्षी, ९०
 शान्ति देवी, ९०, १११
 शामन देवता, ६६
 — उत्पत्ति, १०४
 — हिन्दू और बौद्ध प्रभाव, १०९
 शिखिमद्देवी, ९०
 शुभंकर, १०१
 श्याम, यक्ष, ७३, १२९
 श्यामा, यक्षी, ८९
 श्रावक, १
 श्रावकाचार युग, ५
 श्रियदेवी, देवगढ़ यक्षी, १०८
 श्रीवत्सा, यक्षी, ९३
 धृत्, १
 — देवता, १
 — देवी, ५३
 षष्ठी, ११०
 षण्मुख, यक्ष, ७५, १३०
 सरस्वती, ३
 — प्रतिमा, मथुरा, ५३
 — प्रतिमा, बीकानेर, ५३
 — प्रतिमा, देवगढ़, १०८
 सर्वानुभूति, यक्ष, ८१, १०५
 सर्वाल्लि यक्ष, ८१, १०७, ११०, १११, १३६
 — गोमेघ का आद्य रूप, १११

मंसारी देवी, ८९
 माण्य, ५८
 माधु, १
 — प्रकार, १
 मामयिक शिक्षाव्रत, १
 सिद्ध, १
 — प्रतिमा, १७
 सिद्धा, १०४
 सिद्धायिका, १०४, १३७
 सिद्धायिनी १०४
 मिहामन, २५
 मंगधिनी, ९८
 मृतास्का, यक्षी, ९१
 मृतारा यक्षी, ९१, १३४
 मुमानिनी, यक्षा, देवगढ़, १०८
 मृमुख, यक्ष, ७०
 मृगक्षिणा, यक्षी देवगढ़, १०८
 मुलक्षणा, यक्षी, देवगढ़, १०८
 मुलाचना, यक्षी, देवगढ़, १०८
 मीयन, ७३
 म्नुप, ३
 म्यापना, मद्भाव, १
 — अमदभाव, १
 — विधि, १
 हगिनैगमेप, २६
 क्षेत्रपाल, ६, ११३
 — खजुराहो की प्रतिमा, ११३
 त्रिमुख, यक्ष, ७०, १२८
 त्रिपुरभैरवी, १०३
 त्रिपुरा, १०३
 — मातृका, ११६
 जानकल्याणक, ३२, ३३

ग्रन्थ निर्देश

[उन ग्रन्थों को छोड़कर जिनका उल्लेख देशना पृष्ठ २०४-०६ पर किया जा चुका है]

अद्भुतपद्मावतीकल्प : श्रीचन्द्रमूरि

अन्तगडदशाग्रो : अभयचन्द्रमूरि कृत टीका

अभिधानचिन्तामणि : आचार्य हेमचन्द्र

अपराजितपृच्छा : भुवनदेव

आचार दिनकर : वर्धमानमूरि, पंडित केमरीसिंह मोमवाल
बम्बई द्वारा दो जिल्दों में प्रकाशित
संस्करण ।

एकविंशतिस्थानकप्रकरण : मुनि चतुरविजय द्वारा सम्पादित

काण्ट्रीब्यूशन टू ए बिब्लियोग्राफी : हरिदास मित्रा, विश्वभारती, शान्ति-

ग्रॉफ इण्डियन ग्रार्ट एण्ड एम्प्टि- निकेतन, १९५१.

वम, प्रथम खण्ड :

कामचाण्डालिनीकल्प : मल्लिपेण

कैनन्स ग्रॉफ इण्डियन ग्रार्ट : तारापद भट्टाचार्य

कैटलाग ग्रॉफ मथुरा म्यूजियम : वी० एस० अग्रवाल

खजुराहो की देव प्रतिमाएं : डा० रामाश्रय अरवस्थी, आगरा, १९६७

घण्टाकर्णमणिभद्रतंत्रमंत्र : साराभाई नबाव, अहमदाबाद

चन्द्रप्रज्ञप्ति : शान्तिचन्द्र कृत टीका, देवचंद लालभाई
जैन पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई, १९२०

चतुर्विंशतिजिनेन्द्रचरित : अमरचन्द्रमूरि

चक्रेश्वरी स्तोत्र : जिनदत्तमूरि

जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति : शान्तिचन्द्र कृत टीका, देवचंद लालभाई
जैन पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई, १९२०

जंबूदीवपण्णतिसंगहो : पउमणदि, आदिनाथ नमिनाथ उपाध्ये
और हारालाल जैन द्वारा सम्पादित,
जैन संस्कृति संरक्षक सघ, सोलापुर,
१९५८.

जिनयजकल्पदीपक : पंडित आशाधर का स्वोपज्ञ निबंध

जिनयजकल्पटीका : पंडित आशाधर के प्रतिष्ठाग्रन्थ पर
संस्कृत टीका

जिनमंहिता . इन्द्रनन्दि, हस्तलिखित पोथी, बम्बई

————— : भट्टारक एकमधि, हस्तलिखित पोथी,
आरा.

जैन आइकोनोग्राफी बी० भट्टाचार्य, लाहौर, १९२६,

जैन साहित्य और इतिहास . नाथूगाम प्रेमा, बम्बई

जैन स्तूप आर्क मथुरा : बी० ए० मिश्र

तिलोयपण्णत्ती . यतिवृषभ, मालापुर, १९५६
क्षीपाणंठ

निर्वाणकलिका पादलिप्ताचार्य, मन्नादक मोहनलाल
भगवानराम भवरी, बम्बई, १९२६

टिक्शनरी ऑफ़ हिन्दू आर्किटेक्चर पी० के० आचार्य

पचवास्तुप्रकरण . हरिभद्रमूर्ति, मुरत, १९२७

प्रतिमा लक्षण द्विजेंद्रनाथ शुक्ल

प्रतिष्ठातिलक . नेमचन्द्र कृत्त, मराठी अनुवाद सहित
सोलापुर

प्रतिष्ठापाठ जयमेत (वसुविन्दु), मालापुर

————— : सकलचन्द्र उपाध्याय, गुजराती अनुवाद
सहित

प्रतिष्ठासारसंग्रह : वसुनन्दि, हस्तलिखित प्रति, रायपुर
संग्रहालय

————— . ब्र० मोतिलप्रसाद, मुरत

- प्रतिष्ठासारोद्धार : पंडित आशाधर, बम्बई
- प्रवचनसारोद्धार : नेमिचन्द्रमूरि, सिद्धमेनगणी की तत्त्वज्ञान विकासिनी टीका
- प्राचीन भारतीय मूर्तिकला : डा० वामुदेव उपाध्याय, वाराणसी
- प्रासादमण्डन : प० भगवानदास जैन जयपुर द्वारा प्रकाशित
- भद्रवाहुसंहिता : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री द्वारा सम्पादित
- भारत कल्प : मल्लिषेण, हस्तलिखित प्रति, आग्रा
- भारतीय स्थापत्य : द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, लखनऊ
- भैरवपद्मावतीकल्प : मल्लिषेण कृत, साराभाई नवाब द्वारा प्रकाशित, अहमदाबाद
- मंदिरप्रतिष्ठाविधि : हस्तलिखित प्रति, आग्रा
- मंदिरवेदीप्रतिष्ठाकल्पशारोहणविधि : प० पन्नालाल साहित्याचार्य, वाराणसी
- मन्त्राधिराजचिन्तामणि : साराभाई नवाब द्वारा सम्पादित
- यशस्तिलकचम्पू : सोमदेवमूरि, निर्णयमागर प्रेम, बम्बई
- वास्तुशास्त्रप्रकरण : ठक्कुर फेरु, पंडित भगवानदाम जैन द्वारा सम्पादित, जयपुर, १९३६
- विद्यानुवाद : मल्लिषेण, हस्तलिखित प्रति, जयपुर
- विवेकविलाम : जिनदलमूरि, भेमसं मेघजा हीरजा कपनी बम्बई द्वारा प्रकाशित, १९१६
- शिवरत्नाकर : नमदाशकर मुलजीभाई
- सिद्धान्तशास्त्रादिग्रंथसंग्रह : माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला, बम्बई
- सूर्यप्रज्ञप्ति : मलयगिरि की टीका, आगमोदय समिति मूरत, १९१९

संग्रहणी : मलयगिरि की टीका, भावनगर

स्टडीज इन जैन आर्ट : उमाकान्त परमानन्द शाह, वाराणसी
क्षीरार्णव

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित : आचार्य हेमचन्द्र, जैनधर्मप्रसारक सभा,
भावनगर

ज्ञानप्रकाश (आयतत्त्वाधिकार)

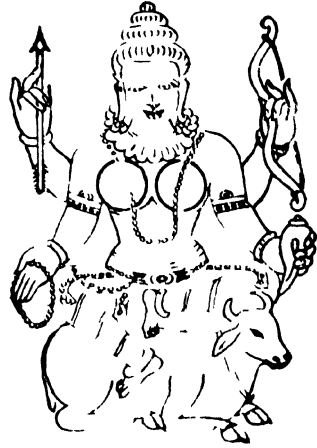
शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१३	स्थापना के दो है	स्थापना के दो भेद है
१०	१४	ठक्कर	ठक्कुर
११	१४	ममन्वपूर्ण	महन्वपूर्ण
१४	४	ठक्कर	ठक्कुर
३०	१३	उपर	ऊपर
३३	२४	शेण	शेष
४३	४	जन	जैन
४४	११	अच्छाना	अच्छुना
५१	१	दाय	दाये
५१	४	गामेध	गोमेध
६१	१	मल्लिपण	मल्लिपेण
१०५	२३	तीर्थकरो	नीर्थकरो
१०६	२५	वञ्जष्टु	वञ्जष्टु
१११	६	हथ	हाथ
१२०	१८	पावती	पार्वती
१२०	१६	छाया	यम
१२४	अंतिम	महाविद्यामार	महाविद्य, मार

विद्या देवियां



१. रोहिणी (दिगं)



१. रात्रिणी (श्वे)



२. प्रज्ञानि (दिगं)



२. प्रज्ञानि (श्वे)

फलक दो

विद्या देवियां



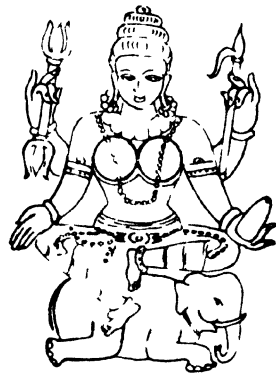
३. वज्रवृषणा (दिगं)



३. वज्रयना (द्वं)



४. वज्रावृषा (दिगं)



४. वज्रावृषा (द्वं)

विद्या देवियां



५. जाम्बूनदा (दिग०)



५ अप्रतिचया (ध्व०)



६. पुष्पदना (दिग०)

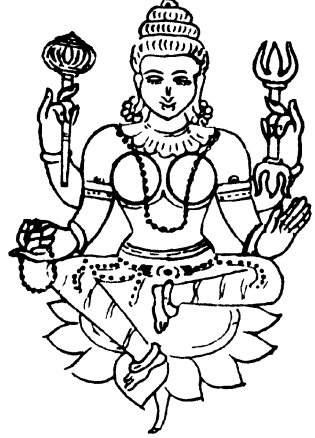


६ पुष्पदना (ध्व०)

विद्या देवियां



७. काली (दिगं)



७. काली (श्वे०)



८. महाकाली (दिगं)



८. महाकाली (श्वे०)

विद्या देविया



६. गौरी (दिग०)



८ गंगा (द्व०)



१०. गाधारी (दिग०)



१० गधारी (द्वे०)

विद्या देवियां



११ ज्वालाभालिनी (दिग०)



११ ज्वाला (द्वे०)



१२ मानवी (दिग०)



१२. मानवी (द्वे०)

विद्या देवियां



१३ वरोटी (दिग०)



१२ वेङ्गप्पा (श्व०)



१४ अच्युता (दिग०)



१६ अच्युताना (श्व०)

विद्या देवियां



११. मानसी (दिग०)



१५. मानसी (श्व०)



१९. महामानसी (दिग०)



१६. महामानसी (श्व०)

शासन यक्ष



१. गोमुख (दिग०)



२. गामुग (श्व०)



३. महायक्ष (दिग०)



४. महायक्ष (श्व०)

फलक दस

शासन यक्ष



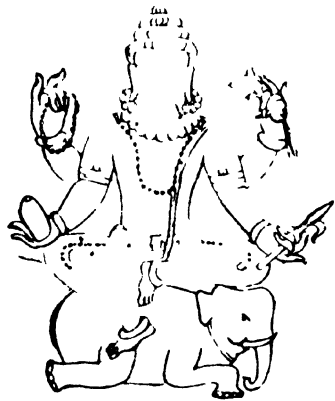
३ त्रिमूर्त्य (दिग०)



४ त्रिमूर्त्य (स्व०)



५ यक्षेश्वर (दिग०)



६ यक्षेश्वर (स्व०)

शासन यक्ष



५ तुम्बक (दिगं)



५ तुम्बक (दिगं)



६ पुष्प (दिगं)



६ कुगुम (दिगं)

शासन यक्ष



७. मानग (दिग०)



७. मातंग (श्वे०)



८. श्याम (दिग०)



८. विजय (श्वे०)

शासन यक्ष



६. भ्रजित (दिगं)



६. भ्राजा (श्वं)



१०. ब्रह्म (दिगं)



१०. ब्रह्म (श्वं)

शासन यक्ष



११. ईश्वर (दिग०)



११. ईश्वर (श्व०)



१२. कुमार (दिग०)



१२. कुमार (श्व०)

शासन यक्ष



१३. पणमय (द्विग०)



१२. पणमय (२५०)



१४. पानाम (द्विग०)



१६. पानाम (श्वे०)

शामन यक्ष



१५. विघ्नर (दिग०)



१५. विघ्नर (स्व०)



१६. गरुड (दिग०)



१६. गरुड (स्व०)

शासन यक्ष



१७. गधवं (दिग०)



१७. गधव (स्व०)



१८. खेन्द्र (दिग०)



१८. यक्षेन्द्र (स्व०)

शासन यक्ष



१९. कुबेर (दिग०)



१९. कुबेर (श्वे०)



२०. वरुण (दिग०)



२०. वरुण (श्वे०)

शासन यक्ष



२१. भृकुटि (दिग०)



२१. भृकुटि (ध्व०)



२२. गोमेध (दिग०)



२२. गामेध (ध्व०)

शासन यक्ष



२३. धरणेन्द्र (दिगं०)



२३. पार्श्वं (श्वे०)



२४. मातंग (दिगं०)



२४. मातंग (श्वे०)

शासन यक्षी



१. चक्रेश्वरी (दिग०)



१. अप्रतिचक्रा (श्व०)



२. रोहिणी (दिग०)



२. अर्जिता (श्व०)

फलक बाईम

शासन यक्षी



३. प्रज्ञप्ति (दिग०)



३. दुरितारि (श्वे०)



४. वज्रश्रृंखला (दिग०)



४ कालिका (श्वे०)

शासन यक्षी



५. पुरुषदत्ता (दिग०)



५. महाकाली (श्व०)



६. मनोवेगा (दिग०)



६. अच्युता (श्व०)

फलक चौबीस

शासन यक्षी



७. काली (दिग०)



७. शान्ता (श्वे०)



८. ज्वालामालिनी (दिग०)



८. भृकुटि (श्वे०)

शासन यक्षी



६. महाकाली (दिगं)



६. गुतरग (श्वे०)



१०. मानवी (दिगं)



१०. अणुका (श्वे०)

शासन यक्षी



११ गोरी (दिग०)



११. मानवी (इवे०)



१२. गाघारी (दिग०)



१२ चण्डा (इवे०)

शासन यक्षी



१३. वैरोठी (दिग०)



१३. विदिना (श्वे०)



१४ अनन्तमती (दिग०)



१४ अंकुशा (श्वे०)

शासन यक्षी



१५. मानसी (दिग०)



१५. कन्दर्पा (श्वे०)



१६. महामानसी (दिग०)



१६. निर्वाणी (श्वे०)

शासन यक्षी



१७. जया (दिय०)



१७. बला (स्वे०)



१८ ताचावती (दिय०)



१८ धारिणी (स्वे०)

शासन यक्षी



१९. अपर्गाजिता (दिग०)



१९. वैरोट्या (श्वे०)



२०. बहुरूपिणी (दिग०)



२०. नरदत्ता (श्वे०)

शासन यक्षी



२१. चामुण्डा (दिग०)



२१ गाधारी (श्वे०)



२२. आम्ना (दिग०)



२२ अम्पिना (श्वे०)



२३. पद्मावती (दिग०)



२३ पद्मावती (श्वे०)

फलक बत्तीम



२४. मिद्धायिका (दिग०)



२४. सिद्धायिका (इवे०)



क्षेत्रपाल



अनावृत यक्ष (दिग०)



सर्वाल्ल यक्ष (दिग०)



ब्रह्मशान्ति यक्ष (इवे०)

